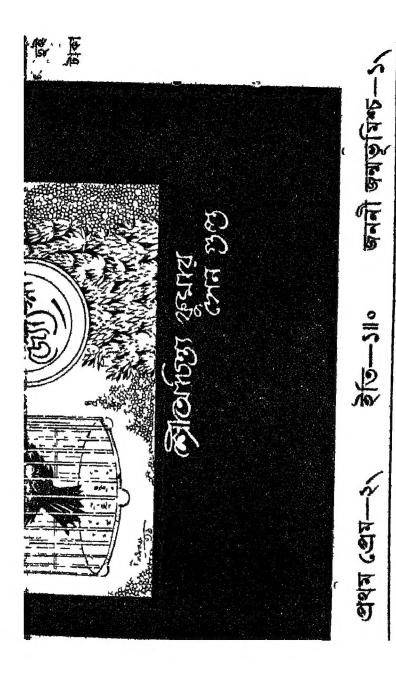
বাগবাজার রীডিং লাইত্রেরী

ভারিখ নির্দ্দেশক শত্র

পনের দিনেব মধ্যে বইথানি ফেবৎ দিতে হবে।

পত্ৰাস্থ	প্রদানের ভাবিখ	গ্রহণেব তাবিথ	পত্রাঙ্ক	প্রদানেব তারিধ	গ্রহণেব তারিথ	
41	3/1 =	11/75				
					\ \	
				<u> </u>		
) 		
				1		



कक्रमात्र इत्होत्रीयात् । यक तत्र -- २००१। ४ कर्षक्रमात्र क्षेत्रं, क्ष्तिकाका

क्टब्रिक्सिक्स २५, त्रवाबीर्भ, कृषाधिकार्भ, लब्बावजी र सन्दिशः हिरामश्रामी अ लोबो २, डिज़िंबार जिस २, षद्मश्रा २, क्षांत्रांका वार्याको भू मक्ष्म भू - अध्यक्षित्वात म् वार्यास्य व्क्कृष्ड अन् पत्तर काकर, というというない বোচনী না-, শিশুমকোটা থাত জনহিত ১০০, থাবণুৰু ১০০ 温泉ーグ いずーン ষ্ট্রা বভীত্রয়েরের নিত্র বাইছিবের क्रानीतित्व महाम मुक्तितिक्र " देशकानम मुक्तापादा केरल विश्वांक कोइबोब वैवर्डाम्(स्ट्रन् तन क्षरका Partic a supplied শেরদান ১৮ কল্যানী ১০ भूका क्षान भ अर्थिक अध्यान Carial Region 4年日-110 मानव मानव र अक्रांत हुईशिकात जब अक्र-२-व्याभार, वर्षक्यांत्रम् और, क्लिकांडा क्ष्यक भ TO STATE OF नान्ति शाःश्टबंद बांदना २, विषक्ति शाः छात श्व २, छछा २, मसराब २, कृष्टि ३, आरमन कथा ३, नाकको ३॥। রাজ্য গণেশ সাঃ স্বাতন গোষাম সাঃ श्रीक्षक में मिलनार्शनिया या ज्ञास रा বিৰেন্দ্ৰকীতি ১ৰ ১া০ ২য় গাত তথাতা ১৪০ ज्यक्ष भू रहना है भू राजित राजि भू भाम र १वर्गारक भाग अधिकाम र অগ্নি দংস্কাৰ ১৮০ গিতা পূত্ৰ ১৮০ रानी अक्षयक्षी आः रीत्रपूकां > भागत श्रीष ०, जोगामीमा শী-টোশচল চটোপাধারের क्राज्ञानव्यमाप निमापियनात्त्व ইন্দ্রেলনারাস্থ স্থলপাধাব विरयय थाए। आ॰ দিলীপকুমাৰ বাবের 子のない 司を下る一つい。 विद्वान्यान्य व्यापन পতিভাব সিদ্ধি থা• अवा देशकांत्र के अवस्थित आ॰ वाहित्र स বিক্তিতা যাত নূজন সূগতাত বদপলা থাত खेरानोड मार्च ४, ब्रिटनाइन मनिसंबर र्यात ८ त्यक्ष ३ त्योगात ॥ তর্পের অভিযান ১৮০.লেহেব মূল্য ২ वक्तिविती था॰ दिक्किन त्नेरव थ् W. States - C. अञ्चान-४५. द्रश्यानद-० नात्त्व स्थान २, विनक्त अ मानमती शालीम् क्ल (नांडिक) ५० प्रोत्र क्षेत्रिक क्लिक्ट तिम क्षेत्र त्योजन बिम्ठी धारावकी पार्वी नवच्छीत बैर्जनमाहन शन अम्पन を日前る 本子 かい 門のを श्वाम्या । PRE LIMEDLE なるという ととは

* रहत ३३ क्या जाना के माछा। महस् अधि क्षा भ क्रिके ইয়েলো-ক্রাঞ্চ নামক অণ্বৰ্ণ ক্রেমের উপর পিনি সোনার পুক্ পাতে নোড়া এবং স্থানাক্র এনপ্রেড ক্রা बांक बांच त्यांनात १२ हैंक होते। अबकी श्रांक क्षेत्र के होना



बयां क्षांका - १३८, व्यक्तिकारक ३४, - १६८

[मक्ती कार्डिकाएक अस्तिरियम २, ग्रेस रहेट >, ग्रेक क्यान रहेन

- फ़िक्रतत्रत्र मीन (inner-diameter) चीकिया चर्चात्र क्तितन्हें कि नि छार्क (ब्राङ्गिक स्त्र)

西午をはんなはずる

हेरनमिक मूर्यमात्री अग्राक्त्मत यद्गारिकातो खिष्कमञ्जूमात्र ममी ल्पीक. বিলাত শেখণ

जिल्ह सीचा ; र, ष्राका। ८८ भाग महिन इतिथ्

ति स्थान क्षांन मुख्यावात नोध्या यात २००, वर्गवयानित्र हो, मनिकास, वाकारवर किकी

अन्ति नेदला मार्गिटां मन्त्राची वस्त सुवीका (हिन्त्रीत) , स्नीतमा वाष्ट्र-(

सहस भावनिक्षक-श्रम् किछीव मन्द्रत्र

गबद्धिष्ठ व्यक्तिर

अ जाउकन 979

় লেখিকার त्वयंनी निश्र्ष स्थान !

निक शहर बाजात हो है। इस मानिक क्षांत्र केल

Ø a K

영화 최정

রাম শ্রীযুক্ত বলধন সেন বাহাত্তর क्षेत्रक नाक्ष्मक त्रम ७४ अपूर्ण भवाक्यां र रान গুরু শীণতিপ্রসম গোষ शिक विस्तरक सद्गरात श्विक देशवाशीनम अर्थाण नुकार्ताथन कारनामनाम ठकरा स्रीयको (अरुवाका यञ्च कोषुकान नियजी क्षणियकी (परी बैगडी नवनीरांगा रूट আমতা শৈলবালা কোবলায় बेगडो शिरियामा तसी मिल ठिक्तामा कर <u>भंकर्गाचिक्शिक्ष</u> बाडाबडी (पर्या नवर्षा) वीकारस्वी केंक RSI JUNE 相

歌為增

বন্ধ সাহিত্যের

ইতিহাসে

निकार दिया

७ भन्त

200 244 9/L The state of the s "यत्रभीतम् जुक् त्यका जाम नमान" (शक्ष) শীবসন্তকুমার চটোশাখার এম-এ वध्वांनी खिरबश्का कांत्र कोर्बानी অভীতের ঐথধ্য (প্রায়তম্ব) क्षिनदर्श तम् --N

WANTED STUDENTS,



Commerce of any Examination guaranteed Apply for free prospectus No 172-V with Calender 1333 to chants etc ? Take a few months, training by past from its and secure a better future. Small monthly feets. Success at London Chamber of the Secretary.

THEINDIAISCHOOL OF ACCOUNTANOY Post Box No. 2010, Garcorta

শতার চূড়ান্ত ম 41 年间接(图)4前 क्लर्स किंग)। बांत्र नमणांन नम् (निट्नांन) সন্তার চূড়ান্ত ा ७१/दिन प्रांत्म Taplan

(ガタールタタル) (からなみーのの)

(1666--68) (カラーしゅうりょ)

59 किया वर्ष

Accountant in the services under the Do you intend to be a high-salaried

Government P. W D. Municipalities, Dist Boards, Rallways, Banks Mer-

त्वां वर्ष

जिक्कास-->

विक (महे—मुंग र)

(49-69のた)

क्ष्मक्षांत्र क्रिक्रीनायात्र क्षक्ष नन **医 各 4 3 3 3 3** २ - वाडाह् क्ष्रिकार्मिका होते, क्षिकार्जी porter of

अपनि के जाता । बिक्रप्रिय के प्रसित्तावास काराया अपनि ५ कि मिन्स सात्रात्वा काराया क्व निष्टिय विवास्त्य क्षण्डी सामित्व स्वामित्व विवास्त्य क्षण्डी सामित्व

সেউনোফিয়ার অভ্যন্তব সেউনোফিয়ার - শোভা

AMBAITE TE

 (मन्द्रमिक्या निकाय टाउन भव

E E

4

নিবৰ্গ **কড়িত সু**তিহুন্ত' নেউলেছিয়া গিৰ্জা

かなな

90

Wat wall

জগৎবিধ্যাত জীরামপুরের

ক্রেম্বিন, রৌজ, পরিষল ও র নম্ব

Ten Extra v. A. S. A. N.

ডি, এন, বৈশীল এও কৌং প্রাচোর প্রাচীনত্ম বন্দুক বিক্রেডা ১-নঃ ডালথেবী বোরার (ফ) কবিবার। ব্যান্থ্য সচিত্র ভাগীলগ নিরা কিবাহিত, ভাত হতন।

- Bay San Contraction of the Con

विकार के मार्ग काह रह रह कि ने कि

The April

1 4 4 A A A A A A A

विनटलं मटक्वारक्षे ब्रटक्ब कांत्रथाना बुबांत्र অতি হল্ড जर्कत्त्र मायूभीहरू मृत्

जिस्ता स्थिक म्हा किन्द्र क्षित क्षित के

शक्रिका, नाहेंन, ब्रहे ७ छिन वर्तित सम्मत्र, स्रम्ण, सम्महे ७ छिन्दान त्रक बाखुरु कतिर जिह्न

मारक्षणं क्या यात्र-व्यापाटम्ब

ब्दियम्प्रमूसिनारक ब्साञ्जा त्मर

महामन्त्र किया भारित

আজীৰ দিবার গুৰ্নে আক্ত কান্ত্ৰ বানাৰ রকেন সলে আন্মালের রকেন তুলনা ক্ষিয়া দেখুল। আমন্ত্ৰা একই প্ৰকান্ত্ৰের কান্ত্ৰ ক্ষিয়া থাকি—জাহাই উৎকুষ্টা

क्षम, गरदात्र मारम रम विकाशन स्टब्सिंग्ड रह ना । विकासित विकासित्रत मृता वीकांना बारम्ब अरहे बरका ना हर्त्त हिकांना जिस्कि हिरान धारः समानानी छ छ दक्क एकदर ক্ষিবিধী হয়। প্ৰবিদ্ধ লেখকগণ ময়। কবিয়া প্ৰত্যেক লেখাব ৰতে ব্ৰবে ভাক থকা দিতে হইবে। ्रे - क्षेत्र नकन क्षकांगटका निकृष्टे क्षितिकता। नेका दुण्डक दिल्हा रह ना। े क्याका गरन ठिकान (नथा म शक्तित तक । कविठांत सकल दार्थिया शिरोहेर्सन, कस्तानीक ৰুতন বিজ্ঞাপনদাতাগণৈর পক্ষে মূল্য অগ্রিম দেয়। শ্বিচিত্ত ও পুরতিন বিজ্ঞাপনাগতিাগধের প্রে विकार्भनमा शामिद श्रेत क्षांक त्रातः :-- कर्त, श्रामाना 西安海河 :-- "村田町本村 শুরুদাস চট্টোপাধ্যায় এণ্ড সন্সূ <u> अव्यक्तिकार</u> ২০০াসাস, কণ্ডয়ালিশু খ্রীট, কলিকাতা されずをしゅう न्तिन कामात्रत्र लेक्ष्मिन। বিশ্ব পূঠার হার পত্র লিখিয়া জ্ঞাতবা। रेवार्गिक, द्वलक्षत्रक ७ शंक्षीमाण्य दिक्कांगीनक राज ्कान के महिका के मार्क के कार्य कर्मा के जान विष्ठां शत् रात् वाज्यात

উদাসার মার

পুৰু গল্পপত্ত এছ। তথকোত ছাপা ও বাধা।

মাৰা- হারাণ মন্ত্র্মদারের বাড়ী যে অবগায় উহা নমান্ত করিল, তাহা পড়িয়া অতি বত্ত নীতিবিদত প্রশংসা না করিয়া শ্ব পৰ্ব্যস্ক স্বত্তিক উপভোগ্য। "কিশালী লেখকের হজে স্বিব্রেপ বিষয়গুলি কিব্রণ অপুন্ধ হইয়া উঠে ব্যক্তি নৈত্ত प्राक्षक थ । मिन्छ श्व गोविष्णात दर्शोष्ट्रक मण्डल त्रीष्ट्र करित्रोष्ट्र। स्ट्रीम अक जिन्हां। ই কৌতুক-ক্রিত্রের প্রত্যেক-পরে তাহার পরিচয় বিবাহেন। প্রত্যামের পঞ্চালিকা ও কজাদার ছায় এই বই-क्यांत्र जिल्ला । 'मान्नात्रक' नक्षि नहीं मान्नात्रकार्थन ज्वत्रशंत्र अक्टि निष्क जिल्ला 'त्यार नृष्टीत' व्याध्य ब्हिस्क कीयनांकन तथाते माजांशिक मिराबन नमलांव बांबकांका विक्तिः-ध कीत्रानत काक कांत्र करिया क्यतांत्र '(क्षेत्राक शक्तिक कोन्न) को बीयन्त्र ति चर्गात किया व व्हेशोह, कोवा बर्द्य, कोव्हें के कार्य क याग्निक द्याना ष्यभ्त को इक

जिल्लान ज्याच्या

ন্থবণ কৰা হায় না ৷ অনুভাৱ ট্রাফোডি: ...খনারী ৷ নিগ্যাতন ज्ञस्त्रस्थः भष्यम् ज्ञस्त्रीत्रं द्वार्थाः पृथ्वः विदेवें — ज्ञलनः द्वार्थः अवस्

ক্ৰিনাঞ্চৰ অবহা সেপিয়া হাত্ৰ

と「たし、し

८७ विसेष्ट्रं वेटवां नोड़ित क्रिक्त

ও চাবিব গুচ্ছ পথান্ত বোল জীবাৰ্ ছড়াইতেছে। ভবিষ্ণতে

छ शकाव शुर हता सर्दे अ वाष्ट्रीएड ज्यिनि वक् म्मारक्व िष्टरेषण ७ षवस्तिमाणन यक किन्नू क्रिक्टि ৰাতাদকে মালন করে তুলেচে ি

নিশিপদার ডিডরে আছে

वागनाय त्यहे महियां राक्ती गार्वाडी, यांत्रक्षे टाडित्वमिनी डामिनी, वांगनात्षत्र त्यहे भत्षत्र भतिक्रिड वक् पेमहि, वांगनाप्त वांमिती महामेत्र हःथिनी शंधा, बांग त्यहे निःमक्कादिती कर्ज्यत्रो नमा,—मम् वांगनात्वे

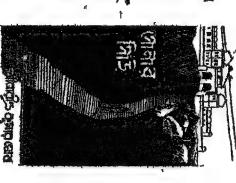
কলরবের ভিতরে আছে

क्रवाड ७ षाष्ट्रक्माग्र म्दीत्मन करम्राक्षामरक याश्रीय बर्भाविक অখ্যাতিই ভাহাদের পাওনা।"—কলরুব महोधुनी नादीर ग्रंत्यक्षनील काठीन मत्नत्र बन्ध, क्षां किं किंनिया यांचा टार्याक्रम, रिटिए हो। नर्या वीटव काटत्र वांश्रीवां, म्राम मास्रत्यत्र (क्रथ्या ভাহাবই কলব্ব। 9 'रिकामान न्या दुष्ठन बिगाज,

नांनिएण, बत्मद गर्नेद्रजाय अवर हित्व प्रष्टिब হনিপুণ কাৰুকাৰ্যে এই বই, ছুইখাণি অধুনিক কথাসাহিত্যৈ िए (प्रतिया जापन पाण्टाका नाहित हहेशा जामित्राहरू। बनवज ভाषायु, श्रकाटनंद्र

अकरान हत्वाना सात्र वाक





- 18 78 FR

PARTY OF REPLICATION OF VANDOR

A POLICE ALS EN LISTA CICION PARTIES

न्यां के शामित मनायुक्त करें अने काल्यनकों क्षिक्रिके हैं

সাত সিকা 꿃 ख्रियवीक्रमांग क्ष्र ध्वाल । মতি সিকা 크

क्लीय गरक्रम्)

नवम्भावत कांच कांडकांचक। क्रम् भीवर्द्धमान नवीन में के करिये में निर्मा किरने क्षेत्रक के किरोन शोदिन नारे। काला, शोदरी, क्राक, मठीन अक अकृति बीकेड बारवी—जांशा टाक्क्यकेशिन्द्रिक कि अवस्कारन प्रतिबं धक धक्थानि त्काक्त्रिक कांनी नात्व अर बार्व करिसार श्रीत श्चामित। अभूक विष्-त्राहरू त्राहर का का निष्य श्रुशनी कृतिकार क्रांप महाने परिक क्रांस-विका १८११-ৰখস্মাল এমন হানিপুমভাবে আৰ কেই চিনিভ ভূমিজে रेगांक देव नविक्कों महन वनना वकान (जोरको, निकानी नाएक नोडोरकन् नता क्षेत्र वर्ष हिंदा । क्रांड नाम करा का का कारण करते किन्द्र कि रोक्या यादा रहेक्ट्र SA PR

の間でい

युग्निक ह

\$1000E

温温温

भवनाहित्जन त्मस्मिन-भा-नाण्णाञ्जलि बरहार नवारि मधिम्। यह मीविम् भार

क्रमिस्थित (त कड क्रिय क्रमिस्ट्रे मुद्दीय-भ

त्रमाष्ट्रक्टी

अन्तिक जिल्लाच्यात कांत्र प्रमुख अन्तिक जिल्लाम् अन्त

হতাশ প্রোমক

त्मी क विमार्ट

Die vie sigl wie sauti

SISSIPIEZE CONTRACTOR

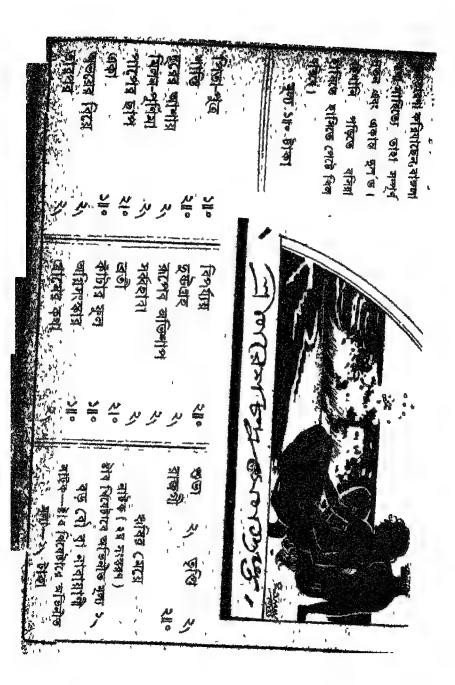
मृन्। शाः होकाः

नवीन मझामी

क्षि कर्य छम्मान-श

कीवदनज्ञ मृत्ता

THE PROPERTY OF THE PARTY OF



জভাতেবি—শ্বীমণিলাগ গল্পণাথান। শাহাতিবিজ্ঞার কাষ, বিশ্ব সং সামান্ত স্থানাথান। আফশ্লিবার (१४ সং সং)—শ্বিমান্ত ভটাগো। শিক্ষাতি (१४ সং)—শ্বীমণের হঠাগাথান। বিশ্বাপ ভাংগ্রেরী (২২ সং)—শ্বিমানার। কোন্ত প্রেশ্ব (১৪ সং)—শ্বিদ্যাঞ্জাণ্ডর এন্ত ।

প্রস্থানাথী (শ ম)—জন্মন্তলাভ ভব। ভবাদী—জনিত্ত্ ম ম ।—জন্মনাভ ভব। অমিহা উৎস—জন্মনিভিত্তা কটোগাযায়। মুপ্রিভিত্তা (ংম মং)—জন্মনাত অন্যাগাযায়, মি-বং। মুপ্রিভিত্তা (ংম মং)—জন্মনাত ব্যস্তী স্পাধক। মিত্তীয় প্রতি (ংম মং)—জন্মনাত নেভব।

আক্রাকাশ কুম্ম-শ্রিনিকান্ত দেন। মন্ত্রাপন-শ্রীম্নব্রনাথ রাম। মন্ত্রিপ্র-শ্রীসন্ধানা বহু। মন্ত্রা (২য় সং)—শ্রীমতী প্রভাবতী দেনী।

ম ডি রে মা—জিচরণ দাস বোদ। পুডাবেকা—জীষ্টাল্রমোহন সেনগুরু। মতের অধাপ (শ্রাসং)—জিলতান্তম সেন্

स्टेस्ट न भी थे (अ मा)—बीस्ट नाम्य तनकार, वास्त, कि टिट मिट (स्थाम)—विकास मह्यकात। कारका (वा) (शाम)—बीमानिक कोनित कि.व. कि ट्यो किमा—बीमानिक तुना मानामान का नाम। विकास विने —बिमानिक तुना मानामान का नाम।

भ्रद्रतम् घरिया-श्रीयावक्ष्यासे व्यक्तान्ताव ।
भावन्त्रं घरियम् । श्रीप्रावक्ष्यासे व्यक्तान्ताव ।
भावन्त्रं घरियम् । श्रीप्रावक्ष्यास्य व्यक्तान्ताव ।
भावन्त्रं व्यक्ति । श्रीप्रावक्ष्यास्य ।
भावन्त्रं व्यक्ति । श्रीप्रावक्षयास्य ।

APIEN - DAGRETH BOTH LECTH AND PRINT WORKING WORKING PROPERTY



Inhadrempannaturung asin himberhard fit manya hantara

বেজল কোমকাল কত

भित्र ने किन्न क्षा किन्न किन

শ্বাক্তিক সাবানে নিয়মিত হাত ধুইবাৰ শ্বভাগ করিলে সংক্রামক রোগাক্রমণেব ভয় থাকে না।

TOTAL STATE OF THE STATE OF THE

হ্মানী সাবান কভ ভাল হইতে পাবে—

ক্ষণামা সাধান কও ভাল হয়তে সাধেন ছু ইবা ব্যবহার কৈবিলেই ভাহা ব্যক্তে ছু পারিবেন। ইরা চর্ম্বের প্রম হিডকর। ছু শিশু-ছাঙ্গেও নির্ভয়ে ব্যবহার করিতে স্পারেন। ছু

िक्टिन रावशदां भा कार न

प्रक भग्न ताद्य।

मिका कि दिनाय क्या

মক্তিশ :-- ১নং, পূৰ্ট গীজ চাৰ্চ্চ খ্ৰীট কলিকাতা

क्षित-ठे । व्यव्यान

のです。いかのになる



र्वाध्वारीन वाषानी भीवतन्त्र अक्षांक मानी सीवतनांत्रक्षन व्यत्वही मन्नामिक

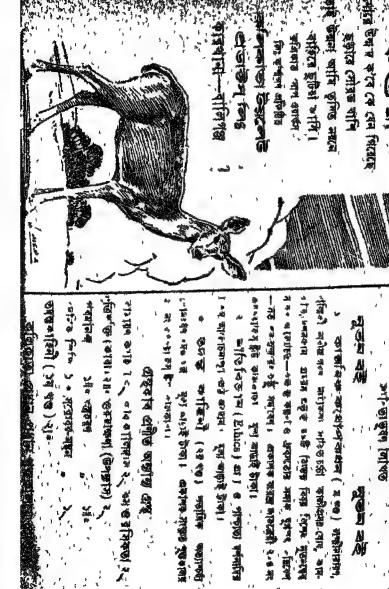
बक्छ ठक जित्रक्व थ्या ।

\$50-De

রক্ত-চরেন্স অধিনাথকেব গ্রুক্তর সাহস্য ভার কাধ্য-পদ্ধা আপনাকে বিস্মিত ও চমকিত ক্রিব। ঘটনা অপরিহাধ্য ঘণত প্রতিষাতে জন্মিত হুইবেন।

এই সিধিজেব নৃতন পুগুক বাহিব হইলেই মাহারে আপনি নিয়মিত পাইজে পারেন—সেকতা আপনান্ত না রেজিয়ী কবিয়া বাখুন। সচিত্র সংকরণ—বার আনু

डाकबात्र मध्य ।



अधिक कि कि कि कि कि कि कि

तुष्गरम् वस् मन्त्रीमिण

"こととというでして見られば"

(अध्य लक्ष्म) (अध्य लक्ष्म) बरे महेत्रम बहारी 2 4 8 4 5 CM

स्त्रां कामाना शुरुक्षाकाट्य कि तमान श्रहांचनीट है भारता बाह्य मा REPUT CONSIDERAL

প্রতি লেখকের সংক্ষিপ্ত জীবনী পরিচয় ও দীর্ঘ ভূমিকা সম্বলিত, বাহুলা সাহিত্য ঘাহার প্রিষ্ कें शख्यांच श्रक्रांभाषांत्र, रहत्त्रत्यक्षांव बाय, निक्णमा (मवी, मगीक्रमांन वथ, विङ्गिष्ट्यन वार्मानांपा स्तुत्रमहस्र हक्ष्वही, क्रभामेणह्य कथ, रेमनज्ञानम् युर्धाभाषांत्र, (श्रायक्ष-सिंब, मत्नांक वय, त्यायुर्धि পুরেশচন্দ্র স্মাক্তপতি, বোরেলকুমার চট্টোপাধাার, কেদারনাথ বলেরাপাধ্যাত, পরস্তরাম", প্রভাত কুর गूरमोणासामः, ठाक बरमाशाधामः, नाकण्डल तमनख्ढं, मिनमान भरमा शाधामः, त्यमाष्ट्रं प्रांत टिक्टीम् ठेक्स, कानकनाथ शत्माभाषात—भन्न्हन्य हत्तोभाषात, टामथ ८ पूर्वी चत्रस्यनाथ मध्यक नाभ, जातिकाक्माइ तमनख्ध, वृष्टाम् वस् ।



ক্ৰির সম্পূর্ণ আধুনিক এবং লোক্তিয়

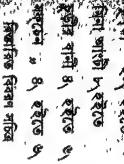
可由外 स्तिविक क्षत्रभवे नयं भठ-नाम रा॰ है लि। zidlianitae silatistas kasista ৪৭০ ডি গুড়ার রোড, ক্লিকাডার ক্ৰিয় সভাৰ হী ফুলিকাডিত স্থীভেয় मनोएउन चर्म मध्य মন্ত্রনিপি প্রক विद्या कडा-र.

क्रवीत जीवङ्ग्धगाम (भरत

अधिकायको (मर्ग महस्रको अबोक



्राविकाव शास्त्रक वर्ष स्मिट्ट (एम मुकीद (कांबाह्म मरमारक प्रथ हरश्य कथाह कर्वा (कांब्रुम्य कथाह कर्वा (कांब्रुम्य क्रिक्ट्रम्य कांव्रुक्त अस्त्रका क्रिक्ट्रम्य स्कृतिमय जाद वर्षाय क्रिक्ट्रम्य स्कृतिमय जाद क्रिक्ट्रम्य राह्मित वर्षाय क्रिक्ट्रम्य राह्मित वर्षाय क्रिक्ट्रम्य राह्मित प्रकृतिमय वर्षाय राह्मित कांब्रुम्य क्रिक्ट्रम्य सावरात भारत वर्षाय क्रिक्ट्रम्य





त्कर या शहरमाठ--काश्राकत 'व्यवभारक मेठावाम ब्डिशिन क्रिनिक क्राकी, वर्शिक क्रिकि किक्सिक र्राट नक N त्नारन N 4 **5**2 কচন্দ্ৰ হক্ষিত লিমিটেড CAND CICROS SECO म्कर्माह कार्यहरम्ब

নিবেদন

দ্বোজনলিনীৰ জাপান-ভ্ৰমণকাহিনী ছাপাইতে নানা কাবনে দেবি
হইবা পভিল। বাহা হউক এখন যে ইহা সাধাবণেৰ সমক্ষে উপস্থাণিত্ত কবিতে পাবিবাছি ভাহাতে নিজেকে ক্বভাৰ্থ মনে কবিতেছি। স্বোজননিনাৰ বড় ইচ্ছা ছিল যে ভাহাৰ বিদেশ-ভ্ৰমণেৰ অভিজ্ঞভা বেন দেশেব কাজে গণে। আশা কবি ভাহাৰ দেই ইচ্ছা ফ্যুবভা হইবে এবং ভাহাতে ভাবে খমৰ আত্মা ভৃপ্তিনাভ কবিনে।, ভাহাৰ অবশিষ্ঠ ভ্ৰমণ-বৃত্তাপ পৃণবিপ্ৰস্কাকাৰে ছাপাইবাৰ আশা বহিল।

শ্বপ্রা সাহিত্যিক শ্রীযুক্ত নাব সাহেব জগদানন বাধ মহাশ্য অনুপ্রাচ কবিয়া (বল এই বইখানাব ভূমিকা লিখিনা নিধাছেন তাচা নচে, তি'ন নাবপবন পরিশ্রম কবিয়া বইখানাব পাণ্ডুলিপি দেখিয়া দিনা টহার মুদ্রান্ধনে বিধ সাহাব্য কবিষাছেন। শ্রীযুক্ত বাধাচবণ চক্রবন্ত্রী মহাশন বইখানাব প্রফ্-সংশোধনে সাহায্য কবিষাছেন। তাহাদেব উভ্যো কণ্ডে আমাব ক্লভ্যতা জ্ঞাপন কবিভেছি।

্ব্ৰু এই প্ৰক্তক সবোজনলিনীৰ উদ্দেশে উৎসগিত ২ইল। ইহাৰ বিক্ৰয-শোক অৰ্থ "সবোজনলিনী দত্ত নাবী-মঞ্চল সমিতি"ৰ ভাণ্ডাৰে অৰ্পিত হইবে।

কলেক্টান কুঠি হাওডা ৬-৬-২৮

শ্রীগুৰুসদয় দম্ভ

ভূমিকা

গ্রন্থকর্ত্রী স্বর্গাধা সবোজনলিনীব পবিচয়-প্রদান অনাবশ্যক। আর্জ বঙ্গদেশের নগবে ও গ্রামে বহু "মহিলা-সমিতি" ওাহাব স্থৃতি বুকে ধরিখা পাড়াইবা আছে। সাবনা অনেকে কবেন, কিন্তু সব সাধনাব সিদ্ধি হ্বণ দেশ প্রাট ধবিষা পুণ্যায়া গ্রন্থকর্ত্তী সাধনা কবিতেছিলেন, তাহা আজ বাঙলাব নাবাগণকে স্থাবেব ভোবে বাধিতে পানিষাছে। ইহাবে বিলে দিন্ধি। জীবনেব মহাত্রত সাঙ্গ হইবাব পুর্বেই ভগবান্ তার্থকে নিশ্লব কাছে টানিষা লইষাছেন সভ্য, কিন্তু আমি বিশ্বণস্থাব সেই ব্রত্থাবিদী সাধ্বীৰ আমীবাদেই এপন হাঁহাব আসের কর্মগুলিক প্রত্থিতা শ্রন্থন কবিতেছে। তাই মনে ক্যি,—

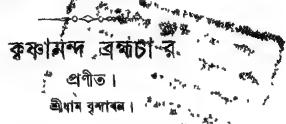
"জীবনে যত পূজা হ'ল না সাবা, জানি তে জানি তাও হব নি হাবা; দো ফুল না ফুটিতে ঝবেছে খনণীতে, বে নদী মক্ল-পথে হাবালো ধাবা, জানি হে জানি তাও হব নি হারা।"

এই কবি-বাব্যের সার্থকতা গ্রন্থকরিব সীবনে প্রস্তান্ধ ইয়া উঠিয়ছে। বিষয় মুবিবা গেলে সৌতিক দেহের সহিত তাহার সকলি ধ্বংস হয়, একথা বীহারা বলেন, তাঁহাদের উক্তিতে বিশ্বাস স্থাপন করা চলে না। ক্রাপ্তর তার ছিঁ ডিয়া গেলে যেমন ষ্ম্রীর মহিনা সোপ পাব না, তেমান ছি দেহের অবসানের সঙ্গে দেহীর সকলি ক্রনও শেষ হয় না।

আমাব বিখাস পাঠক-পাঠিকাগণ গ্রন্থকর্ত্রীব এই মহৎ জীবনের পবিচার্থ উাহার এই পুস্তকে পাইবেন। জাপান ও মুবোপ ভ্রমণ শেষ কবিষা যথ^ন্

তত্ত্ব-কুসুম।

মুকং করোতি বাচালং পঙ্গুং লংঘয়তে গিরিম্। যৎকুপা ভ্রমহং বন্দে প্রমানন্দ মাধবম্॥



যোগানন্দ ব্ৰহ্মচারী

প্ৰকাশক।

অন্নপুসহব (বুলন্দসহব)



প্রথম সংশ্বরণ বৈশাখ, ১৩২৮ সাল।

মূল্য ১৮- টাকা মাত্র।

5

প্রাপ্তিস্থান— শ্রীপ্তক্ষাস চট্টোপাধাায় এও সন্স, ২০১়নং কর্পওয়াবিদ্ ধীট, কালকাতা।



সাম্য-(প্রেস, ৬নং কলেজ-ক্ষোয়ার, কলিকাভা জ্রীউপেক্সনাথ দাস ধারা মুদিত।

পুষ্পাঞ্জলি। •

ভগ্ৰন।

ভোষার কপায় এই হৃদয়-এপ কাননে বাহা কিছু তর্রুপ কুন্তুম প্রশ্যুটিত হইরাছে, তাহা ভোমাব পূজাৰ জন্ম সংগ্রহ করিলাম। ভোমাব বাগান, তোমাব কুল, ভোমার ইচ্ছায় সাজি ভবিলা তুলিয়া, ভক্তিচন্দন মাখাইলা গলাজলে গলা পূঞাব প্রায়, ভোমার জীচবণে জীক্তভায় নমঃ বলিয়া পূজাঞ্জাল দিলাম।

গ্ৰন্থকাব।

निटचक्रम ।

আঞ্চলাল লোকের ধর্মাতুরাগ যেন দিন দিন বাড়িতেছে, স্থুডরাং

তত্মসন্ধান ও ধর্মালোচনাও সলে সলে বাড়িতেছে, তাহা আমি স্বচক্ষে দেথিয়াছি। কাবণ,আমি ভারতবর্ষের প্রায় সর্ব্বত্রই ভ্রমণ করিয়াছি, কাজেই আমাকে বাধ্য হইয়া নানা সাম্প্রদায়িক পোকের সঙ্গে মিশিতেও হইয়াছে. তাহাতেই আমি লোকেব ধর্ম পিপাদান প্রমাণ পাইয়াছি। কেননা, কোন সাধু মহাত্মা পাইলেই লোকে তাঁহাকে যেরিয়া ফেলে, এবং ডত্তুলন সম্বন্ধে নানাবিধ প্রশ্ন করে, উদ্দেশ্ত সংশয় অপনোদন। কিন্তু ইহা বলা বাহুলা যে, লোকের সকল সময়ে সকল প্রশ্ন ঠিক এক সঙ্গে মনে উদয় হয় না, ইহা কিন্তু সংশ্ব অপনোদনেব প্রধান অন্তরায়। আবার এমনও অনেক লোক আছেন যে, মনে সংশয় পৰ আছে, কিন্তু গুছাইয়া বলিতে পারিলেন না স্কুরাং প্রশ্নই কবিলেন না। এই উভন্ন ক্ষেত্রেই মদি অবাচিত ভাবে কেনে লিখিত পুস্তকে দেই সকল প্রশ্নের উত্তর পাওয়। ষায়, তাহা হহবে উল্লিখিত শাস্তানভিজ্ঞ তত্ত্বজানেচ্ছু লোকদিগের বিশেষ উপকার সাধিত হইতে পারে। সেই উদেশ্য সাধনের জন্মই আমি এই পুস্তকপানি লিখিতে প্রবৃত্ত হইয়াছি। এই পুস্তকে সমূদম প্রশ্নেরই যে মীমাংসা হইয়াছে এমন কথা বলিতে পারি না, তবে ষতদূর সাধা চেষ্টা করিয়াছি। তত্তজান লাভের উপায় শাস্তগ্রন্থে নানা প্রকাবে বর্ণিত আছে.

এবং পণ্ডিভগণ তাহার নানাবিধ টীকাদিও প্রণয়ন কবিরাছেন। এখন ঐ সকল গ্রন্থ থাকিতেও যে মাদৃশ ব্যক্তিব সেই বিষয়ে একথানি অভিনন গ্রন্থ প্রণয়নে প্রবৃত্ত হওয়া নিতাস্ত নিম্প্রয়োগন, অথবা বুণা শ্রম বলিয়া

পণিত হইতে পারে।

কিন্তু ইহার প্রকৃত প্রয়োজন না পাকিলে, আমি কখনই এইরূপ গুক-তম বিষয়ে হন্তক্ষেপ কবিতাম না। প্রয়োজন বে কি তাহাই বলিতেছি। সমস্ত শাস্ত্রগ্রন্থই সংস্কৃত ভাষার লিখিত, এবং টাকাকাব কৃত টীকাদির ভাষাও প্রায় ভদত্রনপ, সাব ভাবও উচ্চাধিকারীর বোধগ্যা, কাঞ্চেই সাধাবণের সহজ্বোধা নহে। আর একটা গোলযোগের বিষয় এই যে. সংসাবের অধিকাংশ লোকেই সংস্কৃত জানে না, স্বভরাং তবুজান লাভোপ ষোগী শাস্ত্রকথিত উপদেশ ও তাহার তাৎপর্য্যার্থ এতত্বভয়েই অনভিজ্ঞ, অথচ তবজান পাভে ইচ্ছক। আমি সেই সকল গোকের জন্মই পুস্তক-ধানি লিথিতেছি, এবং বাহাতে ভাহারা বিষয়টী অপেক্ষাকৃত সহজে জনম্বন্দম করিতে পারে. সে চেষ্টাও সাধ্যমত করিমাছি। বাহারা শাস্তগ্রন্থ পড়িবার ও বুঝিবার অধিকারী তাঁহাদের কণা খতন্ত, কেননা, তাঁহারা পবিশ্রম করিয়া নিজেরাই নিজেদের প্রথার মীমাংসা শাস্তগ্রছে পাইতে পারেন . কিন্তু শাস্ত্রানভিক্ত লোকদিগের আর সে উপায় নাই। উল্লিখিত লোকদিগের উপক্ষারের জন্ম বধন আমি পবিশ্রম করিতেছি, তথন আমার সেই এম র্থা বলিয়া গণিত হওয়ার কোন কাবণ দেখা যায় না। ইহাতে পণ্ডিতেরা ধদি পঠিতবা কিছু না পান তাহাতে আমার কোন তু:খ নাই। কাবণ পুত্তকথানি শাস্তানভিজ্ঞ লোক্দিগের জন্তই শিথিত হইতেছে। ইহার দ্বারা ভাহাদেব কথফিৎ উপকার সাধিত হইলেও আমাব দকল শ্রম দফল জান করিব।

এই পৃষ্ঠকে জ্রীমণ্ ভগবণ্গীতার অন্তসরণ ববাবব করিরাছি, এবং অন্তান্ত পান্তগ্রন্থের লিখিত বিষয়ও প্রয়োজন মত হানে স্থানে উদাহবণ স্বরূপ উল্লেখ করিরাছি, এবং দেই সকল বিষয় আমি যতদ্র ব্রিয়াছি তাহাই বৃষ্ণাইয়াছি। ভবে হছাও আমি বলিতে বাধা যে, কালপ্রভাববশতঃ বর্ত্তমান সময়ে লোকেনের বৃদ্ধি, বৃত্তি ও কচির বিশেষ পরিবর্ত্তন ঘট্যাছে।

কাজেই সাধারণে বিষয়টা বাহাতে সহজে বুঝিতে পারে, তদমুরূপ কথোপ-কথনছলে কালোপযোগী উদাহব. শব সহিত ব্যবহাবিক চলিত ভাষার বুঝাইবাব চেষ্টা পাহরাছি। এলতঃ, ভাবের কোন বৈলক্ষণা হয় নাই। এখন প্রকথানি সাধাব শব কতদ্ব কচিকব হইবে তাহা বলিতে পারি না। কেমনা, ইহাতে চিত্তবঞ্জক উপাধ্যান কিল্পা চিত্তাকর্ষক কারারস কিছুই নাই। পরস্ত, যে বস হইতে সমস্ত রসেব উৎপত্তি সে বসের কথা ইহাতে আছে।

উপসংহাবে বক্কব্য এই যে এই পুত্তকথানি সাধারণ অজ্ঞান লোকে-নেব ছন্ত লিখিত, স্কুতবাং বিষয়গুলি বাগতে তাহাদেব বুঝিবার সমুকৃল হইতে পাবে, সেই ভাবেই লিখিত ৯২ মাছে। তা ছাডা, লেখক এ এ কার্য্যে নুতন ব্রতী। কাজেই ইহাতে ভ্রম প্রমাদাদি থাকা কিছুমাত্র বিচিত্র নহে। থতাএব সেই ক্রটীব জন্স পাঠকগণের নিকট অত্যেই আমি ক্ষমা প্রার্থনা করিয়া রাখিলাম।

অর্থাপার্ক্তন অথনা যশোলাভের আশায় আমি এই পুস্তক লিখিতে প্রবৃত্ত হই নাই। তবে কোন্ আকাক্ষাব বনবর্ত্তী হইরা মাদৃশ ক্ষুদ্র বাজির এতাদৃশ গুকতম বিষয়ে হস্তক্ষেপ করা ? আকাক্ষা এই বে, ভগবান শ্রীবানচক্র লক্ষার কটক শইরা বাইবাব জন্ত যখন সমুদ্রে সেতু বর্ধন করেন, তথন কাঠবিভালী আর্দ্রগাতে সমুদ্র তীরে বালুকারণিদর মধ্যে গড়াগড়ি দিয়া, পরে সেতুর উপব গিয়া গা ঝাডিয়া দিয়া সেতু বন্ধনের ধেমন সহায়তা করিয়াছিল। আমিগু তেমনি ভবসমুদ্র পাব হইবাব তর্মজানত্রপ সেতৃব ধংকিঞ্জিৎ সহায়তা কবি । ইহাই আমাব ক্ষুদ্রাকাক্ষা । নিবেদন নিত্তি ।

কৃষ্ণানন্দ ত্রন্ধানারী, ত্রীবৃন্দাবনধাম।

বিজ্ঞাপন।

এই পুস্তকের সম্পূর্ণ সত্ত সদধীন রহিল। এই পুস্তকেব লিখিত কোন বিষয় আমার বিনাম্মতিতে যদি কেহ সম্পূর্ণ অথবা আংশিকরণে গ্রন্থাস্তবে কিয়া ভাষাস্তবে ছাপাইয়া প্রকাশ কবেন, তাহা হইলে তিনি আইনামু-সারে দশুনীর হইবেন। নানা কাবণবশতঃ ছাপাতে ভূল ও অশুদ্ধ হণ্ডমার তাহাব একটা শুদ্ধিপত্ত দেওয়া হইল। ভগবদিছোর পুনরার ছাপা হইলে সে সব সংশোধনেব চেটা পাইব, নিবেদন ইতি।

জন্পসহব, (বুলন্দসহর) যোগানন্দ ব্রহ্মচারী

সত্যাধিকাৰী।

শুদ্ধিপত্র।

কত পাতা	কত দাইনে	অও গ	শুদ্ধ
১ম	\$5	ব'দে	व रन
>3	>¢	বাস্থদেব	बञ्चरमव
59	₹•	ব্যন্ত্রণার	ভবষন্ত্রপার
79	>•	শেনবার	শোনবার
ર •	১২ (লোকে)	मर्क कर्य	সর্ব কর্ম
9 %	>>	ইক্রিয়দির	टे जिम्रोपित
৩৬	>	এখন	তথন
9 0	>>	<i>হ</i> ত	হত
89	7	শাটা সে	ষাটা ধে
89	20	হশাহন্দরণী	স্ক্রাদপিস্ক্ররপী
(7)	>9	সেগু	সেগুলি
¢۶	28	উপদে	উপদেশ
98	১ (শ্লোকে)	কক্ষোভাহৈৰ	শক্লোতীইংব
שש	2 o	তত্ত্বজ্ঞান	তত্বজানী
>>¢	>0	র	বুষ্টি
250	>4	পাদৌহস ভূতানীতি	পাদোহভভূতানী
		বি	রপাদোহ ন্তা মৃতং দিবি
202	>0	দু শ	চরষ
>98	20	ভেলক	ভেল্কী

কত পাতা	কত লাইনে	প্ৰ শু দ্ধ	⊕ ∿
>8.	9	অণ্ডদ্ধ বৃদ্ধি ও অং	চন্ধার যে কার্য্য শুদ্ধ স্থতে
		একত্র হয় তার না	ম আনন্দময় কোষ।
>৫७	2	* F 1	4-11
るかく	>>	এ ভগৰানে	ভগবানে
39#	৩	শাস্ত	সান্ত
296	¢	শান্ত	সাস্থ
>9€	8	শান্ত	সাস্থি
>98	B	m458	সান্ত
১৮৫	75	ইভাচাতে	ই ভাচ্যতে

বর্ণানুক্রমিক সূচীপত্র।

ৰিষয়	পৃষ্ঠা
₩.	
ष्ममृष्टे कि	60
অহৈত জ্ঞানের আশ্রয় নিয়ে আসল তত্ত্বের ব্যাথ্যা	274
প্দনাসক্তি কাকে বলে	>& र
অবভারের প্রয়োজন কি	२२१
অ	
আত্মা সর্বাদা শরীরের মধ্যে থেকেও কিছুতে লিপ্ত হন না কেন ?	٥>
আত্মা ভূতগণের দেহের মধ্যে সর্বদা জড়িত খেকেও কি করে	4
निर्णिश्च शेटकन	85
আত্মা বে সর্বাদা সচ্চিদান-দ স্বভাবেই অবস্থান করেন তার প্রমাণ	কি ৪৩
जि	
ঈশ্বর নিবাকার হ'মেও সাকার ভার মানে কি ?	285
র্	
একাগ্রতা না হ'লে সাধনার কি অনিষ্ট হয়	76 F
একই ঈশ্বরেতে নানা দেবতার করনা করে কেন	39¢

·	
विवन्न	পৃষ্ঠা
•	
अब कारक वरम	₹• n
ক	
কেন আমরা এ সংসারে এসেছি আমা	দের এ জীবনের উদ্দেশ্য কি
এবং কৰ্ত্তবাই বা কি প	9
কোন্ উপদেশ মত চন্লে বৈরাগ্য লাভ জয়	7
কোন্ উপদেশ মত চল্লে নিকাম কৰ্মে প্ৰ	
কি ক'বে গোকে ভগবানের দিকে এগিয়ে	বাডেছ ৬৬
কালী পূজাব তাৎপর্যার্থ	クェト
কার্যাবদ্ধ বিষ্টুই ধখন বানক্লঞাদি অবভাব	७ थन উপাসকদেব
প্রেমেব তাবিভম্য হয় কেন গ	दःक
কি ক'ন্ত লোক প্রকৃত সুখী হয়	<i>৯ ৩৮</i>
কোন্ স্থানে তপস্থার ফল বেশী পাওয়া বায়	२७०
গ	
গৃহীদেব কি রকম আচরণ ও কর্ম কন্তো	তন্তান লাভ ১শ্ব ৪
গার্হস্থা ধার্শ্মর তত্ত্ব	>>
গীতা কে এবং কি উদ্দেশ্যে ব'লেছেন	১৩
গীতার সৃষ্টি কেন হ'ল	>9
গীতা পডেও জ্ঞানলাভ হয় না কেন ?	45
গীতা ভিন্ন স্বভান্ত শান্ত গ্রন্থ পড়। কি নিদিন	90
গৃহীর বৃন্ধটর্য্য পালন	२ ० ১
পঞ্চার বেশী মাহাত্যা কেন	১৬৩

विषय	र्श् रका
Б	
চিত্তগুদ্ধি মানে কি ?	er
চিতত্তদির প্রয়োজন কি ?	63
জ	
জীবাত্মা ও পরমাত্মা পৃথক না এক	88
জ্ঞানী ক্লাত্মা চেনবার উপায়	२ ० २
জাতি বিভাগ কি রকমে ২মেছে	२२ऽ
জ্ঞাননিষ্ঠ ও ভক্তিনিষ্ঠের মধ্যে শ্রেষ্ঠ কে ?	হণ্ড•
জানী কি ভক্ত নন	२८६
জ্ঞানী ভগবানের এত প্রিপ্ন কেন	₹€€
ত	
ভীৰ্থে শ্ৰদ্ধা হ'লে কি ফল হয় ?	255
তামসিক দাৰ	२३১
म ′	
দেবতাদেব মুম্যু জন্ম নিতে হবে কেন	%
দেবমূর্তি দর্শনে যাওয়ার ফল ফি ?	>99
দ্বৈতবাদ ও অদ্বৈতবাদ কাকে বলে	<i>৯ </i> ৩২
দশজন জগদ্গুক কে কে	३७€
ধ	
ধাৰ্মিক লোক কণ্ঠ ভোগ করে কেন	æ 9

বিষয়	পৃষ্ঠা
-	
নিকাম মানে কি ?	৬
নিকাম কম্মেব মহৎ ফল ত্যাগ ক'ৰে লোকে সকান	কৰ্মেৰ ক্ষুদ্ৰ
কলে আস ఈ হয় কেন ?	29
নিক্ষাম কাকে ৰলে	20F
নিবছণ্ণাত্র কাকে বলে	<i>>%</i> 8
নবধা ভক্তি কি ?	२∉२
19 †	
প্রগ্নতি কি	೨೨
প্রকৃত করা কে ? অর্থাৎ ঈশ্ব না প্রকৃতি ?	৩ ৫
প্রাক্ততিক নির্মটা কি ?	¢ 3
প্ৰায়ৰ ভোগেব বিচাব	t- a
প্রারন্ধ ও পুক্ষার্থের মধ্যে প্রবল কে ?	86
প্রাকৃতিক কাষ্য প্রধানা	225
প্রকৃতিন স্থাষ্ট কৌশল	200
প্রকৃতি ছড় না চেত্তন	58∘
পূজা ও উপাসনাৰ শুদ্ধাশুদ্ধি	> 9 to
প্রাণায়ম এত উপকরে কিসে	• कर
পরোপকাব সবাই কব্তে পারে না কেন	292
ব	
বৃষ্টি ও স্থাটির নিয়ম এক	59

বৈষয়	পৃষ্ঠা
বহু লোকে একই রকম কর্মকল ভোগ করে কেন ?	৯৬
বৈরাগ্য হলেই মন ঈশ্বরেতে লাগে নচেৎ লাগে না	\$ ¢ 8
বিশিপ্ত মনে ভঙ্গন ক'রে কি ফল হয়	तथर
<u>ৰেশ্বচৰ্য্য</u>	\$66
বানরী ভাব ও মার্জারী ভাব কি ?	२৫७
বিষয় বিষ হলাহলের অপেঞা তীব্র	২৫৮
दৈवक्ष्ठं बात्न कि १	5₽8
ভ	
ভগবান যুদ্ধক্ষেত্তে একণ তত্ত্ব জ্ঞানোপদেশ দিলেন কেন ৮	>¢
ভগবান গীতায় অধিকারী ভেদে তদমুকুল উপদেশ দিয়েছেন	>
ভন্ধনের প্রণালী কি ?	590
ভজন সাধন করে কল না হওয়ার কারণ কি	₹8₽
ভক্তিব সন্থ নে ওয়া উচিত	२८५
ভক্তি ও জান স্বতন্ত্ৰ না এক	₹8%
ভক্তি ও জ্ঞানের মধ্যে কোন্টী আগে গাভ ২য়	> 8€
ভক্তিনা হ'লে জ্ঞান হবে না কেন ?	२8७
ভক্তি জিনিষট। কি ?	२8७
ভক্তি ভিন্ন তত্ত্তান হবে ন।	₹8₩
ভক্তি লাভ কি ক'রে হয়	२৫०
ভক্তিতে ভগবানকে শীভ্ৰ পাওয়া যায়	₹€>
ভক্তি কয় প্রকার	२६२

₹@8

ভক্ত ভগবানের বড় প্রিয়

विवय	পুছা
७क्किशैन को यन वृथा	२ ৫ १
ভগবানকে কে শীঘ্ৰ পায়	295
ম্	
শাহ্ষের পরমায়ু কি বাড়ে কমে ?	¢8
মন কি কাজ কর্বার কর্তা ?	३ ६
মহয় কর্মান্তল ভোগ করে ইতর প্রাণী করে না কেন ?	द्ध
মারামুগ্ন সংসারী লোকের উপার এবং কর্ত্তব্য কি ?	>8২
মন্ত্ৰহোগ	> 6 %
মান্তাহোহ কার বেশী	2%0
মহাপাপীকেও কি দয়া করা উচিত	২৬৯
মুক্তি কাকে বলে	حوہ
য	
বোপবাশিছের সৃষ্টি কেন হ'ল	১৬
য্ক্তি তর্কের দারা ভগবদ্ তত্ত্বের মীমাংসা হয় না	२७
যমালয় বিষয়টা কি	> 0 %
ৰোটক ভাবে উপাসনা ক'ব্লে কি ধল হয় ?	7 128
যোগ মানে কি	2 Pd C
যোগ কত ব্ৰক্ষ আছে	ን ৮৫
ষজ্ঞ মানে কি	२५७
র	
রাঞ্জ্যোগ	১৯৪
ব্লাক্তসিক দান	23.■

विषय	পৃষ্ঠা
व्य	
লোকের কর্মফল বা সংস্কার কি রকমে ক্ষয় হয়	¢٤
লোকে পাপ কর্ম করেও স্থখ ভোগ করে কেন ?	ee
লোকের কল্যাণের আশা কোখায় গ	७•
लाटकंत्र ऋवृष्कि इत्र किरम ?	۵.
লোকে ভগবানের শরণ নেয় না কেন ?	>&>
नंब्रत्यात्र	>6<
লগ্নী কার উপরে সদয় থাকেন	२१५
26	
শাস্ত্রোক্ত উপদেশ ও গীভোক্ত উপদেশের ফলের ভারতম্যেব	কোৱণ কি ১৮
শাস্ত্রগ্রহ মধ্যে কোন্ গ্রন্থ শ্রেষ্ঠ	>>
শ্রীকৃষ্ণ ও গাতার মাহাখ্য	२२९
শুদ্ধাহৈতবাদ ও বিশিষ্টাহৈতবাদ কাকে বলে	y y ¢
_	
म	
সংসাবধর্ম ন। ক'রে কেবল ভক্তিলাভ করাই কি এ জীবনে	ৰ কৰ্মব্য ৩
স্টের কোন ইতিহাস পাওয়া যায় না	9
স্থ হঃখাদি যদি শাআ্বায় স্পাৰ্শ না হয় তা হ'লে ধৰ্ষ বিষাদা	দিতে
আত্মাকে বিকারগ্রস্ত দেখায় কেন ?	84
মুখ তুঃথ অনুভবে আদে না এমন মানুষও আছেন	89
সপ্তলোকের কার্য্য কি এক প্রকৃতির দারাম্ব হয়	322
সাধারণ লোকের তম্বজ্ঞান লাভের সম্বাবনা নাষ্ট	203

विष ष्ठ	পৃষ্ঠা
দংসার ভ্রমণাত এই শারাত্মক ভ্রমের কাবণ কি গ	<i>১৩৩</i>
সন্ধ্যাদি উপাসনা কর। কর্ত্তব্য কিনা ১	245
मभाधि	からく
সাবনাসদ্ধ জ্ঞান ও শাস্ত্রসিদ্ধ জ্ঞানে পার্গক্য কি ৮	८०३
সাল্লিক দান কাকে বলে	२५१
সপ্তণ ও নিপ্ত'ণ ব্ৰহ্ম ও ঘনব্ৰহ্ম কাকে বলে গ	२ २ 8
সন্ত্ৰণ উপাসনা ও নিৰ্দ্তণ উপাসনায় পাৰ্থকা কি 🗸	२७५
স্ষ্টিভন্	২ ৩৬
সিজ মহাত্মাদেব সমদশিতা	२७२
সাধারণ লোকেব কি বকম চলা উচিত	<i>२७</i> ७
<u>হ</u>	
হঠযোগ	3 ৮9

তত্ত্-কুসুম।

প্রথম দিন।

শিশ্য। ওকদেব। অনেক দিন হ'তে আমাৰ মনে সংশয় হ'লেছে, এবং দেই সব সংশয় মেটাবাৰ জন্ত পণ্ডিভদেব নিকট অনেক প্রশ্নপ্ত ক'বেছি, কিন্ত তাবা ধা বলেন আমি তা ভাল ক'রে বুরুতে পাবি না। এমন কি, অনেক সময় তাঁদেন বলা শদেব অর্থও বৃরুতে পাবি না, ভাবেব ত কথাই নাই তাব কাবণ কি ?

গুক। পণ্ডিতেবা সংশ্বত ভাষায় নানা শাস্ত্রগুল পড়েন স্কুত্রাং সংশ্বত ভাষার চচ্চা তাবা বেশী ক'বে থাকেন। সেইজন্ম শাস্ত্রীয় বিষয় বলবাব সময় প্রায় সংশ্বত শক্ষর ব্যবহাব কবেন। তুমিত সংশ্বত জান না, কাজেই সে সব ব্রুতে পাব না। আবাব অনেক পণ্ডিত এমনও আছেন যে, নানা শাস্ত্রে নানা মত পড়েন ব'লে নানা বৃদ্ধিবিশিষ্ট হন। তার মানে এই যে, বৃদ্ধি নানাদিকে যায়, একটাব উপব নিশ্চয় হয় না, স্ত্রবাং শাস্ত্রীয় বিষয় বল্বাব সময় সেই বৃদ্ধিব বশবর্ত্তী হ'য়েই ব'লে থাকেন, অর্থাং নানামত মিলিয়ে বলেন। কাজে কাজেই ভাবগুলি আঁকা-বাঁকা হ'য়ে পড়ে, সেই জন্ম তোমার মনে প্রবেশ হয় না এবং ভূমিও বৃধ্তে পাব না। সিধা হ'লে তবেত সেলায়।

শিষ্য। আমি শাস্ত্রটাক্স পডিনি আগনাব শব্দ নিয়েছি, আগনিও



আমাকে কোন শাস্ত্রগ্রন্থ পড়্ভে নিষেগ কবেন। কেবলই বলেন, ভগবদ্যীতা পড়। এখন আমাব উপায় কি হবে ?

শুক। ভোমার কলানেব জন্তই ভগবদগীতা পড়তে বলি। কাবণ, সকল শাঙ্গের যা সার তা এক গীতাতেই আছে, স্ক্তরাং এক গীতা পড়লেই সব শাস্ত্র পড়ার ফল হয়, ববং বেশী ফল হয়। কাবণ, শাস্ত্র ছাড়াও জীবেব পবম কলাাণকব উপদেশগুলি অধিকাবাড়েদে ভগবান স্বাং শ্রীমুখে যা বলেছেন তাব আব তুলনা নাই। পক্ষান্তবে, ভির ভিয় শাস্ত্রগন্থ প'ডে সারভাগ গ্রহণ কবাও সাধাননের পক্ষে সন্ভবপব নয়, বেহেতু, শাস্ত্রজ্ঞ ভিন্ন শাস্ত্রানভিজ্ঞ লোকে সাবভাগ বেছে নিতে পাবে না। আবাব শাস্ত্রজ্ঞ পোকেব পক্ষেও বছ শাস্ত্র মন্থন ক'বে সাবভাগ গ্রহণ করা নিতান্ত অসম্ভব। কাবণ, তা বছ সময়সাপেক্ষ, কাঙেই এজীবনে কুলার না, কেননা, একাবেব পোক স্বলায়। সেইজন্ত পবম দল্লাল পরমাত্রা জীবেব কলাাণ কামনায় গীতার গ্রী বকম ভাবে উপদেশ মত চল্লে যক্ত শীন্থ জ্ঞানলাভ হয়, এমন আর কোনও শাস্ত্র্রাবা হর না। এখন বৃন্তে পাব্লে কেন ভোমাকে গীতা গঙ্গে বলি, ভোমার কানাণের জন্ত্রী বলি। অতএব সম্পূর্ণন্ধে গীতার আশ্রেষ নেও।

শিশা। শীতাৰ মাশ্ৰয় নিগে তবে আমাধ্ৰ ক্লাননাভ হবে গ

গুক। নিশ্চয় হবে। কোন একটা স্থানে যেতে গেলে একটা নির্দিষ্ট বাস্তা ধ'বেই বেতে হয়। তা না ক'বে, এ বাস্থায় খানিক ও বাস্তায় খানিক কার গালায় খানিক কার গালায় খানিক কার গালায় থানিক কার গালায় গালায় গালাক কারেত গোলা ভগবদ্গীতাব কথিত বাস্তাই সর্বাপেকা সিধে ও নির্কণ্ডব। এখন তোমাব সংশয় কি বন। আমিএক জগবদ্গীতা অবলম্বন ক'বেই তোমাকে সব বোঝাতে চেষ্টা কব্ব।

শিষ্য। কেন আমবা এ সংসাবে এসেছি, আমাদেব এ জীবনেব উদ্দেশ্য কি এবং আমাদেব এজীবনেব কর্ত্তব্যই বা কি ?

পুক। ফলেব আকাজ্ঞা বেখে কথ্য করলে, সেই কথ্যক ভোগেব হন্ত এই ভোগায়তন শ্বীব ধাবন কবৃতে হয়। পাপ হ'ক আব পূলা হ'ক উভয়বিধ কথ্যক ভোগেব জন্তই জন্মগ্রহণ কবৃতে হয়। শান্তে বলে চোবাশী লাথ বোনী ভ্রমণ ক'বে সন্ধাশেষে মনুষ্য যোনাতে জন্ম হয়, এবং পুক্ষার্গ অবলম্বন ক'বে সাধনা কবৃলে ইথবকে ভেনে আত্যন্তিক হঃথ নিবৃত্তি হথ এবং প্রমানন্দ লাভ হয়। কেননা, জন্ম মৃত্যুব যন্ত্রণা আব ঘাবে না। অতএব ঈশবকে জেনে চিবকালেব জন্ত আত্যন্তিক হঃথ নিবৃত্তি কবাই এজীবনেব উদ্দেশ্য। এবং সেই অবস্থা লাভেব জন্ত যে কোন উপায়ে হ ক ভগবছক্তি লাভ ক'বে তত্ত্বানেব অধিকারী হওয়াই এজীবনেব কন্তব্য।

শিষ্য। ৩০০ সংসাবধশ্ম না ক'বে কেবল ভগবঙ্জি লাভ কবাই কি এজীবনেও কন্তব্য ?

ওক। সংসাব ধন্ম ভিন্ন মালুষেব উপায়ই নাহ। সংসাব ধন্ম না ক্ৰলে লোকেব একুল ওকুল ত্ৰুল যায়।

শিষ্য। বলেন কি মশায়। সংসাব না ছাড়লে কি কখন ঈশ্বকে পাও্থা যায় ? •বে ৭ত যে সাবু সব সংসাব ত্যাগ ক'বেছেন তাদেব কি চকুল গিয়েছে ?

গুক। থাবা প্রাক্ত সাধু তাঁদেব ছকুল নিশ্চরত যায়নি। যদি ওাঁদেব
চকুলই যেত তা হ'লে ভগবান শঙ্কবাচায্য, কবিব নাস গুক গোবক্ষনাথ,
গুক নানক, ত্রৈলিক স্বামী, মহাত্মা তুলসীদাস প্রভৃতি মহাত্মাদেব দাবা
সংসাবেব এত উপকাব সাধিত হত না এবং লোকেও অলৌকিক যোগ
বিভৃতি দেখতে পেত না। তবে "উদ্ব নিমিন্তং বহুত্বত বেশঃ" যাবা

তাদের তুকুল নিশ্চরই গিয়েছে। কেবল ধর্মেব বাঁড়েব মত দায়িওহীন হ'য়ে নিক্ষাবস্থায় জীবন কাটাছে। অথবা "অশক্তি মান ভবেৎ সাধু" মতে যাবা সাধু তাদেবও তুকুল গিয়েছে।

শিয়া। সাধুব মধ্যে বে এত বক্ষাবি আছে তাত সামি জান্তাম না।

গুক। হঠাং সংসাব ভাগে ক'বে কৌপীন পবলে কি মাথামুড়িয়ে বঙ্গান কাপড পব্লে অথবা ভটা রাখাল দাধু হয় না। সংসাবে থোক তহপয়ুক্ত আচৰণ ও কল্ম কৰাত পাৰ্লে তবে প্রকৃত সাধু হ'তে পাবা ষায়।

শিষ্য। গৃহাদেব কি বকম আচবণ ও কম্ম কব্লে প্রকৃত সাধু হ'তে পাবা যায় ও তত্ত্তানেন অধিকাবী হওযা যায় ?

গুক। দেখ, চিত্তশুদ্ধি হচ্ছে তত্তজ্ঞান লাভেব একমাত্র উপায়। চিত্ত শুদ্ধি হ'লেই ভক্তিলাভ হয়, তথন তত্ত্তজ্ঞান আগনিই প্রকাশ পায়। এই চিত্তশুদ্ধি লাভেণ জ্ঞাই শাঙ্গে গৃহাদেব পক্ষে যজ্ঞ, দান ও তপ অনু-ষ্ঠানেব ব্যবস্থা আছে। ভগবান এ গীতাব ১৮শ অধ্যায়েব ৫ন শ্লোকে বলেছেন বে,

যজ্ঞ দান তপঃ কৰ্ম্ম নত্যাজ্যং কাৰ্য্যামেৰ তৎ। যজ্ঞোদানং তপশ্চৈৰ পাৰ্বনানি মনাধিনাম্।

যদ্ধনান ও ৩প কদাচ ত্যাগ কৰা কৰ্ত্তব্য নয়। ইহাদেৰ সন্ত্যান কৰাই শ্ৰেরঃ, কেন না, এই তিনটি কাল্পে মানুষকে পৰিত্ৰ কৰে। অৰ্গাৎ এই তিনটি বিৰেকীদেৰ চিত্তশুদ্ধিৰ কাৰণ। অত্তৰৰ সংসাৰে থেকে নিক্ষাম ভাবে এই তিনটিৰ অমুষ্ঠান কৰা অবগ্ৰ কৰ্ত্তব্য। যে ব্যক্তি এই অব্ধা অনুষ্ঠেম কৰ্মা না ক'বে সংসাৰ ত্যাগ কৰে, তাৰ সে তাাগ বুধা হয়। কাৰণ চিত্তক্তি ভিন্ন ভক্তি কিয়া ভক্তজান লাভেৰ সন্তাবনা নাই। অন-ধিকাৰী হ'মে সংসাৰ ত্যাগ কন্লে ভাৰ ফল এই হয় যে, বদিও কেও কোন কাৰণ বশতঃ সংসাৰ ত্যাগও কৰে, তা হ'লে তাকে ত্যাগঞ্জনিত বিচ্চেদ বন্ত্ৰণা নিশ্চয়ই ভোগ কৰতে হয়। সংসাৰে জ্বেগ থেকে অৰ্থাৎ আক্কি থেকে সংসাৰ ত্যাগ হয় না। সংসাৰে যুমুলে তাৰ মানে সংসাৱে অনাসক্ত হ'লে তবে গা সংসাৰ ত্যাগ হয়।

শিঘা। সামি এই বিধয়টা ভাল মত বুঝ্তে পার্লাম না।

গুল। মনে কর একটা অজ্ঞান বালক একটা খেল্না পেলে তাতে ভাবি আসক হয়। কেন না, অজ্ঞান বালকেব সভাবই ভাই। বালক কি বকন আসক্ত হয় গলে খেল্নাটা সমস্ত দিন নিম্নে খেজায়, এক মুহ্তুত্বে জন্তেও ছাডে না, কেও চাইলেও দেয় না, কিন্তু সন্ধ্যাব পৰ বালক যথন খুমিরে পড়ে, তথন ভাব অতি প্রিয় খেলনাটা আপনিই হাত থেকে খ'সে যায়। সাংসাবিক লোফ অজ্ঞান বালকেব মত খেল্না সদৃশ সংগাবকে এটে ব'দের কেবল আমাব সামাব ক'বে প্রাণান্ত হছে। নিচিত হ'লে, আঁত প্রিয় খেল্না যেমন বালকেব হাত থেকে আপনিই খ'সে যায়, তেম্নি সংসাব স্বোলনিই খ'লে যায়, অর্গাৎ সংসাব ভ্যাগ হয়। সংসাব স্বোলনিই ভাত থেকে আপনিই খ'লে যায়, অর্গাৎ সংসাব ভ্যাগ হয়। সংসাব স্বোলনিতিত হয় কে গভগবদ্তশ্বে জাগ্রত হয় যে। ভগবান শীতাব হয় অধ্যায়েন ৬৯ প্রোকে ব'লেছেন যে,

যা নিশা সর্বস্থৃতানাং তস্তাং জাগর্ত্তি সংযমী। যস্তাং জাগ্রাত ভূতানি সা নিশা পশ্যতো মুনেঃ॥

অজ্ঞ লোকের পক্ষে যা (আত্মনিপ্রা) নিশা স্বরূপ তাতে (স্বাত্ম-নিষ্ঠাতে) জ্বিতোক্তর ভগবৎপ্রায়ণ ব্যক্তিগণ জাগ্রত থাকেন। যাতে (ষে বিষয়নিষ্ঠাতে) সর্বভূত জাগ্রত পাকে, তা পেই বিষয়নিষ্ঠা। আত্মন্দী জিতেন্ত্রিয় মূনিব পক্ষে অর্থাৎ ভগবদ্পবায়ণ মহাত্মার পক্ষে নিশা প্রবাপ। ভগবদ্বাকোন তাৎপর্যার্থ এই যে, আমাদের জ্ঞাতরা তত্ত্ব ছইটা সংসাবতত্ব ও ভগবদ্তর। এখন প্রাকৃতিক নিয়ম এই যে, ষধন বিনি যে তত্ত্বে পাক্বেন তখন তিনি সেই তবে জ্লেগেই থাকবেন, স্কৃতবাং সেই সঙ্গে মালে অপন তত্ত্বনীতে নিজিতই থাক্বেন। তাব মানে এই যে, যিনি যখন যে তবে পাকেন তখন তিনি সেই তত্ত্বেই ম'জে থাকেন, বং অপন তত্ত্বীতে নিজিত থাকেন অর্থাৎ তাব কোন খবন বাখেন না। এব সোজা মানে এই যে, সংসাবে যিনি আসক্ত ঈশ্ববেতে তাব আসক্তি জ্মিতে পাবে না, আব যিনি ঈশ্ববেতে আসক্ত সংসাবেও তাব সাসক্তি জ্মিতে পাবে না।

শিষ্য। আপনি যে যজ্ঞ দান ও তপ নিদ্ধাম ভাবে কব্তে হবে ব'ল্-লেন, নিদ্ধাম মানে কি ?

গুক। কোন ফলেব আকাজ্জার, স্বার্থেব জন্ত, অনুবোধে প'ডে, ভয়ে. থাতিনে, বশেব লালগার অথবা বভ মান্ত্রী দেখাবাব জন্ত যজ্ঞ দানাদি না ক'রে কেবদ কর্ত্তবা বোধে বা দয়াব বশবর্ত্তী হ'রে, ঈশ্ববেব প্রীতার্থে।কন্ধা ঈশ্ববেতে কর্ম ফল সমর্পণ ক'বে যে কর্ম কবা গার তাই নিক্ষার। ফলতঃ নিক্ষা কর্মে ফলেব আকাজ্জা কি কোন বক্ম মতলব আদৌ থাক্বে না! ভগবান গীতাব ২য অধ্যান্ত্রের ৪৭শ প্রোকে ব'লে-ছেন যে,

> কর্মণ্যে বাধিকারস্তে মা ফলেম্ব কদাচন। মা কর্মা কলহেতুভূমা সঙ্গোহস্ত্র কর্মণি॥

ছে অৰ্জুন। কমে তোমাৰ অধিকাৰ হ'ক কিন্তু কৰ্মফলে বেন কদাও

অধিকাব না হয়। কর্মাফল যেন তোমাব কর্মে প্রবৃত্তির হেতু না হয়, অর্থাৎ ফলেব লোভে যেন কর্ম না কর, এবং অকর্মেণ্ড তোমার যেন আদক্তি না হয়, অর্থাৎ কন্ম ত্যাগও না কব। কর্ম নিশ্চয়ই ক'রতে হবে কিন্তু নিদ্ধাম ভাবে।

শিষ্য। এয়ে ভাবি বিপদেব কথা দেখছি। কর্মা কব্তে গেলেই ফল কামনা মনে আপনিই উদয় হবে, বরং কর্মা না করাই ভাল।

গুরু। কন্ম না ক'রে তুমি এক মুহুর্ত্তও পাক্তে পার কৈ ? তাতেই ত গীতার ৩র অধ্যায়েব ৫ম শ্লোকে ভগবান ব'লেছেন ধে,

> নহি ক্ষণমপি জাতু তিষ্ঠত্য কর্মা কৃৎ। কার্য্যতে ছবশঃ কর্মা প্রকৃতিকৈঞ্জ গৈয়॥

কর্ম না ক'রে কেছ কণ্যাত্র থাক্তে পারে না, প্রকৃতিজ গুণেব বশে সকলেই কম কর্তে বাধ্য হয়।

শিষ্য। সন্মাসীবা কিন্তু কর্মত্যাগ কবেন, এবং জ্ঞানীরাও ত কর্ম কবেন না।

গুরু। কশ্ম কেছই ত্যাগ কব্তে পাবে না। তবজ্ঞানমার্গাবলমীর ঈশ্ববোপাসনা কর্ত্তব্য কর্ম্ম, তাঁবা কি তা ত্যাগ, করতে পারেন ? তবে তাদের জীবনেব উদ্দেশ্য এবং কর্ত্তব্য কি ?

কন্ম কেহই ত্যাগ কব্তে পাবে না। জ্ঞানী হ'ন আব জ্ঞান হ'ক, কন্মত্যাগ কবার সাধ্য কারও নাই। সেই জ্ঞা ভগবান উপরোক্ত শ্লোকে ঐ কথা ব'লেছেন। তাব তাৎপর্যার্থ এই যে, ভগবান ব'ল্ছেন হে অর্জুন। তুমি বল্তে পার বে জ্ঞানের শ্রেষ্ঠন্ব সল্বেও আমি তোমাকে কর্মা কব্তে ব'লছি কেন দ কর্মা না ক'রে তুমি যে থাকতে পার না। প্রকৃতি তোমাকে ছাড়বেন না। শ্বাস প্রশ্বাস, খাওয়া, মলমুত্র ত্যাগ প্রভৃতি

এগুলি কি কমা নয় ? স্থাসী এবং জ্ঞানীই কি এই সকল কর্ম ত্যাগ কব্তে পাবেন ?

শিষ্য। যে সকল কথা প্রকৃতির বণ হ'য়ে ক'বতে হবে তা ত্যাগ কবা যায় না বটে ? কিন্তু যে ওলি স্বেচ্ছাবান কথা সে গুলি কি আব ত্যাগ কবা যায় না ? বেমন যাগযজ্ঞাদি। আমাদেব সনাতন ধণ্যে বেদবিহিত শ্রোত কথা, ও শ্বতিবিহিত সাজ কথাকেই সাধাবণতঃ কথা বলে। স্বতবাং ঐ সকল কথা না ক'বে কি জীবনবাত্যা নিকাত হয় না /

গুক। ভগবান গীতায় যে কমা শক ব্যবহাৰ ক ব্যেছন ভাতে কমা সাত্ৰকেই বুঝান। কেন না তথ্য অধ্যাবেৰ ৫ম প্লোকে বললেন বে, কমা না ক'বে। কহ ক্ৰমাত্ৰ থাকতে পাবে না, এবং তাৰ পাবেৰ ধোকে ব'ন্ছেন যে,

কম্মোদ্রযানি সংগম্য য আন্তে মন্দা স্মবণ। হন্দ্রিযার্থনা বিমৃতান্মা মিধ্যাচারঃ স উচ্যতে॥

যে বিমৃত্য আৰু কণ্ডে কিন্ত গুলিকে সংযত ব'বে থাকে কিন্তু মনে মনে হিন্তি-মেব ভোগ্য বিষদ সকল স্থবণ সর্গাং চিপ্তা কলে সে মিথ্যাচাবী। সেই জ্বস্তুই ভগবান মার্জুনকে গাঁতাৰ ৩২ মানোবে ৪২ লোকে বুঝিয়েছেন যে,

ন কথ্মণা মনাবস্তা লৈমকৰ্ষ্যাং পুৰুযোহগ্নতে।

ন চ সংখ্যাসনাদেব সিদ্ধিং সমণি গচ্ছতি॥

কম্মেব অনুঠান না কবলে লোক নৈদ্ধা প্রাপ্ত হয় না, এবং কম ত্যাগ

কবলেও সিদ্ধাপাথ হওরা যায় না। ভগবদ্ বাকোর তাৎপ্যার্থি এই য়ে,

কবন না ব'লে কোন কম্মেব অনুষ্ঠান না কবলেও প্রকৃতিজ্ঞ প্রাণ কর্ম্মে

প্রপ্ত কবায় এবং কম ত্যাগ কবে মনে বিনয় বাসনা আসাতে মিথ্যাচাবীও হ'তে হয়।

শিষ্য : কর্ম্ম ধর্মন প্রাক্তে পক্ষে ত্যাগ কবা যায় না এবং বাহতঃ
ত্যাগ কব্নেও যথন সিদ্ধি পাওয়া যায় না, তথন মানুষেব কর্তব্য কি ?
গুকা। সেই জন্মইড ভগবান গাতাব ওয় মধ্যায়েব ৭ন শ্লোকে বলেছেন থে,

যশ্বিক্রিয়ানি মনসা নিষম্যাবভতেহঅর্জুন। কর্ম্বেক্সিটেয়ঃ কন্মযোগ মসক্রঃস বিশিয়তে॥

হৈ অৰ্জুন। ইন্দ্রিয় সকল মনেব দ্বানা নিয়ত (সংষ্ঠ) কবে অনাসক্ত ভাবে কম্মেক্তিয়েব দ্বাবায় দে কর্মযোগেব অন্তচান কবে সেই শ্রেণ্ড। ভগ্বধাব্যেব তাৎপদ্যার্থ এই যে মানুষকৈ সমস্ত কম্মই অনাসক্ত ভাবে কবতে হবে। কাবন, আসক্তিতেই ফল কামনা ও গ্রহংকাব আসে। নিজাম ভাবে বিদ্যানা ববলে কথনই চিত্তভাদ্ধি লাভ হব না। অত্তবে সকলেব নিশ্বন ভাবে কম্ম কবা কত্তব্য।

শিয়া। গৃহ)বা নিকাম কামোব ধাথা চিত শুদ্দ ক কে ভাক্ত এবং জ্ঞান লাভ কববে। তা -'লে গৃহস্ক ভিন্ন কি সভে ক নিকাম কমা হবে না গ

ওক। না-তা হবে না।

শিষ্য। কেন ? অন্ত আনেমে গেলে মানুষত বদল হয় না, তবে না ২ওযাৰ কাৰণ কি ?

ওক। কাবণ, তাাগীবা নিশা ক্ষােব সকল স্থবিধা পান না।
গৃহানা ধন, লােকজন আথ্যায়স্থল প্রতৃতিব দ্বাবা নিদাম ক্ষােব স্থবিধা
পাষ। আব এই সব স্থবিধা আছে ব'লেই গৃহীবা নিদাম ক্ষামােগব
অধিকাবা, এবং অভাভ কাবলেও গৃহীবা নিদাম ক্ষােব অধিকাবী।
পবস্ত তাাগীব অধিকাব অভাৰণ ধাব ধাতে অধিকাব আছে তাব তাই
কব্লে তবে ক্লাাণ হয়।

শিষ্য। আমি এই বিষয়টা ঠিক বুঝুতে পাব্লাম না।

গুরু। গৃহীরা মায়ামর সংসার ধর্মে থাকে, স্থানাং স্থা জগতের মায়াজনিত যাবতীয় কর্ত্ব্য কর্মাই কব্তে হয়। এমন কি, জজদেহ সম্পাল জোগাদি কাঞ্জ বাদ দেবাব যো নাই। গৃহীবল্প কর্মাই একমাত্র কবণীয়। কর্মাই যথন একমাত্র উপায়, তথন সেই কম্ম যাতে কল্যাণ প্রদাহর গৃহীদেব তাই কবাই কর্ত্ব্য। সেই জন্ম গীতাতে নিদাম কর্ম্মের এত উপদেশ আছে ও প্রশংসাও আছে। প্রস্তু ত্যাগীকে অধ্যাত্ম জগতেব কর্ম্ব্য সব কর্তে হয় ইক্রিয় সংযম ক'বে মনেব একাপ্রতা সাধন কর্তে হয়।

শিশ্য। আপনি ব'লছেন বটে বে ত্যাগীব নিক্ষাম কম্মেব স্থবিধা নাই কিন্তু আমাব গাৰ্হস্থ্য ধর্ম ভাল লাগে না। কাবণ, গৃহস্তদেব মধ্যে মিথা। প্রবঞ্চনা শঠতা প্রাভৃতি দোষগুলি বড্ড বেশী। তাতেই ব'লছিলাম যে সংসার ত্যাগ ক'রে কি আর নিকাম কর্ম হ'তে পাবে না ?

প্রক। তুমি নিতান্ত নির্বোগ। গার্হস্য থর্মের প্রতি তোমাব বিষেষ জন্মছে। দেটা কিন্তু ভাল লক্ষণ নয়। কোন আশ্রম, কোন ধর্মা, কোন দেবতা, কোন প্রাণী কি যে কোন বস্তব প্রতি হিংসা হের কব্লেই হৃদর কলুষিত হয়। স্থতরাং আত্মার অংগাগতি হয়, সেই জয় হিংসাদিকে পাপ বলে। তুমি এখন থেকে যাদ হিংসাদি দোষগুলিকে প্রশ্রম লাও, তা হ'লে কোন কালেই তোমার চিত্ত শুদ্ধি লাভ হবে না, কাজেই আত্মাব অংগাগতি হবে। পক্ষান্তবে, তুমি যে ঘোর আসক্তিমান লোক তারও প্রমাণ পাওয়া যাছে। কেননা, আসক্তি থেকেই হিংসা, বেষ ও কোণাদি উৎপন্ন হয়।

শিষ্য। আদক্তি থেকে হিংসা, হেষ ও ক্রোধাদি উৎপন্ন হর এটা বড আশ্চর্যা কথা। আদক্তি মানে মনেব টান্, তাতে প্রীতিই বাডবে তা না হু'ঝে ঠিক বিপবীত হচ্ছে ? শুক। মনে কর কোন একটা জিনিবেব প্রতি তোমাব আসক্তি আছে, এবং তুমি সেই জিনিবটা দেখ্লে আনন্দ পাও ব'লে সর্বাদা তাকে দেখ। কিন্তু কোন এক ব্যক্তি ঐ জিনিবটা ভোমাব্ দৃষ্টি থেকে তফাৎ ক'বে ফেল্লে। এখন ভোমাব আসক্তিব স্লোভ বেমন প্রতিহত হ'লো, আব অম্নি সেই ব্যক্তিব উপব তোমাব হিংসা দ্বেব, ক্রোবাদি উৎপন্ন হবে।

শিয়া। হাঁ, তা কতকটা ২য় বটে, কিন্তু এ বিষয়টা তেমন নর। আমি গৃহস্থদেব মধ্যে মিথ্যা প্রবঞ্চনাদি দোষগুলি স্বচক্ষে দেখেছি ব'লেই খ'ল্ছি।

শুরু। বেশ কপা। আছো, বল দেখি তুমি যে দলে এসেছ সেই
সাধুব কি দশা ? বোব হয় তুমি তা জান না। আম বছদিন ধ'বে
বছ সাধুব সঙ্গে মিশেছি, বছ সাধুব সঙ্গে দীর্ঘকাল ধ'বে বাস করেছি।
কাজেই তাঁদেব আচাব, বাবহাব, বিভা, বুদি, ও জ্ঞান সম্বন্ধে অভিজ্ঞ ।ও
লাভ ক'বেছি। উপসংহাবে আমি এই সিধ্বান্তে উপনাঙ হয়েছি যে,
সাধু শেলীব মধ্যে সাধু বেশধাবী অসাধুবা যে সকল প্রবঞ্চনা বিশ্বাসঘাতকতা প্রভৃতি পাপাচবণ কবে, গৃহীবা তা স্বপ্নেও কথন কল্পনা কন্তে

भिषा। आश्रीन वरमन कि। श्राधुव मरश्र अमन।।

গুৰু। তবে সাৰে কি আন ভগবান শশ্ববাচাৰ্যা ব'লেছেন বে, "উদব নিমিত্তং বছ ক্বত বেশঃ।"

শিষ্য। গার্হস্থা বশ্মের তন্তটা মামায় ভাল ক'বে বুঝিষে দিন, আমি না জেনে বড অন্তায় কথা ব'লেছি।

গুক। গৃহস্থাশ্রমই সকল লোকেব একমাত আশ্রম সেই জ্ঞা গৃহস্থকে জ্যোগ্রাশ্রমী বলে। ' শিশ্য। কথাটা আমি ভাল ক'বে ব্ৰতে পাৰ্লাম না।

গুক। আমাদেব সনাতন ধর্মে চাবিটী আশ্রম আছে ব্রন্সচর্য্য, গার্হস্য, বাণ প্রস্থ ও সন্মাস। তাব মধ্যে এক গৃহস্থাশ্রমই শ্রেষ্ঠ। কেন না, আর তিনটা আশ্রমবাদীই এক গৃহত্তেব দাবার প্রতিপালিত হন। পক্ষান্তবে, ইহাও দেখা যায় যে, গৃহস্থাশ্রম অপব তিনটা আশ্রমেব বুনিয়াদ স্বৰ্ব। কাৰণ, যে কোন মহাত্মা হ'ন না কেন, সকলেই গুৰুষাশ্ৰমে থেকে আএমোচিত কর্মেন দাবা মহান অবস্থা প্রাপ্ত হ'মেছেন। গৃহস্ত। শ্রম ষ্থম বুনেদ স্থকপ হচ্ছে, তথন বুনেদ্ন। গেঁথে কি আব অন্তান্ত আশ্রমের দালান গাঁথা চলে ৷ অতএর সংসাবে থেকে নিদ্ধান ভাবে আশ্রমোচিত কর্ম করতে থাকলে, ক্রমে চিত্ত শুদ্ধি লাভ হয়, এবং সময়ে ভক্তি লাভ ক'বে তত্ত্বভানেৰ অধিকাৰীও হওয়া যায়। তথন আপনিই একটাব পব আর একটা আশ্রম ছাডিয়ে বায়। তা না ক'বে, স্ত্রী পুত্র ঘব বাড়ী আত্মীয়স্তব্দন সব ত্যাগ ক'বে সবাই সন্নাদী হ'য়ে যাক এটা ঈর্ববের অভ্যিপ্রত নয়। কেন না, তাহলে সংসাব লোপ পায়। সংসাব ি ভাাগেৰ জ্বন্ত কাণ্ডকে স্বতর ভাবে চেষ্টা কব্তে হর না। অর্থাৎ শলা প্রধানন কি কোন বন্দোবস্ত কবৃতে হয় না। যখন বে ব্যক্তিব পূর্ণ বৈরাগ্য আাস তথন তাব সংসাব আপনিই ত্যাগ হয়; এবং প্রবর্ত্তী আশ্রমোচিত ^{#কু}ৰুৰ্ত্তৰ্য কণ্মেৰ জ্ঞান লাভও হয়, পৰে ওদমুসাৰে সাধন কবলে সিদ্ধিলাভও হ'দে খাকে।

শিষ্য। এখন কোন উপদেশ মত চল্লে সংগাবে অনাসক্ত হয়ে বৈবাগ্য প্রাপ্ত হওয়া যায় ? সেইটা আমাকে বলুন।

গুৰু। কেন ? ভগবদ্গীতাৰ উপদেশাহুসারে চল্লে নিশ্চয়ই সংসাবে শ্বাসন্তি থাক্বে না। অতএৰ সকলেবই সর্বতোভাবে গীতোক্ত উপদেশ মত চলা উচিত। শিশ্ব। কেন? অন্তান্ত শাস্ত্রগ্রের উপদেশ মত চন্লে সংসারে অনাসক্ত হবে না তাব মানে কি ?

শুক। তার মানে এই বে, এখনকার মাত্র স্বরায় বোগরুক্ত, অলস ও স্বেচ্ছাচারী এবং ভ্রম প্রমানাদি তমোগুন প্রধান, কাজেই সেরকম লোকেব দ্বাবা মন্ত্রাঞ্জাবনেব কর্ত্তব্য পালন হওয়া এক বক্ষ অসম্ভব, স্বতবাং লোকেব অধ্যোগতিব সম্ভাবনা। তাহ দল্পাব দাগ্যব ভগবান অজ্বনকে উপলক্ষ ক'বে, সংসাবা ও ত্যাগী বাবতীর লোকেব উদ্ধারেব উপায়, অধিকাবী ভেদে ভিন্ন ভিন্ন বক্ষমে অপেক্ষাকৃত সংজ্ব সাবভাবে গীতার নির্দেশ ক'বেছেন।

শিশু। তা হ'লে গীতা ত লোকেব পরম কল্যাণকব পদার্থ দেখাছ। শুক্। ডাত নিশ্চরই। গীতা কে এবং কি উদ্দেশ্যে ব'লেছেন তা জান গ

শিষ্য। গীতা কি উদ্দেশ্যে ব'লেছেন তা জানি নাতবে কে ব'লে-ছেন তা জানি। শ্রীকৃঞ ব'লেছেন।

গুড়। না — একি ফা হ'রে অর্থাৎ বাস্থাপের কি পেরকান-দন হ'রে গীতা বলেন নি, গীতা বলাবাৰ সমর বোগাবলখন ক'বে পূর্ণ বোগেপর সর্মবাপী অবিনাশী প্রবন্ধাস্থকপ হ'রে ব'লেছেন। কাজেই গীতা বড় মিটি, চিত্তাকর্ষক ও কল্যালক্ব। গীতাৰ খনাদর কেও করে না। প্রনাধাব ক্থিত না হ'লে কি আব এমন হয় প

শিশ্য। এখন শ্রীকৃষ্ণ যে অবিনাশা প্রব্রসাম্বরূপ হ'রে গাঁতা ব'লেছেন তা জানা যায় কিলে?

গুক। মহাভাৰতেৰ অনুগীতা পৰাধ্যায়ে সে বিষয়েব উল্লেখ আছে। কুকক্ষেত্ৰেব যুদ্ধ শেষ হ'লে একিফেব হক্সপ্ৰস্থে বাসকালীন একদিন বিকালবেলায় সভামগুপে বেডাভে বেডাভে ভগৰান দ্বাবকায় যাবেন এই কথা আর্জুনকে বলায়, অর্জুন ভগবানকে বল্লেন যে, সথা। আমাব মোহ দূব কববাব জন্ত যুদ্ধক্ষতে যে সমস্ত উপদেশ দিয়েছিলে, আমি ভাব আনেক ভূলে গিয়েছি, পুনবায় আমি সেই সব উপদেশ শুনতে ইচ্ছা করি, অভএব আমায় আবাৰ তাই বল। ভগবান সেই কথা শুনে অর্জুনকে মিষ্ট ভর্মনা ক'বে ব'ল্লেন যে, যুদ্ধক্ষেত্রে আমি যোগাবলম্বন ক'বে তোমাকে উপদেশ দিয়েছিলাম, স্বভরাং দে সব কথা এখন আব হবে না। ভবে এখন আমি যা বাল ভা শোন তাতেও তোমাব মৃক্তি হবে ইভাাদি।

শ্রীকৃষ্ণ হ'রে থে গীতা বলেননি গীতাতেই তাব বথেষ্ট প্রমাণ পাওয়া শার দূরে থুঁজবাব দবকাব নাই। গীতাব ১০ম অধ্যারের বিভূতিযোগে ভগবান বা ব'লেছেন, আমি তা থেকে তোমাকে কিছু বলি শোন। ভগবান বলছেন বে, "অহমাত্মা গুঢ়াকেশ সর্বভূতাশয়স্থিত।" হে অজ্জুন। আমি সক্তৃতে আ্থাক্পে অবস্থান কব্ছি।

"অহমাদিশ্চ নধ্যক ভূতা্নামন্ত এব চ" প্রানি ভূতগণের আদি মরা ও অন্তর্
অর্থাং স্টেক্তিতি ও প্রশারের কাবণ। "আদিত্যানামঞ্চং বিষ্ণু। আদিত্যগণের মধ্যে অর্থাৎ ছাদশ আদিত্যের মধ্যে আমি বিষ্ণু। কন্দাণাং শশ্বর
শ্চান্দি। কন্দগণের মধ্যে অর্থাৎ একাদশ কদ্রের মধ্যে আমি শক্তর 'বাম শক্ত
ভূতামন্তর্।" শক্তধারীগণের মধ্যে অর্থাৎ বোদ্ধাদের মধ্যে আমি বামচন্দ্র। "র্ফীণাণ বাস্থদেবোহন্দি" রফী বংশ অর্থাৎ বছরংশেবং মধ্যে আমি বস্থদের
নন্দন জ্রীক্রন্থ। এখন বিচাব ক'বে দেখ। ভগবান ব'লছেন যে, আমি
ভূতগণের মামা, আমি ভূতগণের স্টি স্থিতি ও প্রলয়ের কাবণ, আমি বিষ্ণু,
আমি শক্ষর এবং বামচন্দ্র ও শ্রীক্রন্থ যে অরতার তাও আমি। বদি শ্রীক্রন্থ
হ'মে গীতা ব'লতেন তা হ'লে তিনিই যে বস্থ্পের নন্দন জ্রীক্রন্থ সে কথা
আর ব'লতেন না। তিনি জ্রীক্রন্থ ও আছেনই, অর্জ্বন ত তা ভানেই,
ভবে আবার আমি বস্থদের নন্দন জ্রীক্রন্থ এ প্রিচন্ত্র দেওয়াব প্রয়েজন কি ? প্রয়োজন আছে। প্রয়োজন এই যে, জীকৃষ্ণ দেই সময়ে যোগাব-লম্বন করত: পরপ্রক্ষের স্থান্ধ বীতা ব'লেছেন, কাজেই ব'ল্ছেন যে তিনিই জীকৃষ্ণ।

শিষ্য। আমি একটা বিষয় এই ভাবছি বে, ভগবান যুদ্ধকেত্তে এরূপ ভাবে তত্ত্বজানোপদেশ দিলেন কেন ? এই উপদেশে দেখছি মান্থবেব হিৰ্ভ-কব কোন উপদেশই বাদ পডেনি দেখছি।

গুরু। সকল বিষয়ের তাৎপর্যার্থ অর্থাৎ মৎলব ব্যুতে চেষ্টা ক'ব্তে হয়, তাহ'লে আসল তর হাদয়লম হয়। অর্জ্জ্নের শোক ভগবান ইচ্ছাত্তই দুর কব্তে পারতেন। তা না ক'রে, অর্জ্জ্নকে উপলক্ষ্য ক'রে সংসাবে সকল শ্রেণাব লোকেবই ভ্র-য়ন্ত্রণা থেকে মুক্ত হওয়ার উপায়, শাস্ত্র সকল মন্থন ক'বে এবং তাব সঙ্গে নিজেব মন্ত মিলিয়ে অপেকায়ত সহজ্যাধা ভাবে উপদেশ দিয়েছেন কেন ? কাবণ, এগতেব সকল, লোকেরই কল্যাণেব জন্ত গীতাষ ঐ পব উপদেশ দিয়েছেন, কেবল এক্লা অঞ্জুনেব জন্ত নয় ।

শিশ্য। আমার মনে একটা সংশয় এই হচ্ছে বে, ভগবান গীতাতে দব শাস্ত্র বচনইত ব'লেছেন, এবং দে দব শাস্ত্র গ্রন্থও আছে, তথন আধার দে বিষয় গীতায় আগাদা ক'বে বল্বাব কি প্রধোজন।

গুরু। প্রান্তেন এই যে, ঈশ্ব লীলাব জন্ম জাবকে মান্ধনির জাশের যন্ত্রণাদায়ক সংসাবে পাসিয়েছেন বটে, কিন্তু তিনি বডই দ্বাল্, তাতেই আবাব দ্বা ক'রে সেই অশেষ যন্ত্রণা থেকে মহাপাতকীরও উদ্ধাবের উপার গীতার নিদ্দেশ কুরে দিয়েছেন।

শিশু। ভূপবান কৈন যে গীতা ব'লেছেন তা বুঝ্লাম। কিন্তু আর একটা সংশয় এই হচ্ছে যে, ঈশ্ব দয়াময়, সেই দয়া হেতুই তিনি জীবের কেবল কলাণে কামনাই ক'রে থাকেন, এবং সেই কল্যাণের জন্মই তিনি গীতা ব'লেছেন আপনি ব'ল'ছেন। গীতাত প্ৰায় চাব হাজাব বছব হ'ল ব'লেছেন, কিন্তু মান্ত্ৰয়ত সেই সনাতন কাল থেকেই আছে তা হ'লে এর আগে দগবান জীবেব ক্ল্যাণেব জন্ম কোন দ্যাপ্ৰকাশ ক্ৰেন্নি কেন্

গুক। হাঁ, সকল যুগেই ভগবান কোন না কোন অবতাবকাণে অবতীর্ণ হ'য়ে জীবেব কল্যাণকব উনদেশ সকল দিয়েছন। ধেমন সত্য যুগে কপিলম্নি সাংখ্য যোগ ব'লেছেন। ত্রেভারুগে বাম অবতারেও যোগধাশিষ্ঠেব স্থাই ক'বেছেন, কিন্তু তাতে তেমন না হওয়াতেই ক্ষেণবতাবে আবান এই গীতাব স্থাই ক'বেছেন।

শিষ্য। বন সবতাবে যোগবাশিষ্ঠেব স্টি কি ক'বে ক'বলেন, কিন্তু তাতে তেমন ফল না হওয়াতে কুঞাবতাবে আবাব গীতার স্টি ক'বলেন, এ বিষয় ভেগেনা বল্লে আনি বিন্তু বুঝ্তে পাব্ছিনা।

গুক। ভগবান বামচক্র ষৌবনেব প্রাবন্তে তীর্থ প্যাটনে যান, কিম্ব যথন তীর্থ পর্যাটন ক'বে অযোধ্যার ফিবে এলেন, তথন তাঁব মনে বৈনাগা জন্মছে। তিনি পাহাব বিহাব, বসন ভূষণ সব ভ্যাগ ক'বে বিমনা হ'য়ে প'তে প'তে অমুক্ষণ এই চিন্তা ক'রতে লাগলেন যে, সংসান সমন্তই মিথ্যা এবং মনে মহনহ এই বিচান কবাতে, ক্রমে ষাবতীয় পার্ণিন পদার্থেব প্রতিত মনাসক্ত হ'য়ে তীত্র বৈবাগ্য প্রাপ্ত হ'লেন। এখন আহাব ভ্যাগ কবাতে শ্বান ক্রমে শার্ণ হ'য়ে এল এবং চেহাবাও খানাপ হয়ে গেল। ইতিমধ্যে একদিন বিধামিত্র ঋষি মহারাজ দশবণেব নিকট উপস্থিত হ'লেন। কাবণ, নামচক্রকে নিয়ে গিয়ে তান বজের অনিষ্টকাবা নাক্ষম গুলাকে বধ কবাবেন। ভিনি নিজেই সমস্য বাক্ষ্ম সংহাব কবতে পাব্তেন, কিয় তা হলে তাকে ক্রোধের ব ক্রমিত্র ছবাং ভাতে ভাব তপ নই হবে, কাজেই বামচন্ত্রের ছাবায় বব ক্রাবেন। ভাব প্র

মহারাজের আজ্ঞারদারে বামচক্ত রাজ্যভার আনীত হ'লে তাব শরীরের नीर्नातका (मर्थ मजान्य मकरण व्यवाक् इ'राजन। कात्रण खिळामिख ह'राज রামচন্দ্র তার এই উত্তর দিলেন যে, সংগারের সমস্তই মিধ্যা ব'লে যাবতীয় পার্থিব পদার্থের প্রতি আমাব কিছুমাত্র প্রীতি নাই, এবং সেই জ্ঞ আমি ষ্মাহার বিহার সমস্তই ত্যাগ করেছি। এই কণা শুনে বিশ্বামিত্র ঋষি সভাস্থ বশিষ্ঠদেবকে বল্লেন যে, তুমি থাকৃতে রামচন্দ্রের এমন অবস্থা হয়েছে ? রাষ্চক্রের জ্ঞান-ভাণ্ডাব পূর্ণ আছে, কিন্তু তালা বন্ধ আছে, তুমি কেবল চাবিটা খু'লে দিবে। তথন বশিষ্ঠদেব বিশামিত্র ঋষির কথার রামচক্রকে জ্ঞানোপদেশ দিতে স্বীকৃত হ'লেন। এন্ড-ছপলক্ষে যোগবা[শষ্ঠেব স্মৃষ্টি হ'ল। রামচন্দ্র নিজে অজ্ঞান সেন্ধে বশিষ্ঠদেবের নিকট জ্ঞানোপদেশ নিশেন। এখন ভেবে দেখ, যে রাম-চক্র ঈধরের অবতার পূর্ণ জ্ঞানেব আধাব, তিনি কথন অজ্ঞান হ'তে পারেন ? তাছাড়া, রামচক্ত বশিষ্ঠদেবকে যে সকল প্রশ্ন ক'রেছেন, অজ্ঞান লোকের হৃদয়ে সে সব প্রশ্ন উদয় হওয়ার কোন সন্তাবনাই নাই। ঘটনাতীত এই রকম, কিন্তু ইহার কারণ কি ? ইহার কারণ এই যে, ঈশ্বর দয়াল, জীবেব কল্যাণেব জন্ত সততই চেষ্টিত আছেন, সেই জন্ত স্বন্ধং পূর্ণ জ্ঞানময় হ'য়েও, দংগাবী মায়াবদ্ধ অজ্ঞান লোকের উদ্ধারের জন্ম নিজে অজ্ঞান শিষ্য দেজে গুরু বশিষ্টদেবের নিকট ডগুজ্ঞান উপদেশ নিয়েছেন। কেন না লোকে দেই সব উপদেশ মত চললেই ডম্বজ্ঞান লাভ ক'রে ব্যন্ত্রণাব হাত থেকে এড়াবে। ত্রেভায়ুগে বাম অবতারের সময় বোগবাশিটের স্ষ্টি হয়েছে। ভগবান দেখালন বে, এই সুদুৰ্ঘ কালেও লোকে যোগবাৰিষ্ঠ কথিত অংগতজ্ঞান मरुख উপनिक्षि कव्ट भावन ना । (महेक्स घरेंबठ-छानी कर्नाहिर स्पर्टन । অবৈত জ্ঞানটা ৰ ভাৰ ছৰ্বোধ্য ও ৰাঞ্ছিক নীরদ ব'লে সাধারণ লোকের তেমন ক্ষচিকর নয়। পরস্ক পরস দ্যাল পরমেখবের দ্যার বিরাম নাই। তাতেই আবাব সাধাবণ লোকেবও ক্চিকর হবে ব'লে, আপনি স্বয়ং গুরু সেজে অর্জ্জুনকে শিষ্য সাজিরে আপামর সাধারণ লোকের ভক্তি ও তর্জান লাভ ক'বে ভব যন্ত্রণা থেকে নিস্কৃতি পাওয়ার উপায়, অধিকাবী ভেদে ভির ভির বকমে গীতায় ব'লে দিয়েছেন। ফলতঃ কোন শ্রেণীব লোকই বঞ্চিত হর নি।

শিয়া। আজ্ঞা হাঁ তা বটে, কিন্তু একটা কথা এই বে, ভগবান শাস্ত্র বাক্য সকল যখন গীতাতে ব'লেছেন তখন সেই সকল শাস্ত্রোক্ত, উপদেশ ও গীতোক্ত উপদেশের ফলের তাবতম্য হওয়ার কাবণ কি ?

গুক। তার কারণ, শাস্তে লোকের কল্যাণেব জন্ত অনেক রাস্তার উল্লেখ আছে। কেননা, ভিন্ন ভিন্ন প্রকৃতির লোক স্ব স্থ প্রকৃতি অহুসারে আপন আপন অহুকৃল রাস্তা অবলহন কব্ব। পরস্ক সাধারণ লোকে আপনার অহুকৃল রাস্তা ঠিকু ক'রে নিতে পারে না; স্থতরাং বৈঠিক বাস্তার বাওয়াতে ফল্ও পান্ন না। সেইজন্ত কোন্ রাস্তা কে'ন্ অধিকারীর পক্ষে কল্যাণপ্রদ হবে, ভগবান তা গীণান্ন ঠিক ক'রে ব'লে দিয়েছেন। কেননা, সম্ভানের কিলে কল্যাণ হবে তা পিতাই ভাল জানেন। এই কারণবশতঃ শাস্ত্রোক্ত উপদেশ ও গীতোক্ত উপ-দেশেব ফলের তারতম্য।

শিশ্য। আমি বিষয়টী পবিদার রূপে বুঝুতে পাবলাম না।

গুরু। যেমন অনেক ডাক্তার আছেন, তাঁরা রুগীর বাবস্থাপত্তে একটা রোগের জন্ম অনেকগুলি ওষুধ লেখেন, অর্থাৎ দেই রোগটা প্রতিকারের যতগুলি ওষুধ তাঁদের জানা থাকে তাব সব কয়টই লেখেন, উদ্দেশ্য যেটাতে ফল পাওয়া যায়। কিন্তু বহুদশী বিজ্ঞ ডাক্তাবেরা প্রেকটা রোগের জন্ম একটা ওযুধেরই ব্যবস্থা করেন, কারণ, তাঁরা ঠিক জানেন বে, এই রোগ এই ওবুবেই সার্বে। শাস্থকারেরা একটী সিদ্ধিল।তেব জন্ত অনেক বকম পদ্ধতি ব'লেছেন, তার মানে অধিকার ভেদে যার ঘেটা অন্তক্ল হবে সে সেইটাই অবলম্বন কব্বে। লোকে ঠিক না কব্তে পেবে প্রতিকূল পদ্ধতি অবলম্বন কবে, কাজেই ফল পার না। ভগবান অধিকাবা ভেদে একটা সিদ্ধিলাতের জন্ত এক রকম অন্তক্শ পঞ্জিই নির্দেশ কবেছেন। কাজেই তার ফল অবার্থ। ভগবান অন্তান্ত, সর্বজ্ঞ, অভিজ্ঞ চিকিৎসক, স্কৃতরাং তাব কথিত গাঁতালকপ বাবস্থাপত্রের ওমুধে ভববোগ নিশ্চরই সাব্বে।

শিশ্য। বে বেখন অধিকারী তাকে বে তদমূক্ল উপদেশ তগবান গীতার দিখেছেন সেইটা শেণনবার জন্ত আমাব বড় কৌতৃহল হচ্ছে, আপনি অনুগ্রহ ক'রে তাবই কিছু বলুন।

গুক। গীতাব অনেক স্থানেই সে রক্ম উপদেশ দিয়েছেন। গীতার দ্বাদশ অধ্যারের ৮ম শ্লোকে ব'লছেন যে,

> ময্যেব মন আধৎস্ব মযি বুদ্ধিং নিবেশয়। নিবসিশ্বসি ময্যেব অত উৰ্দ্ধং ন সংশয়॥

হে অর্জুন। তুমি আমাতেই চিত্ত স্থাপিত কর ও বুদ্দি সন্নিবেশিন্ত কব, তাহ'লে প্রলোকে আমাতেই বাস কবিবে, অর্থাৎ মুক্তি পাবে তাতে কোন সংশগ্ন নাই। যদি তা-কবতে না পাব, অর্থাৎ তার অধিকারী না হও, তাহলে যে কি সাধনা কবতে হবে তাই ১মৃ প্লোকে ব'লছেন যে,

অথ চিত্তং সমাধাতুং ন শক্রোসি মযি স্থিরম্। অভ্যাস যোগেন ততো মামিচ্ছাপ্তঃং ধনঞ্জয ॥ হে ধনঞ্জয়। যদি আমাৰ প্রতি চিত্ত স্থির রাধ্যতে না পাৰ, ভাছ'নে আমার শ্বরণ অভ্যাস বোগ ছারা আমাকে পেতে ইচ্ছা কর। যদি তা না কর্তে পার, অর্থাৎ তার অধিকারী না হও, তাহ'লে যে কি সাধনা কর্তে হবে তা ১০ম শ্লোকে বল'ছেন যে,

> অভ্যাসেহপ্যসমর্থোসি মৎ কর্ম্ম পর মো ভব। মদর্থমপি কর্ম্মাণি কুর্ব্বণ সিদ্ধি মব্যপশুসি॥

হে অর্জুন। যদি তৃমি আমার শ্বরণ কপ অভ্যাদে অসমর্থ হও, তাহ'লে আমার প্রীতি সাধনার্থ পরহিতকর দব মলন কর্মের অনুষ্ঠান কর। আমার প্রীতার্থে কর্মের দার্রায় তৃমি সিদ্ধিলাভ কব্বে অর্থাৎ আমাকে পাবে। যদি তাও কব্তে না পাব, অর্থাৎ তারও অধিকারী না হও, তাহলে যে কি সাধনা কব্তে হাব, তা ১১৭ শ্লোকে বলেছেন যে,

অথৈতদপ্যশক্তোহসি কর্ত্ত্ব্যু মদযোগমাঞ্জিতঃ। সর্ব্ব কর্থ ফলত্যাগং ততঃ কুব্দ যতাত্মবান্॥

হে এব্ছুন! যদি তুমি এতেও অশক্ত হও, অথাৎ অন্ধিকারী হও, ভাহলে একমাত্র আমারই অবণাপন্ন হয়ে সংযত চিত্তে কল্মফল স্ব ভাগি কর। কেন বে কর্মফল ভাগি কব্তে বলছেন, দ্বাদশ শ্লোকে ভার কারণও বলছেন যে,

> শ্রেয়ে হি জ্ঞানমত্যাসাঙ্ জ্ঞানদ্যানং বিশেষ্যতে। ধ্যানাৎ কর্ম্মফলত্যাগস্ত্যাসাচ্ছান্তিরনন্তরম্।

হে অর্জুন! বিবেক অর্থাৎ জ্ঞানরহিত অভাস অপেক্ষা পরোক্ষ অর্থাৎ সহ জ্ঞান শ্রেষ্ঠ। এইরপ জ্ঞান অপেক্ষা অর্থ বোধক (হৃদরে ধ্যের বস্তুর ভাব ধারণ ক'রে) ধ্যান শ্রেষ্ঠ, এবং সেই ধ্যান অপেক্ষা কর্মফল ターから 2912612102 33

ত্যাগ শ্রেষ্ঠ কিন্দা, নিক্রের, ত্যাগ জনিত পাস্তি উপভোগ হর। কারণ, ত্যাগেব হাবা অনাসক্ত ইওয়াতে মনটা সর্বানা শান্তিতে পূর্ণ থাকে। এখন ভেবে দেখ, অধিকাবী ভেদে ভগবান কেমন সব উপায় ব'ললেন। বাস্ত-বিক কোন ব্যক্তি কোন একটা কাজেব অধিকাবী না হ'য়ে যদি সে কাজটা কর্তে যায়, তা হ'লে তার হাবা কখনই সেই কাজটা স্ক্রম্পন্ন হয় না। এখন গীতায় অধিকাবী ভেদে ভিন্ন ভিন্ন উপায় বিধিমতে দেখান আছে ব'লে, মন্তান্ত শাস্তাপেক্ষা গীতাব কল বেলী।

শিষ্য। আজ্ঞা হাঁ, এখন আমি বুঝ্লাম বে গীতা সর্কোপরি। আচ্ছা, অন্তান্ত শাস্ত্রান্ত মধ্যে কোন গ্রন্থ এটি ?

গুক। অন্তান্ত শান্তগ্রন্থ মধ্যে বেদান্ত শ্রেষ্ঠ। দিংহ বেমন পশুর মধ্যে বাজ। বেদান্তও তেমান শান্তগ্রন্থ মধ্যে রাজা। একটা বচন আছে যে,

তাবদ্ গজ্জ ন্তি শাস্ত্রানি জন্মুকাঃ বিপিনে যথা। নগর্জ্জতি মহা শক্তি गাবদ্ বেদান্ত কেশবী॥

যাবদ্ বেদান্ত কেশবী (সিংহ) না গৰ্জায়, ভাবৎ জঙ্গলেব শৃগালের স্থায় অন্তান্ত শাস্ত্র চাঁৎকাব কবে। অর্থাৎ বেদান্তাণাপ আরম্ভ হ'লে অন্তান্ত শাস্ত্রানাপ সবতল পড়ে যায়।

শিষ্য। আপনি যে বল্ছেন গীতা পডলে জ্ঞান লাভ হয়, তবে আনেক পণ্ডিতের তা হয় না কেন ? পণ্ডিতেবা শাস্ত্রগাহ্ব সব পড়েন্, গীতাও অবগ্র পডেন, কিন্তু তাদেব ব্যবহাব সাবারণ অজ্ঞান লোকের মত হয় কেন ?

গুক। পণ্ডিতদের সাধারণ অজ্ঞান লোকের মত ব্যবহাব কি দেখ্লে।

শিষ্য। সাধারণ অজ্ঞান লোক বেমন দন্ত, অহঙ্কার ও ক্রোধাদির

বশ হ'মে থাকে, পণ্ডিত্দেরও সেই অবস্থা দেখা বিশ্ব পারে । তাদের মধ্যে বখন এক জনকে হারিয়ে দিয়ে আর এক জন বড় হবার চেটা করেন, এবং রাগে হিতাহিত জ্ঞান শৃত্য হ'মে উন্মন্তাবস্থা প্রাপ্ত হন; তথন আর সাধারণ লোকের মত হ'লেন নাত কি ?

তত্ত্ব-কুস্থম

প্রক। পণ্ডিত ছই শ্রেণীব আছেন। এক শ্রেণী শান্ত্রান্থ পড়েন ও শান্ত্রোক্ত উপদেশ মত সাধনাও করেন। আর এক শ্রেণীব পণ্ডিত আছেন, তাঁরা কেবল শান্ত্রান্থই পড়েন, কোন সাধনা কবেন না। ঘিনি সাধক পণ্ডিত তার অপরোক্ষান্থভূতি আসে, অর্থাৎ অন্থভব জ্ঞান লাভ হর ব'লে আসল তত্ব বোধগম্য হয়। কাজেই রিপ্রাণ আর মাথা ভূল্তে পারে না, স্কুছরাং তাঁরা শান্ত হন্। আর যাঁরা কোন সাধনা না করে কেবল শান্ত্রান্থই পড়েন, তাঁদের কেবল শান্ত্র কথিত ভাষাতেই ব্যুৎপত্তি জন্মে, অর্থাৎ শক্জান হয় বস্তুজ্ঞান হয় না। কাজেই আসল ভক্ষ কিছুই বোধে আসে না এবং চিত্ত শুদ্ধি লাভেও হয় না। স্থতরাং রিপু আদিও সংযত হয় না। এখন ঐ অসংযত রিপু আদির বশবর্ত্তী হ'দ্বেই তর্ক বিচারাদ্যি করেন ব'লে ঐ বক্ষ দশা প্রাপ্ত হন, এবং অশান্তিও ভোগ করেন।

শিষা। শাস্ত্র প'ডে একটা জ্ঞান ত হয়, তবে তাঁবা এমন হন্ কেন । গুরুষা। ধাবা কোনরপ সাধনা না ক'রে কেবল শাস্ত্র কথিত শব্দার্থের বাংপত্তিই লাভ করেন, তাঁরা এই মুক্সিলে পড়েন যে, তাঁদের অধীত সকল শাস্ত্রের সকল মত গুলিই হৃদয়ে স্ব স্থ প্রাধান্ত বিস্তাব করে। স্থতরাং স্থির সিদ্ধান্তের অভাব হেতু তাঁবা নানা বুদ্ধিবিশিষ্ট হন, এবং অসংযত রিপু আদির বশ হ'রে তর্ক বিতর্ক কর্তে কর্তে উন্মভাবস্থা প্রাপ্ত হন। তার ফল শেষে এই দাঁড়ায় যে, বিচাধ্য অথবা জ্ঞাতব্য আসল বিষয়টি তল্ প'ডে গিয়ে তর্ক বিতর্কের শ্রোত চলতে থাকে। দন্ত,

আহকার ও ক্রোধাদির বড় বড় চেউ উঠে উভয় পক্ষকে নাকানি চুপানি থাওরার। পক্ষদের মধ্যে যিনি সেই সব চেউ থেতে অপটু তিনি পিছিয়ে পড়েন, আর যিনি পটু তিনি কোমব বেঁধে লেগে যান।

শিষ্য। বিচার্য্য বিষয়ের আখির মীমাংসা কি হয় १

গুরু। আধির মীমাংসা যা হয় তা শোন। কোন একটা তত্ত্বের মীমাসাব জন্ম বিচার আরম্ভ ক'রে শেষে কেবল অশান্তিই ভোগ হয় এবং আত্মাবপ্ত অবনতি হয়। কারণ, তার্কিকগণকে তর্ক বিতর্কের স্রোতে আসল তন্ত্ব থেকে অনেক দ্বে টেনে নিয়ে গিয়ে, শেষে অশান্তির সমুদ্রে ফেলে দেয়।

শিষা। যুক্তি তর্কের দারা আসল তত্ত্বের অর্থাৎ ভগবদ্ তত্ত্বের শীমাংসা কি হয় না ?

গুৰু। আৰু থাকু আবার কা'ল হবে।

দ্বিতীয় দিন।

শুরু। না— যুক্তি তর্কের দারা ভগবদ্তত্ত্ব মীমাংসা হ'তে পাবে না। সাধনার দারা মনকে প্রকৃতিব গণ্ডিব (সীমানার) বাইবে না নিয়ে বেতে পাব্লে, অর্থাৎ মায়ামুক্ত না হ'তে পাব্লে, সে তত্ত্ব হৃদরক্ষম হয় না। কেন না. জীবগণ মায়াব দাবায় আবৃত আছে, এবং সেই জন্মই সর্ববাপী প্রমাত্মাও আমাদেব অদৃশু হ'য়ে আছেন। ভগবান গীতাব ৭ম অধ্যায়ের ২৫শ শ্লোকে তাই ব'লেছেন বে,

নাহং প্রকাশঃ সর্বস্থ যোগমায়। সমারতঃ। মুচোহয় নাভি জানাতি লোকো মামজমব্যযম্॥

আমি আমাব যোগমায়াৰ দ্বাৰা সমাবৃত আছি ব'লে মায়াৰদ্ধ লোকের নিকট প্রকাশিত নই। সেই জন্ম মায়া মৃচ লোকেরা আমাকে অজ এবং অব্যয় ব'লে জান্তে পাবে না। তার মানে এই যে জীবগণ পারুতির অধীনে তলারা প্রভাবে মুহুমান হ'রে আছে। বিচার, তর্ক, যুক্তি প্রভৃতি প্রেক্সতির সীমানাব মধ্যে, কাজেই ঐ সব যুক্তাদি লৌকিক অর্থাৎ সাংসা-রিক্ম জ্ঞানানুসারেই মীমাংসিত হ'রে থাকে। প্রস্তু সাধনার দ্বার। অপ রোক্ষাপ্রভৃতির সাহায়ো ঈর্থকে জান্তে পাবা বার।

লোকে সাংসারিক জ্ঞান সম্পন্ন হ'মে তদত্বকাণে বৃথা কচকচানি কাবল কি হবে ৪ সেই জন্ম শাস্ত্রে একটা বচন আছে যে,

অচিন্ত্য খলু যে ভাবান্ তাংস্তর্কেন যোজয়েত। প্রকৃতিভ্য পর যচ্চ তদাচিত্তস্থ লক্ষণম্॥ বে ভাব চিস্তা কব্তেও পারা যায় না এবং যা (বে ভাব) প্রকৃতির বাইরে, তা নিয়ে ওর্ক কব্তে নাই। সাধনাব দাবা গুণাতীত অবস্থা লাভ ক'রে, অপবে কানুভৃতির (অনুভব জ্ঞানেব) সাহায়ো তাঁকে যতদূর জ্ঞানা যায় তত দ্বই জ্ঞানা যায়। ঈশ্বকে জ্ঞানবার আব অস্তু উপায় নাই। শুধু মুধেব কথায় জানা যাবে না, অর্থাৎ বই পডলেহবে না খাটতে হবে।

শিষ্য। অপরোক্ষাগ্রভূতি ভিন্ন ঈশ্বকে জানা যাবে না তাব কাবণ কি, এবং লৌকিক ও অণৌকি ক জ্ঞানেরই বা মানে কি?

শুর ইক্রিয়গ্রাহ্ সূতা বিষয় নন্। তিনি স্ক্রাদিপি ক্র্যান্থ বস্থায় সমগ্র বিশ্ব ব্যেপে অবস্থান ক'বছেন, স্থত বাং তাঁকে দেখাতে ধব্তে চুঁতে কিছুতেই পাওয়া নায় না কাজেই অপবোক্ষাক্রভূতি ভিন্ন তাঁকে জানবাব আব মন্ত উপায় নাই। সাংসাবিক লোক স্থল জগৎ সমস্কে দেখে শুনে বা পড়ে, যে জ্ঞান লাভ কবে তা লৌকিক জ্ঞান। আব সম-দমাদি গুণগুলিকে আয়ত্ব কবে সাধনাব নারা গুণাতীত হ'য়ে অধ্যাত্ম জগৎ অর্থাৎ আত্মা সম্বন্ধে যে জ্ঞান লাভ হয় তাই অলোকিক জ্ঞান বা অপবোন্ধাক্ষ্ণ ভূতি। স্থতবাং কেবল শাস্ত্র প'ডে ঈশ্ববকে জ্ঞানা বায় না, কারণ, এইটী বহিম্পীন বিলা, তিনি কেবল সাধনায় অর্থাৎ অন্তর্মুখীন বিভায়ে জ্ঞাতবা। সেই জন্ম ভগবান গীতার ২য় অধ্যান্তেব ৪৫শ শ্লোকে ব'গেছেন যে,

ত্রৈগুণ্য বিষয়াবেদা নিস্ত্রেগুণ্য ভবাৰ্জ্জ্ন। নির্দ্ধ দ্বো নিতঃ সত্তুস্থো নির্যোগক্ষেম আত্মবান॥

হে অর্জুন। বেদ সকল তৈজেণ্য বিষয়ক। তুমি নিজৈজণ্য হও, অর্থাৎ নির্দ্ধা; নিতা সত্তম্ব, যোগ ক্ষেম রহিত ও আত্মবান হও। এরকম হ'তে বল্ছেন কেন? কেন না, নিছাম কর্মজনিত চিত্তগুদ্ধি লাভ ক'রে সাধনাব দ্বারা তবে গুণাতীত অর্থাৎ মায়াতীত হ'তে হরে তাহলে তথন ঈশ্বরকে জানতে পারা যাবে। এখন ভগ্বদ বাক্যের তাৎপর্যার্থ বুঝুতে চেষ্টা কবা যাক। ত্রৈগুণা বিষয় কি ? সত্ত রজস্তম এই তিনটী গুণ. এবং এই ভিনটী গুণেব সমষ্টির নাম তৈগুণা, যার মধ্যে সেই সমষ্টি দেখা যায় তাই ত্রৈগুণা বিষয়, আব ত্রেগুণা বিষয়ের কর্তব্যা-কর্ত্তব্যের বাবস্থা ঘাতে আছে তাই ত্রৈগুণা বিষয়ক। এখন এই তিন প্তণের সমষ্টি কোথায় দেখা যায় ? সংসাবে সেই জন্ম সংসার ত্রৈপ্তণ্য विषत्। (महे मःमाद्यव कर्खवाकर्खदाव वावन्न। त्वाल च्याह्न व'तन द्वान नकल टेज्र थेना विषयक। जात्र गान्न এই यে मारमानिक कियाकनान বেদারুসারেই হ'রে থাকে। অবগ্র এটা বেদেব কামা কর্ম সহয়ে কথা হচ্ছে। ভগবান বল্ছেন যে, হে অর্জুন। তুমি বেদবিহিও কর্মকাপ্তামু-সারে সকাম কর্ম না ক'রে, নিষ্ক ম কর্মী হও, এবং গুণাতীত অধাৎ মারাতীত হও। ভগবান বল্ছেন বে, সাংসারিক জ্ঞান।তুসারে আমাকে ছানতে চেষ্টা না ক'বে, গুণাতীত হ'য়ে অপরোক্ষাত্বভূতির হারায় ষ্মামাকে জানতে চেষ্টা কব। কি ব্ৰক্ম অবস্থা হ'লে গুণাতীত হওয়া ষার লোকার্দ্ধে ভাই বল্ছেন বে, নির্দুলো, অর্থাৎ দ্বন্ধ রহিত হও। মন সকল অবস্থাতে অবিচলিত থাকার নাম নির্দ্ধ। শীত, উঞ্চ, সুখ চু:খ, ভাল মন্দ এই দকণের অধীন না হওয়া অর্থাৎ স্থাথেতে উৎফুল্ল না হওয়া এবং হঃথেতে কাতর না হওয়া ইত্যাদি। নিত্য সত্তম্ভ, সর্বাদা সান্ত্রিক ভাবে থাক। দৈনিৰ্যোগ কেম হও, মৰ্থাৎ যোগ কেম বহিত হও। অপ্ৰাপ্ত বস্তুর প্রাপির চেষ্টাকে যোগ বলে, আব প্রাপ্ত ব স্তর রক্ষার চেষ্টাকে ক্ষেম বলে। সেই যোগ ক্ষেম, বহিত হও, ভার মানে এই যে, উপার্জন ও রক্ষার যে চিন্তা তা ভাগে কব, কেন না, সে বাবস্থা আমিই কর্ব। আব আঅবান হও, কি না আত্মাতে রত হও। অর্থাৎ বহিমুখীন ইন্দ্রিয়গণকে সংঘত ক'রে অন্তর্মুখীন করতঃ আত্মাকে জানবাব জন্ম চিত্তের একাগ্রতা সম্পাদন কর।

শিষ্য। ভগবান বল্লেন বেদ ত্রৈগুণ্য বিষয়ক, অর্থাৎ সাংসারিক কর্ম-কাণ্ডের ব্যবস্থা বেদে আছে। তবে কি বেদে তত্ত্তানের কথা কিছু নাই १

শুক। থাক্বেনা কেন ? তুমি ভগবদ্ বাকোৰ তাৎপর্যার্থ এখনও
বৃষ্তে পারনি। ভগবান মায়াবদ্ধ সংসাবা লোকের সম্বন্ধে এই উপদেশ
দিছেন ব'লে, সংসার প্রচলিত বেদের কর্মকাণ্ড (সকামকর্ম) সম্বন্ধেই
ব'লছেন। বেদেব জ্ঞানকাণ্ড সম্বন্ধে একথা নয়। সাংসাবিক লোক বেদোক্ত কল প্রতিপাদক কর্মকাণ্ডেরই অমুষ্ঠান কবে থাকে। অর্জ্ব্দ্র্ন সংসাবী লোক, সেই জন্ত ভগবান তাকে ব'লছেন বে, তুমি সংসার প্রচলিত
সকাম-কর্ম সকল ত্যাগ কবে নিদ্ধাম কর্মেব দ্বাবা চিভ্ততদ্ধি লাভ করে
গুণাতীত হও। কারণ, সকাম কর্মেব কেবলই লোকের আশা তৃষ্ণা
ক্রমায়, কাজেই মায়াজালে আবদ্ধ কবে।

শিষ্য। নিহ্নাম কর্মেব মহৎ ফল ত্যাগ কবে, সাংসারিক লোক বেনোক্ত সকাম কর্মের ক্ষুদ্র ফলেব প্রতি অমুবক্ত হয় কেন ?

গুক। নিষামকর্মের ফল মহৎ কিন্তু পাওরা বার বিলম্বে; স্থার সকাম কর্মের ফল ক্ষুদ্র, কিন্তু শীদ্র পাওরা বার। সাধারণ সংসারী লোকের স্বভাব এই বে. যা শীদ্র পাওরা বার তাতেই অনুরক্ত হয়, এই একটি কারণ। আর একটি কারণ এই থে বেদের কর্মকাণ্ডের ফল-শ্রুতি বডই চিন্তাকর্মক এবং রুচিকর বাক্যে বর্ণিত আছে। যেমন বা দান কর্বে ছাব শতগুণ পাবে ইত্যাদি। সেই জন্তু লোভপ্রযুক্ত আগু ফলপ্রির সাংসারিক সাধারণ লোক সকাম কর্মের প্রস্থান ক'রে থাকে। ডাতেই ভগবান গীতার ২য় অধ্যারেব ৪২ শ,৪৩শ ও ৪৪শ এই তিনটী স্লোকে ব'লেছেন বে,

যামিমাং পুষ্পিতাং বাচং প্রপদ্মন্তাবিপশ্চিত।
বেদ বাদ রতাঃ পার্থ নান্সদন্তীতি বাদিনঃ॥

কামাত্মানঃ স্বৰ্গপরা জন্ম কর্ম ফলপ্রদাম্। ক্রিয়া বিশেষ বহুলাং ভোগৈশ্বর্য্য গতিং প্রতি॥ ভোগৈশ্বর্য্য প্রসক্তানাং ত্যাপহৃত চেত্রসাম্। ব্যবসাধাল্মিকা বুদ্ধি সমাধে। ন বিধাষতে॥

হে পার্থ। সংসারা অবিবেকাগণ এই শ্রুতিমধুর, জন্ম কর্মকলপ্রদ, ভোগৈখর্বোর সাধনভূত বছল ক্রিয়া বিশেষ থাকা বলে এবং বেদ-বাদণত অর্থাৎ বেদেব দোহাই দিয়ে থাকে, তারা কাদাআনু স্বর্গপব ও ভোগৈখর্য্যে সাসক্ত হয় এবং বলে বেদ ছাডা আব কিছুই নাই। তাদের চিত্ত অপহৃত (মোহিত) ২ন। স্থতবাং তাদেব বুদ্ধি সমাধিতে সংশব্ধ বিহীন হয় না। ভগবদ্বাক্যেব ভালপ্য্যাৰ্গ এই যে যাবা বেদোক্ত কৰ্ম-কাণ্ডেব শ্রুতিমধুব বাক্যে অনুবক্ত, বছবিধ ফল প্রকাশক বেদ বাক্যই যাদেব প্রীতিকব, যাবা স্বর্গাদি ফল সাধন ভিন্ন অন্ত কিছুই স্বীকাব করে না অথবা জানেনা, (কাবণ বেদেব মুখ্য তাৎপর্যার্থ না জানাতে তার গৌণার্প গ্রহণ কবে, অর্ণাৎ কর্মানলেব অতিবিক্ত কিছুই নাই, এই বিশ্বা-দের জন্ম তাদেব কাম্য কম্মহ একমাত্র অবলম্বন) যাবা কামপ্রায়ণ, স্বৰ্গই যাদেৰ প্ৰম পুক্ষাৰ্থ, জন্ম কৰ্ম ফলপ্ৰদ ও ভোগৈখণোৱ সাধন ভূত নানাবিধ ক্রিয়া প্রকাশক বাক্যে যাদেব চিত্ত মোহিত ২ন্ন, এবং যাবা ভোগ ও ঐথর্যো সংসক্ত হয়, সেই বিবেকशানদের বৃদ্ধি সমাধ্যিত সংশয়-বিহীন হয় না, অর্থাৎ ঈশ্ববেতে চিত্ত একাগ্র ১য় না। কর্ম্মেব দাবা জ্ঞান লাভ হর বটে, কিন্তু সেই সব কম্ম নিধাম ভাবে করা চাই।

শিষ্য। এখন কোন্ উপদেশে চল্লে নিক্ষাম কর্মে প্রবৃত্তি হয়?
গুরু। কোন ? ভগবদ্গী তার উপদেশে চল্লে নিক্ষাম কর্মে প্রবৃত্তি
হবে এবং ভক্তি ও জ্ঞানলাত ও গুরে।

শিষ্য। গীতাত অনেকেই পডে, তবে তাদের নিছাম কর্মে প্রবৃদ্ধি হয় না কেন ?

গুৰু। গুধুপড্লে কিম্বামুখন্থ কর্লে হয় না। গীতোক্ত উপদেশ মত চলতে হয়, অর্থাৎ সেই রকম সাধন করে চবিত্রকে তদমুক্প গঠন করতে হয় তবে হয়। তাব মানে শাস্ত্র বচন শ্রবণ, মনন, নিদিধ্যাসন করতে হয় এবং দেই বকম আচরণও নিজে করতে হয়। এইগুলির নাম হ'লো সাধনা। সেই সাধনা না কবলে শাস্ত্র বাক্যেব তাৎপর্য্যার্থ অমুভবে কিছু আদেনা। কেবণ পাধীর মত বুলি শেখা ২য়। তোমাকে একটা উদাহবণ দিয়ে বোঝাই তাহ'লে তুমি বুঝতে পাববে। মনে কর, একটী বড লোকেব ল্যাপল্যাণ্ড দেশ দেখবাব এবং ঐস্থান সম্বন্ধে অভিজ্ঞতা লাভ কববাব জন্ম মনে বড কে।তুহল জনোছে। দেই জন্ম ডিনি ভূগোল ইতিহাস পর্যালোচনা করেছেন, এবং কোন্ কোন্ সমুদ্র ও কোন্কোন্দেশ দিয়ে বেতে হবে তাও সব ঠিক করেছেন। আর যে দেখানে বরকনয় প্রাক্তিক দুগু অর্গাৎ সব জায়গা ববফে ঢাকা এবং সেই বরফেব উপর দিয়ে ছবিণে চাকা বিহীন গাড়া টেনে নিয়ে বায় এই সমস্তই তিনি বই প'ডে অবগত হ'ল্পে-ছেন বটে, কিন্তু তা হলে কি হয় ? বতক্ষণ তিনি জাহাত্তে এবং রেণে চ'ড়ে –তিভিক্ষা অবশহন ক'রে, অর্গাৎ ভ্রমণ জনিত ক্লেশ সহা ক'রে দমস্ত রাস্তা অভিক্রম কবতঃ ল্যাপল্যাণ্ডে না পৌছাচ্ছেন্; ভতক্ষণ পর্যান্ত তাঁব ঐ স্থান সম্বন্ধে অনুভব জ্ঞান কিছুমাত্র হবেনা। অর্থাৎ প্রাকৃতিক সৌন্দর্যা দেখে আনন্দ ও বরষের শৈত্যানুভব ইত্যাদি কিছুই অমুভবে আস্বেনা। পরিশ্রম ক'রে সমস্ত রাস্তা অভিক্রম করতঃ স্থানে না পৌছিলে বেমন সেইস্থান সম্বন্ধে কোন অনুভব জ্ঞান হয় না তেমনি শাজোক্ত বিধি অনুদারে তিভিকার সহিত সাধনার দারা মান্নামর অফান ভূমি অতিক্রম ক'বে মেই জ্ঞানসংযের কাছে না পৌছিলে তাঁব সংস্কেও কিছু অনুভব জ্ঞান হয় না। বেদাপ্ত উপনিষদ্, গীতাদি পডলে কি হবে ? শ্রবণ, মনন নিদিধ্যাসন চাই।

শিষ্য। আজা এখন আমি বুর ্লাম। আছো, গীতা ভিন্ন আসান্ত, শাস্ত্রগ্রন্থ পড়া কি নিষিদ্ধ P

গুরু। অন্তান্ত শাস্ত্রান্ত পড়া নিষিদ্ধ নয়। যে কোন শাস্ত্রে যে কোন মতই থাক্ন কেন সকল মতেব লক্ষা যে একই জিনিস তাড়ে আর কোন সন্দেহ নাই। বখন সকল মতেব উদ্দেশ্য একই, তখন মতের বিভিন্নতা কি কবে হতে পাবে প লোকে অজ্ঞানতা বশতই মতরৈধ দেখে থাকে, অঞান্ত মতেব প্রতি দেঘবশতঃ সেই সব মত্ত নিয়ে বাদান্ত্রাদ করে, কিন্তু তা করা বিশেষ নিষিদ্ধ। নানা শালে মানা মত আছে, তাতে গোমাব কি এশ গেল প ভোমার মনে যে ভাবের জমাট বেঁধেছে, অন্তান্ত মত নিয়ে তর্ক বিতর্ক করে তোমার সেই জমাট বাঁধা ভাবতীকে ছিল্ল ভিন্ন করা উচিত নয়। কেননা, ভগবান ভাবেবই বশ। ভাবেব অভাব হ'লে তাঁকে জানা যায় না। সেইজন্ত মহাত্মা তুলসী দাস ব'লেছেন যে,—

সব্মে বসিয়ে সব্মে রসিয়ে সব্কে লিজিযে নাম্। হাঁজি হাঁজি কব্তে বহিষে বৈচ্কে আপনা ঠাম্। মগর হুদ্ মে জপ রাম নাম।

নানা শাস্ত্রে নানা মত আছে তা নিমে তর্ক বিতর্ক না করে, বে যা বলে তাতেই ই ই করে যাও, এবং মনে মনে রাম নাম জগ কর। ক্লুর্থাৎ ভূমি যে ভাষ নিয়ে আছ, নিঃসংশয় চিত্তে তাতেই লেগে থাক। তর্ক বিতর্কের দারা মনের দৃঢ় ভাব শিথিল হ'তে পারে, সেইজ্ঞ কুতার্কিকের সঙ্গে তর্ক করা নিষিদ্ধ।

শিষ্য। আমরা কথার কথার অনেক দূব এসে পড়েছি। আমাদের কাল কথা হচ্ছিল যে, ফলের আকাজ্জা রেখে কর্মা করলে সেই কর্মা ফল ভোগের জন্ত এই ভোগায়তন শবীব ধারণ করতে হয়। তবে কি এই শরীবই কর্মা ফল ভোগ করে গ

শুরু। শরীর ঘব বইত নয়। ঘব ভোগ করে, না—ঘবে য়ারা ধাস করে তাবা ভোগ করে? শরীর ভোক্তার বাসের স্থান মাত্র। সেই জন্ত শাস্ত্রে শ্বাবকে ক্ষেত্র বলে। সেই ক্ষেত্রে অর্থাৎ শরীরে পুরুষ (আআ) সব প্রকাশ করে আছেন, এবং প্রকৃতি সদলবলের সহিত বাস কর্ছেন। বুদ্দি, অহস্কার ও ইক্রিয়াদির প্রকৃতির স্থাণ। ভোগাদি কি যে কোন কাজ প্রকৃতি ইক্রিয় দির ঘারা সব সম্পন্ন করা-ছেন। আর পুরুষ (পরমাআ) আআরমণে এই শরীরে নিলিপ্তা, নিশ্চন, নির্কিকাব, উদাসীনবৎ প্রকৃতিজ সমস্ত কর্মের জন্তী স্বরূপে অবস্থান ক'রছেন।

শিষা। স্থাত্মা সর্বাদা শরীবের মধ্যে থেকেও বে কোন কর্ম্মে লিপ্ত হচ্ছেন না, তাহ'লে তিনি কি ভাবে যে আছেন সে সম্বন্ধে আমার কিছু ধারনা ২চ্ছে না।

শুরু। আত্মা কি রকম অবস্থায় ভূতগণের দেহের মধ্যে অবস্থান করছেন ভগবান তা গীতার ১৩শ অধ্যায়ের ৩২শ, ৩৩শ শ্লোকে ব'লেছেন যে,

যথা সর্ব্বগতং সৌক্ষ্যাদাকাশং নোপলিপ্যতে। সর্ব্বাবস্থিতো দেহে তথাত্মা নোপলিপ্যতে॥ যথা প্রকাশযেত্যেকঃ স্থৃৎস্নং লোক মিমং রবিঃ। ক্ষেত্রং ক্ষেত্রী তথা কৃৎস্নং প্রকাশযতি ভারত॥

আবাণ যেমন সর্বগত হয়েও স্ক্র প্রযুক্ত অন্ত বস্তুতে লিপ্ত হয় না, আবাও তেমনি দেহে অবস্থিত থেকেও দৈহিক কোন ধর্মে অথবা কর্মে লিপ্ত হন না। হে ভাবত। এক স্থ্যই ষেমন সমস্ত লোক প্রকাশ করেন, সেই বক্ম ক্ষেত্রজ্ঞ আবাই সমস্ত ক্ষেত্রকে অর্গাৎ শবীবকে প্রকাশ ক'রে থাকেন। ভগবদ্ বাক্যেব তাৎপর্যার্থ এই যে, স্থ্য যেমন উদয় হলেই সমস্ত বিশ্ব প্রকাশ পায়, এবং সাধাবণতঃ লোকে সমস্ত দিন কাজ কর্মে ব্যাপৃত থেকে তা সব সম্পন্ন করে, কিন্তু স্থ্য অন্ত গেলেই সমস্ত বিশ্ব জন্মকারে সাহত হয় ও নিজ্জ হয়। তেমনি আবা যতক্ষণে দেহে থাকেন ততক্ষণই জীবগণ জীবিত থাকে এবং দৈহিক কাজ কন্ম সব সম্পন্ন হয়। অত্যথার দেহ চিব বিশ্রাম গ্রহণ করে।

শিয়া। এই বকম আশ্চর্য্য স্বভাব সম্পন্ন আত্মা বে কেমন, সে সম্বন্ধে আমি মনে কিছুই ধারণা কবতে পাচ্ছি না।

গুক। আত্মাকে শাস্ত্রে যে কি বলে তা আগে শোন, তাহ'লে কওকটা ধাবণা হবে। আত্মা হচ্ছেন

> স্থূল হক্ষ কারণ শরীরাদ্ ব্যতিরিক্ত পঞ্চকোশাতীত সন্ অবস্থাত্তর সাক্ষী সচিচদানন স্বরূপ সন্ যন্তিষ্ঠতি স আত্মা।

সুল সৃদ্ধ ও কারণ এই তিন প্রকার শরীর হ'তে ভির, আর অন্নময়াদি পঞ্চকোষের অঠাত, এবং জাগ্রত স্বপ্ন ও প্রযুধ্বি এই তিন অবস্থার সাক্ষী ক্লপে, সং চিং ও আনন্দেব স্থকপ যিনি দেহের মধ্যে অবস্থান ক'রছেন ভানিই প্রামা। আত্মার স্থভাব ত আশ্চর্যা বটেই। শরীরের মধ্যে আত্মা থাক্ৰেও তাঁকে কেও দেখ্তে পায় না কিয়া জানতে পাবে না। সেই জন্ম ভগৰান আত্মা সন্বন্ধে গীতাৰ ২য় অধ্যায়েব ২৯শ শ্লোকে বলেছেন যে,

> আশ্চর্য্যবং পশ্যতি কশ্চিদেন মাশ্চর্য্যবদ্ বদতি তথৈব চান্তঃ আশ্চর্য্যবচ্চৈন মন্তঃ শৃণোতি শ্রুজাপোন বেদ ন চৈব কশ্চিৎ॥

এই আত্মাকে কেও আন্চর্যাবং দেখেন, কেও ইহাকে আন্চর্যাবং বলেন, কেও বা ইহাকে আন্চর্যাবং ভনেন্, কিন্তু কেহই ইহাকে জান্তে পাবেন্ না। ভগবদ্বাকোব তাৎপর্যার্গ এই বে, আত্মার কার্য্যকেও আন্চর্যোর ন্তান্ত দেখেন, কেও তাকে আন্চর্যোর ন্তান্ত বলেন্, কেও বা তাব কণা আন্চর্যোব ন্তান্ত গুনেন, কিন্তু কেহই, তাকে প্রকৃত্ত পক্ষে জান্তে পারেন্ না। আত্মা প্রাকৃতিক গুণ, প্রাকৃতিক ধর্ম কিন্তা প্রাকৃতিক নিমুমেব অধীন নন্। সকলেই তাঁব অধীন।

শিষ্য। আত্মা যে প্রকৃতিব অধীন নন্ তা বুঝলাম্, কিন্তু প্রকৃতিটা বে কি আমাকে বুঝিয়ে দিন।

শুরু । প্রকৃতি শব্দেব অর্থ আগে শোন, তার পব জিনিসটা কি তাও বোঝ। প্র মানে সন্ধ, রু মানে বজঃ এবং তি মানে তম। এই সন্ধ্রজন্তম তিন গুণেব সমষ্টিকে প্রকৃতি বলে। ইহাকে ক্রিগুণা-খ্রিক। মারা, আল্লাশক্তি, মহামারা প্রভৃতিও বলে, এবং তিনি নানার্রপে পুজিতাও হ'য়ে থাকেন। ফলতঃ পরমান্তান এই শক্তি, মারা বা প্রকৃতি প্রভাবেই সৃষ্টি প্রলয়াদি বিশ্বেধ যাবতীয় কাজ চিবদিন সম্পন্ন হচ্ছে ও হবে।

শিযা। আছো, এই ত্রিগুণাত্মিকা মান্না বা প্রকৃতি স্থাদি কাজ

সৰ কচ্ছেন, কিন্তু তিনি থাকেন্কোণায় ? প্রমাত্মা ত সমগ্র বিশ্ব ব্যেপে ব্যাহ্মন ।

শুক্ত। প্রকৃতিব একটা নাম শক্তি। এখন শক্তি বল্লেই একজন
শক্তিমান চাই, অর্থাৎ একটা আধাব চাই। নইলে শক্তি থাকে
কোথায় গ শক্তি, শক্তিমানকে আগ্রয় ক'বেই থাকে ও শক্তিমানের
নিয়োগক্রমে কাজ কবে, এবং সেই শক্তিমানের নামেই পরিচিত হয়।
বেমন ভামেব শক্তিতে অমুক সমুক কাজ হ'য়েছে। এই ইঞ্জিন্টা
৪০ গোডাব শক্তি বিশিষ্ট, বামমূর্ত্তিব শক্তিতে ৮খানা মটবকাব টেনে
ধ'বে বাঝে ইত্যাদি এই সব শক্তি বেমন কোন ব্যক্তি বা বস্তু বিশেষকে
আগ্রয় ক'বে থাকে ও ভাদেব নিয়োগক্রমে কাজ কবে, এবং তাদেবই
নামে পবিচিত হয়, তেন্নি পবমাত্মাব শক্তি বা প্রকৃতিও পরমাত্মাকে
আগ্রয় ক'বে থাকেন ও পবমাত্মাব নিয়োগক্রমে কাজ কবেন, এবং
পর্মাত্মাব শক্তি বনেই পবিচিত হন।

শিষ্য। প্রকৃতিব দানায় ধর্থন সমস্ত কাজ সম্পন্ন হ'ছে, তথন আত্মাব ভূতগণেব দেহেব মধ্যে বদ্ধাবস্থায় অবস্থানের প্রয়োজন কি ? বিদি প্রাকৃতিক কাজেব দ্রষ্টারূপে থাকেন, তা হ'লেই বা দেহের মধ্যে থাকাব দরকাব কি ? তিনি দেহেব বাইবে থেকেও ত প্রকৃতিব কাজ সব দেখতে পাবেন্। যে হেতু আত্মাই ঈশ্বৰ, স্মৃতবাং তিনি সর্বাদশী তাব দৃষ্টিব অবনোগত কোথাও নাই।

গুরু। ঈশ্ববেৰ দৃষ্টিৰ অৰবোৰ কোথাও নাই বটে, কিন্তু প্রয়োজন বশত:ই তিনি দেহেৰ মধ্যে আত্মাৰূপে অবস্থান কৰেন।

[শয়া। পেয়োজনটা কি ।

প্রক। আচ্চা, বল দেখি একটা নতুন ঘড়ী বাজার থেকে কিনে এনে বৈঠকখানায় টাছিয়ে বাখলে কি সময় দেবে ? শিখা। কি ক'রে সময় দেবে গ

গুরু। কেন দেবেনা? নতুন ঘড়া কল কারথানা সব ঝক্ ঝক্ কব্ছে, সময় দেবে না কেন ?

শিশ্য। ঘডীতে দম্নাদিলে কি কথন সময় দেয় ?

শুল লে কছু পাওয়া বায় না, কেবল কায়েতে প্রকাশ পায়। আত্মাবও তেম্নি কোন আকাব নাই, খুললে কিছু পাওয়া বায় না, কেবল কায়েতে প্রকাশ পায়। আত্মাবও তেম্নি কোন আকাব নাই, খুললে কিছু পাওয়া বায় না, কেবল কার্যাতে প্রকাশ পান। ঘড়ীর বেমন সব কল কার্থানা মজ্ত থাক্লেও এক দম্ ভিন্ন অচল হয়, শবীবেও তেম্নি কল কার্থানা ক্প য়য়াদি মজ্ত থাক্লেও এক আত্মা ভিন্ন অচল হয়। আত্মার অধিষ্ঠান হেতুই শারীরিক প্রাক্ষতিক কাল সব চ'লে থাকে। অন্তথায় সব একবারে বয় হ'য়ে বায়। দেহের মধ্যে আত্মার অধিষ্ঠান হেতুই ভূতগণ জীবিত থাকে, কিছু আত্মাব অন্ধিষ্ঠানে সেই মৃতদেহ জভবৎ প'ড়ে থাকে। এখন বুঝে দেখ শবীবের মধ্যে আত্মাব অধিষ্ঠানের কি প্রয়োজন।

শিশ্ব। আপনি বল্ছেন যে, আআ দেহেব মধ্যে নিজিয় নিলিপ্তভাবে অবস্থান কব্ছেন, আবাৰ বলছেন্ থে, আআ হতন্ধণ দেহেব মধ্যে দ্রষ্টারূপে অবস্থান কব্ছেন, ততক্ষণই প্রাকৃতিক কাজ সব চ'লে থাকে, এবং প্রেকৃতিই যে সব কব্ছেন তাও পূর্কে ব'লেছেন। এ কথায় কিন্তু আমার বড় ধাধা লাগুছে। এখন প্রকৃত কর্তা কে তাই আমাকে বলুন।

গুরা। ঈশ্বর অর্থাৎ আত্মাই একমাত্র সর্বাময় কর্ত্তা, স্কৃতবাং তিনিই সব কব্ছেন, কিন্তু প্রকৃতিব আডালে থেকে।

শিশ্য। প্রকৃতিব আডালে থেকে কি বকমে সব কব্ছেন বুঝ্তে পাবলাম না।

গুরু। যেমন একটা হাড়ীতে জল চ'ডেরে, তাতে চা'ল, ডা'ল,

আলু পটল প্রস্তৃতি ছেডে দিখে হাঁডীব তলার জাল দিলে ক্রমে জল ফু'টে ওঠে, তখন ঐ চা'ল ডাল ইত্যাদি ইাড়ীব মধ্যে মহা বেগে আন্দোলন ক'বে খু'বে বেডার, কিন্তু হাডীব তলাব জালটা টেনে নিলেই অম্নিসব স্থিব হ'রে বার। বেমন আগুণেব আশ্রম হেতু হাডীব মধ্যস্থ পদার্থ সব ক্রিয়াশীল হয়, এবং ঐ আশ্রম্যব অভাব হ'লেই সব স্থিব ই'য়ে যায়। তেম্নি আখাব আশ্রম হেতু প্রকৃতিও ক্রিয়াশীলা হন্ এবং ডাব অন্ধিগ্রানে প্রকৃতি স্থিব হয়ে যান।

শিষ্য। আত্মাই ষথন কর্তা এবং তিনি তাঁব প্রকৃতিব দাবার সব কাজ কবিয়ে থাকেন, এখন তিনি নিজ্জিগ, নির্নিপ্ত হ'তে পাবেন কি ক'বে ? আমবাও ত আমাদেব শক্তি দাবা কাজ কবিয়ে থাকি।

গুক। আছা অর্থাৎ প্রমাত্মা বাহুতঃ নিজ্মিরই বটেন, সাক্ষাৎ সম্বন্ধে কোন কাজেই হস্তক্ষেপ কবেন না। তবে তাঁব শুদ্ধ সক্ষয় হেতু কোন কাজেব জন্ত ইচ্ছা কবা মাত্রই তৎক্ষণাৎ সেই কাজ আপনিই সম্পন্ন হয়। ইচ্ছা, শক্তি বা প্রকৃতি একই জিনিস। ইচ্ছা মাত্র কার্য্য সম্পন্ন হয় ব'লে তাব একটা নাম ইচ্ছাময়। জগবান অসীম প্রশ্বর্যশালা ও ক্ষমতাশালী, এবং অবটন ঘটনাকাবা। আমাদের মত কম্মেক্রিয়েব দ্বাবার তাকে কোন কাজ কবতে হর না, এবং সেইজ্ঞা তাকে বাহাতঃ নিলিপ্তই দেখার।

শিশ্ব। বড আশ্চর্যা কপা। ভগবানেব ইচ্ছাতেই সব কাজ সম্পন্ন হয় ?

ক্ষিত্রক। আশ্চর্যা ত বটেই। ভগবানেব সকল বিষয়ই আশ্চর্যাজনক,
এবং তিনি নিজেও আশ্চর্যাময়। ভগবান ১১শ অধ্যায়েব ৮ম্ লোকার্ছে
ভাই ব'লেছেন যে, "দিবাল দদানি তে চক্ষ্ণপ্ত মে বোগমৈশ্বম্"। হে
ভার্জুন। ভোমাকে আনে দিবা চক্ দিছি, (কেননা, ভোমাক চক্ষে তুমি
দেখতে পাবে না) স্থানাৰ অসাধাবৰ বোগেশ্যা অর্থাৎ অবটন ঘটনা সাম্প্রা

দেখ। সে ত অনেক দুবের কথা, জগতে তাঁব স্পৃষ্ট পদার্থেই যথন তাঁর সেই শক্তি বিকাশ পায়. তিনি সেই শক্তিব পূর্ণাধার, তথন তাঁব সহন্ধে কি আর কোন কথা আছে ? বিশ্বহ্মাণ্ড ত তাঁখেকেই উৎপন্ন হ'য়েছে। তাঁতে যা আছে বিশ্বেও তাই আছে, তবে আংশিকরূপে।

শিশ্য। জগতের কোন্ পদার্থে ভগবানেব সেই নিলিপ্ত থেকে কাজ করার শক্তি প্রকাশ পায় ৪

শুরু। কেন ইছক লোহা। চুম্বকথানা এক স্থানেই প'ড়ে থাকে কিন্তু দূব থেকে ছুই প্রভৃতি লোহার জিনিস টকাটক্ এসে তাতে লাগে। চুম্বক কিন্তু নডে চড়ে না, অথচ আকর্ষণের কাজটা চুম্বকই কবছে। চুম্বক যেমন না ন'ডে আকর্ষণের কাজ করে, জমারও তেম্নি না ন'ডে বিশ্বপ্রমাণ্ডেব যাবতীয় কাজ কবেন। তিনি বাহুতঃ নির্লিপ্ত থেকে তাঁব শক্তি বা প্রকৃতিব দ্বাবার বে সব কাজ কবাচ্ছেন গীতাব ১ম্ অধ্যায়ের ১০ম্ শ্লোকে তাই ব'লেছেন যে,

ময়াধ্যক্ষেণ প্রকৃতি সূযতে সচরাচরম্। হেতুনালেন কৌন্তেয় জগদিপরিবর্ততে॥

হে কোন্ডেয়। প্রকৃতি আমাব অধিষ্ঠান মাত্র লাভ ক'রে অর্থাৎ আমাকে আশ্রম ক'রে, এই সচবাচর বিশ্ব প্রসব ক'বছেন। তাব মানে ক্ষিক'বছেন এবং আমাব অধিষ্ঠান অর্থাৎ আশ্রম হেতুই এই জগৎ পুনঃ পুনঃ উৎপন্ন হচ্ছে। তাহ'লেই দেখ প্রকৃতি সব ক'বছেন বটে, কিন্তু ঈশ্বরের নিয়োগ ক্রমে এবং তাঁকে আশ্রম করেই সব ক'বছেন।

শিষ্য। ঈশবের এখর্ষ্য ক্ষমতাদি মনে ধাবণ ক'রতে পাবা যায় না, প্রকাশ করাত দুরের কথা। গুরু। সেই জন্মই ত তিনি অচিন্তা, অব্যক্ত, অনন্ত এবং অসীম। তিনি পলকে কোটা কোটা ব্রহ্মাণ্ডেব সৃষ্টি প্রবন্ধ কবতে পাবেন।

শিশু। তা সম্পূর্ণ সতা। আচ্ছা, তর্গবানের স্পৃষ্টির কোন ইতিহাস পাওয়া যায় না ?

শুক। না—তা পাওয়া যায় না। কবে এবং কি প্রণালীতে মে তিনি স্টে ক'বলেন, তাব কোন ইতিহাস পাওয়াব সন্তাবনা নাই। লোকে ঘটনা দেখে ইতিহাস লেখে, ঈশ্ববেব স্টে ত কেও দেখেনি, স্থতবাং ইতিহাস হবে কি ক'বে ? কেন না, তিনি অবিনাশা, অনাদি ও অনস্ত। ম্থন এই স্টেব নামগন্ত ছিল না কেবল এব প্রমালাই ছিলেন, তথন তিনি স্টে ক'বলেন, কাজেই সেই সময়ে দর্শক ত ছিল না মে ইতিহাস লিখ্বে ? তা ছাড়া, ঈশ্ববেব কোন কাজেই মানুমেব বোধগম্য নয়। ঈশ্ব যাদ ইন্দ্রিয় প্রান্থ স্থল পদার্থ হ'তেন, তাহ'লে লোকে তাঁব কাষ্যপ্রণালীব বহন্ত বুঝাতে পাবত, এবং তাকেও জান্তে পাবত। সেই ক্যা তিনি গীতাব ১০ন্ অধ্যায়েব ২য় শ্লোকে ব'লেছেন যে

ন মে বিহ্নঃ স্থবগণা প্রভবং ন মহর্ষয়। অহসাাদহি দেবাণাং মহর্ষীণাঞ্চ সর্ববশ ॥

হে অজুন। দেবগণ ও মহবিগণও থামাব প্রভাব জানেন না জর্থাৎ
আমাকে জানেন না। বেংভু, আমি তাঁদেব আদি ও উৎপত্তিব কাবণ।
যদি বল সপ্ত থাষি আগে স্পষ্ট ক'বেছেন ফুতবাং সেহ থাষ্যা স্পৃষ্টিব তত্ত্ব
আনেকটা জ্ঞাত হ'য়েছেন। না—খ্যবিবাও জানেন না। থাষ্য ত থাষ্য,
ব্রহ্মা বথন স্পৃষ্ট হ'লেন তখন ভিনি কিছুই বৃধ্তে না পেবে আকাশ
পাতাল ভাব্তে নাগলেন। তাবপ্য ভগ্বান ক্রপা ক'বে যখন নিজেকে
জানালেন এবং উপদেশ দিবেন তথ্ন ব্রদ্ধা তপ্তা ক'বড়ে লাগলেন।

যিনিই হ'ন না কেন, ভগবানকে সমাক্ প্রকারে কেইই জানেন না।
স্করাং তাঁব কার্যের ইতিহাস হ'তে গাবে না। তবে ভগবান প্রয়োজন
বিশেষের জন্ত অবভাবনপে অবভার্ণ হরে, কার্য্যক্ষেত্রে উপস্থিত থেকে
বখন কাঞ্জ সম্পন্ন কবেন, তখন অবশ্য লৌকিক বা অলৌকিক যা কিছু
ঘটনা বটে, তা লোকে দেখুতে পার, এবং তাব বিববণও পুরাণাদিতে
বর্ণিত আছে।

শিয়া। কেন? পুবাণাদিতে স্ষ্টিতত্ত্ব অর্থাৎ জগতেব স্ষ্টিপ্রাণালী ত লেখা আছে।

গুক। ইা—তা আছে বটে, কিন্তু সেটা চাক্ষ্য্ দেখে লেখা নন্ধ। ঐ সব লিখিত বিষয় সাধন-লব্ধ জ্ঞানেব সাংগ্যা লিখিত। আমি স্বীকাৰ করি যে দেবতা ও সংযিগা ভগবানেব আলোকিক কার্যা প্রত্যক্ষ ব'বতে পাবেন, কিন্তু ষথন আদৌ স্পষ্ট হয়নি, ভগবান একাকীই ছিলেন, এমন অবস্থায় স্পষ্ট ক'বলেন তথন অন্ত দশক কৈ গ কেননা, আব ত দ্বিতার পদার্গ ছিল না। সেই জন্ত ব'গছি প্রাণাদি লিখিত স্প্টিত্ত্ব অপবোস্বায়-ভূতিব সাহায্যে লিখিত। তবে আদিন বাজাদেব বংশাবলী ও তৎকানীন সামাজিক তত্ত্ব যা প্রাণাদিতে পাওন্ধা যান্ত্ব, তা অবশ্ব দেখে লেখা, স্থতবাং সে সব হতিহাস বটে।

শিশ্য। ভগধানের অবভাবের সমগ্ন প্রাণাদি কল্পিত লালার মধ্যে ধদি কোন প্রলোকিক ঘটনা ঘ'টে থাকে, তাই শোনবার জগু আমার বিজ কৌতুহল ভক্তে। আপনি দধা ক'বে সে সম্বন্ধে যদি কিছু বলেন, ভাহ'লে বভ আনন্দ পাই।

গুৰু। পুরাণাদিতে ভগবানের সকল অবতাবেবই অলোকিক ঘটনার উল্লেখ আছে। ভগবানের ব্রুলীলাব সময়ে একদিনকাব একটা ঘটনা বলি শোন। একদিন ভগবান রাখালদের সঙ্গে গোচারণের মাঠে আছেন,

এবং এক জার্মায় সকলকে নিয়ে ব'লে খাওয়া দাওয়া করছেন: গঞ্চ বাছুর সব দূরে দূবে জঙ্গলে চ'বে বেডাচ্ছে। ইতিমধ্যে ব্রহ্মা ভগবানকে পৰীক্ষা কৰবাৰ জ্বন্ত, গৰু ৰাছুৰ সৰ হৰণ ক'বে যোগ নিদ্ৰায় শুইয়ে দিলেন। এদিকে রাখালেরা খেতে খেতে দূবে আব একটাও গক বাছুব না দেখুতে পেয়ে মনে সন্দেহ ছওয়াতে ভগবানকে বলুলে যে ভাই কানাই। গরু বাছুর ত আব একটাও দেখা যাছে না, আমবা দেখে আসি কোথা গেল। অন্তর্যামী ভগবান ব্রন্ধাকে নিভেব পবিচয় দেবার জন্ম. তিনি বাধানদের বন্তান যে, তোমবা ভাই স্বাই থাও, আমি একলাই দেখে আস্ছি। এই ব'লে ভগবান ষেমন সেখান থেকে উ'ঠে দেখুতে গিয়ে-ছেন, আরু অমনি ব্রহ্মা বাধালগণকে হরণ ক'বে ধোগ নিজায় শুইয়ে দিলেন। ভগৰান ফিরে এসে দেখলেন বাখালগণও হত হ'য়েছে। তখন তিনি একটু হেঁদে তনুহুর্তেতেই ঠিক সেই গন্ধ বাছুর, বাথালগণকে স্ষষ্টি ক'বে আবাব সেই রকম লীলা কর্তে লাগ্লেন। তাবপর ব্রহা এক বৎসব বাদ এসে গরু বাছুর রাখালগণকে ফিরিয়ে দিয়ে ভগবানের স্তব স্তুতি ক'বতে লাগলেন ইত্যাদি। যিনি পলকে কোটা কোটা ব্ৰহ্মাণ্ড স্ষষ্টি 🕏 বৃতে পারেন, তাঁর পক্ষে এই গরু বাছুর কি রাধালগণ সৃষ্টি অতি সামান্ত কাজ। পবস্ত সামান্ত কাজই বৃহৎ কাজের পরিচায়ক।

শিশু। ভগবান বা হাতেব কেনে আঙ্গুলে সাতদিন সাতবাত ক্রমান্তরে গোবর্দ্ধন পাহাড় ধারণ ক'বে ব্রজবাসীদেব ঝড়বৃষ্টি থেকে রক্ষা ক'রে-ছিলেন শুন্তে পাই। এটাও ত একটা অলোকিক ঘটনা।

গুরু। হাঁ, অলৌকিক ঘটনা ত বটেই। গার ইচ্ছার এই বিশ্বের মধ্যে কোটা ক্ষুেটা পৃথিবা, চক্ত, স্থা, এই নক্ষতাদি আবহমানকাল আকাশমার্গে শ্স্তে ঘুরে বেড়াচ্ছে, তার ইচ্ছার যে একটা ছোট পাহাড সাত দিন সাত রাত শুন্তে পাড়া থাকবে সেটা আব আশ্চর্যা কি ? লোককে দেখাবার জন্ম আঙ্গুল ঠেকিয়ে রেখেছিলেন বটে, কিন্তু তার ইচ্ছাতেই পাহাড শৃন্মে ছিল।

শিয়। আজা ই।, এখন আমি বুঝতে পারছি বে,ভগবানেব ইচ্ছায় নাহয় এমন কাজই নাই। এখন আমাব আগেকাব সংশন্তেব মীমাংসা ককন।

গুৰু। আজ থাক্ আবাব কা'ল হবে।

তৃতীয় দিন।

গুরু ৷ তুমি ষে কাল ব'লছিলে আগেকাৰ সংশন্ন মেটাবাব কথা, সে সংশন্নটা কি গ

শিষ্য। আত্মা ভৃতগণের দেহেতে নিজ্জির, নির্নিপ্ত ও নিবিবকাব ভাবে অবস্থান কব্ছেন বল্লেন। আমি কিন্তু তাব কিছুই ধারণা কবতে পাচ্ছিনা। আত্মা দেহেব মধ্যে সমস্ত বৃত্তি ও ইব্রিরাদিব সজে সর্কান। জাভিত থেকেও ধে কি ক'বে নির্নিপ্ত হ'তে পারেন তাই ভাবছি।

গুরু। কেন ? সেদিন ত তোমাকে ব'লেছি যে, আআ আকাশেব মত নির্নিপ্ত থাকেন। যেনন আকাশ সকল পদার্থে এবস্থান ক'বেও কোন পদার্থ দ্বাবা উপণিপ্ত হয় না, তেমনি আত্মা ভূত সকলেব দেহেতে অবস্থান ক বেও দৈহিক পাপ পুণা কি দোব গুণ দ্বাবা উপলিপ্ত হন না।

শিশ্ব। আগ্রা দেহেব মধ্যে নিলিপ্ত ভাবে পাকেন, এমন কি দৈছিক পাপ পুণোব দ্বাবাও উপলিপ্ত হন ন।। প্রাকৃতিক কার্য্যেব ড্রন্টার স্থায় অবস্থান কব্ছেন, আপনি ব'লছেন। তবে কি কেবল প্রকৃতির কাজ দেখবাব জন্মই ভূতগণেব দেহেতে বাস কবেন।

শুরু। স্মান্তা কেন বে দেহেৰ মধ্যে থাকেন, তা ভগবান গীতার ১৩শ অধ্যায়েব ৩৩শ স্লোকে ব'লেছেন যে,

যথা প্রকাশয়ত্যেক কৃৎস্নং লোকমিমং ববিঃ। ক্ষেত্রং ক্ষেত্রা তথা কৃৎস্নং প্রকাশয়তি ভারত॥

হে ভাৰত। যেমন একমাত্র হুৰ্যাই সমগ্র বিশ্বকৈ প্রকাশ করে,

তেমনি একমাত্র আত্মাই দেগ্ৰূপী ক্ষেত্রকে প্রকাশ কবেন, অর্থাৎ জীবিত রাখেন।

শিশ্য। আআ যে নির্শিপ্ত নির্শ্বিকাব অবস্থায় থাকেন ব'লছেন, আপনাব এই কথায় কিন্তু আমাব সংশ্ব বাচ্ছে না।

গুক। এব আবার সংশয়টা কি १

শিশ্ব। আত্মা যদি নির্দিপ নির্বিকাব ভাবেই ভূতগণের দেহেতে থাকেন, ভাহ'লে তিনি প্রাণীগণেব স্থ হঃবেব কাবণ বশতঃ হর্ষ বিষাদেব অধীন চন কেন ?

শুবা। স্থ গুংখাদি অনুভবেব কাবণ হচ্ছে অহংকার। অহং জ্ঞানেব অভিমানে জীবকে ক্থ গুংখাদি বোধ কবাৰ, আমি স্থী, আমি গুংগা ইতাাদি। এই অনুভবেব সঙ্গে আআর কোন সম্বন্ধ নাই। প্রাকৃতিক মবিলাজনিত অহং জ্ঞানেব বৃদ্ধিতে জীবকে ঐ বকম মনুভব কবায়। কারণ সাদাবণ অজ্ঞান লোক নিজেকে (আআকে , জান্তে না পেবে প্রকৃতি প্রস্ত স্থুন দেহটাকেই আমি সাবাস্ত্র কবে। কাজেই তা'বা স্থুখ গুংথেব লখাম হ'য়ে হর্ব শোকাদি অনুভব কবে। বাস্তবিক পক্ষে, আআতে স্থুখ গুংখাদি কিছু স্পর্শ হয় না। আত্রা কোন ভাবেবই অধীন নন্, তিনি সর্বাধা সচিচদানক স্থুক্পে শ্রীয় স্বভাবেই অবস্থান কবেন। আত্রা কাবও সঙ্গে মেশেন না ব'লে শ্রুতি ব'লচ্ছেন যে, "অসাদাহয়ং পুক্ষঃ।"

শিশ্য। আত্মা যে সর্বাধা সচিচদানন স্বৰূপে স্বায় স্থভাবেই থাকেন তাব কোন প্রমাণ পাওয়াব উপান্ধ নাই, স্কুতবাং আপুনি ধা ব'লছেন তাই মেনে নিতে হবে।

গুৰু। না—তোমাকে কেবল আমাব কথায় মেনে নিতে বল্ছি না। আত্মাব সচিচদানন স্বৰূপ অবস্থা জাবেতে সকলা প্ৰকাশ পাচেছ। শিশ্য। কিসে বে দে ভাব প্রকাশ পাচ্ছে, আমি ৩ তার কিছুই বুরুতে পাচ্ছি না।

প্তরু। আচ্ছা, আমি বলি শোন এবং মনে বিচার ক'বে দেখ তাহ'লে ব্রুতে পারবে। সচিদানন্দ শব্দেব মানে আগে বোঝা, তা'হলে সেই সচিদানন্দেব ভাব লোকেতে যে প্রকাশ পাচ্ছে তাও বুঝাতে পার্বে। সং মানে আবনাশী, অর্থাৎ বাব কথন নাশ নাই। চিৎ মানে জ্ঞান, অর্থাৎ অজ্ঞান বাঁকে স্পর্শ কর্তেও পাবে না, এবং আনন্দ মানে নিবতিশয় স্থা, অর্থাৎ বিকাব বহিত স্থা। এই তিনটা অবস্থা প্রমাণ আতে পূর্ণ মাত্রায় বর্ত্তমান আছে ব'লে, তাঁকে সচিদানন্দ প্রুষ বলে। এমন কি কোন দেবতাবও এই সচিদানন্দ অবস্থা নাই। প্রমাত্রা ও জীবাত্মা ছইই এক, কেবল নামের বিভিন্নতা মাত্রা, স্থতবাং জীবাত্মাতে এই তিনটা ভাবই পূর্ণ মাত্রায় বর্ত্তমান আছে, এবং গোকেতে সে ভাব প্রকাশপ্র পাচ্ছে।

শিয়। এখন কিসে যে সেভাবে লোকে প্রকাশ পাচছে, সেইটা স্থান্বার সন্ত আমাব বড় কৌভূহল হ'চ্ছে।

গুক। তা শোন। দেখ, শত শত লোক মব্ছে, তা সকল লোকেই দেখ্ছে, কিন্তু কেও কথন ভাবে যে আমি মর্ব ? একথা আদৌ কারও মনে উদয় হয় না, উদয় হলেও মনে ধারণা হয় না। এইটাতে জীবাত্মার সংএর ভাব অর্থাৎ অবিনাশীতাব ভাব প্রকাশ পাছে। লোক যতই কেন জ্ঞজান কিয়া মূর্গ হ'ক না, সে কথনই মনে কবে না যে, অস্তাপেক্ষা সে কম ব্রো। সকলের চেয়ে আমি বেশী বৃঝি এবং আমাব জ্ঞান বেশী এ ধারণা সকলেব মনেই আছে। এইটাতে চিৎ অর্থাৎ জ্ঞানের ভাব প্রকাশ পাছে। আর জীব সর্মান আনন্দ অর্থাৎ স্থেবে প্রয়াসী। এমন কি দশার ফেরে ত্র্থ না ঘটলেও লোক মনে মনে স্থা কল্পনা কবেও

আনন্দামূভব কৰে। এইটাতে আনন্দেব ভাব প্ৰকাশ পাচছে। এখন বুবে দেখ, জীবাত্মাৰ সচিদানন ভাব জীবেতে প্ৰকাশ পাচছে কি না।

শিশ্য। আজা হা বুর্লাম। পবস্ত স্থা ছংখাদি যদি কিছুই আআছ স্পর্শনা হয়, তাহ'লে হর্ষ বিষাদাদিতে আত্মাব অবস্থান্তর অর্থাৎ তাঁকে বিকাৰগ্রন্থ দেখায় কেন ?

গুয়া। আখাব আবাব বিকাৰ কি ?

শিয়। আত্মা হর্ষ বিবাদাদিযুক্ত না হ'লে লোকেব মুখ দেখে কি ক'বে জান্তে পারা বার যে ইনি স্থা ইনি হঃখী ইত্যাদি ? লোকেব মুখ দেখেই আত্মাব অবস্থা জান্তে পাবা বার। কাবেণ, মুখমণ্ডল আত্মার দর্পণ স্বরূপ কেন না, মুখেতেই তার প্রতিবিদ্ধ পড়ে। আত্মা হর্ষ ভাব প্রাপ্ত হ'লে মুখমণ্ডল প্রফুল হর, সহাস্তবদন হয়, মুখমণ্ডলেব বর্ণ উজ্জ্বল হয়, এবং চক্ষ্র্র আনন্দ জ্যোতিতে পূর্ণ হয়। সেই আত্মা আবাব বিবাদ ভাবপ্রাপ্ত হ'লে, মুখমণ্ডল গ্রান হয়ে বার , মুখমর বেন কালি মাথিয়ে দেয়, চোথ হুটা হঃধাশ্রভাবাক্রান্ত হয়। এতেই ত আত্মার ভাবান্তর লক্ষিত হ'চেছ। আত্মার ভাবেব পবিবর্ত্তন না হ'লে লোকের মুখের ভাবের কখনই পরিবর্ত্তন হয় না।

গুরু। বাস্তবিক, হর্ষ বিমাদাদি কিছুই আত্মাতে সংস্পর্শ হয় না, তত্রাচ আত্মাকে প্রফুলিত অপবা বিমাদিত দেখায়। তার কাবণ এই যে, অবিচাজনিত অহংকারের বশবতী হওয়াতে, জীব অধ্যাস বশতঃ হর্ষ বিমাদাদিব প্রতিবিধ আত্মায় প্রতিকলিত হ'তে দেখে, কাজেই দে ভাব মুখ্মগুলে প্রকাশ পায়, স্বতরাং আত্মাকেও তদনুবাপে দেখায়। যেমন একটী কটিক পাত্রের নিকট যে বঙ্গের বস্তু ধরা বায়, তথন ঐ ক্ষটিক পাত্রিকৈ সেই বং বিশিষ্ট দেখায়। পরস্ত ঐ ক্ষটিক পাত্রেব সহিত উক্ত রক্ষিন বস্তুব আদৌ সংস্পর্শ নাই, মধ্যে কিছু ব্যবধান মাছেই, অপচ সাদা পাত্র

টীকে রঙ্গিন দেখায়। কারণ, বঙ্গিন বস্তুটীৰ প্রতিবিশ্ব পাত্রে পড়ে। তেম্নি অবিভাগীন জীব অধ্যাস বশতঃ হর্ব শোকাদিব প্রতিবিদ্ধ আত্মায় দেখে থাকে, ফলতঃ আত্মা বিন্দুমাঞ্জ বিকাব প্রাপ্ত হন্না, প্রতবাং তজ্জ-নিত কোন বক্ম বিকার্জ উৎপন্ন হয় না।

শিষ্য। দেহাদি জড পদার্থেব ক্রিয়া আত্মায় স্পান হয় না। যেমন শরীবে জব হ'লে ভজ্জনিত উত্তাপ আত্মায় লাগেনা, আপনি এই ব'লছেন। কিন্তু কোন কোন স্থলে এমনও দেখা যায় যে, পদার্থের প্রস্পুর্ব সংস্পূর্ণ না হ'লেও গুল দ্বাবা ব্যাপ্ত হ'য়ে পদার্থ বিকাব প্রাপ্ত হয়। যেমন কডাইতে পায়েম পাক হয়। আগুল কেবল বড়াইকেই স্পান কবে. কিন্তু ভাতেই চা'ল সিদ্ধ হয় এবং হয় ঘন হ'য়ে পায়েমে পবিণত হয়। আগুল সংস্পূর্ণ না হ'য়েও হয় যেমন বিকাব প্রাপ্ত হ'বে পায়েমে পবিণত হয়, তেমনি শার্বাবিক ক্রিয়া আত্মায় সংস্পৃশ না হ'লেও ভাব বিকাব প্রাপ্তিব সম্ভাবনা দেখা বাছেছ।

গুক। হা, বডাইতে পারেস পাক কবলে, এধাদি অগ্নি সংস্পর্ণ না হ'রেও বিকাব প্রাপ্ত হয় বটে, কিন্তু শাবীরিক ক্রিয়ার দ্বাবা আত্মা সেরপে বিকাব প্রাপ্ত হন্ না। তার কারণ, সমধর্মী পদার্থেই পবস্পব গুণের ও কম্মের সম্বন্ধ থাকে, কিন্তু বিষমধর্মী পদার্থে সে সম্বন্ধ থাক্ত পারেনা। সেইজন্ত দৈহিক ঘটনায় আত্মাব কোন সম্বন্ধ ঘটতে পারে না। কেননা, আত্মা ফ্র্মাদিপি ক্রম একমাত্র অবিনাদী সত্য পদার্থ। আব মারাসন্ত্ত ভূতাদি জগৎ প্রপঞ্চ যাবতীয় পদার্থই নাশনি । অর্থাৎ মিথাা। এখন সত্য ও মিথা পদার্থে কি কবে এক হ'তে পারে গ তাব মানে এক গুণের অধীন হ'রে ক্রিয়া জনিত বিকরে প্রাপ্ত হ'তে পাবে গ

াশস্য। জগৎ মিখাা কিনে গু ভগৎ পর্মাস্থা থেকেই ত উৎপর হ'ড়েছে। পর্মাত্মা কারণ আব জগৎ তাব কার্যা। ভগৎ ও পর্মান আতে ধর্মন কার্য্য কারণ সম্বন্ধ, তশ্বন জগৎ মিণ্যা হয় কিসে ৷ বেমন মাটা কারণ ঘট তার কার্য্য, ঘট কি মিণ্যা ?

শুক । তুমি মার্টা ও ঘটেব যে উদাহরণ দিছে সেই উদাহরণেই তোমাকে আমি বোঝাছি। আগে মিথা। শব্দেব মানে বোঝ, তাহ'লে এই বিষয়টা বুঝাত পাবৰে। এখানে মিথা। মানে যাব চিবদিন অস্তিম্ব থাকে না অর্থাৎ যা নাশশীল পদার্থ ভাই মিথা।। জগৎ নাই ব'লে যে মিথা। তা নয়, জগৎ আছে সত্য কিন্তু থাক্বে না। এখন তোমার উদাহরণের কথাই ধয়। ঘটয়পী কার্য্য নই হ'য়ে য়য়, কিন্তু মার্টা সে তার কারণ সে'টা থাকে। পবমাঝা ও জগতে কার্য্য কারণ সম্বদ্ধ স্থুল ও কৃল্মাক্ষুবাপী কাবণই স্থুলকাপী কার্য্যে পবিণত হয়েছে। ফ্ল্মাদিণি ক্ষু পবমাঝা কাবণ স্থুল জগৎ তাব কার্য্য। এই মায়া প্রপঞ্চ জগৎ থাকবে না
ব'লে একে মিথা। বলে। সেই জন্ত তক্জানী পুরুষেব নিকট জাগতিক
সমন্ত বিষয়ই মিথা। ব'লে প্রতীয়মান হয়। যিনি সত্যকে জেনেছেন
ভিনিই কেবল মিথাকে জান্তে পারেন। নইলে সত্য মিথা। বাছ্বেন কি
করে প একমাত্র সভ্য যে আত্মা ভক্জানী পুক্ষ তাঁকেই জেনেছেন;
স্থুতরাং স্থুথ ত্বংখ ভাল মন্দ ও জগতেব কোন ঘটনাতেই কিছু আসে যায়
না। অর্থাৎ স্থুথ ত্বংখাদি কিছুতেই তিনি অভিকৃত হন্ না।

শিশ্ব। তাহ'লে স্থ তৃঃথ অন্বভবে আদেনা এমন মানুষও আছেন ?
প্রক। নিশ্চয় আছেন। যিনি তবজ্ঞানী অর্থাৎ যে মহাত্মা
আআকে জেনেছেন্, তিনি দেখেন যে, প্রকৃতির ছারায় সব কাজ হচ্ছে,
আমাব (আআব) সঙ্গে কর্মের কোন সংশ্রধ নাই, স্বতরাং কোন স্বার্থও
নাই। কাজে কাজেই তিনি সকল অবস্থাতেই নির্ধিকার চিত্তে অবস্থান
করেন। ভগবান গীতার ৫ ম অধ্যায়েব ১৩ শ শ্লোকে ব'লেছেন যে.

সর্বব কর্মাণি মনসা সংস্কৃত্যান্তে স্থংবশী। নবদারে পুবে দেহী নৈব কুর্ববন ন কারয়ণ্॥

তথ্যজানী পুক্ৰ মনে মনে সকল কৰ্ম্মের কণ্ট্রাভিমান ত্যাগ ক'বে নবধার বিশিষ্ট দেহপুৰে স্থাপে অবস্থান করেন। তিনি স্বয়ং কোন কর্মে প্রবৃত্ত হন না এবং অন্তর্জেও প্রবৃত্ত ক্রেন না।

শিশ্য। কোন গ্ৰহনা উপস্থিত হ'লে মনকে অবিচলিত রাখা আমাব অশন্তব ব'লে মনে হয়। তত্মজানী পুক্ষেবা যে কি ক'বে অবিচলিত থাকেন পামি তাই ভাবছি।

শুক। অধিকাবী পুক্ষরে পক্ষে মন অবিচলিত বাণা কিছুমাত্র অসম্ভব নয়। কর্মেব সঙ্গে আমার কোন সংশ্রব নাই মনে এই ধারণাটী দৃঢ় হ'লে, অর্থাৎ এইটা সম্পূর্ণরূপে বিখাস হ'লে, মনে আর কোন গোল খাকে না। লোকের শরীব, স্ত্রী কি সস্তানেব প্রতি নিজেব ব'তে যেমন পূর্ণ বিশ্বাস থাকে, এক্ষেত্রেও ঠিক সেই রকম দৃত বিশ্বাস থাকা চাই। সাধাবণ কথায় তোমাকে বোঝাছি তা হ'লে বৃশ্তে পাব্বে। মনে কর্ম দাওরায় জল্ল্ সাহেবের এল্লাসে একটা সঙ্গীন মোকন্দমা চল্ছে। এখন বাদী ও প্রতিবাদা পঞ্চীয় লোকেবা ঐ মোকন্দমাব ফলাফলেব জন্ম উন্ধিয়ান্তিতে বিচার ফল প্রতীক্ষা কর্ছে। কেন না, এই মোকন্দমার তাদের স্বার্থ জড়িত আছে। পবস্ক, সহবেব অন্তান্থ লোকেরা যে এই মোকন্দমার বিচার দেণ্ডে এসেছে, তাব। কিন্তু নিক্ষন্নিয় মনে দাঁডিয়ে বিচাব দেণ্ছে। বিচাবে বাদীব ন্ধিত হ'ল, স্কৃত্যাং তৎপন্ধীয় লোকেবা মহা আনন্দ কর্তে লাগ্র, এবং সেই সঙ্গে সঙ্গে প্রতিবাদী পক্ষীয় লোকেবা মহা শোকপ্রস্ত হ'ল। কিন্তু সহরেব লোকেবা বাবা দুন্তার্যনে দাঁডিয়ে বিচাব দেশক্র হ'ল। কিন্তু সহরেব লোকেবা বাবা দুন্তার্যনে দাঁডিয়ে বিচাব দেশক্র হ'ল। কিন্তু সহরেব লোকেবা বাবা দুন্তার্যনে দাঁডিয়ে বিচাব দেশক্র হ'ল। কিন্তু সহরেব লোকেবা বাবা দুন্তার্যনে দাঁডিয়ে বিচাব দেশক্র হ'ল। কিন্তু সহরেব লোকেবা বাবা দুন্তার্যনে দাঁডিয়ে বিচাব দেশক্র হ'ল। কিন্তু সহরেব লোকেবা বাবা দুন্তার্যনে দাঁডিয়ে বিচাব দেশক্র হ'ল। কিন্তু সহরেব লোকেবা বাবা দুন্তার্যনে দাঁডিয়ে বিচাব দেশক্রিয় , ভাগেব মনে কোন উন্ধ্যেই নাই। কেন না, পূর্ণ

বিশ্বাদের সহিত তাদের মনে এই দৃচ ধারণা আছে যে, তাদেব সঙ্গে এই মোকলমার কোন সংশ্রব নাই, স্কৃতবাং কোন স্বার্থণ্ড নাই। তারা ষে কেবল এই মোকলমার বিচাব দেখতে এলেছে তাদেব মনের ধারণা তাই থাকে। সহরের লোক বেমন মোকলমা দেখতে এলে, সেই মোকলমাব ফলাফলের জন্ম মনে কোন উদ্বেগ প্রাপ্ত না হ'রে অবিচলিত মনে থাকে, তেম্নি তত্বজ্ঞানীগণ্ড কোন ঘটনাতেই বিচলিত না হ'রে অবিচলিত চিছে অবস্থান করেন। কেননা, পূর্ণ বিশ্বাদের সহিত তাদেব মনে ধারণা থাকে যে, সমন্ত কর্মই প্রকৃতিব সঙ্গে সমন্ত কর্মের সঙ্গেত কলেব সঙ্গে তাদের কোন সংশ্রব নাই স্কৃতবাং স্বার্থণ্ড নাই, তাবা কেবল প্রস্তারূপে থাকেন মাত্র। এখন ভেবে দেখ, বে সাত্রাকে কেনে তত্বজ্ঞানা প্রকৃষেবা কি মহান্ অবস্থা প্রাপ্ত হন আর সেই আত্রা স্কৃষ্ণ করিপে অবস্থান কর্ছেন গ

শিশ্য। জ্ঞানী পুক্ষেব মন কেন যে বিচলিত হয় না এবং জ্ঞানী ও জ্ঞানেতে কি পাৰ্থক্য তা আমি বুঝ্লাম। এখন জীবাত্মা ও প্রমাত্মা সম্বন্ধে আমার যে সংশয় আছে তাই মিটিয়ে দিন।

গুক। তোমাব কি সংশয় বল।

শিষ্য। আপনি সেদিন ব'ল্লেন যে পরমাত্মা কর্ত্তা, আবার ব'ললেন যে আত্মা অর্থাং জীবাত্মাই কর্ত্তা। এখন আমাকে বলুন জীবাত্মা ও পরমাত্মা পৃথক না এক, যদি আলাদা হন তা হ'লে সে পার্থকাই বা কেমন ?

গুক । প্রশ্নটী বডই কঠিন। আসল তত্ত্ব বুঝ তে গেলে অবৈতজ্ঞানের আশ্রম্ম নিতে হয়। পরস্ত, মারাবদ্ধ জীবের পক্ষে অবৈতজ্ঞানেব আশ্রম্ম নিয়ে আসল তত্ত্ব হৃদয়লম কবা এক রক্ম অসম্ভব। সাধারণের পক্ষে বৈতজ্ঞানই অনুকূল। প্রভরাং বৈতজ্ঞানের আশ্রম নিয়ে আপাততঃ এই বিষয়টা বোঝাবার চেষ্টা কর্ছি। তবে অইছতজ্ঞানের আশ্রয় নিয়েও তোমাকে আসল তত্ব বোঝাবার আর একদিন চেষ্টা কর্ব। এখন শোন, জীবাআ ও পরমাত্মা বস্তুত্ব: কোন পার্থকা নাই, তুইই এক। কেবল অবস্থানের পার্থকা হেতু নামের বিভিন্নতা মাত্র। বেমন আবাদের জন্ত গঙ্গা থেকে খাল্ কেটে জল নিয়ে যায়, 'এবং গঙ্গার ফলই খালে যায়, অবাং গঙ্গাও খালের ছই জলই এক, তত্রাচ গঙ্গার গর্ভস্থিত জলকে পোকে গঙ্গাজল বলে, আর খালস্থিত গঙ্গাজলকে খালের জল বলে। তেম্নি পরমাত্মার বে অংশ ভূতগণের দেহে বন্ধাবস্থায় অবস্থান্ কর্ছেন, তাঁকে জাবাআ বলে। আব বে অংশ মুক্তাবস্থায় সচবাচর বিখে ব্যাপ্ত হ'য়ে আছেন্ তাঁকে পরমাত্মা বলে। ভগবান গীতার ১০ম্ অধ্যায়ে বিভৃতি রোগে ব'লেছেন যে, "অহমাত্মা ওভাকেশ সর্ব্ধ ভূতাশর স্থিতঃ" হে আর্জ্মন। আমি ভূতগণের দেহেতে আত্মারূপে অবস্থান কব্ছি। একথা বলার তাৎপর্য্য এই, ভগবান বল্ছেন্ যে, বিখ ব্রন্ধান্ত ব্যেপে আমি ত আছিই, আবাব ভূতগণেও আত্মান্ত্রেপ আছি।

শিষ্য। তবে আৰ অবস্থাৰ পাৰ্থক্য ১'ল কৈ ? তিনিই সচরচেব বিশ্ববোপে আছেন্, এবং ভূতগণেৰ দেহের মধ্যেও আছেন্। তিনি ছাড়াত আর কেই নাই।

গুক। পার্থক্য আছে বৈ কি। বেমন জেলখানান কয়েদী ও জেলের বাহিরের অন্ত লোক। লোকের জেল হ'লে হাতে পায়ে বেডা প'রে জেলখানার বাডীর মধ্যে বাস কবে, কোন স্থানে যাওয়ার বা স্বাধীনভাবে কিছু কর্বান সাধ্য থাকে না, সেই জেলখানার ঘেরা বাডীব মধ্যেই পাক্তে হয়। তথন সেই লোককে সবাই কয়েদী বলে। দেখ একই মানুষ অবস্থা ভেদে বিভিন্ন নাম প্রাপ্ত হচ্ছে। তেমনি এক প্রমান্ত্রাই অবস্থা ভেদে জীবান্ত্রা ও পর্মান্ত্রা ব'লে ক্পিত হন্।

শিষ্য। কম্বেদীকে জেলখানাব বেবা পাঁচালে আটক্ কবে রাখে, কিন্তু জীবাত্মাকে কিসে আটক্ ক'রে রাখে ?

শুক। কর্মফলে আটক্ ক'বে বাপে। মানুষেব কর্মফল শরীরের মধ্যে সুক্ষাবস্থার জীবাআর চারিদিকে মেলেব মত হ'রে বিবে থাকে। যথন জীবাআ দেহত্যাগ করেন, তখন ঐ সকল সুক্ষাবস্থাব কর্মফল জীবাআকে চারিদিকে বেরাও ক'রে কর্মোচিত যোনীতে নিয়ে গিয়ে হাজিব কবে। এই প্রাক্তন অর্থাৎ সুক্ষাবস্থাব কর্মফল জীবাআকে কখনই ত্যাগ ক'রে যার না।

শিশ্য। কর্মফল স্ক্রাবস্থার জীবাত্মার চাবি দিকে যিরে থাকে কেন, এবং জীবাত্মা দেহভ্যাগ কব্লে তাঁকে কর্মোচিত যোনীতে নিরে গিরে হাজিবই বা কবে কেন ?

গুক। ঐ ত অদৃষ্ট। ঐ প্রাক্তন ফল আছে ব'লেই ও জীবাত্মাকে দেহ ধারণ ক'ব্তে হয় অর্থাৎ জন্ম নিতে হয়। কন্মফল জীব স্ষ্টের বীজ স্থকপ। কর্মফল না থাকণে জীবেব জন্মই হয় না। এই কর্ম্মনিক সংস্থার বলে, এবং সেই মংস্কাবানুসারে জীবেব জীবনেব যাবতীয় কাজ হ'য়ে থাকে।

শিখা। আছো, ঐ অনৃষ্ঠ, কৰ্মফল বা সংস্কাব ষাই বনুন, দেগুণি কি আব জীবাআকে কখন ছাড্বে না ? তাকে চিবকালই কি বদ্ধাবস্থায় থাক্তে হবে ?

গুরু। ভোগের দ্বাবা ঐ সংস্কাবগুলি ক্ষম না হ'লে আর জীবাত্মাব ভান নাই। ফলেব আকাজ্জা বেথে কর্ম কর্লে লোকের এই চ্র্দিশা ঘটে, কিন্তু নিদ্ধাম ভাবে কর্ম কর্লে, কম্মফলের অভাব হেতু আর জন্ম হয় না। বীজ না থাক্লে কি আর ফ্সল উৎপন্ন হয় ? লোকে ভব ষন্ত্রণা থেকে মুক্তি পাবে ব'নেই ভগবান গীতাতে নিদ্ধাম কর্মেব এত উপদে দিয়েছেন, এবং প্রশংসাও ক'বেছেন। গীতার ২য় অধ্যায়ের ৪৭শ শ্লোকে ভগবান যেন মাধার দিব্যি দিয়ে ব'লছেন যে,

কর্মণ্যে বাধিকাবস্তে মা ফলেয়ু কদাচন। মা কর্মফল হেতু ভূ মাতে অঙ্গোহস্ত কর্মণি॥

হে অর্জুন। কর্মে তোমাব অধিকার হ'ক অর্থাৎ কর্ম কব, কিন্তু ফলে বেন কদাচ অধিকার না হয়, অর্থাৎ ফল কামনা যেন কদাচ না কর। ভার মানে নিজাম ভাবে কর্ম কর। আর কর্মফল যেন ভোমার কর্মে প্রবৃত্তির হেতু না হয়। অর্থাৎ ফলেব লোভে যেন কর্ম না কর। দেখ, কিশ্বর জীবের কেমন কল্যাণ কামনা ক'বে থাকেন।

শিখা। লোকের কর্মফল, বা সংস্কার কি রকম ভাবে ক্ষয় হয় ?

প্রকর্ত থাকে বা ভাবের গান শুনেছত ? বন্ধটী সাম্নে রাথে, সমস্ত রেকর্জপ্রনি বাঁ দিকে এক জামগায় থাক্ করা থাকে, এবং বে কমথানি বেকর্জের গান শুন্বে সেগুলি মোট বেকর্জ থেকে বেছে নিম্নে আলাদা ক'রে রাখে। যেথানে রেকর্জপ্রনি থাকে সেখানে উপরি উপরি সাজান থাকে। তাবপর ঐ বেছে রাখা রেকর্জের এক এক থানি ক'রে মেদিনে চডায়, এবং খুরে খুরে গান হয়। এই বকম ভাবে বেছে রাখা বেকর্জের সমস্তগুলির গান থতম্ হয়। বাকে জন্ট বলে, সেই ক্লাবস্থার সংস্কার-রূপী কর্মাফলের অবস্থাও ঠিক তাই। প্রাবন্ধ নামক কর্মাফলের রেকর্জ ক্লা ক্রার জন্মই, জীব এই দেহরূপ মেদিন পাম অর্থাৎ জন্ম হয়। গানের রেকর্জ থেমন তিন ভাগে বিভক্ত থাকে, অর্থাৎ নোট রেকর্জ এক জামগার মঙ্গুত থাকে, আব উপস্থিত গানের জন্ম করেবথানি রেকর্জ আন বাছা থাকে, এবং একথানি গানের জন্ম মেদিনে খুরুজে থাকে, সংস্কাররূপী কর্মাফলের রেকর্জও তেমনি তিন ভাগে বিভক্ত, থাকে। সংস্কাররূপী কর্মাফলের রেকর্জও তেমনি তিন ভাগে বিভক্ত, থাকে। সংস্কাররূপী কর্মাফলের রেকর্জও তেমনি তিন ভাগে বিভক্ত, থাকে। সংস্কাররূপী কর্মাফলের রেকর্জও তেমনি তিন ভাগে বিভক্ত,

সঞ্চিত, প্রারন্ধ ও ক্রিম্নমান। বহু জনা জন্মান্তবের সংস্কার যা দেহের মধ্যে মজুত আছে তাকে সঞ্চিত বলে, আর ইহজীবনে ভোগের দ্বারা ক্ষম কববার জন্ত যে ক্য়থানি নির্দিষ্ট রেকর্ড আছে, তাকে প্রাবন্ধ বলে, এবং যে বেকর্ড থানিব কাজ জীবনে উপস্থিত চলছে, তাকে ক্রিম্নমান বলে। গানেব বেকর্ড ও সংস্কাবন্ধপী রেকর্ডে তথাৎ এই যে, গানের রেকর্ড গান হওয়ার পর মজুত থাকে, কিন্তু সংস্কাবন্ধপী রেকর্ড ভোগ হ'লে আর থাকে না, ক্ষয় হ'লে যায়।

শিশ্য। আচ্ছা, লোকেব ধর্মে কি পাপে যে মতি হয়, 'তাও কি সংস্কাবরূপী রেকর্ড অনুসারে হয় ? আবার এমনও দেখা যায় যে, কোন লোক তার জীবনে ববাবর ধর্ম কর্ম করে আস্ছে, শেষে হয়ত বুঢ়ো বয়সে বিশেষ ধারাপ কাজ ক'রে বস্ল, তার কারণ কি ?

শুক। ইা, জীবের পাপ অথবা পুণা কর্মে মতি সংস্থারামুসারেই হ'রে থাকে। তোমার বিতীয় প্রশ্নের উভর, খারাপ রেকর্ডে হাত পড়া। মনে কর, লোকে ব'সে ফনোগ্রাফের গান শুন্ছে ও প্রীত হছে। এমন সময় একথানি খাবাপ রেকর্ড মেসিনে চড়ল, রেকর্ডগুলি উপরি উপরি সাজান থাকে. উ গরকার ভাল রেকর্ডগুলির গান খতম হ'লেই তার পশ্ন খারাপ রেকর্ডে হাত পড়ে। তথন প্রোতারা খারাপ গান শুনে বিরক্তি প্রকাশ কবে এবং গানেরও নিন্দা করে। তেমনি লোকেরও সংস্থাররূপী রেকর্ডের ভালগুলি খতম হ'রে গিয়ে পরে খারাপ রেকর্ডেব কাজ শ্রন্থ হয় এবং লোকে তার সেই রুত কর্ম্মের জন্ত ছিছিক্কাব নিন্দা করে। খারাপ রেকর্ডে হাত পড়েছে সে বেচারা কর্বের কি

শিষ্য। লোকে ইহজীবনে বে কর্ম করে, তার ফল সংস্কার বা অদৃষ্টক্রপে পরজীবনে ভোগ হয়। আছো, ইহজীবনের কর্ম্মদল কি এই জীবনে ভোগ হয় না ৪

গুরু। হা, স্থলবিশেষে ইহজীবনের কর্ম্মল এই জাবনেট ভোগ হ'রে থাকে। ভীত্র পাপ অথবা পুণা কর্ম কব্লে তার ফল এই জীবনেই ভোগ হয়। বেমন জরুবী টেলীগ্রাম। আর আব টেলীগ্রাম্ গুলি প'ড়ে পাকে, সময় মত পাঠায়, কিন্তু জৰুৱী তাব গুলি বেছে নিয়ে তৎক্ষণাৎ পাঠার। যেমন টেণীগ্রামের মধ্যে অক্সান্ত গুলিকে ফেলে বেখে জরুরী গুলি তৎক্ষণাৎ পাঠায় , তেম্নি মানুষের তীব্র পাপ অথবা পুণ্য কর্মেব ফলও অন্তান্ত কম্মফলকে তল্ ফেলে আগে অর্থাৎ এই জাবনেই ভোগ সংসারে দেখেত পাওনা বে, লোকে তীব্র পাপ অথবা পুণা কর্ম কৰ্লে হাতে হাতে তাৰ ফল পায়। আৰু এক বক্ষেও ইহজীবনের কৰ্মফল এই জীবনেই ভোগ হ'মে থাকে। প্ৰাবন্ধ ভোগ থতম্ কৰাত বতদিন লাগে ততদিন লোকেব প্ৰমাণু, অৰ্থাৎ প্ৰাবন্ধ দমস্ত ভূ'গে নিম্নে তবে লোকে দেহত্যাগ কবে। এখন কোন লোকেব প্রকৃতি নিদ্দিষ্ট প্রাবন্ধ ফল নির্দিষ্ট প্রমাযুতে ভোগ হ'রে গেল, কিন্তু ঐ ব্যক্তি থোগাভাাস কি অন্ত কোন সাধনা কবাতে ভাব আযু আবও বাড্ল, তাং'লে তথন তার ভোগ হবে কি ? নিদ্দিষ্ট কমফল ও নিদ্দিষ্ট প্ৰমাযুতে ভোগ হ'ছে গিয়েছে। কাজেই তথন এ জীবনেব কম্মচনে হাত পাড। প্রয় এ রক্ষ ঘটনা কলাচিৎ ঘটে।

শিষা। মানুষেব প্ৰমা। কি বাভে কমে ।

গুৰু। ইা, কমা বিশেষে বাডে এবং কদাবিশেষে কার হ'য়ে ক'মেও যায়।

শিষ্য। আপনি ব'ন্ছেন বে, লোকের ক্লন্ত পাপপুণা কলানুসাবে হব হবে ভোগ হ'রে থাকে। এ কথার কিন্তু আমার মনে বিশেষ দংশর হচ্ছে।

শুরু। সংশয়টা কি ?

শিষা। শোকে পাপাচাবা হ'ন্ধেও স্থব সচ্ছন্দতা যে ভোগ করে এবং ধর্ম পথে থেকেও যে কণ্ঠ পায়, তাতেই মনে হয় যে, সংসাবে বুঝি পাপ পুণোর বিচার নাই।

শুরু। তোমার মনে কি বিষয়েব সংশয় হ'য়েছে সেইটা খুলে বল না।
শিষা। দেখুন, সংসাবে দেখা বায় বে, কোন লোক মহা পাপকর্ম
সব করেও মহাস্থবে কাল কাটাছে ধনে জনে সকল দিকেই স্থবী এবং
শরীবও নীবোগ। আবাব কোন লোক পবম ধার্ম্মিক ও ভগবদ্পবায়ণ,
তাব কিন্তু ছঃখেব দীমা নাই। অয় বয়েব কয়ত আছেই, তায় উপব পুত্র
শোক উপস্থিত হ'ল, আবাব হয়ত বাড়ীখানা পু'ছে গেল। এ বহস্তত
আমি কিছুই বুঝতে পাবছিনা।

গুক। কেন ? এ রহস্তত আমি তোমাকে পূর্বেই ব'লেছি। ঐ পাপাচাবী বাক্তি তাব পূর্বেজন্মেব অর্জিত প্রাময় সংস্কারেব জন্ত এ জ্বমে সে ঐহিক প্রথ ভোগ কর্ছে। আব এ জন্মে সে যে সব পাপ কর্ম করছে, তাব সংস্কারকণী বেকর্ড তৈয়াবি হচ্ছে। কেন না, প্রজন্মে ভোগ হবে।

শিষা। আপনাৰ এই কথাৰ আমাৰ মনে সংশন্ধ আবিও ৰাড্ছে। বে বাক্তি পূণামন্ন সংস্কাৰ নিয়ে জন্মগ্ৰহণ কৰেছে, তাৰ নিশ্চন্নই সংপথে ধৰ্ম কম্মে মতি ১ওয়া উচিত। তা না হ'বে ঠিক তান বিপৰীত হচ্ছে, তবে আৰু পূণামন্ন সংস্কাৰেৰ অৰ্থ।ক ৮

গুরু। ইপর উপর দেখাল সংশয় হয় এটে, কিন্তু বিষয়টো চিন্তা ক'বে দেখালে তার এ বহসা হাদমুদ্দ হয়। মনে কর একজন বাজা খুর ঐথগ্য ভোগ কর্ছেন্। দিবাবাতি ইদ্রিয় সুথে মন্ত আছেন। কেবল মদ, বাড, পর্দার প্রভৃতি পাদকর্ম তার আলোচা বিষয় হয়েছে। ভ্রমেন্ড কথন ভগ্যানকে স্থান করেন না, অথবা সংক্রমে মতি হয় না। তার কারণ কি ? তার কারণ এই যে, রাজাটী পূর্বজন্মে কঠোর তপ্সা ক'রেছিলেন, এজন্ম তার ফলস্বরূপ রাজভোগ পেয়েছেন। পরন্ত তিনি
নিন্ধাম ভাবে তপসা। করেননি, প্রবল আকাঝার সহিত তপসা। ক'রেছিলেন, কাজেই তাঁর চিত্তক্তি হয় নি; স্থতবাং হানম্ম ভোগাকাজ্ফা ও
প্রাদক্তি ধ্যে-প্রভৃতি ময়লাপ্রলি তপসাার সময় তাঁর মনে লেগেই ছিল।
তপসা৷ ফলের যথন সংস্কাবরূপী বেকর্ড তৈয়ারি হ'রেছে, তথন ঐ তপসা৷
কালীন ভোগাকাজ্ফাদি ময়লাপ্রলি যা তাঁর মনে লেগেছিল, সে গুলিও
স্পালারে সংস্কাবরূপী বেকর্ডেব সামিল্ হ'রে গিয়েছে। কাজেই সেগুলি

শিষ্য। রাজাটী বথন কঠোরতা অবলম্বন ক'রে তপসা। ক'রেছেন তথন ঐ সব ভোগাকাজ্ফাদি ময়লাগুলি মনে থাক্বে কেন ?

শুলার তপই কর আর পূজাই কর কিছুতেই কিছু হবে না। অর্থাৎ তত্ত্বজ্ঞান লাভের কোন সপ্তাবনা নাই। আকাশ মেঘাছের থাক্লে প্রাদের যেনন প্রকাশ পান্না, ছদরে রাগ ছেয়াদি ময়লাগুলি থাক্লেও ছদাকাশে তত্ত্ব্যানরপ পর্যা প্রকাশ পান্না। নিক্ষাম ভাবে কর্মা কর্লে লোকের চিত্তত্তির হয়, কিন্তু সকাম কর্মে তত্তিপরীত হ'বে থাকে। ঐ রাজাটী পূর্বজন্মে রখন এইক স্থভোগ ত্যাগ ক'বে কঠোরতার সহিত তপস্যা ক'রেছিলেন, তখন এসব ভোগাকাজ্ঞাদি র্জিগুলি বিষয় না পেরে, অর্থাৎ ভোগা বস্তু না পাওয়াতে, ভাদের ক্ষমতা প্রকাশ কর্তে পারেনি ব'লে ইজিয়পন সংঘতের স্থার ছিল; কিন্তু প্রকৃত পক্ষে ইজিয়পন সংঘত হ'য়েছিল না। কেন না, চিত্তত্ত্বি ভিন্ন ইজিয়পন কথন সংঘত হয় না। এখন ঐ রাজাটীর তপস্যা ফলের বে রেকর্ড তৈয়ারী হয়েছে, তাত্তে রাজা হবে এবং বাজভোগ সর পাবে স্কৃত্বাং এজনে তিনি রাজা হ'য়ে রাজভোগ সর পাবে স্কৃত্বাং এজনে তিনি রাজা

শুলিও তাঁব সংশ্বাবন্ধী বেকর্জে মিশ্রিত আছে। কাজেই এখন তাবা ভোগা বস্তু সাম্নে পেরে ভোগাভিলাদে আপন আপন ধর্ম প্রকাশ কবছে। আশা, তৃষ্ণা ও ইন্দ্রিয়াদিব ধর্ম এই যে ঈপ্সিত ভোগ যত পাবে ইব্রুবান্তব তাবা তত্তই বাড্বে। আগুণে হি দিলে যেমন আগুণ প্রবল হয় আকাজ্জাদিও ভোগ পেলে তেম্নি প্রবল হয়। কাজে কাজেই নতুন নতুন পন্থা বা'ব ক'বে লোককে ভোগে আসক্ত কবে এবং ভোক্তা। কেও পেষে নবকন্ত কবে। ভাতেই ভগবান গীতার ১৬শ অধ্যামেব ১৬শ শ্লোকে ব'লেছেন যে,

অনেক চিত্ত বিভ্রান্তা মোহ জাল সমার্তাঃ। প্রদক্তাঃ কাম ভোগেয়ু পতন্তি নরকেহশুচো ॥

জ্মনেক বিষয় কর্তৃক চিত্ত বিপ্রাস্ত হ'য়ে মোহদ্বাল সমাবৃত হওলাতে, লোকে কাম ভোগে সমাসক্ত হয়, এবং শেষে তাবা অপবিত্র নরকে পতে।

শিষ্য। পাপাচবৰ কৰেও কেন বে পোক অহিক স্থুখ ভোগ ক'বছে সেটা ব্যালাম। এখন ঐ ধার্মিক লোকটী কেন যে এত কট পাছেইন ভাব কাবৰ কি ?

গুরু। ঐ ধার্মিক লোকটা পূর্মজন্মে নিছান ভাবে তপস্যা ক'রেছেন, স্করাং তাঁর মনে সাকাজ্জাদি কিছুই ছিল না, সেইজন্ত ডাঁর সংস্কারও বিশুদ্ধ পূণামন্ব তৈয়াবি হ'রেছে, ধাব ফলে তিনি সাংসাবিক কটে প'ড়েও ধর্ম পথ থেকে বিচলিত হন্ নি। আর পূর্মজন্মে তাঁব অহিক স্থাবের কি কোন বক্ষ ভোগের আকাজ্জা ছিল না ব'লে, এজন্মে দে সব কিছু পাচ্ছেন্ না, (লোকে যে আকাজ্জা নিয়ে দেহত্যাগ করে দেহান্তে সেই গতি প্রাপ্ত হয়), এবং তিনি তা চান্ও না। কেন না, প্রাকৃতিক নিয়মান্দ্র্যাবে ঐহিক স্থব ভোগাসক্ত হ'লে, পরজন্মে প্রম স্থের পরমানন্দ্র উপভোগ হব না। ঐ ধার্মিক লোকটা দেই পরমানন্দ্র প্রমানা ও অধিকারী, তাতেই তৃচ্ছ ঐহিক স্থব তাঁর ভোগ হচ্ছে না। তবে গৃহ দাহ কি শোকাদি কষ্ট উপস্থিত হওয়ার কারণ এই বে, তাঁর পূর্বজন্মের ক্বত পাপের সংস্থারের ফলে ঐ সব কষ্ট ভোগ ক'রে সেই সংস্থাবন্দ্র্পী বেকর্জ্ ক্ষম ক'বছেন। তিনি কট্টে প'ডেও ধখন ধর্ম পথ ভাগে করেন্ নি, তথন তার ইহ জীবনের ক্বত কর্মের প্রথমম অতি বিশুদ্ধ সংস্থাব তৈয়ানি হচ্ছে। শাব কলে তিনি অনন্ত স্থব ও প্রমানন্দের অধিকারী হ্রেন্। দেথ চিত্তক্তির কি মাহান্মা, কিন্তু নিজাম কর্মা ভিন্ন চিত্তক্তির লাভ হয় না, বিশেষ গৃহীর পক্ষে। অতএর সকলেবই নিজাম ভাবে কর্ম্ম ক'বতে চেন্তী করা কর্ত্তর্য।

শিশ্য। আপনি পুনঃ পুনঃ চিত্তগুদ্ধিব কথা ব'লছেন কন্ত চিত্ত শুদ্ধি কাকে বলে তা আমি বুঝুতে পাচ্ছিনা।

গুল। চিত্তপ্তকি মানে নির্মাণ চিত্ত। অর্থাৎ মনে কোন বকম আকাজ্জা স্পৃহা, আশা, ভৃষণা বাগ, ছেয়াদি উৎপন্ন না হওয়া, এবং কোন বিপুব বশ হ'য়ে মন বিচলিত না হওয়া। বাগ, ছেয় আকাজ্জা প্রভাতিই হছেে চিন্তেশ মরণা ও আত্মোন্নতিশ বিশেষ এগুবায়। মন মেই প্র অপুবারে বশবর্ত্তী না হ'য়ে প্রশান্ত এবং পবিত্র ভাবে পাক্লে তাকেই চিত্তত্তি বলে। দেখতে পাওনা কত সাধু, কত পত্তিত বেদান্ত উপনিধ্দাদি প'ছে কত বই লিখেছেন, শাস্ত বাকোৰ উপদেশও খুব দেন, বিচারাদিও কবেন, কিন্তু নিজেব চিত্তশ্তি লাভ না হওয়াতে উপরোক্ত মরলা গুলি সব মনে লেগেই থাকে। কাজেই পতা শোনা সব বুধা হয়। কেন না, চিত্তশ্তি ভিন্ন আসল তব্য কিছুই অনুভবে

আস্বে না। কারণ, ছ্বদ্ধাকাশ নির্দ্ধণ না হ'লে জ্ঞানালোক প্রকাশ পায় না। পাখীতে খাঁচায় ব'সে নানা রক্ষ বুলি বলে, কিন্তু বেড়ালে ধবলেই ট্যা ট্যা কৰে। চিত্তগুদ্ধি বিহান উপদেশদাতাৰ দণাও ঠিক তাই।

শিষ্য তাহ'লে চিত্তগুদির বিশেষ প্রয়োজন দেখছি।

গুক। নিশ্চয় প্রয়োজন। চাষারা ষখন ফসল্ বোনে, শশ্তের বীজের সঞ্চে শশ্তেব অনিষ্টকাবা বাসেব বীজ পাক্লে, সেগুলি চেলে নিয়ে ফেলে দিয়ে তবে গা বাজ বোনে। তাব পবেও যদি জমাতে ফসলেন সঙ্গে বাসাদি জন্মায়, তাহ'লে সেগুলিকে নিডিয়ে ত্'লে ফেলে দেয়। তেম্নি ভজন সাধন কি কোন ক্রিয়া কর্মা করবাব সময়, আশা, তৃঞ্চা, দজ, অহঙ্কাবাদির বীজগুলিকে বেছে ফেলে দিয়ে অর্থাৎ ত্যাগ ক'বে, হাদয় ক্ষেত্রে কেবল সাধনের বাজ গুলিই বুন্তে হয়। তাব মানে, ধ্যান ধাবণা, জপাদি ভজন, কি যজ্ঞ দানাদি কর্মা কব্বাব সময়, মনে কোন কলাকাজ্জা কি দন্ত অহঙ্কাবাদি না ক'বে শুল্লচিত্রে কব্তে হয়। তবে গা মন ঈশ্বরে একাপ্র হয়, এবং ফল ও গাওয়া বায়, নচেৎ ফল হয় না।

শিয়া মন একাগ্র ক'রে ব'লে ভঙ্গন কচ্ছি ২ঠাৎ মনে অন্ত চিন্তা এলে চিত্তের বিক্ষেপ উপস্থিত কবে তাব উপায় কি ৪

গুরু। তাব উপায় ভগবান গীতাব ১৪ মধায়েব ২৬শ ও ৩৫শ শোকে ব'লেছেন বে

যতো যতো নিশ্চবতি সনশ্চঞ্চল মস্থিবম্। ততস্ততো নিযমৈয়তদাত্মত্মেব বসং নযেৎ ॥ অসংশয়ং মহা বাহো মনো তুর্নিগ্রহং চলম্। অভ্যাসেন তু কোস্তেয বৈবাগ্যেণ চ গৃহ্যতে ॥ চঞ্চল স্বভাব মন যে যে বিষয়ে যায়, তাকে সেই সেই বিষয় হ'তে প্রতাহিরণ ক'রে আত্মতে স্থির রাধতে হবে। অর্থাৎ ধ্যান জ্পাদি কর্বাব দমশ্ব মনে বিক্লেপ উপস্থিত হ'লে, তৎক্ষণাৎ সাবধান হ'লে মনকে পুনরায় ধ্যেয় বস্তুতে লাগাতে হবে। যতবাব মনে এইরূপ বিক্ষেপ ছবৈ ততবাবই মনকে ফিরিয়ে নিম্নে আসতে হবে। হে কৌন্তেম। শ্বভাবত চঞ্চল মন যে ছনিগ্ৰহ তাতে কোন সন্দেহ নাই, কিন্তু হে মহাবালে। অভ্যাস ও বিষয় বৈবাগোব দ্বারা মনকে নিগ্রহ অর্থাৎ বশী-ভূত ক'বুতে হবে। অন্ত বিষয়গামী বিক্ষিপ্ত মনকে পুনঃ পুনঃ আহরণ ক'রে ধ্যের বস্তুতে লাগানের নাম অভ্যাস। আব সদসৎ বিচাবের বাবা, অর্থাৎ জগতের সবই মিথাা একমাত্র ভগবানই সভ্য মনে এইনপ বিচার ক'বে, সমস্ত বিষয়েব প্রতি আদক্তি ত্যাগেব নাম বিষয় বৈরাগা। চাষারা বেমন ফদলের অনিষ্টকারী আগাছা-ত্মলিকে ভূ'লে ফেল্বার জন্ম মাঝে মাঝে জমী নিডিছে দেয়, উপা-সক্ষেত্রও তেম্নি সাধনাব অনিষ্টকাবী বিষয় চিন্তা গুলিকে তু'লে ফেল্বার অর্থাৎ ত্যাগ কব্বার্ জন্ম অভ্যাদেব ছাবা মাঝে মাঝে হৃদয় বূপ ক্ষেত্ৰকে নিভিন্নে দিতে হর।

শিষা। আজাইা, আপনি যা বললেন্ তা ব্রুলাম। কিন্তু আমি এখন এই ভাবছি যে, ভাল সংস্থাব নিয়ে জন্মগ্রহণ কর্লেও, চিত্তজ হয়নি ব'লে লোকে যখন আশা ভৃষ্ণাব বশ হ'য়ে ভোগে আসক্ত ছওয়াডে অন্তে নরকে যায়, তখন আর লোকের কল্যাণের আশা কোধায়?

গুরু। কলাপের আশা আছে।

শিষ্য। কিনে আছে ?

প্রুক্ত। পুরুষকারে অর্থাৎ প্রুষার্থে।

নিষা। পুরুষার্থ বে কেমন ক'রে করতে হবে ভাত বুরতে পাচিছ না।

গুরু। উপ্তম, ষত্ম, চেষ্টা, তিতিকা উপেকা অর্থাৎ ত্যাগন্ধীকার, এবং পাপ কর্ম্বেব পরিণামে যে হঃখের অবস্থা ঘটবে সেইটা চিস্তা ক'রে দেখা। এই গুলি অবলম্বন করার নাম এখানে পুক্ষার্থ। এই সব উপায় অবলম্বন কর্লে মনকে কুপথ থেকে ফেবাতে পারা যায়। নচেৎ আগুলে পোকার পতনেব মত মন গিমো পাপে পড়ে, এবং প্রাকৃতিক নিয়মাগুসাবে ফলও ভোগ করে।

শিষা। প্রাকৃতিক নিয়মটা কি?

গুক। ইংজীবনে পাপাচরণ ক'রে ইহিক স্থথ ভোগ কর্লে, পরজীবনে নিশ্চয়ই তুঃখ ভোগ কর্তেই হবে। এইটা প্রকৃতিব সংস্থাপিত
দৃচ নিয়ম, কিছুতেই এ নিয়মের অহাপা হয় না। যে ব্যক্তি ভোগ ক্থে
আসক্ত হ'রে ভোগ করে, অর্থাৎ বে প্রথের জন্ত লালাম্নিত হয়ে ভোগ করে,
তাক্রে আবার পরজনে তেমনি তুঃখ পেতে হয়। কেননা, স্থধ এবং
তুঃখ এক জোড়ায় আগে পাছে চল্ছে। সেই জন্ত একটা বচন আছে
"চক্রবৎ পরিবর্ত্ততে তুঃখানিচ স্থানিচ"। তুঃখ এবং স্থধ চাকার মত
দুবে দুবে আস্ছে। শুধু স্থধ তুঃখ ব'লে নয়, জগতের যাবতীয় ব্যাপারই
এই নিয়মের অধীন। যেমন শুকু পক্ষেব পর ক্রখ্ণ পক্ষ দিনের পর বাত্রি
ইত্যাদি। যেটা যায় ভার পর ঠেক ভার বিপরীভটা আসে, স্থভরাং ইহ্জাবনে এইক প্রথে আসক্ত হ'লেই পরজীবনে তুঃখ ভোগ করে হই হবে।
প্রাকৃতিক নিয়মে একটা ক্রিয়া হলেই ভার পব ভার প্রতিক্রিয়া নিশ্চয়
হবে।

শিষ্য। ধ্বগতের যাবতীয় জিনিস বিপরীত ধর্ম সম্পন্ন ক'রে ভগবান জোড়া জোড়া স্টে কবলেন কেন ?

গুরু। এইটা হচ্ছে ঈশ্বরের স্থাষ্ট কৌশল। এ কৌশল না থাক্লে বিশ্বের সামঞ্জন্ত থাকে না। সেই সামঞ্জন্য রাখ্যার জন্তুই ভগবান বিশ্বের শকল জিনিস বিপবীত ধর্ম সম্পন্ন জোডা জোডা স্থৃষ্টি ক'বেছেন। যেমন ভগবান ও মান্না এক জোডা। স্থ্য ছ:খ, ভাল মন্দ, শীত উষ্ণ, কৃষ্ণপক্ষ শুক্লপক্ষ, দিন বাত্তি, অর্থ ও প্রমার্থ ইন্ড্যাদি।

শিয়া। বান্তবিক, জগতেব সকল বিষয়েই এই বক্ষ বিপবীত ধর্ম সম্পন্ন হ'বে সৃষ্টি হওয়াৰ কাবণ কি ?

ওক। তাব কাবণ, ভগবান সৃষ্টিব প্রথমেই বিপবীত ধন্ম সম্পন্না মায়াকে নিয়ে নিজে জোডা হ'লেন, তাবপৰ সমগু সৃষ্টি হ'তে লাগল। স্থভরাং সমস্ত সৃষ্টি সেই অনুসাবে হ'বেছে, কাজেই বিশ্বেব বাবতীয় ব্যাপাবেট বিপবীত ধর্ম সম্পন্ন এক এক জোডা দেখুবে। এখন শোন, ভগবান আৰু একটা নিয়ম ক'বেছেন এই বে, স্নোডাৰ মধ্যে একটা বেধানে উপস্থিত থাকবে অপবটা দেখানে থাকবে না, তাব মানে, একটা जन्मुर्वक्रत्थ निःरमेष रु'रा ना श्राम व्यथकी व्याम्र भारत ना। दकन ना, সকলেই পোডা জোডা অবহার আগা পাছা হ'রে চলুছে, অর্থাৎ কার্য্য নিকার কবছে। সেই জন্ত দিনেব বেলার বালি আসে ন। স্থাধব সময় ছঃথ আসে না হত্যাদি। প্রকৃতিব ষ্থন বেমন কাজ হবে, তাব প্রেটিক তাব বিপৰাতটা হবে। প্রাক্তিক পদার্থেও সেই সামঞ্জ্যা বেখ্তে পাওয়া ষ্যা। দেখ হিমাণায়েব পুস বহু উচ্চ, সমুদ্রও ভত গভাব ইত্যাদি। এখন প্রাকৃতিক এই নিষ্মানুসানে ষেধানে অর্থেব আবিষ্ঠান প্রমার্থ দেখানে আদতে পাৰেন ন।। তাৰ মানে এই বে অর্থে ধার আসক্তি থাকে ভগবানে তাব সাসক্তি ধনিতে পাবে না, সেই জন্ম বিষয়ী লোকেব কদাচিৎ ভগবৎ প্রেম লাভ হর।

শিশ্য। আগনি ব'লছেন বে, ঐচিক স্নখভোগ কবলে ছঃথ ভোগ কবতে হবে, ভার্চ'লে সংসাবে কেও স্নথভোগ কব্বে না ?

ওর । তৃমি আমাব কথাটা ঠিক বুরতে পারনি। সংসাবেব লোক

স্থাজোগ কর্বে না কেন ? স্থা কি সংসাব থেকে চলে বাবে ? তবে কি স্থের জিনিস লোকে সব ত্যাগ: কর্বে ? তা নয় প্রারন্ধনে বে স্থা-ভোগ হর তা নিমিদ্ধ নয়। তবে ষতটা সম্ভব অনাসক্ত ভাবে ডোগ করা উচিত; অর্থাৎ এটা না হ'লে আমাব চল্বেই না এ বকম জাব না থাকে। অসচপায়ে অর্থ উপার্জন ক'রে ঐহিক স্থাবে চেষ্টা কবা, অথবা পাপ রান্তিব বশবর্তী হয়ে গহিত আচবণেব ধাবা ঐহিক স্থাথ রত হওয়া নিভান্ত অনুচিৎ। বদি কাবও মনে সে রকম বেগই হয়, তাহলে উল্লি-ভিন্ত অনুচিৎ। বদি কাবও মনে সে রকম বেগই হয়, তাহলে উল্লি-ভিন্ত প্রকার্থ ক'বে মনকে পাপ বিষয় থেকে কেরাতে হয়। লোকের মনও বদি পাপ বিষয়ে বায়, ত্রাচ শরীব্ ন'ভাতে নেই। অর্থাৎ মনে পাপ চিয়া হ'লেও তদকুলারে কার্যো প্রবৃত্ত হ'তে নেই। মহাত্মা কবীর দাস সেই সম্বন্ধে একটা দোঁহা ব'লেছেন বে,

মন যায়তো যানে দেও মত্ যানে দেও শবীর। বিনা কামানি থিঁচে কেইসে ছুটে গা তীব। সব কৈ এইসা কব ভাই কহে দাস কৰীব।

মন যদি পাপ চিন্তা কবে ক'বতে দাও, কিন্তু শ্রীবকে সেই পাপ কাজে প্রার্ভ ক'ব না। মানে এই ষে, মনেব পাপ মনেতেই লয় কর, ধববদাব কাজে হাত দিও না। মহাত্মা কবীর দাস সকলকে এই বকম আচবণ ক'বতে উপদেশ দিয়েছেন্। মনে অবশু কাম কোধাদিব বেগ উঠতে পাবে, কিন্তু সেই বেগ উঠ্লেই যে তার বশ হ'রে তদমুসাবে কর্ম্মে প্রার্ভ হ'তে হবে তা নয়। সে বেগ স্ফ্র ক'বে মনের বেগ মনেই লয় ক'রতে হবে। ভগবান গীতার দে অধ্যায়ের ২৩শ শ্লোকে তাব উপকারিতা সম্বন্ধে ব'লেছেন যে. ককোতাহৈব যঃ সোঢ়ং প্রাক্শরীর বিমোক্ষণাৎ। কামক্রোধোন্তবং বেগং স যুক্তঃ স স্থা নরঃ।

বে ব্যক্তি শ্বীৰ ভাগেৰ পূৰ্ব্ব পৰ্যান্ত অৰ্থাৎ আজীবন কাল, কাম ক্রোধের বেগ সহ্য ক'বতে পাবেন্, অৰ্থাৎ মনে কাম ও ক্রোধের উৎপত্তি হ'লেও তাদের বশবর্তী হ'রে তদপুৰাপ কাজ না কবেন, তিনিই যোগী এবং তিনিই স্থবী। কাম ক্রোধেৰ বেগ সহ্য কবা কি সহজ্য কথা ? বেমন ব'ল্লাম্ সেই বকম পুরুষার্থ ক'রে প্রথম প্রবল্গ বেগটা সামলাতে পার্-লেই, শেষে মন আগনিই শান্ত হ'রে আসে।

শিষ্য। পুক্ষার্থ কবা উচিৎ বটে, কিন্তু চর্ব্বশ হৃদয়ে পুক্ষার্থ ক'রে পাপ থেকে নির্ভ থাকা, সাধাবণেব সাধায়ত্ত ব'লে আমাব মনে হয় না।

প্রকাশ করে কাব একটা প্করার্থের কথা বলি শোন, এটা সবল
কর্মণ সকল ক্রান্থেই ২'তে পাবে, এবং বত রক্ষ প্রকর্মার্থ অংছে,
তাব মধ্যে এইটাই শ্রেষ্ঠ। প্রকরার্থটা এই থে সেই সময়ে ভগবানের
শরণ নেওয়া মনে পাপের বেগ প্রবল হ'লে পবে, সেই পাপ কর্মা
থেকে বক্ষা পাওয়াব জন্ত বাাকুল হলয়ে ভগবানের নিকট প্রার্থনা
করা। যিনি যে মূর্ত্তিব উপাদনা কনেন, অথবা বান যে মূর্ত্তিব প্রতি
প্রীতি আছে, তান সেই মূর্ত্তিব ধ্যান ক'বে উপস্থিত পাপ থেকে বক্ষা
পাওয়াব জন্ত প্রার্থনা করা। কোন বক্ষ ক'বে বেগের প্রথমটা সাম
লাতে পাবলেই বক্ষা পাওয়া যায়। বানায়ণে সেই মর্ম্মে বাবণ লক্ষণকে
উপদেশ দিয়েছেন যে, "শুন্ত শীসং খণ্ডভ্যা কাল হবণম্" মনে পাপ
ইচ্ছা হ'লে, সেই ইচ্ছামুধারী কাজ কর্তে বিলম্ব কর্বে। কেননা,
বিলম্ব হ'লে শেরে পাপ ইচ্ছাটা আর থাক্বে না।

াশব্য। আজ্ঞা হা, শেষেৰ পুৰুষার্থ টা এবং প্রথম ৰেগ সহু করার উপদেশটা আমার ভাল ব'লেই বোধ হচ্ছে।

গুক। ইা, এই বকম পুক্ষার্থ অবলম্বন ক'বে পাপে বিরও থাক্লে লোকের কলাপ ২য়। কেননা, তাহ'লে লোকে বিনা বাধায় ভগবানের দিকে ক্রমেই এগিয়ে যেতে পাবে।

শিষ্য। জ্রমেই ভগবানের দিকে এগিয়ে যেতে পাবে এ কথাব কর্ম আমি কিছু বুঝতে পার্লাম না।

গুক। আজ থাকু সে অনেক কথা কা'ল হবে।

চতুৰ্থ দিন।

শিষ্য। আমার কা'লকার প্রশ্নটীর উত্তর আজ বলুন। কি ক'বে লোকে ভগবানেব দিকে এগিয়ে যায় ?

গুরু। যিনি ঐ বকমে পাপ রৃদ্ধি দমন করতে পারেন, তাঁকে পাপ কর্মে লিপ্ত হ'রে নীচে নামতে হয় না। তিনি যদি ভজন সাধন ক'বতে নাও পাবেন, তব্ও তিনি ক্রমেই ভগবানের দিকে এগিয়ে বাবেন। পাপ হচ্ছে ভগবদ্ বাস্তার প্রতিবোধক।

শিষ্য। ভজন সাধন না ক'রেও বে কি ক'বে লোকে ভগবানেব দিকে এগিয়ে যাবে, দে বিষয় খুলে না ব'ল্লে আমি বুঝতে পার্চিছ না।

জক্র। জগতের বাবতীর প্রাণীই প্রাক্তিক নির্মের বশবর্জী হ'রে, আপন আপন ধোনীর গতি অনুসাবে ঈশবের দিকে এগিরে যাছে। কারণ বেখান থেকে উৎপত্তি হ'রেছে আবাব সেইখানে ফিবে গিরে নির্ভি হবে। এইটা বিশ্ব রাজ্যের প্রাকৃতিক স্থান্য নির্মা। এই সচরাচর বিশ্ব পরমাত্রা থেকে উৎপত্ত হ'রেছে, চক্র পথ ঘুরে আবাব তাতেই গিরে নির্ভি হবে। পৃথিবী থেকে চিল ছুঁড্লে, টিলটা আবার পৃথিবীতেই ফিরে আস্বে। ভূমি ঘেটা নিক্ষেপ ক'রবে, সেটা আবার ফিরে তোমার কাছেই আস্বে। ভূমি ঘেটা নিক্ষেপ ক'রবে, সেটা আবার ফিরে তোমার কাছেই আস্বে। অর্থাৎ ভূমি লোকেব প্রতি যেমন ব্যবহার ক'রবে—লোকেও ভোমার প্রতি সেই রক্ষ ব্যবহার কর্বে। ভূমি ঘদি সমস্ত প্রাণীব প্রতি হিংসাত্যাগ কব, তাহলে সমস্ত প্রাণীও তোমাব প্রতি হিংসা ত্যাগ কর্বে। এমন কি হিংপ্রক প্রাণীরাও তোমার হিংসা কর্বেনা। সেই কথা পতঞ্জল ঋষি যোগস্ত্রেব সাধন পাদেব ওলে শ্লোকে ব'লেছেন যে.

অহিংসা প্রতিষ্ঠাযাং তৎসমিধৌ বৈব ত্যাগঃ॥

যাব হৃদয়ে সম্পূর্ণরূপে হিংসা ত্যাগ হয়েছে, তার নিকট সমস্ত প্রাণীই ছিংসা তাগে করে। তার ত ছিংসা করেই না, এমন কি তার নিকটে ছিংশ্রক প্রাণীরাও তাদের পরস্পবের মধেও হিংসা ত্যাগ করে। প্রাণে শোন না বে, ঋষিদের আশ্রমে বাঘ, ভালুক, হবিণ, সাপ প্রভৃতি পরস্পর ছিংসা ত্যাগ ক'রে এক সঙ্গে খেলা ক'রত। তার কাবণ, ঐ প্রাণীবা অহিংসা প্রতিষ্ঠিত ঋষিদেব কাছে থাক্ত ব'লে তাদের মনে হিংসার উদ্রেক্ হ'ত না।

শিষ্য। জগতের ধাবতীয় প্রাণীই প্রাকৃতিক নিরমে ঈশ্বরের দিকে এগিয়ে থাছে ব'ল্লেন্, কিন্তু কি ভাবে এগিয়ে থাছে সেইটা শোন্-বার জন্ম বড়ই কৌতুহল হছে।

গুক। যেধান থেকে উৎপত্তি হয় সেইখানেই আবার ফিবে গিয়ে লয় হয় এটা বুঝেছ ত ?

শিশ্য। আজাহাতাবুৰেছি।

শুক । বৃষ্টি এবং স্থাইব নিয়ম একই রকম। সমুদ্র থেকে বাষ্প্র উঠে মেঘ সঞ্চার হয়, পরে সেই মেঘ থেকে বৃষ্টি, হয়, এবং সেই বৃষ্টির জল নদ নদা দিয়ে ব'য়ে সিয়ে আবাব সমুদ্রেই মেশে। সমুদ্র থেকে বাষ্প্র উৎপল্ল হ'য়ে নানা আকারে চক্র ঘু'য়ে শেষে যেমন গিয়ে সমুদ্রেই মেশে, এই সচরাচর বিশ্ব পরমাত্মা থেকে উৎপল্ল হ'য়ে নানা আকারে চক্র পথ ঘু'য়ে শেষে পরমাত্মাতেই মেশে অর্থাৎ লয় হয়। এই বিশ্ব যথন ঈশ্ববেতে মেশবার জন্ত চক্রপণে শাচ্ছে, তথন কাজেই বিশ্বের সমস্ত প্রাণীই সেই সঙ্গে স্বাপন আপন যোনীর গতি অনুসাবে ঈশ্বরের দিকে এগিয়ে বাচ্ছে।

শিশ্ব। জগতত্থ সমস্ত প্রাণী আপন আপন যোনীর গতি অমুসারে কি রক্ষম ভাবে ঈশবেব দিকে এগিয়ে থাচেছ ?

গুরু। বেলে, দ্বীমাবে অথবা ইটো বাস্তায় গেলে তোমাকে এক কথার বুঝাতে পার্তাম্ কিন্তু এ বিধরটা তেমন নয়। ক্রমে বিধরণ বলে মাই তুমিও ক্রমে বুঝাতে থাক। শাস্তে ব'লছে ৮৪ লাখ মোনী আছে, অর্থাৎ ৮৪ লক্ষ প্রকাব প্রাণী আছে। তাব মধ্যে মন্ত্র্যা যোনীই সর্বা-পেক্ষা শ্রেন্ত । কেননা, মান্ত্র্যাই কেবল কন্মের দ্বারা ভক্তিলাভ ক'রে তত্ত্বজানের অধিকাবা হ'য়ে, অর্থাৎ ঈশরেব স্থনগ ক্রেনে, মান্নাব হাত থেকে নিদ্ধৃতি পায়, মানে মুক্তি পায়। ৮৪ লক্ষ যোনা মু'রে এসে স্বলশেরে এই মন্ত্র্যা যোনাতে জন্ম হর। সেই জন্ম মন্ত্র্যা ক্রমনে ত্রম্ন জন্ম বলে। এমন কি, দেবতারাও মন্ত্র্যাজনোব আকাজ্জা ক'বে পাকেন। কারণ, তাঁদেবকেও মন্ত্র্যাজনা নিম্ন তদ্ধরূপ কর্মের ধাবা তত্ত্তান লাভ ক'রে তবে মুক্তিলাভ কর্তে হয়।

শিয়া। বড আশ্চর্য্য কথা। দেববোনী মান্তবের তেয়ে উচ্চ যোনী, তবে তাঁদের আবাব মন্তয়জন্ম নিতে হবে কেন গু

গুরু। কর্ম্ম ক'বে তব্জান লাভ কবতঃ মৃক্তি পাওয়ার জন্ত দেবতা-দেব মন্ত্র্যুক্তনা নিতে ১য়। স্বর্গলোক কেবল ভোগেব স্থান, স্কৃতবাং সেপানে কর্ম নাই কেবল ভোগ আছে। মানুব পুণাকর্মের ফলভোগের জন্তই স্থর্গে দেবতারূপে বাদ করেন, এবং দেবভোগা ভোগদঞ্চল উপভোগ করেন। বেমন ইক্রকে শতক্রতু বলে, অর্থাং বিনি শত অর্থমেধ্ ধ্রু নির্বিদ্নে সমাপন কর্ত পারেন্ তিনিই হক্স হন্ ইত্যাদি। পরস্ক, পুণা ক্রম হ'লে স্থাং পুণা কর্মজনিত স্থাভাগ শেষ হ'লে আবার মর্ত্তালোকে এসে মন্ত্র্যুক্তব্য নিতে হয়। ভোগাকাক্ষা কান্যকর্মীদের এই রক্ম দশা খ'টে থাকে। পরস্ক নিয়া মক্ষীদের কর্মক্রল ভোগের অভাব হেত্ তাঁদের আর জন্ম নিতে হয় না। কাম্যকর্মীদেব সে স্বর্গ থেকে ফিরে আস্তে হয় ভগবান তা গীতার ১মৃ অধ্যায়েব ২০শ ও ২১শ প্লোকে বলেছেন যে,

> ত্রৈবিতা মাং সোমপাঃ পূত পাপা যক্তৈবিষ্ট্ৰ। স্বৰ্গতিং প্রার্থযন্তে। তে পুণ্যমাসাত্য স্থবেন্দ্রলোক-মশ্বন্তি দিব্যান্ দিবি দেব ভোগান্॥ তে তং ভুক্ত্বা স্বৰ্গ লোকং বিশালং ক্ষীণে পুণ্যে ভুৱালোকং বিশন্তি। এবং ত্র্যা ধর্ম্ম মন্তু প্রপন্না গতাগতং কাম কামা লভন্তে॥

হে মর্জুন। বেদবিহিত কন্মানুষ্ঠান পব, সোমপারী বিগত পাপ
মহাত্মাগণ যক্ষ হাব। আমাৰ অর্চনা করতঃ দেবলোক লাভের
প্রার্থনা করেন এবং অতি পবিত্র দেবলোক প্রাপ্ত হ'রে উৎক্ষন্ত দেবভোগ সব উপভোগ ক'রে থাকেন। সেই বিপুল, স্বর্গ হ্রথ ভোগ
ক'রে পুলাক্ষরে, পুনবার মর্ভ্রালোকে প্রবেশ করেন অর্থাৎ জন্মগ্রহণ
করেন। কোন স্থগেই নিস্তাব নাই। সেইজন্ত ভগবান গীভার
৮ম্ অধ্যারেব ৬শ প্লোকে ব'লেছেন বে,

আব্রন্ধ ভূবনাল্লোকাঃ পুনরাবভিনোহর্জ্জন।
মামুপেত্য ভূ কৌন্তেয় পুনর্জন্ম ন বিভাতে ॥
হে কৌন্তের। পুণা কর হ'লে, বন্ধলোক থেকেও পুনবার ফিরে
সাস্তে হর, মর্থাৎ মন্ত্রা জন্ম নিতে হয়। পবত্ত সামাকে পেলে

অর্থাৎ জান্লে তাব মানে তব্জান লাভ কর্লে আর জন্ম নিজে হয় না।

শিষ্য। ভগবান যে ব'ললেন্ ব্রন্ধলোক থেকেও ফিবে আস্তে হয়, তাহ'লে স্বর্গ কটা আছে গ

গুক। ভূলোক এই পৃথিবী এবং ভূবলোক, স্বলোক, মংলোক, জনলোক, তপোলোক ও সভালোক বা ব্ৰহ্মলোক। এই উদ্ধন্ত ছয়টী লোককেই স্বৰ্গ বলে। তাব মধ্যে সত্য বা ব্ৰহ্মলোক সৰ্ব্বোপবি। জগবান ব'ল্ছেন বে, সকাম পুণাকৰ্মকাবা ধনি সেই ব্ৰহ্মলোকও প্ৰাপ্ত হন কিন্তু পুণা ক্ষয় হ'লে তাকেও পুনবায় মৰ্জ্যে কিবে আসতে হবে, অগাং মনুৱা জন্ম নিতে হবে।

শিষা। স্বৰ্গতি শুন্লাম এখন পাতাল কটা তাও অতুগ্ৰ ক'ৰে বলন।

শুক। তল, অতল, বিতান, নিত্তন, তলাত ল, মহাতল এবং স্থাতন।
এই সাতিটা অধানুধন এবং পৃথিৱী থেকে ব্রন্ধলোক এই সাতিটা উদ্ধি
ভূবন এই মোট চোদ্দুধন। আব একটা বিষয় তোমাকে বলি
কোনে রাখ। পাতাল ব'লালই যে, পৃথিবীব মধাদেশে সেই সব
পাতাল আছে তা যেন ভেব না। পাতাল পৃথিবাৰ বাইবে। সেখানেও
পাতালবাসা দ্বাৰ আছে তাবাও ৮৪ লাখু যোনীৰ অধ্বৰ্গত।

শিষা। মাকৃষ শ্রা প্রাকশ্মের করা ভোগেব জ্ঞা স্থান্, তাবাই না গ্রা প্রাক্ষর হ'লে পুনবার মর্ছো এমে জ্নগ্রহণ করেন, কিন্তু দেবতাদেব ১ দেবকম কব্তে ১র না।

প্তক। স্বর্গে অর্থাৎ দেবলোকে দেবতা ভিন্ন অন্ত যোনীব প্রাণীর বাদের অধিকাবই নাই। প্তবাং দেবলোকে যাঁব। বাস কবেন ভাঁরা সকলেই দেবতা। তবে অবগ্র ছোট বড আছে। কোন দেব- তাব ঐশ্বর্যা বেশি, কোন দেবতাব ঐশ্বর্যা কম, কোন দেবতাব দীর্থ- কাল স্থিতি, কোন দেবতা অল্পকাল স্থায়ী, ফলতঃ ফিবতে হবে সবাই-কেই। ভোগাকাজ্ঞী মাদ্ধই পূল্য কর্ম দ্বাবা দেবত্ব প্রাপ্ত হন, এবং দেবলোকে বাদ কবেন, এবং দেবভোগ সব উপভোগ কবেন। স্বর্গের সঙ্গে দেবতাদেব কেবল ভোগেব সম্বন্ধ, কিন্তু মুক্তিলাভ কবতে হ'লেই আবাব মানুধ হ'তে হবে।

শিখা। মাত্র ও দেবতা সদদে এই বৃঝ্লাম বে সকলকেই তত্ত্ব-জ্ঞান লাভ ক'বে মৃক্তি নিতে হবে কিন্তু অস্তান্ত প্রাণীদেব সম্বটে কি রক্ষ ?

গুৰু। মহুষ্যেতৰ প্ৰাণীৰ তব্জ্ঞান লাভেৰ অধিকাৰ নাই স্থৃতবাং তাদেৰ মুক্তিলাভেৰ কোন সন্তাৰনা নাই। সেই জন্ম ঐ সকল প্ৰাণীর ধোনীকে মৃচ যোনী বলে। মৃচ ষোনীৰ প্ৰাণীৰা পৰ পৰ সমস্ত যোনী খু'বে, অৰ্থাৎ সকল ষোনীতে জন্ম নিম্নে সর্কাশেষে মনুষ্য যোনীতে জন্ম-গ্ৰহণ কৰে।

শিশা। তবে আপনি বে বললেন জগতন্থ সমস্ত প্রাণীই প্রান্থতিক নিয়মে ঈশবেব দিকে এপিয়ে যাজেছে। মৃত যোনীব পাণীব যথন মৃতি-লাভেব অধিকাবই নাই, তথন আব তাবা ঈশবেব দিকে এগুবে কি ক'বে ? মৃতি মানে ঈশবকে প্রাপ্ত ১ওয়া।

গুক। প্রাক্তিক নিয়মে জগৎ যথন ঈশ্ববেব দিকে যাচ্ছে, তথন জগতস্থ সমস্ত প্রাণীবাও আপান আপন যোনীব গতি অনুসারে সেই সঙ্গে যাচ্ছে।

শিধ্য। আপনি যে ব'লেছেন প্রাণীরা আপন আপন যোনীর গতি অনুসারে যাছে শাব মানে কি ?

গুৰু। প্ৰাণীদেৰ ৰাওৱাৰ গতি ক্ৰত এবং মূছ হুই বকমই আছে,

অর্থাং বারা শীদ্র পৌছিবে তাদের গতি ক্রত আব বারা বিলম্বে পৌছিবে তাদের গতি মৃহ। বাবতীয় প্রাণীর মধ্যে মানুষই কেবল ঈশ্বরেব নিকট শীদ্র পৌছিতে পাববে।

শিশ্ব। এধানে আমাব একটা সংশ্ব হচ্ছে। আপনি ব'লছেন বে জগতস্থ সমস্ত প্রাণীহ প্রাক্তিক নিম্নমে ঈশ্ববেন দিকে বাচ্ছে, কিন্তু যোনীর গতি অনুসারে চ'লেছে কেও জভ কেওবা মৃত। ভাহলে মন্তব্য এবং সমুযোত্তর প্রাণীর ভারতম্য বৈল কৈ ?

গুরু। মন্ত্র্য এবং মন্ত্র্যেতব প্রাণীতে ভাবতমা আছে বৈ কি।

ঈর্ষরের নিকট পৌছান মানে এবং ঈর্ষরকে জানা অর্থাং তল্পজান লাভ
মানে বিভিন্ন তৃমি বাস্ত না হ'রে শোন সমস্ত বিষয়ই পরে ক্রমে খুলে
ব'ল্ছি। আগে বে ব'ল্লাম মান্ত্র্য ঈর্যবের নিকট শীঘ্র পৌছতে
পার্বে। তার মানে এই বে মান্ত্রেবই কেবল ঈর্ষরকে জান্বাব অধিকার আছে মন্ত্র্যোতর প্রাণীর সে অধিকাব নাই। মান্ত্র্য সমস্ত ধোনী
অতিক্রম করে শেষে যে গোনীতে জন্ম নিম্নে ভগবানের দর্শন পাবে সেই
মন্ত্র্য ধোনীতে জন্মেছে, সেই জন্ম মন্ত্র্য ধোনীর প্রাণীর গতি ক্রত।
আবাব মৃচ্ ধোনীব প্রাণীর মধ্যেও যোনী অন্ত্রসাবে গতির তাবত্রমা
আছে। কেননা, যারা মন্ত্র্য ধোনীব কাছাকাছি এসেছে, তানের গতি
অপেক্রাকৃত ক্রত ব'ল্তে হবে।

শিষ্য। তবে কি মনুষ্য মাত্রেরই গতি ক্রত ?

গুরু। মনুষ্যেতব প্রাণী অপেক্ষা মানুষের গতি নিশ্চর ক্রত তার কারণ আগে বল্লাম। আবাব মনুষ্মের মধ্যেও গতির তাবতম্য আছে। তারতম্য এই বে, সাধাবণ চক্রপথে না গিয়ে পাগ্ডাগুলী (সোজাত্ত্ত্বি) রাস্তার মানুষ আরও শীঘ্র ঈশবেব নিকট পৌছিতে পারে। এহ পাগ্-ডাগুলী (সোভাত্ত্ত্বি) রাস্তার মনুষ্যেতর প্রাণীর যাওরার অধিকার নাই। শিষ্য। এই বিশ্ব যে ঈশ্বরের দিকে যাচ্ছে তা বুঝ্লাম, কিন্তু সাধা-রণ চক্রপথ, পাগডাঙী রাস্তা যে কি তা বুঝ্তে পারলাম না।

গুরু। মনে কর, সাধারণ বাস্তাটা ঘোডদৌড়েব রাস্তার মত চক্রা-কাব। এই বিশ্ব ঈশ্বর থেকে উৎপন্ন হ'রে চক্রপথে চ'লেছে, এবং সমস্ত রাস্তাটা ঘু'বে অতিক্রম ক'রে গিরে পুনরাম্ব ঈশ্বরেতে ার হবে। এখন করন। কব, চক্রপথের মধ্য ঢাগে এক গুপু গোলাকার জমী আছে। যেমন ঘোডদৌডেব মাঠে থাকে। সেই জমীতে একটা হুরাবোহ পাহাড় আছে, এবং এ পাহাডের উপব দিযে পাগডাপ্তী (সোঞ্চাম্বজি) রাস্তা আছে। ই পাহাডে ওঠা প্রথমটা বড কষ্টকর, কিন্তু কষ্টে হুটে ঐ পাগভাণ্ডী বাস্তার থানিকটা উঠতে পারণে শেষে আনন্দের সহিত যাওমা গায়, এবং ভগবানের নিকট খুব শীঘ্র পৌছান মান্ত ও তার স্থরূপ সম্বন্ধে জান হর অর্থাৎ তত্ত্বজান লাভ হয়। বুদ্ধিমান, তিতিক্রু, নির্ভীক এবং ভাগাবান লোকেরাই ঐ বাস্তার যেতে চেন্না ক্রেবন। প্রকৃতি দেখী সাধারণ চক্রপথে জগতকে নিয়ে যাডেছন, কিন্তু বরাবর সেই বাস্তার যেতে পেলে, ভগবানের নিকট পৌছিতে বে কত মুগু যুগান্তর লাগ্বে তার ঠিক কি, এবং প্রেক্বির অধীনে গিরেই বা লাভ কি গু

শিশ্ব। প্রকৃতির অধীনে গিয়ে লাভ নাই কেন १

গুক। প্রকৃতিব অধানে গেণে ঈশবের স্বরণ জ্ঞান অর্থাৎ তত্ত্বজ্ঞান লাভ হবে না। সজ্ঞানে গলালাভ হ'ল এক জিনিস আর ম'লে মৃতদেহটা গঙ্গায় ফেলে দেওয়া আর এক জিনিস। পবে সব খুলে বলছি শোন।

শিষ্য। সাধাৰণ চক্ৰপথে ত স্বাই যাচ্ছে, এখন কি উপায়ে পাগ-ডাণ্ডী রান্ডায় যেতে পারা যায় ?

গুরু। অষ্টাঙ্গ যোগসাধন, শাস্ত্র এবং গুরু বাক্য প্রবণ, মনন, নিদি-ধ্যাসন, নিদ্ধান কর্মধোগ, তীব্র বৈবাগা ও উজ্জিতা ভক্তিশাভ প্রভৃতি হচ্ছে ঐ পাগডাণ্ডী বাস্তায় যাবাব উপায়। বৃদ্ধিমান লোকেবাই ঐ রাস্তায় যেন্তে প্রযন্ত কবেন এবং বাস্তানীও নিরাপদ।

শিশ্য। সাধাৰণ বাস্তায় আবাৰ সাপদ কি, এবং পাগডাঞ্জী বাস্তাটী নিৰাপদই বা কিসে ?

গুক। পাপ,—কাম, ক্রোধ, লোভাদি অনুচবগণকে সঙ্গে নিয়ে ঐ সাধাবণ চক্রপথে, চা বাগিচাব কুলীবি ডিপোর আড্কাটাব মত ঘু'বে বেডাচ্ছে, এবং অনুচবগণকে মানুষেব পেছুনে লাগিয়ে দেয়ে বা'গাতে পার্লেই অমনি নিয়ে গিযে নবকে হাজিব কর্ছে। কেননা, নবকটা পাপের স্থাপিত উপনিবেশ স্বকপ। কাজেই পিয়াবা দেশটা যাতে ভাল আবাদ হয় অর্থাৎ গুলজাব থাকে, পাপ সে বিষয়ে বিশেষ চেটিত আছে। সাধাবণ চক্রপথেব আপন এই, কিয় পাগডাগুী বাস্তায় পাপ অথবা তদমুচরগণেব প্রবেশেব গ্রিবাবই নাই, কাজেহ এই বাস্তাটা নিবাপদ। অত্যব লোকেব কোন বক্ষে পাপেব সংশ্রেৰ না যাওয়াই উচিৎ।

শিষ্য। প্রকৃতি দেবী বখন জগতত্ত সমস্ত প্রাণীকেই চক্রপথে নিষে যাচ্ছেন, তখন পাপ যে কেবল মানুষকেই নবকে নিয়ে যাওয়াব চেষ্টা কর্তে অন্ত প্রাণীকে যে কিছু বলে না তাব কাবণ কি ?

ওক। মূত যোনীব প্ৰাণীবা যে নৰকেট বাদ ক'ছে_ৰ', তাদেব আবাৰ নিয়ে গাবে কোথাৰ গ

শিষ্য। তবে প্রকৃতি দেবা নবকও।নায় বাচ্ছেন ?

গুক। নবক আবাৰ বেথে ধাৰেন কোপা ? প্রকৃতি সম্প্র বিশ্ব প্রমাত্মা থেকে নিয়ে বেরিয়েছেন, পুনবায় সেই বিশ্ব প্রমাত্মাতে পৌছে দেবেন এইটা তাব কর্ত্তব্য কন্ম। সমগ্র বিশ্ব ধ্বন বাচ্ছে তথন নবক কি আব বিশ্ব ছাড়া ? নবক ও যাচছে।

शिया। जाह'रन नवरकर यांशार्था देवन देक ? कांचन, नवकछ।

কেবল ছঃথময় স্থান। পাপীদেব শাস্তি দেবাব জ্বন্তই নবকেব প্রষ্টি। দেই নবক যদি ঈশ্ববেব নিকট যায় ভাহ'লে আব নবকে ছঃখ থাকে কি ক'বে?

খক। হা, কল্লান্তে নবক ও ঈশ্ববেব নিকট পৌছিবে। কেননা, সমগ্র বিশ্ব প্রকৃতি দেবীকে পৌছে দিতে হবে, কাঞ্ছেই নবকও সেই সঙ্গে যাবে। কিন্তু গোলে কি হয় । সেই সমবে জ্বগতন্ত যাবতীয় অজ্ঞান প্রাণীই প্রকৃতি কর্তৃক মোহাচ্ছন হ'য়ে চৈতন্ত বহিত অবস্থায় নীত হবে। যেমন কোন লোককে কোবোফবম থাবা অজ্ঞান ক'লে যদি জগনাখনেবেব মনিবে নিয়ে গাওয়া যায়, তাহ'লে তাব জগরাথ দর্শন হয়, না-জগন্নাথ সম্বাদ্য কোন জ্ঞান হয় ৪ প্রকৃতি যখন বিধ নিষে প্রমাত্মাতে মিশ্বেন, তখন বিশ্বস্ত হাবতীয় প্রাণীই অটেচতন্ত অবস্থার থাকবে। জ্ঞানবাহত মৃচ বোনাব প্রাণী প্রকৃতি কন্তক সততই মোহাচ্ছন্ন হ'ন্নে আছে, তাদেব দশাত ধাবাপ হবেই অর্গাৎ প্রকৃতি কর্তৃক অচৈতন্ত ত হবেই, ভাব ত কোন কথাই নার্চ। এখন মজান মাতুষকেও বে প্রস্তৃতি দেবা সেই দময়ে মূট যোনীব প্রাণীব সনান অবস্থা ক'বে বেখে দেবেন। দেখ, সংবাৎক্ত মনুধাজনা নিয়েও জ্ঞানেব অভাবে মানুষকে মৃঢ বোনীৰ অবস্থা প্ৰাপ্ত হ'তে হয়। তব্বজান ভিন্ন ঈশ্ববৰে কিছুতেই জানা যাবে না। তাব প্ৰমাণ দেখ, অৰ্জ্বন শীক্তফেব দখা, একত আহাৰ বিহাবাদি ক'বভেন এবং সতত একতা বাস ক'বতেন, ৩তাচ ভগবান অৰ্জুনকে ব'লছেন যে, ভূমি এচ বক্ষ কব তাহ'লে শামাকে পাবে, অর্থাৎ আমাব স্থবপ জানতে পাব্বে। কেন এ বকম বণেছেন? কাবণ, অৰ্জুন তৰ্জানা ছিলেন না। অৰ্জুন ধখন সদা সৰ্বদা এক সঙ্গে গেকেও ত ঃজ্ঞান না থাকা হেতৃ তাঁকে জানতে পাৰেন নি, তখন পঞ্চি কণ্ডক অজ্ঞান ভাব ঈশ্ববেৰ নিকট নীত হ'লেই বা কি ক'বে তাকে জানতে পাৰ্বে ? যে তত্ত্জানই হ'ল ঈশ্বকে জানার একমাত্র পদার্থ, সেই তব্জানবিহীন হ'লে মনুয় এবং মনুয়েতর প্রাণীর অবস্থা সমানই হ'রে থাকে।

শিশ্য। অজ্ঞান মাসুষ ও মৃচ যোনীর অবস্থা যদিও সে সময়ে সমান হয়, ততাচ মনুখ্য যোনী ষে উৎকৃষ্ট তা ত স্বীকাৰ কৰ্তে হবে।

শুরু। ইা, মনুষ্ম বোনী ত উৎকৃষ্ট বটেই, কিন্তু ব্যক্তিগত উৎকৃষ্টতা অপকৃষ্টতাও ত আছে। ধারা ইন্দ্রিমাবাম অর্থাৎ বিবেকহীন হ'রে কেবল ইন্দ্রিয় স্থাথই বত থাকে, মানুষ হ'লেও তাবা পশাদিব সমান, শাস্ত্র এই কথা ব'ল্ছে। কাবন, মনুষ্মেত্ব প্রাণীরও ইন্দ্রিয়াদি সবই ঠিক মানুষের মত আছে, কেবল এক বিবেক (বিচাবশক্তি) নাই। সেই বিবেক নিয়েই মনুষ্যান্ধ, তা ধাব নাই সে পশুর সমান নম্ন ত কি গ সেই জন্ম মনু ব'লেছেন,

আহার নিদ্রা-ভয় মৈথুনঞ্চ সামান্ত

মেতৎ পশুভিন রানাম্।

জ্ঞানংনবানামধিকো বিশেষ যে তেন

হীনাঃ পশুভিঃ সমানাঃ॥

আহার, নিজা, ভর ও মৈথুনাদি মাগ্রুণ এবং গণ্ড উভরেবই সমান, কেবল বিবেক মাগ্রুষেব বেশির ভাগ আছে। সেই বিবেক যার নাই সে পশুর সমান। এখন ভেবে দেখ বিবেক নিয়েই মনুয়ান্ত। অতএব সকলেরই বিবেকার্যানারে চলা উচিত।

শিশ্ব। মানুষ কত রকম শিল্প কাজ কচ্ছে, ভাল খাম ভাল জামগায় বাস করে, ভাল অবস্থায় থাকে কেবল এক বিবেকটা না থাক্লেই কি পঞ্জ সমান হবে ?

ঞ্জ। ইা, বিবেক ছাড়া আৰু বুজিগুলিট মানুষ ও পশুর সমান।

মাপ্রবেব যেমন দশটা ইক্রিয় ও কাম ক্রোখাদি রিপুগণ আছে, ইতব প্রাণীরও ঠিক তাই আছে। যে বৃদ্ধিবলে মারুষে উপার্জন ক'বে নিজে ধায় ও ব্রা পুত্রাদিকে খাওয়ায়, সেহ বৃদ্ধিবলে ইতর প্রাণীবাও খাড় সংগ্রহ ক'বে নিজে থার ও সপ্তানাদিকে খাওয়ায়। মানুষে বেমন নানাবিধ উপায় অবলম্বন ক'রে জীবন যাত্রা নির্কাহ করে, ইতব প্রাণীবাও তেমনি नामाविध উপায় अवनश्चन क'त्र कीवन-यांखा निकीह करता। मांबरर रहमन कान वस्त्र निरंद वार्ष्ण मावामादि कि माम्ना स्मावक्षा करव छ द প্রাণীবাও তেম্নি থাগ্রন্তব্য কি বাসস্থান নিয়ে পরম্পর ঝগড়। মারামারি করে। মানুষে স্থ ছঃথে ষেমন হর্ষ শোক প্রাপ্ত হয়, ইতর প্রাণীরাও তেমনি স্থা হঃখে হর্ষ শোক প্রাপ্ত হয়। ইতব প্রাণীব নিকটে ছ শ্রেণীর প্রাণী এলে যেমন সিং দিয়ে গু'তোয় কিম্বা বেও বেও করে এবং কাছে আদতে দেয়না, মাথ্নবেও তেম্নি বেলের খার্ড ক্ল্যাস গাড়ীতে কেও উঠুতে গোলে কিছুতেই তাকে উঠ্তে দেয় না, অথবা কাছে ভিড্তে দেয় না। মানুষে যেমন ভাল ভাল শিল্প কাঞ্জ করে, ইতর প্রাণীরাও তেম্নি বাসস্থান প্রভাত নির্মাণ বিষয়ে অসাধারণ শিল্প-নৈপুণ্য দেখায়, যা মানুষের পক্ষেত্র করা সম্ভবপর নম। এখন ভেবে দেখ মনুষ্য এবং মনুষ্যেতেব প্রাণী সমান ভাবেই জীবন যাত্রা নির্নাহ কর্ছে। তবে যোনা অনুসাবে সেই উপার্জ্জনের পছা, ভোগা বস্তু ও বাসস্থানাদির বিভিন্নতা আছে মাত্র, কিন্তু বিষয় পরস্পর সমান।

শিশ্য। সমুষ্য এবং মনুয়েতের প্রাণীর অবস্থাটা এই বুঝলাম যে, বিবেক ছাড়া মনুষ্য ও মনুয়েতের প্রাণীর বিষয় সব পরস্পর সমান, কিন্তু অদৃষ্ট ত সমান নয়।

গুরু। কথাটা নিতান্ত নির্কোধের মত ব'ললে। অদৃষ্ট কি কথন সমান হ'তে পারে? হুরদৃষ্ট বশঙ্ট ত মৃদ্ যোনীতে জন্ম হ'য়েছে। তা ছাড়া ভগৰদ প্ৰদত্ত একটা ৰিশেষ অধিকার আছে বে, মামুষ পুরু-ষার্থেব দাবা ভাবী অদৃষ্টেব উন্নতি সাধন করতে পারে, এবং বর্ত্তমান অদৃষ্টেব ফণও সম্যক প্রকাবে পেতে পাবে।

· শিষ্য। মানুষে পুক্ষার্থেব দাবা অদৃষ্ট ফল সম্যক প্রকারে পেতে পাবে, আপনার এই কথায় আমার সংশ্ব হচ্ছে যে, মানুষ ষ্থন অদৃষ্ট ফলই ভোগ কবে, তথন পুক্ষার্থ করবাব প্রয়োগন কি ?

গুরু। হা, অদৃষ্টে যা আছে ভাই হবে, তাব বেণী কিছু হবে না। তবে বিনা পুরুবার্থে অদৃষ্ট ফল সমাক প্রকাবে পাওয়া ধার না। বাস-দেব নারদ ঋষিকে ঠিক এই প্রশ্নাই ক'বেছিলেন। নাবদ ঋষি উত্তব দিলেন ষে, প্রুবার্থ ভিন্ন অদৃষ্ট ফল সম্যক প্রকারে পাওয়া ধার না। যেমন আগুনে কাঠ দিলে পু'ডে ধোরা হয়, কিন্তু ফু' না দিলে জলে না কিম্বা অভীষ্ঠ কাজ সন্যক প্রকাবে পাওয়া ধার না; তেম্নি বিনা পুক্ষার্থে অদৃষ্ট ফলও সন্যক প্রকারে পাওয়া যায় না। মালুবেব সাধা-মত পুক্ষার্থ করা উচিৎ, ফল যেমনই হ'ক। সেইজ্ল একটা বচন আছে বে, "বল্লে ক্তে ধদি ন সিধাতি কোহত্ত দোষঃ। যয় চেষ্টা ক'বেও ধদি ফল না পাওয়া ধায় তাহ'লে জান্তে হবে বে অদৃষ্টে নাই। অদৃষ্ট ভেবে ব'দে থাকা কাপুক্ষের কার্যা।

শিষ্য: আমাব মনে একটা সংশয় হচ্ছে এই বে, আপনি ব'লছেন বে, সকল লোকের পুক্ষার্থ কবা উচিৎ, আমি তা মান্লাম্, কিন্তু জীব সংস্থাব অনুসারেই চ'লে থাকে, ষদি সংস্থাবে থাকে তবেই ত পুক্-ষার্থ অবলম্বন করতে মন থাবে, নইলে যাবে কেন ?

গুক। পুরুষার্থ যে কি তা তুমি এখনও ব্রতে পারনি। পুরুষার্থ আবার সংস্কারে থাক্বে কি ? পুরুষার্থের ছারাই ভাল সংস্কার তৈয়ারি হর। লোকের ভাল সংস্কার হচ্ছে পুরুষার্থ সাপেক্ষ। পুরুষার্থ মানে উন্তম, চেষ্টা ও বছ, শ্বতরাং এই গুণিকে অবলম্বন ক'রে কর্ম কর্লে সে কর্মের ফল অর্থাৎ সংস্কার ভাল হয়। আধ্যাত্মিক উন্নতিব জন্ত হ'ক আর সাংসাবিক উন্নতিব জন্তই হউক, সক্লেরই পুক্ষার্থ করা উচিৎ। পুক্ষার্থ হীন মানুষ মানুষই নয়।

শিয়া। সাংসারিক উন্নতির জন্ত পুক্ষার্থ কবা যার, এবং কবৃলে ফলও পাওয়াব সম্ভব, কেন না, মন তাতে লাগে। পরস্ক আধ্যাত্মিক উন্নতিব জন্ত পুক্ষার্থ করা বিশেষ কঠিন ব'লে বোধ হয়। কাবণ মন আদৌ দেদিকে যায় না।

গুক। ইা, কঠিন বটে, কিন্তু কবাও ত চাই। না কর্লে যে শেষে মহদ্ব: থ পেতে হবে। রুগী ওযুষ থেতে না চাইলে তাকে ধেমন জোর ক'রে ওযুধ থাওয়াতে হয়, মনকেও তেমনি জোব ক'রে ভগবানে লাগাতে হয়। এবই নাম পুরুষার্থ।

শিখ্য। ফুগীকে না হর ধ'রে বেঁধে ওষুধ খাওয়ান বার, মনকে ত আর ধ'বতে ছু তে পাবা বার না।

গুরু। দেখ, মানুষের বৃদ্ধিই হচ্ছে মনকপ হাতীকে চাদাবার এক মাত্র মাছে। পবস্তু, বৃদ্ধি স্থ এবং কুছু রকম আছে। স্থবৃদ্ধি স্থপথে নিয়ে ধার এবং কুবৃদ্ধি কুপথে নিমে বায়। অতএব সকলেরই প্রবৃদ্ধি অনুসাবে চলা উচিত। বৃদ্ধি মানুষেব মিত্র আবাব বৃদ্ধিই মানুষেব শক্ত। সেই জন্তই ত ভগবান গীতাব ৬৪ অধ্যায়ের ৫ম শ্লোকে ব'লেছেন য়ে,

> উদ্ধবেদাত্মনাত্মানং নাত্মানমবদাদযেৎ। আত্মৈব হ্যাত্মন বন্ধুবাত্মৈব বিপুরাত্মন॥

আত্মাব দারা আত্মাকে সংসার ধেকে উদ্ধাব ক'রবে, আত্মাকে অবসন্ন ক'রবে না। আত্মাই আত্মান বন্ধু এবং আত্মাই আত্মান্ত শক্ত। এই শ্লোক কথিত প্রথম আত্মার মানে বৃদ্ধি, তাহ'লে ভগবদ্বাক্যের তাৎপর্যার্থ হচ্ছে এই ষে, স্বৃদ্ধি অনুসাবে চ'লে আত্মাকে সংসাব থেকে উদ্ধার কর্তে হবে এবং কুবৃদ্ধি অনুসারে চ'লে আ্মাকে আবদ্ধ ক'রতে হবে না। কাজে কাজেই স্বৃদ্ধি আত্মার মিত্র এবং কুবৃদ্ধি আত্মার শক্র।

শিশ্ব। লোকে স্থবৃদ্ধি অনুসারে চ'ল্লে ষথন ভাল হয়, তথন সেই স্থবৃদ্ধি হয় কিসে ?

গুক। সৎসঙ্গ, সদাদাপ, সংচিন্তা ও সদ্গ্রন্থপাঠ, এইগুলি হচ্ছে স্থাবৃদ্ধি হওয়াব উপায়। অবগু সেই সঙ্গে এদের বিপবাতগুলিকেও ত্যাগ কর্তে হবে,। কাবণ, যে ব্যক্তি ষেমন সঙ্গে থাক্বে এবং যে বকম আলোচনা ও চিন্তা কৰ্বে, তার বৃদ্ধিও তদগ্রন্থপ হবে।

শিয়া। এখন আমি বেশ বৃঝ্লাম যে, লোকেব স্থব্দ্ধ অনুসাবে চলা একান্ত কর্ত্তব্য এবং এটাও বেশ বৃঝ্তে পাব্ছি যে, অদৃষ্ট ও পুক্ষার্থ এই ছুইটীকেই আশ্রম ক'রে জীবন্যাত্রা নির্বাহ কর্তে হবে। অদৃষ্টের ভবদা ক'বে পুরুষার্থ ত্যাগ কর্লে লোকেব হুর্গতিব সম্ভাবনা।

গুরু। তাত নিশ্চরই। পাধী যেমন ছটা পাধার আশ্রর নিরে উ'ডে বেডার, একটা পাধার পাবে না; মান্তুযেবও তেম্নি অদৃষ্ট ও পুরুষার্থ এই ছটাকে আশ্রর ক'বে গীবন্যাতা নিকাহ কব্তে হর, একটাব দ্বারা হয় না।

শিশু। আজ্ঞা ইা, আদি এই বিষয়টা বুঝ্ণাম। এখন আমার আগেকার বিষয়ের একটু গোল আছে সেইটা মিটিয়ে দিন। আপনি সে দিন বল্লেন যে, ভোগের দারা প্রারক্ষ ক্ষর ২য়। তা হ'লে লোকে যে এত ভঞ্জন সাধন কবেন, তাঁদেবও কি বিনা ভোগে প্রায়ক্ষ ক্ষয় হবে না ?

গুরু। তোমার এ প্রশ্নটা বড় কঠিন। এর উত্তর এক কথার দিতে পারা যায় না কারণ বিষয়টা অতীব জটিল, তাতে আবার প্রত্যক প্রমাণ কিছু নাই। ঋষিবা এক একটা বিষয় নিয়ে গবেষণা ক'রেছেন, এবং ধানেব দ্বাবা সে সম্বন্ধে অন্তত্তব জ্ঞান লাভ ক'বে তবে তাঁরা তাব মীমাংসায় উপনীত হ'মেছেন। তোমার এই প্রশ্নেব তিনটা উত্তব অর্থাৎ তিন প্রকার মীমাংসা শাস্ত্রে আছে। তাব মানে এই যে অধিকাবী ভেদে তিন প্রকাবে প্রাবন্ধ ক্ষয় হ'য়ে থাকে। এখন সেই তিনটা মীমাংসার নাম দেওয়া যাক্ যে, সাধাবণ নিয়ম, অসাধাবণ নিয়ম ও নিয়মাতীত অর্থাৎ নিয়ম বহিত্তি ।

শিষ্য। এখন এই তিনটী মীমাংসাব কোন্টী ঠিক १

গুক। তিনটী মীমাংসাই ঠিক।

শিষ্য। তাও কি কখন হয় ? একজন প্রাবন্ধ ভোগ ক'ব্বে আর একজন ভোগ কব্বে না। একটা কথার উত্তব হাঁ এবং না ছই ত হ'ছে পাবে না, এক্টাই হবে।

গুরু। প্রারক্ত ভোগ সম্বন্ধে সাধারণ নিয়ম এই বে, ভোগ ভিন্ন কিছুতেই ক্ষয় হবে না। অসাধারণ নিয়ম এই বে, বিনা ভোগেও ক্ষয় হবে, অর্থাৎ ভোগ থেকে রেহাই পাবে, এবং নিয়মাতীত এই বে ভোগ কবেও ভোগ করেন না।

শিখা। প্রাকৃতিক নিয়ম অপরিবর্ত্তনীয় কিন্ত প্রারক্ষ ভোগ সম্বন্ধে নিয়মের পবিবর্ত্তন হচ্ছে। তাহ'লে প্রাকৃতিক নিয়মের দামঞ্জন্ত রৈল কৈ গ

গুরু। এতে প্রাকৃতিক নির্মের অসামঞ্জ কিছু দেখা যার না।
এই তিনটা মীমাংসাই প্রাকৃতিক নির্মান্ত্র্সারে তিন রকম অধিকারীর
পক্ষে নিজিপ্ত হ'রেছে। যে বেমন কর্মা কববে সে তেমন ফল ভোগ
কব্ব এটা যেমন প্রাকৃতিক নির্ম, আবার যে বেমন অধিকারী হবে তার
প্রারন্ধ সেই রক্মে ক্ষর হবে, সেটাও তেমনি প্রাকৃতিক নির্ম।

শিষ্য। স্থামি এই বিষয়টী বুঝতে পার্চ্ছিনা, যাতে এ রহস্থ বুঝ্তে পারি সেই ভাবে ঠিক করে বলুন।

গুরু। আমি ঠিকই ব'লেছি। এ প্রশ্নের উত্তর হাঁ এবং না ছইই বটে। এক বিষয়ই ব্যক্তিবিশেষের কাছে হাঁ হছে, এবং ব্যক্তিবিশেষের কাছে না হছে। এখন এই তিনটা মীমাংসা সম্বন্ধে শাস্ত্রে যা ব'ল্ছে তা শোন। প্রাক্তন ফল বা সংস্কার তিন ভাগে বিভক্ত সঞ্চিত, প্রারন্ধ ও ক্রিয়মান। বহু জন্মজনাস্তরের সংস্কার যা দেহেব মধ্যে মজুত্ হ'য়ে আছে তাকে সঞ্চিত বলে। তার মধ্যে থেকে ধে ক্য়খানি সংস্কারন্ধী রেকর্ড খতম্ কববাব জন্ম এই দেহরূপ মেসিন্ পাওয়া গিয়েছে, অর্থাৎ জন্ম হ'য়েছে তাকে প্রারন্ধ বলে। আব বে সংস্কারণ রেকর্ডখানি দেহরূপ মেসিনে ঘু'ব্ছে, অর্থাৎ জীবনের বে কর্ম্ম উপস্থিত চ'ল্ছে তাকে ক্রিয়মান বলে। বেদান্ত ব'ল্ছেন্ বে, প্রারন্ধ ফল অর্থাৎ যে ফলভোগ কর্বাব জন্ম হয়েছে, তা ভোগ ক'য়্তেই হবে। তাতেই তিনি ব'ল্ছেন্ যে,

অবশ্যমেব ভোক্তব্যং কৃতং কর্ম শুভাশুভং। নভুক্তং ক্ষীয়তে কর্ম্মকল্প কোটী শতৈরপি॥

মন্ত্রের ক্বত পূণ্য অথবা পাপ কর্ম্মের ফল অবগ্রই ভূগ্তে হবে। শত কোটী কল্পত হ'লেও বিনা ভোগে সেই কর্ম্মফল ক্ষয় হবে না। বেমন নিক্ষিপ্ত শর লক্ষা ভেদ না ক'রে নিবৃত্তি হল্প না, প্রাবন্ধ ফলও তেম্নি ভোগ না হ'রে নিবৃত্ত অর্থাৎ ক্ষয় হল্প না।

শিশ্ব। আপনি নিক্ষিপ্ত শরের সক্ষে প্রারক্ত ফলের উদাহরণ দিলেন আমি কিছুই বুঝ্তে পার্লাম না।

গুরু। মনে কর, একজন ক্ষত্রির বীর পাহাড় **অঞ্চলে জলগে** শীকার কর্তে গিয়েছে। ক্ষত্রির গো-ব্রাহ্মণেব রক্ষাকারী, স্ক্তরাং শীকারে গরু অবধা। শীকারীটা পাহাড়ের উপর উ'ঠে নীচের চারিদিকে জন্দ সব
চেমে দেখ্ছে, এমন সময় দেখ্তে পেল মে, একটা ঝোপেব মধ্যে একটী
ছবিণ চ'বছে, আব সে অমনি একটী শব মেরেছে। শরটা ধনুক থেকে
থেমন ছেড়েছে, সাব ভৎক্ষণাৎ সেই লাল বলের গকটা মাথা ভূ'লেছে।
তথন সেই শীকাবীটা ব্যস্ত ও অমুতপ্ত হ'ল, কিন্তু দে শর সে ছেড়েছে তা
আব কেবাবাব উপার নাই। তেমনি প্রাবদ্ধ রূপ যে শর জীবনেব সকে
ভোগেব জন্ম নিক্ষিপ্ত হয়েছে অর্গাৎ এসেছে, তাও ভোগ না হ'রে নির্ভ্ত
হবে না মর্থাৎ ক্ষর হবে না । এইটা প্রাকৃতিক সাধাবণ নির্ম।

শিয়া। আজ্ঞা হা, এটা বুঝ্লাষ। অসাধাবণ নির্মটা কি ?
গুক। যিনি ভগবানেব পবাভক্তি লাভ কবেন, তিনি প্রাবন্ধ ভোগ থেকে বেহাই পান। ভগবদ্ধক্তি লাভ কব্নে যে কেবল প্রাবন্ধ ক্ষয় হবে ভা নয়, সমস্ত প্রাক্তন ফলই ধ্বংস হ'য়ে যায় সংস্কারের নামগন্ধও থাকে না। সেই সম্বন্ধে ভগবান শ্রীমন্তাগবতে উদ্ধবকে ব'লছেন যে,

যথাগ্নি স্থদমিদ্ধার্টি কবত্যে ধ্বাংসি ভস্মসাৎ। তথা মদ্বিষয়া ভক্তিরুদ্ধবৈ ধ্বাংসি কৃতস্নসঃ॥

হে উদ্ধব। আগুন বেমন কাঠকে পুডিয়ে ভন্মসাৎ ক'রে ধ্বংস করে, আমার ভক্তি লাভ কব্লে (অবপ্র এ ভক্তি পরাভক্তি) আমার ভক্তেব ও ডেমনি পাপরাশি ধ্বংস হ'রে বার। এখন ভসবদাকোর ভাৎপর্যার্থ বুঝ। ভগবান ব'লছেন ধে, আমাব ভক্তি লাভ কব্লে আমাব ভক্তের সমস্ত পাপ ধ্বংস হ'রে বায়। লোকের পাপ ব'লে কোন ভিনিস অথবা পাপ কর্ম্মত মজ্ত থাকে না। পাপ কর্ম্মের কলই সংস্কাররূপে থাকে। কেন না, পরজন্মে ভোগ হবে। ভাহ'লে দেখ, প্রারন্ধ বা সংস্কার বিনা ভোগে ক্ষম হ'রে বাছেছ।

শিষ্য। তা হলে আপনি এখনি ষা বল্লেন এটা কিন্তু তার বিপরীত হচ্ছে, অর্থাৎ শ্বীবনের সঙ্গে নিক্ষিপ্ত প্রাবন্ধরণ শব লক্ষ্যভেদ না কবেই নিবৃত্ত হচ্ছে।

শুক। পুবাণে শুন্তে পাওনা যে এক জন যোদ্ধাব নিক্ষিপ্ত শব তার প্রতিদ্বন্ধী যোদ্ধাব শরেব দ্বাবা শৃস্তমার্কেই বিনপ্ত হয়। সে বাণ আর কক্ষান্ডেদেব জন্ম লাকার নিক্ষি পৌছিতেই পাবে না। সংগ্রামেব সময় বেমন এক যোদ্ধাব নিক্ষিপ্ত শবকে অপব বোদ্ধা কেটে দেয় অর্থাৎ বার্থ কবে। তেমনি জীবন সংগ্রামেন প্রাবদ্ধকপ নিক্ষিপ্ত শবত ভগবদ্ধপান রূপ শব দ্বাবা বিনপ্ত হ'রে যায়। ভগবান শঙ্কবাচাধ্যত শ্রুতিব উল্লেখ ক'বে বলেছেন যে,

ক্ষীযন্তে চাস্ত কর্মাণি তক্মিন দৃষ্টে পবাবরে। বহুত্বং তন্মিষেধার্থং শ্রুত্যা গীতং যতঃ স্ফুটন্॥

শ্রুতিতে স্পষ্টকপে উক্ত আছে যে, সেই প্রাৎপর প্রমাগ্রার দর্শনলাভ হলে (দৃষ্টে মানে কুপা হ'লে) সমস্ত কলা অর্থাৎ কর্ম্মল কলা হ'লে যায়। তার মানে সংস্কার সমূহ বিনা ভোগেই ক্ষম হয়। কর্মাফল বা সংস্কার সমূহ তিনভাগে বিভক্ত, সঞ্চিত, প্রাবন্ধ ও ক্রিয়মান, স্থতরাং এই বহু শব্দ প্রাক্তন ফল সম্বন্ধে, ঐ তিন্টারই অভাব প্রতিপাদনের জন্ম প্রয়োগ হয়েছে। ভগবানও গীতার ১৮শ অধ্যায়ের ৬৬টি লোকে ব'লেছেন্ যে,

সর্ব্য ধর্মান পবিত্যজ্য মানেকং শরণং ব্রজ।
অহং ত্বাং সর্ব্বপাপেভ্যো মোক্ষযিগ্রামি মা শুচ॥
হে অজুন। সমস্ত ধন্ম ভাগে ক'রে একমাত্র আমাবই শরণ নেও,

তা'হলে স্বামি তোমায় সমস্ত পাপ থেকে মুক্ত ক'ব্ব, অর্থাৎ মুক্তি দিব। তুমি কোন চিন্তা ক'ব না।

শিষ্য। ভগবান সমস্ত পাপ থেকে মুক্ত কর্বেন, কিন্তু মুক্তির কথাত কিছু ব'ল্ছেন্ না।

শুক । হাঁ, সমস্ত পাপ থেকে মুক্ত ক'বৰ মানেই হ'ল মুক্তি দিব। জন্ম মৃত্যু বন্ত্ৰণা বে পাপের কল। সংসারে সেই জন্ম মৃত্যু বহিত হ'লেই ত সব মিটে গেল। এখন শোন, যতক্ষণ সংস্কার সমূহেব (সঞ্চিত, প্রারক্ষ ও ক্রিয়মান) গন্ধ মাত্র থাক্বে, ততক্ষণ মুক্তির সন্তাবনঃ কিছুমাত্র নাই। সংস্কারই জীবকে ভববন্ধনে বাঁধবার দড়ী শ্বন্ধপ, সেই সংস্কাবন্ধী দড়ী ধ্বংশ না হ'লে ভববন্ধনে বাঁধবার দড়ী শ্বন্ধপ, সেই সংস্কাবন্ধী দড়ী ধ্বংশ না হ'লে ভববন্ধনে বাঁধবার দড়ী শ্বন্ধপ, সেই সংস্কাবন্ধী দড়ী ধ্বংশ না হ'লে ভববন্ধন থেকে ছুট্বাব্ উপায় নাই। ভগবন্ধক্যি ও শ্রেণিত বিদি কর্মাক্তর ভোগ কর্বতে হয়, তাহ'লে ভগবন্ধক্য ও শ্রেণিতিবাক্যেব কোন অর্থ নাই, এবং ভক্তিরও কোন মাহাত্ম্যা নাই। এ দিকে নৌকিক ব্যবহাব জন্মসাবে বিচার ক'রে দেখ লেও দেখা যায় যে, ভগবন্ধ ক্যায় বিনাভোগে কর্ম্মণল সব ক্ষয় হ'য়ে ভক্তে মুক্তি পেতে পাবে।

শিষা। কি বক্ষ ভাবে সে মুক্তি পেতে পাৰে?

গুরু। মনে কর একজন দোষী আসামীর হাইকোর্ট থেকে ফাঁসির ছকুম হ'রেছে, তার উপব আব আপিল নাই, স্থতবাং ফাঁসি নিশ্চর। পবস্তু, ঐ আসামীটী কাঁদাকাটা ক'বে জীবন ভিক্ষার প্রার্থনার বিলাতে রাজার নিকট একখানি দবখাস্ত ক'বল, রাজাও দয়া ৫'বে তার মুক্তি দিলেন। স্থতবাং ঐ মৃতকল্প লোকটী খালাস পেয়ে প্রাণে বাচ্ল। একে রাজকুপা বলে। দোষী ব্যক্তি আইনামুসাবে দগুনীয় হ'লেও, রাজার শবন নিয়ে য়েমন দগুভোগ থেকে বৈহাই পার। তেম্নি পাপী ব্যক্তি প্রাকৃতিক আইনামুসারে অর্থাৎ নির্মামুসাবে দগুস্বর্প কর্মফল ভোগেব

ষোগ্য হ'লেও, বিশ্বরাজ্যেব রাজা ভগবানেব শরণ নিলে কর্মফল ভোগ থেকে রেহাই পায় অর্থাৎ মুক্তি পায়।

শিষ্য। আমার মনে একটা বিশেষ সংশয় হ'য়েছে। ভগবান সমস্ত ধর্মাত্যাগ কবৃতে ব'ল্ছেন কেন ? যে ধর্ম বক্ষা কর্বাব জন্ম তিনি স্বয়ং অবতাররূপে অবতীর্ণ হন, সেই ধর্ম তিনি ত্যাগ কবৃতে ব'ল্ছেন ? ধর্মাই সকলকে ধাবন করে, অর্থাৎ পোষণ কবে ও রক্ষা কবে। যে ধর্ম ত্যাগ কবৃবে তাব নিশ্চয় নাশ হবে। দয়াময় ভগবান জীবেব পবম হিভাকাজ্জী হ'য়ে এমন অহিতকব উপদেশ দিছেন ?

শুরু। ভগবদ্বাকোর তাৎপর্যার্থ আগে বোঝা তার পর সিদ্ধান্ত ক'র। ভগবান ধর্মত্যাগ কবৃতে বল্ছেন ঠিকই, কিন্তু কোন ধন্ম আগে দেইটা জান তবে ত ব্যবে। সর্ব ধমান এখানে সকল ধমা কি ? প্রাকৃতিক সকল ধর্ম। প্রকৃতিব ধর্ম কি । প্রকৃতিব ধর্মের মূল হচ্ছে আসজি। কেননা, প্রকৃতি বা মায়া লোককে কেবলই বিষয়ে আসক্ত করে, নইলে সংসার টেঁকে না। 'মাসজ্জিই সংসাব গারদে বাথবাব বেডী স্বরূপ। স্ত্রী পুত্রাদি আত্মীয়ের প্রতি, গৃহ, ধনাদি অর্থের প্রতি, লোক আরুষ্ট হওয়াতেই আপন কর্ত্তব্য কর্ম ভূ'লে গিয়ে, চিরকাল দাসামুদাসেব ভায়, ঐ সকল পরিবারবর্গের বশবন্তী হ'য়ে থাকে। সেই জন্ম ভগবান ব'লছেন যে, হে অজ্বন় প্রকৃতি বা মায়া প্রভাবে তুঃখদায়ী নথর পার্থিব পদার্থ দকলে আসক্ত হ'য়ে আমাকে ভূ'লে আছ, এখন সেই প্রকৃতি বা মায়াব ধন্ম সৰ ত্যাগ ক'রে আমার শরণ নেও। ভগবান যে, সর্ব্ধ শব্দ ব্যবহার ক'রেছেন, ভার কারণ এই যে, মূল আসভিল থেকেই শাখা স্বরূপ বাগ, ছেম, কাম ক্রোণাদি উৎপন্ন হয়, স্থতবাং সব গুলিই প্রাক্রতিক ধর্ম, কাজেই সর্ব্ব मक वावश्रां ह'रहाइ। এই स्नाटकव मान এই यে, छगवान वर्षाइन, रह অর্চ্ছন! যাবভীয় নশ্বব পার্থিব পদার্থের আসন্তি ভ্যাগ ক'রে আমাতে

সর্বতোভাবে আসক্ত হও, আমি তোমার মুক্ত ক'র্ব। ভগবানগীতার ৮ম্ অধ্যায়েব ১৪শ শ্লোকেও এই ভাবই প্রকাশ কর্ছেন। তাতে ব'ল্ছেন যে,

অনন্যচেতাঃ সততং যো মাং স্মরতি নিত্যশঃ। তস্তাহং স্থলভঃ পার্থ নিত্য যুক্তস্ত যোগিনঃ॥

হে পার্থ। অনস্তচিত্ত হ'রে, অর্থাৎ অস্ত বিষয়ে চিত্ত না দিয়ে, যে কেবল সর্বাণা আমাকে শ্বরণ করে আমি তার পক্ষে স্থলত এবং দেই নিতা যুক্ত যোগী, অর্থাৎ সেই আমাতে ঠিক মিলেছে। এখন দেখ, অস্তান্ত সমস্ত বিষয়ে অনাসক্ত হ'রে, কেবল এক ভগবানে আসক্ত হ'তে পার্লে ভবে পাওয়া হাবে।

শিষ্য। আদক্তি যে প্রাক্তিক ধর্মেব মূল ব'ল্ছেন, দেইটা আমাকে ভাল ক'রে বুঝিয়ে দিন।

গুরু। এক মারাঞ্চনিত আসক্তিতেই সাংসাবিক সমন্ত ধর্ম-পালন হ'রে থাকে। সাংসারিক যাবতীয় কাজেব মূলেই আসক্তি নিহিত আছে। যেমন পিতা সন্তানকে পালন ক'বে পিতৃ ধর্ম পালন কবৃছে, স্ত্রী স্বামীর সেবা ক'রে স্ত্রী ধর্ম পালন ক'বছে ইত্যাদি। সাংসাবিক লোক এক আসক্তিতে সাবদ্ধ হ'রেই আপন আপন কর্ম্বব্য কর্ম্ম সম্পন্ন করতঃ সাংসারিক প্রোকৃতিক) ধর্ম পালন ক'বে থাকে।

শিশ্য। আচ্ছা, এ জগতে এই রকম সমস্ত ধন্মত্যাগ ক'রে, অর্থাৎ পার্থিব সমস্ত পদার্থের আসন্তি ভ্যাগ ক'রে কেও ভগবানে সর্বতোভাবে আসক্ত হ'তে পেরেছে ?

গুরু। হাঁ, ব্রঞ্গোপীবা পেবেছে। ব্রজ্গোপীদের মনের ভাব ও জনসুদারে তথন তারা যে আচরণ করেছে, তা যদি বিচার ক'রে দেখা ষার, তা হ'লে স্পষ্ট ব্ঝতে পাবা যায় যে, প্রকৃতই তাবা সমস্ত ধর্ম ত্যাগ ক'বে একমাত্র ভগবানেতেই আসক্ত হ'য়েছিল।

শিষ্য। এই বিষয়টী খু'লে বলুন। আমাৰ বড় কৌতুহল হচেছ।

শুক্ । শ্রীকৃষ্ণ বধন বাশী বাহাতেন্ তখন ব্রজগোপীবা মে, মে কাজে থাক্ত সে তাই ত্যাগ্ ক'বে শ্রীকৃষ্ণেতে সর্বতোভাবে আরুষ্ঠ হ'য়ে তৎক্ষণাৎ তাব নিকটে গিয়ে উপস্থিত হ'ত। ব্রজগোপীদেব মধ্যে কেও গাই হ'ছে, কেও পাক্ ক'রছে, কেও সন্তানকে কোলে নিয়ে শুন পান করাছে, কেও স্বানাকে থেতে দিছে, কেবল পাতে কটা দিয়েছে ডা'ল তবকাবি কিছু দেরনি, কেও চুল বাধতে শুক্ ক'বেছে, কেও কাপড পর্ছে, কেবল ঘাঘ্বাটা পবা হ'য়েছে কাঁচ ওড়্না পবা হর নি, কেও হয়ত চোখে কাজল পবছে কেবল এক চোখে পরা হ'য়েছে ইত্যাদি কাজে গোপীবা সব ব্যাপৃত আছে। এমন সময় তাবা যেমন শ্রীকৃষ্ণের বংশীবব শুন্তে পেল, তখন বে গোপী যে কাজে ব্যাপৃত ছিল তা তৎক্ষণাৎ ত্যাগ ক'রে, অর্থাৎ তাদেব সকল ধন্ম ত্যাগ ক'বে শ্রীকৃষ্ণেতে সক্রতোভাবে আসক্ত হ'য়ে তন্মুহুর্জে ভগবানেব নিকট গিয়ে উপস্থিত হ'তো। এবই নাম অন্যু শবণ, অনুযাচত্ত এবং ঈশ্ববে সর্ব্বাপন। এখন ভগবদ্ ক্তিত সর্ব্ব ধন্মানু পবিত্যাজ্য শ্লোকের অর্থ বেশ বুঝ্তে পাব্বে।

শিয়। আজা ইা আমি বৃঝ্লাম্। এখন প্রাবন্ধ ভোগেব নিয়মাতীত মীমাংসাটা বৃঝিয়ে দিন।

ওর । প্রাবন্ধ ভোগেব নিয়মাতীত মীমাংসাটী হচ্ছে তরজান প্রক্ষের সম্বন্ধে। ভগবান যেমন সব ক'রেও কিছু করেন না, সর্ব্যয় কর্ত্তা হয়েও অকর্তাবৎ মনে কবেন। তেমনি তর্ত্তানী প্রক্ষেবাও সব কবেও কিছু কবেন না, স্থতরাং তাঁব। প্রাবন্ধ ভোগ করেও করেন না। রাজা যেমন তাঁর বাজা পরিচালনার আইনে বাধ্য নন। বিশ্ব বাজ্যেব রাজা ভগবানও তেমনি তার বিশ্বরাজা পরিচালনাব প্রাকৃতিক আইনে অর্থাৎ নিয়মে বাধা নন, তাব মানে অধীন নন। স্থতরাং তদজানী পুরুষেবাও প্রাকৃতিক নিয়মের অধীন লন। কেন না, তত্ততানী পুরুষ ভগবানেবই স্থক্প। কাক্রেই উারা সব ক'বেও অকর্ত্তাবৎ থাকেন, স্থতরাং মায়াজনিত অহংকাবেব বশবর্ত্তী হয়ে স্থ্য ছঃথের অধীন হন না। তাঁরা প্রােরম্ব ভোগ করেন বটে, কিন্তু তাদেব মনে সংসার মিথ্যা ব'লে ধাবণা থাকায়, সে তোগ কিছু অনুভবে আসে না। যে জিনিস মিথ্যা তার আবাব ভোগ কি? ভগবান শঙ্বাচার্য্য তত্ত্বজানা পুক্ষেব প্রারম্ব ভোগ সম্বন্ধে ব'লেছেন যে.

দেহস্তাপি প্রপঞ্চতাৎ প্রাবকাবস্থিতিঃ কুতঃ। অজ্ঞান জন বোধার্থং প্রারক্ষং বক্তি বৈশ্রুতিঃ॥

দেছ প্রপঞ্চ অর্গাক কল্পনা মাত্র, স্থতবাং কি ক'রে তাতে প্রাবন্ধের অবস্থিতি হ'তে পারে
পু অজ্ঞান লোক্কে বোঝাবাব জন্ম শ্রুতিতে প্রাবন্ধের উক্তি আছে। জ্ঞানীয়া প্রাবন্ধ জোগ ক'বেও কেন যে ভোগ কবেন্না, এবং তথন তাদেব অবস্থা কেমন হয় শঙ্করাচায্য তাও ব'লেছেন যে,

তত্বজ্ঞানোদযাৰ্দ্ধং প্ৰাবৰূ নৈ ব বিন্ততে। দেহাদিনাম সত্তাৎ যথাস্বপ্ন বিবোধতঃ॥

নিদ্রা হ'তে গ্রাগ্রত ব্যক্তিব নিকট স্বপ্নদৃষ্ট বিষয়েব ধেমন অন্তিত্ব থাকে না, মোহনিদ্রা হ'তে জাগ্রত তত্ত্বজ্ঞানী পুরুষেব নিকটেও, তেমনি মারা প্রপঞ্চ অলীক দেহাদিব কোন অন্তিত্ব থাকে না। ষথন দেহাদিবই অন্তিত্ব নাই, তথন আব প্রাব্যের অন্তিত্ব কি ক'রে থাকে ? জ্ঞানীবা জীবনটা স্বপ্নবং জ্ঞান কবেন, স্কৃতবাং তদামুসঙ্গিক সমস্ত বিষয়ই মিথাা ব'লে বিবেচনা কবেন। জ্ঞানীরা ভোগ কবেও যে কবেন না শ্রীমন্তাগবতে তাব উল্লেখ আছে। শ্রীকৃষ্ণ বহু বিবাহ ক'বেও বাল ব্রহ্মচাবী ছিলেন। ফুর্ঝাসা ঋষি ব্রজে গিয়ে ভোজন কবেও ব'লেছিলেন যে তিনি খানু নি।

শিস্তা প্রাবন্ধ ভোগ সম্বন্ধে এক বক্ষ বুঝ্লাম্। এখন আমাব কর্ম্মণ ভোগ সম্বন্ধে আব একটা সংশন্ধ আছে।

গুৰু। আজ থাক আবাব কা'ল ২বে।

পঞ্চম দিন।

শিষ্য। আমাব সংশব্ধ এই বে, জাপনি যে কা'ল ব'ন্লেন্ ভগ-বানেব অনন্য শবণ যে নের, সেহ প্রাবন্ধ ভোগ থেকে বেহাই পায় এবং মুক্তিও পার। মহাপাতকা যদি তাঁব শবণ নের, তাহ'লে দেও কি মুক্তি পাবে ? তার পাপেব শাস্তি হবে না ?

প্তক। না,—সে পাপেব শান্তি পাৰে না। বেমন পাপীই হ'ক না কেন, ভগবানেৰ অনন্ত শবণ নিশে তথন সে সাধু ব'লে গণিত হয়, এবং তাৰ ক্বত পাপ অথবা পুণ্যকম্মেৰ ফলভোগ থেকে বেছাই পেয়ে মুক্তি পায়। ভগবান গীতাৰ ১ম্ অধ্যায়েৰ ৩০শ শ্লোকে ব'লেছেন বে

অপিচেৎ স্থূবাচারো ভজতে মামনশ্য ভাক্। সাধুবেব স মন্তব্যঃ সম্যগ্ ব্যবসিতো হি সঃ॥

হে অৰ্জুন। জগতে যে অত্যন্ত হবাচাব পাপী, সে যদি অনন্ত মনে আমাব ভজনা ক'বে অৰ্থাৎ একমাত্ৰ আমাবই শবণ নেষ, ডা হ'লে সে আব পাপী থাকে না। তথন তাঁকে সাধু ব'লেই জেন। তথন তাঁৰ অবস্থা যে কেমন হয় পরেব শ্লোকেব প্রথমাধে তাই ব'ণছেন যে,

ক্ষিপ্রং ভবতি ধর্মাত্মা শশ্বচ্ছান্তিং নিগচ্ছতি।
তিনি শীঘ্রই ধর্মাত্মা হন্ ও দিন দিন তাঁব ধর্মভাব প্রবল হয়,
এবং উত্তরোত্তর শান্তিলাত কবেন। পাপী ২'ক আর পুণাবান হ'ক,

ভগবানের শরণ নিশেষে কাবও ছুর্গতি ২বে না উক্ত শ্লোকের শেষার্দ্ধে তাই ব'লেছেন যে,

কৌন্তেয প্রতি জানীহি ন মে ভক্তঃ প্রণশ্যতি।

হে কৌন্তেষ। ত্রাম নিশ্চর জানিও আমাব ভক্ত কথন নট চয় না, অর্থাৎ ছুর্গতি প্রাপ্ত হয় না। এখন বুঝ্লে যে মহাপাতকাও ভগবদ্ কৃপায় উদ্ধাব হয়।

শিষা। সাজা হা বুঝ্লাম্। এখন আগোকাৰ একটা বিষন্ন বৃঝিন্ধে দিন। আগে কথা হচ্ছিল বে স্বুদ্ধি অমুসাৰে কাজ কব্লে ভাল সংস্কাব হন্ন এবং তাতে কলাল হয়। আৰ কুবুদ্ধি অমুসাৰে কাজ কব্লে মন্দ সংস্কার হন্ধ, স্থতবাং তাতে তুঃখ হন্ন। আমি দেখুছি মনই কাজ কববাৰ ক্রা, অতএব মনটা ভাল হ'লেই লোকেব কলাল হয়।

গুরু। তুমি বিরবটা ঠিক বুঝ্তে পার্বান। মন কাজ কববাব প্রাকৃত কর্ত্তা নর মন সাধীন ভাবে কিছুই কব্তে পারে না। মন বুদ্ধির অধীন হ'রে ইন্দ্রিয়গণেব দ্বাবা কাজ কবার। মন নিজে ঠিক পেস্কাবেব কাজ কবে।

শিষ্য। মন কোন্ ইদ্রিনের মধ্যে গুন্তি হয়, অর্থাৎ জ্ঞানেক্রির না কর্মেক্তির 📍

গুরু। কেই কেই মনকে ইঞ্জির বলেন্, কিন্তু কোন ইঞ্জির তা বলেন না তবে মন নিয়ে একাদশ ইক্রির গুল্তি কলেন। কেওবা মনকে বাদ দিয়ে দশেক্রিয়েব গুল্তি করেন্। পরস্ত, বিচাব কলেব দেখাল দেখা যার যে মন ইক্রিয়ে হ'তে উপবে আচে। কেননা, কল, বস, গন্ধ, একা ও স্পর্ন এই যে সাঁচটী বিষয়, এদেব সঙ্গে মাক্ষাৎ সম্বন্ধে মন কোন কাজ করেনা। বিষয়েব সঙ্গে সাক্ষাৎ সম্বন্ধে যোগ ইওয়াই হচ্ছে ইক্রিয়ের ধন্ম। মন ইন্দ্রিস্থগণের উপবিস্থ কম্মচারী। কেননা, ইন্দ্রিস্থগণ যে সকল কার্য্য কবে, তা সব মনের অনুমতিক্রমে ও মনেব সাংখ্যা নিয়েই ক'বে থাকে। মনকর্তৃক যাবা উল্লিখিত বিষয় পাঁচটাতে সংস্কুত ২য় তারা জ্ঞানে-ক্রিয়। আব জ্ঞানেক্রিয়েব গ্রাহ্ম বিষয়েৰ কার্য্য সকল সম্পন্ন কববাব জন্ম বিষয়েব সহিত ধাহাবা সংস্কুত হয়, তাবা কর্ম্বেক্রিয়। এই দশ্টীই ইন্দ্রিয়।

শিষ্য। মন ইন্দ্রিয়গণের উপবে থেকে পেদ্কাবের কাঞ্চাক ক'রে করে ৪

গুক। জ্ঞানেক্রিয়েবা যে যে বিষয়ে আরুষ্ট হয়, সেই সেই বিষয় তাবা মনেব কাছে এনে হাজিব কণে। মন তথন সেই সব বিষয়গুলা নিয়ে গিয়ের বৃদ্ধির কাছে উপস্থিত হয়, এবং বৃদ্ধি বিচাব ক'বে কর্ত্তব্যাকর্ত্তব্য নির্দ্ধাবণ কবে দিলে পর, তথন মন কর্ম্মেলিথের দ্বারা তদনুসারে কাজ করিয়ে নের। এখন বৃষ্লে । প্রাকৃতিক কার্য্যকারকদের মধ্যে বৃদ্ধি সর্ব্বোপরি, তাব নীচে মন এবং মনের নীচে পাঁচটী জ্ঞানেক্রিয় ও পাঁচটী কর্ম্মেলিয়। মন বিদি স্বাধান হ'ত তাহ'লে সে ভাল হ'লে কল্যাণ হ'তে পা'বত, মন বে বৃদ্ধির অধান। বৃদ্ধি ভাল হ'লে তবে মান্তব্যর কল্যাণ হও। সেইজন্ত ভগবান গীতাব ৬ঠ অধ্যায়ের ৫ম শ্লোকে ব'লেছেন যে,

উদ্ধবেদাত্মনাত্মানং নাত্মান মবসাদযেৎ। আত্মৈব স্থায়নো বন্ধুৱাত্মৈব বিপুৱাত্মন॥

আত্মাকে আত্মা দ্বারা উদ্ধার কব্বে। আত্মাকে অবসর করবে না। আত্মাই আত্মার বন্ধু, আবার আত্মাই আত্মার শক্ত। এই শ্লোকের প্রথম কথিত আত্মা মানে বৃদ্ধি। ভগবান ব'ল্ছেন বৃদ্ধিব দ্বারা আত্মাকে সংসার থেকে উদ্ধার কর্বে।

निश्व। श्वाका हो, स्वृषि अञ्चनार ह'नांन स मारकत कन्यान

হয় তা বেশ বুঝ্তে পাব্লাম্। মন সম্বন্ধে আমার ধারণা ছিল যে মনই সব, কিন্তু এখন দেখছি তা নয়।

গুক। তা'হলে তুমি ভূল বুবেছ। মন পেস্থাবের কাভ করে ব'লেছি ব'লে তোমাব হয়ত ধাঁদা লাগছে। মন বুদ্ধির নীচে বটে, কিন্তু আৰু সকলেরই উপবে। জীৰেৰ জীবনে কাজ কবাবাৰ কর্তা হ'ল মন, তাব অনুমতি ভিন্ন কোন কাজ হয় না।

শিষ্য। এখন প্রাবন্ধ ও পুক্ষার্থ সম্বন্ধে কিছু জিজাস্য আছে। গুক। কি জিজান্ত আছে বল।

শিশু। আমাৰ বিশাস পুকৰাৰ্থ কৰা বুধা। অদৃষ্ট ফলই পাওয়া ৰায়। একটা বচনও আছে। "ভাগাং ফলভি সক্কলং ন চ বিভান চ পৌৰুৰম্।"

গুৰু। এ বিশাস তোমার কি জন্ম হ'লো সেইটা আমাকে বল দেখি।

শিষা। দেখুন, কলেজ থেকে এক সজে একই গ্রেডে ওমে পাশ ক'রে চারটা ছেলে বেকল। তাদের অনৃষ্টামুসাবে, একজন বাজান ছালে কাটাচ্ছে, একজন পুল নাষ্টারি ক'রে দংসার্যাত্রা নির্বাহ ক'বছে, একজন চাক্বীর উমেদারিতে যু'বে বেডাচ্ছে, এবং একজন হয়ত জাল করাব অপরাধে জেল খাট্ছে। এখন বিচাব ক'বে দেখুন, বিতা শিক্ষাব জন্ত সকলেই সাধানত পুক্যার্থ ক'ল্লেছে বটে, কিছু তারা অনৃষ্ট ফলই পাচ্ছে। তাতেই মনে হয় অনৃষ্টে যা থাকে তাই হয়, পুক্ষার্থ করা বৃথা।

গুরু । পুরুষার্থ কথন বৃণা হয় না। পুক্ষার্থের দ্বারা অদৃষ্ট ফল সমাক প্রকারে পাওয়া যায়। তবে অদৃষ্টে না পাকা হেতু পুক্ষার্থ ক'রে ঈন্দিত ফল না পেলেও, কিন্তু তার দ্বারা জীবনে অন্ত মহৎ ফল লাভ হয়। তা তোমাকে ভেঙ্গে বলছি মন দিয়ে শোন। এক সঙ্গে সমান শিক্ষা পেয়ে, সমান বিদ্বান হ'য়ে সকলেই কলেজ থেকে বেরুল। তবে অদৃষ্ট কলের তাবতমা হেতৃ, তারা বিভিন্ন দশাগ্রস্ত হ'ল বটে, কিন্তু শিক্ষার মে ফল তা সকলেই সমান পেয়েছে। কাবণ, তাবা সত্য, বিনয়, বিবেক, নম্রতা ও দয়া প্রভৃতি কতকগুলি সদ্পুণেব অধিকাবী হ'য়েছে। সেই জন্ম তাবা সাধারণ লোকের মত অসকোচে পাপ কর্মে লিপ্ত হ'তে পার্বেনা। কেননা, ঐ সদ্পুণপুলি পাপ কর্মের প্রতিরোধক স্বরূপ হবে। এখন দেখ পাপ কর্মে নিবৃত্ত থাকা কি জাবনেব মহৎ ফল নয় ?

শিশ্ব। আজ্ঞা হা, এক্ষেত্রে কতকটা ফল হয় বটে, কিন্তু যারা শিক্ষিত হ'য়েও পাপ কর্মে বত হয় তালের পুক্ষার্থ ত রুখাই হয়।

গুরু। ধারা শিক্ষিত হ'রেও পাপে রত হয়, তারা কেবল প্রবন্ধ সংস্কারের বশেই পাপকর্ম কবে। স্থতবাং তারা ধদি বৈকুঠেও বাস করে তবুও তারা পাপে বিবত হবে না।

শিষ্য। তবে সে রকম লোকেব কি কল্যাণেব কোন উপান্ন নাই ?

গুরু । উপায় আছে। তাদেরও পুরুষার্থ ক'বে ভাল সংস্থারের জন্ম চেষ্টা ক'রতে হবে। মনে পাপের বেগ প্রবল হ'লেও, তদমুসাবে কাজে প্রবৃত্ত হ'তে নেই। সেধানে কবিব দাসের উপদেশ মত চল্তে হয়। মনে গাপ চিন্তা হয় হ'ক, আমি কিছুতেই যাব না। এইরপ কিছুদিন কব্লে ক্রমে পাপের প্রবল বেগ কম হ'য়ে আসে, এবং সময়ে কিছুই থাকে না। যে রকম লোকই হ'ক না কেন, পুরুষার্থ সকলেরই করা উচিত। পুরুষার্থ-হীন শোকেব অবস্থা জলময় অবসন্ধ লোকের মত হয়।

শিষ্য। কাশীতে গঞ্চার সব ঘাটে অনেক সাধু একবারে পুরুষার্থ-হীন হ'য়ে চুপ ক'রে ব'সে থাকেন। তাঁদেরও ত থাবার সেইথানেই উপ-স্থিত হচ্ছে। গুরু। দেখ, জগতে পুরুষার্থ হীন পানী নাই, কেও বা জানিত ভাবে কেও বা জ্ঞানিত ভাবে পুরুষার্থ কবছে, ফলতঃ জীবমাত্রেই পুরুষার্থ কবছে। কেননা, প্রাক্তিক কাজ সম্পন্ন হওয়াব জন্ত প্রাণিদেব পুরুষার্থ অপবিহাযা। কৃমি যে পুরুষার্থহান সাধুদেব কথা বল্লে, তাবাও কিন্তু পুরুষার্থহান নন, তাবাও পুরুষার্থ কবছেন্। তোমাকে তা বলি শোন। তাদেব প্রথম পুরুষার্থ হছে গলার ঘাটেব নিকট ব'নে থাকা, কেননা, লোকে দেখ্বে এবং খাবার এনে দেবে। যদি বল কোন সাধু হাত দিয়ে কিছু থাননা, অপব লোকে খাইয়ে দেয়, তত্রাচ তাকে পুরুষার্থ কর্তে হয়, কেননা, চিবিয়ে গলাধঃকবণ করাব যে পুরুষার্থ তাত তাকে কর্তেই হবে। দেখ, নির্জ্জন স্থানে ধ্যান বাবণাদি ভাল হয়, তা না ক'বে পুরুষার্থ অবলম্বন ক'বে গলার ঘাটের নিকট বসা। এখন ভেবে দেখ পুরুষার্থ কেও ত্যাগ কর্তে পারে না। পুরুষার্থ করাই উচিৎ।

শিশ্ব। সাজা হা, এখন আমি বৃঝ্নাম ধে পুরুষার্থ কবা একান্ত কর্ত্তব্য। প্রাথন্ধ ভোগ সম্বন্ধে আমার এই সংশ্বর হচ্ছে যে, কোন কোন স্থানে বহু লোকেব এক রকম অদৃষ্ঠ ফল দেখা যাগ। তাহ'লে তাবা সক-লেই এক রক্ষ কম্ম ক'রে এক নিয়তিব অধীন হ'য়েছে ?

গুরু ৷ বছলেকেব এক নিয়তি কিসে দেখলে গ

শিয়। কেন ? নৌকা ডুবি, জাহাজ ডুবি, বেল দংঘর্ষ, বজ্রপাত প্রেকৃতি ঘটনায়, বহু লোকেব এক সাক্ষ একস্থানে এবং একই সময়ে প্রাণ-ত্যাগ হয়। তা হ'লে সকলেই কি এক রকম কাজ ক'বে এক সঙ্গে তাব ফল ভোগ কলে ?

গুরু। সংশেই যে এক বকন কথা ক'বে, এক সঙ্গে একই সময়ে ভার ফল ভোগ করে ভা নয়। যেমন কেও বাদ্যোহা, কেও লোক পীডনকাবী ডাকাত, কেও খুনা আসামী ইত্যাদি বহু আসামীৰ দ্বীপান্তব হ'ল। তথন তাদেরকে এক ধাহাজে ক'বে নিম্নে গিয়ে শাস্তি ভোগেব জন্ম সকলকে এক সঙ্গে এক সন্মে একই স্থানে বেমন ছেডে দেয়। বহু লোকেব এক সঙ্গে প্রাকৃতিক কম্মকল ভোগও ঠিক সেই রকম। কম্ম ও ক্ষেত্র বিভিন্ন হ'লেও সেই সকল কম্মকল এক সঙ্গে ভোগ হয়ে থাকে।

শিশ্য। আপনাৰ কথা মানি, কিন্তু এমনও দেখা যায় বে, নৌকাডুবীতে একশ' লোক জলে ডুব্ল, তাৰ মধ্যে হয়ত হুজন বেচে উঠ্প।
সকলে যদি এক নিয়তিৰ অধীন এক সঙ্গে ফণভোগত কৰ্তে যায়,
ডা'হলে ডাদেৰ মধ্যে ইতৰ বিশেষ হয় কেন গ

শুক। এক সঙ্গে গেলেই যে সকলেরই এক নিয়াত হবে এমন ব'লতে পাবা বায় না। স্তবাং নোকাডুবাতে বে গ্রহন বাচ্ল, তাদেব নিয়তি মৃত ব্যক্তিদেব নিয়তিব সঙ্গে এক নয়। কাজেং তাবা বৈচে গেল। স্বাব ধাদ বল হে, পুক্ষার্থ ক'বে প্র গ্রহন বাচ্ল, কিন্তু সে কথাও বলা ঠিক নয়। কেন না, প্রাণবিযোগেব সম্ভাবনা ভপাশৃত হলে, প্রাণবাচাবাব চেষ্টা কবতে কেও ক্রটা কবে না। লোকে মনেন মাবেশে গলায় দার্ড দিয়ে বুলে পড়ে, শেষে সেই লোকই প্রাণ বাচাবাব জন্ম হাত পা নেচে বিশেষ চেষ্টা কবে। আত্মাব পূল্য বিয়াবা জগতে আব কিছুই নাই। এনন কি লোটেব ছেলেকে মৃত্যামু থ নিমেপ ক'বেও মা আপ্রিবাচাবাব চেষ্টা কবে। একেত্রেও ঐ লল নিমন একশ' লোকই প্রাণবাচাবাব জন্ম পুক্রার্থ ক'বেছে। কোন হুঘটনায় এক সঙ্গে বত লোকই সকক না কেন, কিন্তু তাব মধ্যে যদি এফটা লোকেও নিন্তু তাব্য তাবাভান হয়, তাহ'লে সে বেচে বাবে। তোমাকে এফটা আলেব নিকট বাটিয়াছিল। ঘটনা

এই যে, সেই গ্রামের বাহির দিয়ে ডিখ্রীক্টবোর্ডের বাস্তা ববাবব গিয়েছে এবং রাস্তার অপর পাবে আবাদী জমীর মাঠ। গ্রামেব বাইবে বাস্তার ধারে ক্লযকদেব রোণ বুষ্টিতে আশ্রয় নেবাব জগু একথানি ছোট ঘর हिल। देखाई मारम रुठो९ এकपिन विकास विनास विख्तुष्टि जावछ ३'न. এবং ঘন ঘন বিত্তাৎ চম্কাতে লা'গল ও মেঘ গৰ্জন হ'তে লাগ্ল। এমন সময় ক্রমে আটজন পথিক দেই ববে এসে আত্রয় নিল। প্রস্তু, এমন ভয়ানক মেৰ গৰ্জন হ'তে লাগ্ল ও বিহাৎ চমকাতে লাগ্ল যে, তাদেখে ঐ ঘবের পথিকেবা অত্যন্ত ভীত হ'ল। অনেকক্ষণ ধ'বে মেঘগর্জন হয কিন্তু বজ্ৰ পড়ে না দেখে ভাবা অনুমান কবল যে, তাদেব মধ্যে কোন পাপী আছে. তাবই উপর বছ পড়াব জন্ম এই ব্যাপার হচ্ছে। এখন দেই বছ্ৰপাত না হ'লে এই চুৰ্গোগ কিছু:৬ই পাম্বে না অতএব একে একে সকলেই চল, গিয়ে ঐ দূবের আম পাছটা ছুলে আসা যাক্, যার শ্বদুষ্টে আছে ভাব উপৰ পড়্ব। এই মৃক্তি ঠিক হ'লে, একে একে সকলেই গিরে সেই গাছটা ছুবে আসতে লাগ্ল। এই বকমে দাত জন গাছ ছুঁরে এন কিন্তু বন্ধ পড্ল না। যে লোকটা শেষে ছিল দে তার নিশ্চয় মুত্যু জেনে অত্যন্ত ভাত হ'ল এবং কিছুতেই গছি ছুঁতে গেল না। তথ্ন সকলেবই ধাৰণা হ'ল যে বজু ভাব উপবেই পড্ৰে। এখন সেচটা পতে গেলেই এই হুর্যোগ থাম্বে, এই আশায় সবাই সেই পোকটাকে গাছ ছুঁ'তে ঘা'বাব জন্ত জেদ কৰ্তে লাগ্ল, কিন্ত কিছুতেই দে লোকটা গেল না। তথন সকলে নিশে ভাকে ধ'বে টেনে নিশ্ব গিয়ে সেই গাছতলায় एकटन भिष्म, मकटन প्रावंभाव (नोट्ड भार एमडे चटन हुक्न, खांच छ०-क्नां (महे चत्न राष्ट्र में मां कन लाकहे नाता लान। (व লোকটাকে তার। গাছ তলাম কেলে দিয়ে এলেছিল, সেও সকলের পেছনে নৌভে আসছিল, কিন্তু একটু দূরে ছিল ব'লে সকলের সঙ্গে বন্ধে ঢুক্তে

পারেনি; তাতেই বাইরে মূর্চ্ছিত হ'মে প'ডে গিমেছিল এবং প্রাণেও বেঁচেছিল। আচ্ছা, এখন বল দেখি নিম্নতি কেমন আপনার হক্ টেনে নিলেন। তাতেই বলে "নিম্নতি কেন বাধ্যতে"। সাধারণ লোককে অদুষ্টানল ভোগ কব্তেই হবে।

শিধ্য। কেবৰ মানুষকেই অদৃষ্টফল ভোগ কর্তে হবে, মৃত ধোনীর প্রাণী কি অদৃষ্টফল ভোগ করে না?

গুৰু। ক'ব্ৰে না কেন ? অদৃষ্টফল ভোগ কৰ্বাৰ জ্লাই ত মৃচ্ যোনাতে জন্ম নিয়েছে অৰ্থাৎ নরকে প'ডেছে। তবে মৃচ যোনাতে এনে কৃতকর্মেব কলভোগ গ্লানা। মৃচ যোনাব প্রাণী জন্ম মৃত্যুব দ্বাবা পব পব যোনা পবিবর্ত্তন ক'বে মহুষ্য নোনাতে উঠ্বাৰ নিছিব চৌরাণী লক্ষ্ণ ধাপের কেব ব এক একটা ধাপ মাজ উঠে। আব কর্মদোবে যারা মহুদ্য যোনী হ'তে একবাবে মৃচ বোনাতে আসে, তাবা যতটা ধাপেব নীচে এনে পড়ে, তালেবকে আবাব সেপান পেকে বাকা ধাপগুলি উত্তীৰ্ণ হ'য়ে অর্থাৎ বাকা যোনাগুলিতে জন্ম নিবে শেষে মনুষ্য যোনাগুলিতে আসতে হয়।

শিষ্য। মৃত ধানীৰ প্ৰাণীদেৰ মধ্যে এক পাণা অন্ত প্ৰাণীকে থেবে খায় এবং বেষ হিংসাও কৰে। তা'হলে এ সৰ াাপকখেব ফলভোগ কি থাবা কৰ্বে না ?

গুক। মৃচ বোনীব গ্রাণীবা বিবেক্থান, স্থতবাং তাবা ডাদেব ক্যুক্ষেব কোন ফলভোগ করে না।

শিশ্ব। আমি এই বিষয়টী ঠিক বুঝ্তে পার্লাম না।

শুক। বিবেকা প্রাণীরই ক্ল'তকমেব ফলভোগ কব্তে হয়।
কেন না, মৃহ্যুব পর তাদেব জীবনেব ক্ল'কম্মেব দল অনুসাবে গতি
হয়, অর্থাৎ প্রকৃতিদেবী তাদেবকে কম্মোচিৎ যোনীতে পাঠান, এবং
যোনী অনুসারে সুথ ছঃথের ব'বস্থাও করেন।

শিষা। আমি এখনও এই বিষয়টা পরিস্কাব বৃঝ্তে পারলাম না।

শুক্র। লোকে জীবন ভ'রে বে কর্ম্ম করে, তদমুসারেই গতি

হয়। এখন সারা জীবনেব কর্মাত আর বর্তমান থাকে না, সে

সকল কম্মের ফলই স্ক্রাবস্থায় বর্তমান থাকে। কেননা, সেই ফলামুসারেই লোকেব গতি হবে। এখন কর্ম্মফলেব জন্ম দায়ী কোন্ প্রাণী পূ

বিবেকী প্রাণী। বিবেকী প্রাণী কে পু মমুদ্য। মামুষেরই কেবল
কর্ম্মকলের প্রয়োজন। কেন প্রয়োজন পু কেননা, সমস্ত জীবনের

কৃতকর্মের ফলামুসাবেই গতি হবে। মনুষ্যোতর প্রাণীকে ভগবান
বিবেক দেননি, স্কৃতবাং তাদের কৃতকর্মের বিচাবও হয় না। কাজে

কাজেই তারা কর্ম্মকলের জন্ম দায়ী নয়। এক বিচারের জন্মই

কর্মফলের প্রয়োজন, বেখানে বিচাব নাই সেখানে কর্ম্মকলের থোজও

নাই।

শিশু। মান্থবের এক বিবেক আছে ব'লে মান্ন চোরদাগে ধরা প'ড়েছে। আর মন্থয়েতব প্রাণীব বিবেক নাই, স্থতরাং তারা কোন কৈফিরতের তলে নাই বেশ আছে। এতে ভগবানেব পক্ষপাতিত্ব দেখা মাচ্ছে, কোন প্রাণীকে কিছুই ব'লছেন না, আবার কোন প্রাণীকে নিরে টানাটানি কব্ছেন।

গুরু। আছা, তোমাকে সোঞা কথায় বোঝাই। মনে বর একজন জমীদার তার একজন আমলাকে পাঁচ হাজাব টাকা দিরে কোন
একটা কাজের জন্ত পাঠালেন এবং সঙ্গে দশ বাব জন পাঁক ববকলাজও
পাঠালেন। তার পব আমলাটা কাজ সম্পন্ন ক'রে পাঁক ববকলাজ
নিয়ে জমীদারেব বাডাতে ফিরে এসে ঐ পাঁচ হাজাব টাকাব জনা ধরচ
জমীদারের নিকট দাখিল কব্ল। কেননা, টাকা তার জিমাতেই
জমীদার দিয়েছিলেন। এখন ঐ আমলাটার প্রদত্ত জমা ধরতে হ'শ

টাকার খরচেব গবমিল হ'ল। তথন জমীদারটী ঐ আমলাটীকেই ধমকা'তে লাগলেন এবং শেষে তাকেই ঐ টাকাব জন্ত দায়ী কর্লেন। পরস্ক, সঙ্গে যে পা'ক বরকলাজ পাঠিয়েছিলেন, তাদেবকে কিছুই জিজ্ঞাসাও কব্লেন না অথবা কিছু বল্লেন না। আমলাটীর পা'ক ববকলাল অপেকা উচ্চপদ, স্থতবাং জমীদাব টাকাটা আমলাটীব জিম্মাতে দিয়েছিলেন এবং তাকেই দায়া কব্লেন। ভগবানও তেমনি মামুষকে বিবেক দিয়ে পাঠিয়েছেন ব'লে মামুষকেই কেবল কর্ম্মণলেব জন্ত দায়ী কবেন। মপুষ্যতব প্রাণীকে ভগবান বিবেক দিয়ে পাঠাননি, কাজেই তাদেব ক্রতকর্মেব জন্ত কিছু বলেন না, স্থতবাং তাদেব কর্ম্মবলও প্রয়োজন হয় না। ভগবান মামুষকে যেমন বিবেক দিয়ে দায়ী ক'বেছেন, তেমনি মনুষ্য-জীবনে মহৎ ফললাভের ব্যবস্থাও ক'বেছেন। কেননা, বিবেকামুসাবে সৎকর্ম কব্লে ক্রমে তাব দ্বাবা তত্ত্তান লাভ ক'বে লোকে মুক্তি পেতে পাবে।

শিষ্য। মৃচ ধোনীৰ প্ৰাণীৰ ধদি কৰ্ম্মকণই নাই, তবে তাদেব মধ্যে অবস্থাৰ তাৰতম্য দেখা যায় কেন ম

ওক। অবস্থাব কি বক্ষ তাবতম্য দেখুলে?

শিয়। গক, বোডা, কুকুব ইত্যাদি প্রাণী য় লোকালরে লাছে। তাদের মধ্যে দেখতে পাই যে, কোন প্রাণী অথসভেনে আছে, কোন প্রাণী অতি কটে আছে, কোন প্রাণী বা রাজার হাবে কাল কাটাছে, যেনন সাহেবদের পিয়াবা কুকুব। থিজ্মদ্ কববাব জন্ম মেথর চাকর আছে, গ্রধ রুটী মাংস ইত্যাদিব স্থবনোবস্ত আছে, শোতাব বিছানা আছে, শাতকালে গান্তে গ্রম কাপড দিয়ে দের ইত্যাদি। আমি আবাব মৃস্থরির পাহাডেব চড়াই উঠ্তে দেখোছ যে, একটী সাহেব ঘোডায় যাছেন, আব তাব প্রিয় কুকুবটীকে জ্জন পাহাড়ী ভুলি ক'বে

সঙ্গে সঙ্গে নিয়ে যাছে। এখন বলুন দেখি, মনুয়োতর প্রাণীব কম্মফল না থাক্লোক তাদেব সংখ্য অবস্থার এত বৈষম্য হয় ?

গুরু। মৃঢ় ষোনার প্রাণীত কট পাবেই, কটভোগের জন্তই ত মৃচ যোনাতে জন্ম নিয়েছে। নবকে কি আর মুখ আছে? তবে মৃচ যোনীর কোন কোন প্রাণী যে প্রথমছন্দে থাকে কি রাজভোগে থাকে, ভাব কারণ এই যে, লোক কৃত পাপকর্মের ফলভোগের জন্ত মান্ত্র্য থেকে একবাবে মৃচ যোনীতে আসে। স্বতবাং মনুষ্যজন্মে বা কিছু পুণ্যকত্ম করে, সেই সুক্তাব ফল মৃচ যোনাতে এসেও ভোগ করে।

শিয়া। এই ব'নলেন বে, মৃঢ় বোর্নাব প্রাণীকে কল্মফল ভোগ কব্তে হয় না। আবাব ব'নছেন যে, স্ক্রতিব ফলভোগ কবে। এ রহস্ত আমি কিছু বুক্তে পাব্ছি না।

গুরু । মৃচ বোনাতে জন্ম নেরে যে কর্ম কবে, তারই কলভোগ কবৃতে হয় না, কিন্ত কন্মদোষে যাবা মানুষ খেকে একবারেতে মৃচ বোনীতে আদে, তাদেব নমুন্ত-জনাঞ্চত পাপ এবং পুণা উভয়াবধ কন্মদলই ভোগেব জন্ত সংস্ক থাকে। পাপেব ফলভোগেব জন্ত মৃচ যোনাতে এসেছে এবং নবক-ভোগ কবৃছে। আন ঐ পুণা কন্ম বোর জন্ত স্থপ্সপ্তলে আছে। জগতে এমন লোক পাবে না যে, ভাবনে পাপ এবং পুণা উভয়বিধ কর্ম না করেছে। তবে মাত্রাব ন্যুনাধিক্য থাক্তে পারে। আছা, ঐ সাহেবের কুকুবটার কথাহ ধব। কোন ব্যক্তি তাব কৃতপাপেব ফলভোগের জন্ত কুরুর বোনীতে এন্ম নিয়ে সাহেবের কাছে আছে। এখন দেব, দে তার কৃতপাপের ফলের জন্ত কুকুর হয়েছে, কিন্তু তার পুণাক্রেরি ফল যা আছে সেটাও ত ভোগ হও্যা চাই, তাই দে কুকুর হয়েও স্থতাগ করছে।

শিষ্য। আমার মলে একটা ভরানক সংশয় হচ্ছে।

গুরু। সংশয়টা কি ?

শিষ্য। এই বে পুরাণাদিতে বর্ণিত ধনালয়, ধনরাজার এজনাস, চিত্রগুপ্তেব থাতায় পাপ পুণ্য দব লেখা থাকে, ধনরাজা তর্নসারে বিচার ক'বে পাপীকে নরকে এবং পুণাবানকে শ্বর্গে পাঠান। যদি ক্ষয় ধোনাতে জন্ম নিম্নে ক্ষ্মন্ত্র ভোগ ক্রুভে হয়, তবে এগুলি দব বি ?

গুরু। যমালয় সহয়ে এগুলি সব কলিত বর্ণনা।

শিষ্য। পুৰাণ ত সৰ ঋষিষাই লিখেছেন, তবে এ ১কম কল্পনা ক'রে লেখ্জেন কেন ?

গুরু। বিষয়টা একটু তলিয়ে বুঝ্তে হবে। উপর উপর দেখলে কিছু বুঝ্তে পাব্বে না। পরাণ ঋষ প্রণীত বটে, কিন্তু সমস্ত পরাণই ধে ঋষি প্রণীত দে কথা ব'লতে পাবা বাম না। পণ্ডিতেরাও মনেক পুরাণ লিখে ঋষিদেব নাম দিয়েছেন। ফলতঃ পুরাণ যাঁদের প্রণীতই হ'ক তাতে কোন দোষ নাই। কেননা, পুরাণ যাঁরা লিখেছেন তাবা যে জানী পুরুষ তাতে কোন সন্দেহ নাই। বিশেষ প্রয়োজন ব'নেই প্র কল্পনা ক'বে লিখেছেন।

শিষ্য ৷ তবে কি পুরাণেব লিখিত বিষয়গুলি সব করিত ?

গুক। তাও কি কখন হয় । পুবাণও বে আমাদের শাস্তগ্রছ। তবে প্রায়োজনবশতঃ রূপক অলম্বারাদি পুবাণে বেশি আছে।

শিশ্ব। কপক অলকারের দারায় জীবের যে কি কল্যাণ হ'তে পাবে, তাত আমার বুদ্ধিতে আসছে না। আপনি দয়া ক'বে আমাকে ব্ঝিয়ে দিন।

গুরু। ধমালর ব'লে কোন স্বতন্ত স্থান নাই, পাপ পুণোর হিদাব কোন থাতায় লেথা থাকে না চিত্রগুপ্ত ব'লে কোন সেরেস্তাদার নাই, এবং যমরাজা বিচার ক'রে কাকেও স্বর্গে বা নরকে পাঠান না; অথবা পাপীদেব শান্তি দিব'ব জন্ম যমালয় বিশেষ স্থানে চৌবানী নবকও স্থাপিত নাই। আনি যে এই মতটা নিজে গ'ডে বলছি তা নয়। জনক যাজ্ঞবন্ধ্য সংবাদে এ বিষয়েব বিবৰণ আছে। মনু ব'লেছেন যে, যে যেমন কর্মা কর্বে সে ভদতকপ যৌনীতে জন্মগ্রহণ ক'বে তাব ফলভোগ কর্বে। ভগবানও গাঁহাতে মূচ খোনীকেই নবক ব'লে উল্লেখ ক'বেছেন। তা ছাঙা যুক্তিব ধাব। বিচাব ক'বে দেখালেও এই দেখা যায় যে, জীবেব মৃত্যুব পদ তাব ফমালয় নামক স্থানে পাপপুণোব বিচাব হ'য়ে নবকে অথবা স্থানি যেতে হয় না।

শিশ্ব। তবে প্রাণে এত কল্পনা ক'বে লেখাব তাৎপর্য্য কি ?

গুক। তাৎপথা এই যে, সংসাবে কটা লোক বেদ, বেদাস্থ, উপনিষ্দাদি শাক্ষণত প'ঙে থাকে, অথবা পভবাৰ অধিকাবী হয় ? মেনে নিলাম যে, সংসাবে মৃষ্টিনের শাক্সজ্ঞ ব্যক্তি না ২য় আপনাদেব কল্যাণেব বাস্তা আপনাবার ঠিক ক'বে নিভে পাবেন; কিন্তু আব যে লক্ষ্ণ লাশ্যাবিক সাধাবণ হজান লোক আছে তাদেব উপায় কি ? তাদেবই কল্যাণেব জন্ম প্রাণকাবেশা কত বকম রূপক অলক্ষাব দিয়ে প্রাণকে সাজিয়েছেন।

শিবা। পুৰাপেৰ দ্বাৰা দাংদাবিক সাধাৰণ জ্ঞান লোকেৰ কি কলাণ সংবিভ ১য় ?

গুক। যাতে ধশ্মকশ্ম কৰ'ত ইচ্ছা ১২ এবং পাপকশ্ম কৰতে ভন্ন হন্ন প্ৰবাণ শ্বেনা তাৰ উপান্ন প্ৰবাণে বিশেষভাবে ক'বেছেন। প্ৰবাণে বোচক্ এবং ভন্নানক এই ছুহটা ভাৰ উত্তমন্দপে হুটান আছে। যাব দ্বাবা সাংগাৰিক সাবাৰণ অজ্ঞান লোক ধশ্মকশ্মে আৰুষ্ঠ ১ন্ন এবং পাপকশ্মে ভীত হন্ন।

্ন শিষা। আপনি পুৰাণকৈ শাস্বগ্ৰন্থ বল্ছেন, পুৱাণ শাস্ত্ৰগ্ৰহ ইয় কি ক'ৰে ? আমাৰ মনে হচেঃ লোকেব কল্যাণকৰ কল্নাময় গ্ৰন্থ। শ্বন্ধন শান্ত গ্রন্থ কল্পনাময় গ্রন্থ, বেমন উপত্যাসাদি তা কি আর কথন শান্ত গ্রন্থ কালে পিবে ? ঈশ্বনের স্থানপ হচ্ছে নিরাকার অর্থাৎ তিনি নির্গুণ ব্রহ্ম, কিন্তু তিনি প্রয়োজন বোধ কর্লে আবাব আকারও ধারণ ক'রে থাকেন। স্কুতবাং নির্গুণ ও সপ্তণ ব্রহ্মের এই ছই ভাবেবই উপাসনা অধিকারী ভেদে ক'বে থাকে। বেদ, বেদাস্ত, উপনিষদাদিতে নির্গুণ ব্রহ্মের তার নির্বাধন আছে, এবং সেই তত্ত্ব জান্বাব অধিকাবীও অতি অল্পতা তোমাকে প্রেই ব'লেছি, কিন্তু নির্গুণ ব্রহ্মের প্রতি সাধারণ অজ্ঞান লোকেব ভক্তি প্রেম হওয়া অসম্ভব। কেন না, দেংগভিমানী জীব স্থল পদার্থের নিদর্শনেব অভাব হেতু, দেই নির্গুণ ব্রহ্মকে ধারণা ক'বতে পাবে না। সেইজন্ত ভগবান গীতাব ১২শু অধ্যায়েব ৫ম শ্লোকে ব'লেছেন যে,

ক্লেশেহিধিকতর স্তেষা সব্যক্তাসক্ত চেতসম্।

অবক্তা হি গতিতু গৈং দেহবদ্বিবাপ্যতে ॥

হে অর্জ্বন। নিগুল ব্রেন্স আসক্ত চিত্ত জনগণের সিদ্ধিলাভে অর্থাৎ
ঈশ্বরণে জান্তে অধিকতর ক্লেশ হ'য়ে থাকে। কাবল দেহীগণ অতি
কটে নিগুল অর্থাৎ নিবাকার ব্রহ্মাবয়র নিষ্ঠা লাভ ক'বতে সমর্থ হয়।
কেন না, কোন স্থুল নিদর্শন ভিন্ন দেহাভিমানা জীবেব (লোকেব) মন
আর্থাই হ'তে পাবে না। তা হ'লে সাধাবল অর্জান লোকেদের উপায়
কি ৷ তাতেই পুরাণকাবেবা পুরাণের মধ্যে সপ্তল অর্থাৎ সাকার ব্রহ্মের
ক্য ঐর্থাাদি, উপাসনা স্তবাদি অতি বিষদভাবে এবং মনোহর অলঙ্কাবের
সহিত বর্ণনা ক'বেছেন। বা প'ডে বা শু'নে পাষণ্ডেবও মন আরুই হয়।
বেদ, বেদান্ত, উপনিষদাদিতে নিশুল ব্রহ্ম বীজস্বরূপ, এবং পুরাণাদিতে
সপ্তল ব্রহ্ম ডাল, পাতা, ফল, ফুল শোভিত মনোহর বৃক্ষস্বরূপ। কাজেই
লোকের মন আরুই হয়।

শিষ্য। তা ই'লে পুরাণও জীবের কল্যাণকর গ্রন্থ দেখুছি।

গুরু। তা নয় ? কেবণ জাবের কলাণের জন্তই পুরাণের সৃষ্টি হয়েছে। ঈশ্ববোপাসনা সকলেবই কবা কর্ত্তবা, কিন্তু সাধাবণ অজ্ঞান নির্গুণ ত্রন্মের উপাদনা করতে পাবে ন।, তাহ'লে কি তাদের ঈশ্বর উপাসনা হবে না ? তবে কি তাদের কোন উপায় নাই ? আছে বৈকি. তাদেরই জক্ত পুবাণেৰ সৃষ্টি হয়েছে। পুবাণ পাঠ বা প্রবণেব দ্বাবা ঈশবে ভক্তি প্রেম বাডে, মনে দিন দিন পান্তি ও আনন্দলাভও হ'তে থাকে এবং শেষে ভত্তজ্ঞানের অধিকাবীও হয়। প্রস্তু, সংসাধের সকলেই ত সে শ্রেণীব লোক নয়, এব ভিতৰ নিয়শ্রেণীর লোকও আছে। পুরাণে যে বোচক এবং ভগনক এই ভাব হুটা বিশেষ ভাবে দেখান আছে, তাতে নিয়শ্ৰেণীৰ লোকেদেৱ বিশেষ কলাণ সাধিত হ'য়ে থাকে। কেন না. ঈখবের মনোহর রূপ ও অসীম বিভূতি ঐখর্য্যাদি গুনে তার প্রতি তারা আক্লষ্ট হয় এবং যজ্ঞ, দান, তপ, আত্থি সেবা, দবিদ্ৰেব প্ৰতি দয়া প্ৰকাশ ও একাদখাদি ত্রত পালন প্রভূতি কার্যোব দ্বারা বন্মকর্ম্ম কবতে প্রবৃত্ত হয়, স্থাতরাং সেই সব কর্মের হাবা ক্রমে চিত্তভদ্ধি লাভ হয়। এই গেল রোচক ভাবেব কল এখন ভয়ানক ভাবেব ফল শোন। কোন পাপ কর্লে ধ্যণবীতে কোন নবকে কি বক্ষ ধ্য়ণা ভোগ কব্তে হর, সেই সব কথা গু'নে অজ্ঞান লোক পাপকর্মে অনেকট। নিবুত থাকে। পাকা গুণিপোরেরা যেমন গুলিব নেশায় মাতোয়াবা কণ্বাব জন্ম, লোককে চাট্ খাইদ্রে গুলি খাওয়া শেখায়, ঋষিৱাও তেম্নি সাধাৰণ লোককে ভগবদ্-প্রেমে মাডোরারা কববার জন্ত পুরাণে চাট্ররূপ রোচক বাক্য দিয়েছেন।

শিশ্য। জাপনি যা ব'লছেন কথাটা দগত বটে, তবে কি জানেন আমরা ছেলেবেলা থেকে যমপুরীর কথা ত'নে আস্ছি, সেইজন্ত মনে একটা সংস্থার ব'সে গিয়েছে তা সহজে বেতে চাম্ব না। গুরু। বদ্ধনৃত্ব সংশ্বার মন থেকে সহজে থেতে চার না বটে, কিন্তু তাই ব'লে লোককে আজীবন যে ভ্রমেই প'ডে থাক্তে হবে সেটাও ড ঠিক নয়। তবে অধিকাবা বিশেষে আজীবন এ ভ্রম থাকা সম্ভব তা আমি মানি। দেখ আসল তত্ব ভ্রমেই ঢাকা আছে, স্থতরাং সেই ভ্রম দ্য কর্তে না পাব্লে তা হৃদয়ক্ষম হয় না। সেই জ্ঞাই সাধু মহাআদের সঙ্গে সংসক্ষ করা প্রয়োজন। শাস্ত্র অধ্যয়ন কি ভ্রম সাধন অপেক্ষা সংস্পেব ফল বেশা।

শিশ্ব। যদি যমপুরী ব'লে বিচারেব কোন স্বতন্ত স্থান এবং চিত্রগুপ্তের থাতায় কোন নিদর্শন নাই থাকে, তা হ'লে লোকেন পাপপুণ্যের বিচার ২য় কি ক'বে ৮

গুরু। তোমাকে সেদিন ব'লেছি যে, লেণকের মৃত্যুর পব তার সংস্কাবই জীবাআকে কর্মোচিত যোনাতে নিরে যায়। চিত্রগুপ্তেব খাতার কিছু লেখা পড়া থাকে না। স্ক্রাবস্থাব কর্মানলকে সংস্কাব বলে, চিত্রগুপ্ত মানে সেই সংস্কাব। কাবন, সংস্কাবরূপী কর্ম্মনগুলি স্ক্রাব্রার গোপনে চিত্রিত হ'য়ে লোকের পবজন্ম ভোগেব জন্ম প্রপ্ত থাকে এবং তদমুসাবেই জাবেব গতি হ'য়ে থাকে িত্রগুপ্ত, সংস্কাব কি অদৃষ্ট সব একই জিনিস।

শিশ্য। এটা ত বড চমৎকাব বাবস্থা দেখুছি।

শুরু। এ বকম বাবস্থা না হ'লে কি আর বিশ্ববাদ্ধ্যের কাল্ল চলে ?

ক্রীয়ার বেমন এই বিশ্ববাদ্ধ্য স্থাষ্ট ক'বেছেন, তেমনি রাজ্য পবিচালনার
অমুক্ল বাবস্থাও ক রেছেন। বাবস্থাটা এই ষে এই বিশ্বের ধাবতীয় কাল্ল
সম্পন্ন করার ভার এক প্রস্কৃতির উপরেই ক্রস্ত আছে। তার মানে জাগভিক্ত যাবতীয় কাল্ল আভ্যন্তরীন প্রাক্তিক শক্তিতে আপনা-আপনিই
সম্পন্ন হচ্ছে। লোকে বলে শ্বভাব থেকে হচ্ছে। যথন প্রকৃতির দারায় সম্পন্ত

কাজ দশের হচ্ছে, তথন আব তাব জন্ত শ্বতম্ব আইন আদালত, হাকিম

মুক্ম কিছুবই প্রয়োজন হয় না। যদি দে সব বন্দোবন্ত থাক্ত অর্থাৎ
কার্যানির্বাহেব জন্ত প্রকৃতিকে অন্তেব মুখাপেক্ষী হ'তে হ'ত, তা হ'পে
এই বিধবাজা পবিচালনাব বিশৃন্ধলাও ঘট্ত। কারণ, হাকিম ছকুম
দাপেক্ষ বিষয় কংনই চিবদিন ঠিক এক সমরে, এক নিয়মে স্থাসম্পর হ'তে
পাবে না। তাছাভা, প্রাঞ্চতিক কাজে জন্ত কাবও হাত দিবাব প্রয়োজন
নাই, এবং ক্ষমতাও নাই। প্রাকৃতিক নিয়মানুসাবে পাপীব দণ্ড এই
মন্ত্রালোকেই হ'য়ে থাকে। এইখানেই বছবিধ নরক বর্তুমান আছে।
পাপবিশেষে দেই সব নরকবিশেষে তুঃখ ভোগ হ'য়ে থাকে। আর পুণ্যের
ফলে বে স্থা তাও এই মর্ত্যলোকেই ভোগ হয়, এবং প্রাক্রার্যার

শিক্স। ষমপুৰা না গিয়ে এই মন্তালোকেই যে পাপপুণাৰ ফলভোগ হন ব'ল্ছেন তা আমি মানলাম, কিন্তু কি একম ভাবে যে ভোগ হয় সেহটা আমি ভান্তে ইচ্ছা কবি। তা, প্ৰিস্কাৰকপে না ব্ৰতে পাব্লে আমাব বন্ধন্ল ধাৰণাটা যাবে না।

ওক। পাপীকে বদি ঘমালয় নামক স্থানে নবক যন্ত্রণা ভোগ ক'বে খাপ্তেচ'ত, তাহ'লে আব এ নংসা'নে লোককে নবক যন্ত্রণা ভোগ ক'বতে দেখা বেহেতা না। যে পাপী সেত ঘমালয়ে নবক ভূ'গে এসেছে, তবে জাগাৰ এখানে নবক ভোগ কেন ? ভাহ'লে কি চগবান পাপীকে ডবল সাজা দেন ভা প্রমাদযুক্ত অজ্ঞান মন্ত্র্যা রাজাও যথন দেখাকে ভবল সাজা দেন না, তথন জ্ঞান্ত জ্ঞানমন্ত্র প্রথম দিয়াল প্রমেশ্বর কি পানীকে ডবল সাজা দেবেন ? একপা স্বপ্নেও কেও কল্পনা ক'বতে পাবে না। ঐ যে গালত কুইত্বত্ত লোকটাব সর্বাঙ্গ ছালে খ'সে প'ডছে ঐ সব পা'য়ে

আবাব পোকা থক থক করছে, এবং ঐ গোকার কামড়ের যন্ত্রণায় লোকটী দিবাবাত্তি চীৎকার করছে। তার গান্তেব হুর্গন্ধে কেও কাছ দিয়ে ঘেঁদে না। ভিক্ষাব জন্ম কোণাও ধাবার ক্ষমতা নাই. কেও কোন থাবার জিনিস দিলেও, তা হাতে তুলে নিমে থেতে পারে না। লোকটা অসহ নবক যন্ত্রণা ভোগ কর্ছে। সে যদি তার পাপের জন্ম যমালয়ে নরক ভোগ ক'বেই আস্বে তবে এথানে আবার নবক ভোগ কেন ৪ তা নয়, নরক ভোগ করেনি, নরক ষম্বণা ভোগ এইথানেই হ'মে খাকে। তবে পাপভেদে নবকের ইতব বিশেষ আছে। মৃঢ় যোনাতে, কেও পখাদিরূপে, কেও কেও ক্রিমি কাটাদিরপে সেই সেই রকম স্থানে বাস ক'রে নরক যন্ত্রণা ভোগ কবছে, কেওবা মনুষ্য শরীবেই নরক ষ্মণা ভোগ কবৃ'ছ। যেমন ঐ লোকটী কবছে দেখছ। দেখ একটা অন্ধ সন্তান জন্মছে। ঐ স্থ্যপুত বালক এ অন্মে ত কোন পাপ করেনি, আব পূর্বজন্মে যদি পাপ ক'বে থাকে, তা ঃ'লে দে পাপেব শান্তি ত নবকে পেয়েই এমেছে . তবে আবাব সে জনান্ধ হ'য়ে এখানে নবক ষ্ট্রণা ভোগ কববে কেন গ

শিয়া। আজা হাঁ, নবক ভোগ কি স্বৰ্গ ভোগ (স্থ ভোগ) এইথানেই হয় র'লে মনে হচছে।

গুক। ই।, পাপী যেমন এইখানে হঃখ ভোগ কবে, পুণাবান ব্যক্তিও তেম্নি এইখানেই স্থ ভোগ কবেন। যাঁরা সেই বকম পুণাকন্ম হারা দেবভোগ্য স্থেব মনিকাবী ১ন তাবা আবাব স্থালেকে গিয়ে সে স্থভোগ করেন। মর্ত্তালেকেব স্থভোগ আমবা দেখ্তে পাই, কিন্তু স্থালোকেব স্থভাগ আমরা দেখুতে পাই না। কারণ, স্থা দেবতাদেব বাসস্থান আমাদের দৃষ্টির অতীত। শিয়া। ধাবা হথভোগ কর্তে শ্বর্গে ধান, তাঁবা দেখানে গিয়ে কি অবস্থায় থাকেন্?

গুরু। মর্ত্তালোক কর্মক্ষেত্র, স্বর্গনোক ভোগক্ষেত্র। সেধানে কোন কর্মা নাই কেবল ভোগ আছে। যিনি বেমন কাম্য কর্মোব অম্চান কবেন, তিনি সেই বক্ষ স্বর্গে গিয়ে কর্মানুরপ স্থুওভাগ করেন। চাষাবা বেমন পবিশ্রম ক'বে মাঠে আবাদ ক'রে ফুলল পাক্লে ঘরে নিয়ে এসে ব'সে থার, কিন্তু ফুলল ফুল্লেই আবাব মাঠে গিয়ে চাব আবাদ করে। তেমনি স্বর্গাকাজ্জী কামা কন্মীগণকেও স্বর্গেব স্থু ফুবিরে গেলেই আবাব মর্ত্ত্যে এসে জন্ম নিতে হয়।

শিষ্যা। স্থাধেব পর ধখন জঃখ পেতে হর, তথন অস্থায়ী স্বর্গাড়খ ভোগে লাভ কি গ

গুরু। সেইএসই ত বুকিনান লোকেবা স্বর্গেব অস্থায়া স্থা আদৌ ইচ্ছা কবেন না। কাজেত তাবা নিধান ভাবে সকল কলা ক'বে ধাকেন। নিধান কর্মেব ফল সক্ষয় স্থা, সে স্থা থেকে কথনই বিচ্যুত হ'তে হয় না। সংসাবা লোক আধিকাংশই কিন্তু সেই অস্থায়া অসাব কাম্য কর্ম ক'বতেই লালায়িত। দেখ্তে পাওনা স্থাগ মজ্ঞাদি কি যে কোন ক্রিয়াব প্রারম্ভে সংকল্পতীব মন্ত্র ভাল ক'রে বলা চাই, প্রার্গনাপূর্ণ স্তবন্ততিগুলি হ্লম্যেব সহিত প্রাণ ভ'রে বলা চাই। ভাব মানে উপাস্য দেবতাকে আপনাব মতলবটা পাবস্থাবরূপে বলা চাই। কি জানি, ফলেব কোন গড্বড হয়। হায়।। লোকে কি ভ্রমজালে জড়িত।

শিষা। ঠিক কণা, বৃদ্ধিমান লোকেবা কেন স্বৰ্গস্থ কামনা কর্বনে প কথায় বলে চেঁকী স্বৰ্গ থেকে এনে ধান ভানে। তেমনি যিনি স্বৰ্গে ধাৰেন তাঁকে আবার মন্তালোকে ফিবে এদে জন্ম নিতে হবে। স্বর্গ স্থপের অবস্থ'টা আমি ব্রাশাস। এখন আমাকে একটা বিষয় ব্রিয়ে দিন যে, ভূলোক থেকে ব্রন্ধলোক পর্যান্ত সাতটা লোক আছে সেদিন আপনি আমাকে ব'লেছেন। এই সাত লোকের কার্যাই কি এক প্রকৃতিব দ্বাণায় সম্পন্ন হচ্ছে ৮

গুরু। হাঁ, সাত লোকের কাজ এক প্রাকৃতিব দ্বাবাই সম্পন্ন হচ্ছে। সমস্ত লোকই যে বিশ্বেষ মধ্যে। সমগ্র বিশ্ব থবন প্রকৃতিব আয়ত্বাধীন, তথন সমস্ত লোকের যাবতীয় কাজই তাব দ্বাবা সম্পন্ন হচ্ছে।

শিমা। প্রকৃতির ত আশ্চর্যা ক্ষমত, দেখ্ছি, এবং কার্যপ্রশাশা অতীব আশ্চর্যাপ্রনক। সশস্ত ব্যাপাবই অলোকিক। জীবেব কৃত কর্মেব বিচাবেব জ্বত আইন, আদালত, হাকিম জ্বকুম, সাক্ষা সাবুদ, নথাপত্র কিছুবট প্রয়োজন হয় না। প্রত্যেক জীবেব নেহের মধ্যেই তার কৃত পাপপুণোব নথাপত্র প্রমাণাদি সব মজ্ত আছে। প্রাকৃতিক নির্মে তদ্বসাবে বিচাব হয়।

গুক। গুৰু কি পাপ পুণা সম্বন্ধে এইৰূপ বাৰস্থা দেখ্লে । জ-।তেব যাবতীয় ক।জেরই ব্যবস্থা এইকপ।

শিষ্য। প্রাকৃতিক কাজেও বাবস্থ, গু'নে আনার মনে বড় আননদা মুভব কব্ছি। অঞ্গ্রণ ক'বে আনায় আবও কিছু বলুন।

গুক: আজ থাক্ সে মানক কৰা মাবাৰ ক। ল হৰে।

यर्छ मिन।

শিশ্ব। আজ আমায় প্রাকৃতিক কার্যাপ্রণালী কিছু বলুন।

গুরু ৷ দেখ, বোধাই কল্কাভার মিউনিসিপ্যালিটীর কার্য্যনির্বা-হের জন্ম ক্রোর টাকার উপর ধরচ। কত কলকারখানা কত ইঞ্জিনিয়ার. কত মাণমদলা, কত কারীকর, কত মেথব এবং কত লোকজন, তবুও সকল সময়ে সকল কাজ স্থচাক্ত্রপে সম্পন্ন হয় না। এই বিশ্বরাজ্যেব মিউনিসিপ্যালিটার কাজ এক প্রকৃতিব দ্বাবায় স্থসম্পন হচ্ছে। কল্কারখানা কি কার্য্যকাবকাদি স্বভন্তরপে বন্দোবন্ত কিছুই নাই। সহবের মিউনিসিপ্যালিটীর ময়লা মেথরে ব'য়ে নিয়ে গিয়ে মাটিতে গাডে. পুডিম্নে দেয় অথবা ছেণের দ্বাবা নদীতে চেলে ফেলে দেয়। প্রকৃতিব মিউনিদিপ্যালিটার শৃকর কুকুবাদি মেথরগণ ময়ল। দব থেয়ে ফেলে। লোকে ময়লা ব'লে টের পাওয়াব বো নাই। যদি শৃক্ব কুকুবাদি মেথবগণ উপস্থিত না থাকে, তাহ'লে পুথিবা ক্রমে দেই মরলাগুলিকে আপনাব সামিল ক'বে নেয়। গরু মবুলে লোকে মাতে ফেলে দেয়, মুচী খালথানা ছাড়িয়ে নিম্নে যার, আর অম্নি শকুনী, গৃধিনী, শেষাল, কুকুরাদি এসে নাংসগুলা সব কপাকপ্ খেলে ফেলে। ঝাড্দান প্রন এসে যা কিছু বদুগদ্ধ সৰ উডিরে নিয়ে জনস্ত আকাশে মিশিয়ে দেয়। তার পর ভিত্তবালা বৃষ্টি এদে হাডে যা কিছু নাংসেব টুকুরা টাকুরা লেগে থাকে স্ব ব্রে মাটিতে ফেলে দের। পুথিবা তথন সেগুলিকে আপনাব সামিল ক'রে নের। এখন দেখ, এই যে কাজগুলি সব সম্পর হ'ছে, তার জন্ত কেও কাওকে ডাক্ছে না, অথবা কেও কাওকে ছুকুমও দিছে না। সকলেই এসে আপন আপন কর্ত্তব্য কর্ম্ম ক'বে চ'লে মাচছে। প্রাকৃতিক যাবতীয় কাজই এই নিয়মে সম্পন্ন হ'য়ে থাকে।

শিশ্ব। ভগৰান এক প্রকৃতির দারার যে ভাবে বিখের কাজ সব সম্পন্ন কবাচ্ছেন, তা আমাদেব বুঝ্বাব সাধ্য নাই।

গুক। ভগৰানের ঐশ্বর্য্য, ক্ষমতা, বিভূতি কি দয়াদি মনে চিন্তা ক'রে দেখ্লে গুন্তিত হ'তে হয়। তিনি স্বয়ং বা তার প্রকৃতি অথবা তাঁদেব কার্য্য অচিন্তনীয়, প্রতরাং বোঝ্বার উপায় নাই। মানুষ ত নানুষ দেবতারাই বুঝ্তে পাবেন না।

শিশ্ব। আপনি পাহাডে বাস ক'বেছেন, সেই সব জায়গাব প্রাকৃতিক কার্য্যপ্রণালী গুন্তে আমার বড কোতৃহল হচ্ছে।

শুক। আছো, আমি বা কিছু দেখেছি। এবং ব্ৰাছি তা তোমাকে বল্ছি শোন। মানুষে কলকাবথানা ইন্টিনিয়ারিং যা কিছু শিখেছে এবং ক'র্ছে, তা সব সেই প্রকৃতির অন্তক্বণেই শিখেছে এবং প্রাকৃতিক শক্তিব সাহায্যেই কব্ছে। প্রকৃতি মূহুর্ত্ত নথ্যে বে জিনিস বছ পরিমাণে উৎপন্ন করেন, মানুষেব সেই জিনিস আংশিক পরিমাণে উৎপন্ন কর্বের সেই জিনিস আংশিক পরিমাণে উৎপন্ন কর্তেও বছ সমন্ন, বছ বার ও বহু পরিশ্রম লাগে এবং সেই জিনিসেব গুণেরও কারতমা হয়। গগোত্রীর প্রাকৃতিক দুখ অতি মনোহর। চাবিদিকে পাহাডের উপরিভাগ সব ববকে সাদা ধপ্ ধপ্ কব্ছে এবং তাব উপর স্থার্রাশ্ম প'ডে কত রকম আশ্চর্যা রং দেখাছে। পাহাড় যেন সব চক্মক্ কব্ছে। একদিন একটা আশ্চর্যা ঘটনা যা আমি স্বচক্ষে দেখেছি তা বলি শোন। একদিন একটা আশ্চর্যা ঘটনা যা আমি স্বচক্ষে দেখেছি তা বলি শোন। একদিন বিকালে বেলা চাব্টাব সমন্ন, গঙ্গাব ওপাবে একটা পাহাড়ে বরক প'ডতে আরম্ভ হ'ল। ঠিক যেন ঝুডি ক'বে গোবর ফেল্ছে। দশ্ মিনিটেব মধ্যে ছু মাইল আলাজ পাহাড়েব উপরটা বরফে ঢেকে

কিন্ত প্রকৃত পক্ষে উচু আবও বেশি ছিল, কেন না, দূব ব'লে কম দেখাচ্ছিল।

শিয়া। বড আশ্চয়া কথা শুন্ছি। কল্কাতায় ববফেব কারধানায় এক মণ ছু মণ এক একটা বরফেব চেঙ্গড দেখেছি বটে, কিন্তু একপ ঢালাভাবে ববফ দেখিনি কিন্তা শুনিনি।

গুক। কারখানার বে ববফ তৈয়াব হয়, তাতে কলকারখানা চাই, জলে মসলা মেশান চাই, তবে গা বরফ তৈয়াবি হয়। হাজাব মণ ববফ যদি কারখানার তৈয়াবি ক'রতে হয়, তাহ'লে অনেক তোড্বোড়্ও আনেক সময়ের দবকাব, কিন্তু প্রকৃতি দশ সিনিটের মধ্যে লক্ষ লক্ষ মণ বরফ তৈয়াবি ক'বে ফেল্ছেন। কোন কলকারখানা অথবা মসলাদি কিছুই লাগে না।

শিষ্য। প্রাকৃতি কি বকম ভাবে ববক তৈয়াবি .ক'বে ঝুপ্ঝুপ্ ক'বে ফেলেন। জান্বাব জন্ম বড কৌভূহণ হচ্ছে অনুগ্রহ ক'বে বলুন।

ত্তক । জল জমে যে ববফ হয় তা অবশ্য তোনাব জানা আছে। শীত প্রধান স্থানে বাত্তিতে বাইবে কোন পাত্তে জল বাধ্যে জ'মে ববফ হয়ে। বায় তা আনি স্বচক্ষে দেখেছি। প্রাক্তিক ববফ মেল থেকে উৎপন্ন হয়। মেবগুলি বিন্দু জলকণার সমষ্টি মাত্র। হিমান্যেব খুব উচ্চ স্থানতলি এতই শীতপ্রধান স্থান যে, সেখানে মেল বাওয়া মাত্র মেলস্থ জলকণা সব ববফে পবিণত হয়।

শিষ্য। সেখানে মেম্ব বান্ন কেন ?

শুরু। মেবগুলিকে হাওয়াতে ঠেল্তে সেল্ডে সেই সব উচু স্থানে নিয়ে বাব, এবং ববাবরই পাথাড আবও উচু হ'ছে চ'লেছে, কাজেই মেঘঙলি সেই সব পাহাড়ে বাধা পায়, স্থতবাং পাহাড অতিক্রম ক'বে আরু আগে যেতে পারে না ব'লে, এবং হাওয়াতে পাহাড়ের গায়ে ধ'রে রেখেছে, এই কাবনে মেঘগুলি সেইখানেই স্থির হ'রে থাকে এবং কিছুক্ষণেব মধ্যে বরুফে পবিণত হয়, আব অম্নি পাহাড়ের উপর ঐ সব বরফ ঝুপ্ঝুপ্ ক'বে পড়ে ষায়। কেননা, বরফ কঠিন পদার্থ ব'লে শৃয়ে থাকতে পারে না।

শিষ্য। গঙ্গোত্ৰীতে কি খুব বৃষ্টি হয় ?

গুক। দেখানে বৃষ্টি বড় আশ্চর্যা রকমে হ'য়ে থাকে। প্রাক্তিক সব আশ্চর্যা কাজ দেখালৈ পবে হৃদয় ভগবং প্রেমে আপ্লুত হ'য়ে বায়। আবণ মাদে গঙ্গোত্রীতে ছিলাম। বৃষ্টি প্রায় হ'তো দেখাতাম, কিন্তু ফিন্ ক'বে একদিনও জােরে বৃষ্টি দেখালাম না। একটা পাঞাকে তাব কারণ জিজ্ঞানা করাভে সে উত্তব দিল বে, জােরে বৃষ্টি হ'লে আমরা খাব কি বাবা ? গঙ্গোত্রীব দশ মাইল নীচে পাহাভের গামে ঢালু জায়গায় কোদাল দিয়ে মাটি খু'ডে আবাদ হয়। আরও তু মাইল নীচে পাভাদের বাডা। পাহাভের গামে ঢালুতে ফদল হয়, কাজেই বেণী জােবে বৃষ্টি হ'লে সব ধু'য়ে নিয়ে বাবে। ফসলের মধে। গোলা আলু প্রধান, আদা, এবং গম ধানও বিছু কিছু হয়।

শিষ্য, প্রাকৃতিক কার্য্যেও ভশবানের অসীম দয়া এবং কৌশল প্রকাশ পাছে দেখ্ছি।

গুক। ভগবান প্রাকৃতিক একটা দ্বিনিস বা কাব্দের দারা জনেক গুলি উদ্দেশ্য সিদ্ধ কবাচ্ছেন। এমন কি, এ সংসাবে একটা তৃণের দ্বাবায়ও সে উদ্দেশ্য সিদ্ধ হচ্ছে।

শিশ্ব। প্রাকৃতিব একটা দ্বিনিসের দ্বাবা একাধিক উদ্দেশ্য কি ক'বে সিদ্ধ হ'ছে ?

গুরু। বাইরে যাওয়ার দবকার নাই। তোমার শরারেরই কোন একটী অঙ্গ প্রত্যঙ্গ নিম্নে বিচার ক'রে দেখ্লেই তা বুর্তে পার্বে। এই চোধের পাপ্তী। এতে কি কি কাজ হয় তা জান ? প্রথমতঃ চোধের শোভাবর্দ্ধক, পাপ্তাবিহীন চোধ খুব খারাপ দেখায় আমি তা দেখেছি। দিতীয়তঃ চোধে থুলা কূটা কিছু পত তে দেয় না। তৃতীয়তঃ দৃষ্টিশক্তির তেজ বাড়ায়। চোথ বু'জে ভাবপর ঈষৎ খু'লে চোথেব নিকট কোন লেধা ধ'বে পাপ্তীব মধ্যে দিয়ে দেখুলে অক্ষব বেশ বড দেখায়। ঘাসে কি কি হচ্ছে তা জান ? প্রথমতঃ পৃথিবীতল শোভা ক'রে থাকে। দিয়ে যেনে তেজেই বৃষ্টি হ'ক না কেন, মাটি ধু'য়ে নিয়ে ষেতে পাব্বে না। তৃতীয়তঃ ঘাসেব সবুজ বজে সমস্ত প্রাণীব চোথ ঠাগুলা বাথে। চতুর্যতঃ প্রধাদি প্রাণীব খাল। খাস ও ঘাসেব শিকড় মানুযেব অনেক ওরুধে লাগে। এই রক্ষে প্রাকৃতিক যাবতীয় জিনিস একাথিক কাজ কর্ছে।

শিষ্য। স্থামি । গধন এই ভাব্ছি ষে, ভগবানেব প্রাকৃতিক কাজ বোঝ্বার সাধ্য কাবও নাই, তথন তাঁকে প্রানবাব সাধ্যই নাই।

শুক। ভগবান সহজে বোধগনা হওয়াব বিষয় নন্। তবে কুপা ক'রে বাঁকে স্তট্কু ডানিয়ে দেন, তিনি ওত্টুকুই তাঁকে জান্তে পাবেন। সাংসাবিক সাধারণ লোক ভগবানকে তাদের নিজেদেব ছাঁচে চেলে নেয়। ভগবৎ কু গায় তাঁর তত্ব কিছু অক্সভবে এলে, তথন আর তাকে নিজেব ছাঁচে গড়তে ইচ্ছা হয় না, ববং তাঁব ছাঁচেই নিজেকে গড়বে ১য়। তাঁব কুপা ভিয় তাঁকে জানবার আব উপায় নাই।

শিখা। দাগনি ব'লেছিলেন যে, অবৈভজানের আশ্রয় নিয়ে আসল তত্ত্ব আনাকে বোঝাবেন। আজ আমাকে সেইটা বুঝিরে দিন। আমার সংশ্রটা মিটে ধাক

এক। অ'ক্লা, তোমার মনেব সংশয়টা আগে বল। শিল্যা আগনি যে য'লেছেন জীবাত্মা ও প্রমাত্মা ছইই এক, কেবল অবস্থানের পার্থকা হেড়ু নাম ভেদমাত্র। জীবাত্মা কর্মকলে আবদ্ধ হ'রে ভূতগণেব দেহেতে বদ্ধাবস্থায় অবস্থান কব্ছেন আব প্রমাত্মা সমগ্র বিশ্বব্যেপে অথপ্ত সচিদানন্দ পূর্ণব্রন্ধরণে মুক্তাবস্থায় অবস্থান কব্ছেন। আমাব এই সংশয় হ'ছে বে, জীবাত্মা ও প্রমাত্মা যদি একই হন, তাহ'লে পরমাত্মা অথপ্ত পূর্ণব্রন্ধ থাকেন কি ক'বে ? কেননা, প্রমাত্মা থেকে জীবাত্মা বিচ্ছির হ'রে এসেই ত তার অংশক্ষপে ভূতপ্রেব দেহেতে অবস্থান ক'ব্ছেন। স্তরাং বিশ্বব্যাপী ব্রন্ধ অথপ্ত অর্থাৎ পূর্ণ বৈরন্ধন কৈ ?

শুক। জীবাত্মা ও প্রমাত্মা একই এবং প্রমাত্মা অবিচিচ্ন অর্থাৎ
অথগু। ভূতগণের দেহেতে অবস্থান করছেন মনে ক'রে তুমি পৃথক
ভাব্ছ। আমি ব'লছি তুমি নিশ্চয় জেন বে, এই বিশ্বক্রাণ্ডে ষা কিছু
দেখ্তে পাছে, তাও প্রমাত্মা থেকে বিচ্ছিন্ন নম্ন, শুধু ভূতগণন্থিত
আত্মাব্যাব কথা কেন।

শিয়। এ বে আবার নতুন কথা শুন্ছি। তবে ত আবও ভাল। এ সব স্টে পরমাত্মাব দলে এক হ'ল কিলে ?

গুক। বেমন সমৃত্র আর ৎরক। তবক কি সমৃত্র ছাতা । না সমৃ-দের সঙ্গে বিচ্ছির । তবক সমৃত্র হ'তে বিচ্ছির হ'তে পারে না। বেখানে সমৃত্র নাই সেখানে তবক ও নাই। নীচে যেমন বিশাল সমৃত্র প'ড়ে আছে, আর তাব উপর তবক উঠছে। তেমনি প্রমাজারপ অনন্ত সমৃত্র প'ডে আছেন, আর তাবই উপরে স্মৃত্রিরপ তরক উঠছে অর্থাৎ স্মৃত্রি, স্থিতি ও প্রালয় হ'ছে। সমৃত্র যেমন তার তরক থেকে বিচ্ছির হ'তে পারে না। পরমাজাও তেমনি তার স্মৃত্তি থেকে বিচ্ছির হ'তে পারেন না। সমৃত্র তবকে স্থাবিশ্ব প'ড়ে যেমন নানা বকম দেখার, তেম্নি পরমাজার স্থিত তরকেও মারারপ রশ্বি প'ড়ে নানা রকম দেখাছে। যেমন সমুদ্রের জ্বাই তরজে পরিণত হয়, তেম্নি পরমাত্মী অন্নংই এই বিশ্বে পরিণত হ'য়েছেন। মান্নাপ্রযুক্ত এই বিশ্ব ব্যাপার নানা রক্ষ দেখাছে বটে, কিন্তু মান্না নিল্পুক্ত হ'লেই সেই একমাত্র সচিচদানন্দ পরমাত্মাকেই দেখা বান্ধ।

শিশ্ব। ক্ষিতি বে প্রমাত্মা থেকে বিচ্ছিন্ন নয় তা আমি মান্লাম। পরস্ক, জীবাত্মা ও প্রমাত্মা সহদ্ধে আমার এই সংশন্ন হয়েছে যে, পরস্পর ভিন্ন স্থানে ও ভিন্ন অবস্থার থেকেও কি ক'বে এক হ'তে পারেন?

শুরু। সেদিন যে ভোমাকে দৈতজ্ঞানের কথা ব'লেছি, ঐ ভাবটী সাধারণ লোকের বোধগম্য এবং তাদের উপাসনাবও অমুক্ল। কেন না, তারা অধৈত ভাব মনে ধাবণা কব্তেই পারে না। বাত্তবিক, প্রমান্ধা অবিচ্ছিন্ন ভাবেই সমগ্র বিশ্বব্যেপে অবস্থান কব্ছেন। আকাশ যেমন কথন বিচ্ছিন্ন হয় না, পরমান্ধাও তেম্নি কথন বিচ্ছিন্ন হন না, স্ত্তবাং জীবাত্মা আলাদা হবেন কি ক'বে গ কেবল কল্লিত উপাধিযুক্ত হওয়াতেই উাকে আলাদা ব'লে বোধ হয়। যেমন ঘটাকাশ ও মহাকাশ।

শিশ্ব। আপনি যে ঘটাকাশ ও মহাকাশেব উদাহরণ দিচ্ছেন, আমি কিন্তু তার কিছুই বুঝ্লাম না।

গুরু। যতক্ষণ ঘট থাকে ততক্ষণ ঘটমধাত্থ আকাশ ঘটাকাশ ব'লে পবিচিত হয়। ঘটেব নাশ হ'লে ঘটাকাশ ও মহাকাশ নিশে যেমন এক হ'য়ে যায়, এবং এক মহাকাশই নাম থাকে। তেম্নি উপাধিকপ দেহ ঘটেব নাশ হ'লে, জীবাআ ও পবমাআ মিশে এক হ'য়ে যান এবং কেবল পরমাআই নাম থাকে।

শিষ্য। তবে মল্লেই ত দেহকপ ঘটেব নাশ হয়, স্বতরাং মৃত্যু হ'লেই মৃক্তি।

গুরু। বৈতভাবের আশ্রয় নিমে ভোষাকে বোঝাডে হবে, নচেৎ তুমি বুঝাতে পার্বে না। মৃত্যুতে স্থুল শরীর ঘটের নাশ হয় বটে, কিন্তু সুন্ধ ও কারণ শরীররূপ ঘটের নাশ হয় না। এই সুন্ধ ও কারণ শরীর-क्रभ घटित नांभरकरे घटित नांभ बरम। एक भंतीवरक मित्र भंतीवर বলে। কাঠের সিংহাসন মধাত কপার সিংহাসনে সোণাব আসনে শাল-গ্রাষ শিলা যেমন বিবাজমান থাকেন, তেম্নি স্থল শরীরেব মধ্যস্থ স্ক্র नवीदत कावण नजीवक्रभ आमत्म कीवाजा थोटकन। कुन नजीदत्र मान হ'লে, অর্থাৎ মৃত্যু হ'লে, ডখন ঐ স্ক্র শরীররূপ সিংহাসন কারণ শরীর-রূপ আসনে বসিয়ে জীবাথাকে ব'বে নিয়ে গিয়ে অভা নতুন স্থুল দেহেতে স্থাপন করে। তাকেই লোকে জন্ম বলে। কোটা কোটা বার এই স্থুল দেহের উৎপত্তি ও বিনাশ হচ্ছে, অর্থাৎ জন্ম ও মৃত্যু হ'চ্ছে, কিন্তু হক্ষ ও কারণ দেহের নাশ হয় না। যেহেতু ভারা আগুনে পোড়েনা, অজ্ঞে कार्टि ना, পচে ना मर्फ ना, कुन भार्श्व नम्न व'रन किছूर्टिक डारम्बर्स्क ধ'রতে ছুঁতে পারা ধায় না। স্কুও কারণ শরীরের নাশ হ'লেই মায়া-কল্লিত জীবাত্মানপ উপাধি ঘু'চে গিয়ে তৎন কেবল এক পরমাত্মা ব'লেই কথিত চন

শিশ্ব। শরীর কটা?

গুরা। কেন । সেদিন আত্মা কেমন সেই প্রসঙ্গের মধ্যে তিনটা শবীরেব উল্লেখ শু'নেছ। শরীর তিনটা স্থুল, স্ক্ষ ও কাবণ।

শিষ্য। এই তিনটি শবীর কেমন তাই আমাকে বুঝিয়ে দিন।

গুরু। পাপ ও পুণোব দকণ ত্বাধ ও স্থাভোগ কর্বার জন্ম বড়-বিকার ভাবগ্রস্ত যে ভোগায়তন অর্থাৎ ভোগের স্থান তাই স্থূল-শশীর, তার মানে এই দেহ স্থূল-শরীর। পাঁচটা প্রাণ, পাঁচটা জ্ঞানেন্দ্রির, পাঁচটা কর্মেন্দ্রির, মন ও বুদ্ধি, এই সভেরটা তত্ত্ব নিরে যে শরীর তাই স্ক্ষম শরীব। আর স্থূল ও হক্ষ শরীরের উৎপত্তির কারণ বে মান্বাজনিত অবিভা অর্থাৎ অজ্ঞানতা তাই কারণ শরীর।

শিষ্য। ষড়বিকাব ভাৰএন্ত স্থূল-শরীব ব'ল্ছেন সেই বিকার কি কি ?
তিরু। সাংখ্য পাস্ত্রে ব'ল্ছেন যে, এই স্থূল দেহ ছয়টী বিকারযুক্ত
যথা—জন্ম, বিভ্যমানতা, বৃদ্ধি, পবিণতি, অপক্ষম ও বিনাশ। এই কয়টী
বিকার আছে ব'লেই স্থূল পরীরের নাশ হয়, কিন্তু স্ক্রম ও কাবণ
পরীরেব এই বিকার কয়টী নাই, স্ক্তরাং তাদের নাশও সহজে হয় না।
তাদেরই নাশ হ'লে তবে গা জীবেব মজিত।

শিশ্য। স্থন্ন ও কাবণ শরীরেব নাশ হ'লে জীবেব মুক্তি হয় ব'লছেন, কিন্তু তাদের নাশ হয় কিনে ?

গুক। তত্ত্জান লাভে নাশ হয়। এই জ্ঞানকে আত্মজানও বলে। বেষন সূর্য্য উদয় হ'লে অন্ধকার আর থাকেনা, তেমনি তত্ত্বলাভ হ'লে উক্ত শরীরহ্বরেব অন্তিহও আব থাকে না। কট্কিরা বেষন জলের ময়লা কেটে দিয়ে জলকে পরিষ্কার উল্টলে করে, তথন হল ভিন্ন জলের মধ্যে আর কিছুই দেখা যার না। তত্ত্জানও তেম্নি আত্মাব মায়াকলিত উপাধিরপ ময়লা কেটে দিয়ে আত্মাকে পরিষ্কার উল্টলে করে। তথন এ জগতে আত্মা ভিন্ন আর কিছুই দেখা যার না।

শিষ্য। তত্ত্তান কি ক'রে লাভ হর সেইটা আমাকে অনুগ্রহ ক'রে বলুন।

গুরু। তত্ত্তান লাভের উপায় হ'চ্ছে চিন্তগুদ্ধি। সেই চিন্তগুদ্ধি আবার অধিকারী ভেদে বিভিন্ন প্রকারে লাভ হ'বে থাকে। থাদেব সংসারে বিরাগ ভবেছে অর্থাৎ সংসারত্যাগী, তাদের বৈরাগোর প্রবল-ভাতে চিন্তগুদ্ধি লাভ হয়। শাস্ত্র বচন শ্রবণ, মনন, নিদিধ্যাসন, পর্যায়ক্রমে এইগুলি সাধন ক'রলে চিত্তগুদ্ধি লাভ হয়। যোগশাস্ত্র কথিত আসন প্রাণায়মের ছারায় চিত্তগুদ্ধি লাভ হয়। সমস্ত কর্ম নিজামভাবে ক'বলে চিত্তগুদ্ধি লাভ হয়। ভগবদ্ সেবা ক'বলে চিত্তগুদ্ধি লাভ হয়, এবং সাধু সেবা ও সাধুসঙ্গ কব্লেও চিত্তগুদ্ধি লাভ হয়। এই চিত্তগুদ্ধি যথন লাভ হয় মর্থাৎ চিত্তে রাগ, ছেব, আশা, কৃষ্ণাদি কোন রকম ময়লা যথন উৎপন্ন না হয়, তথন গুরু উপদিষ্ট সাধনা কর্লে ক্রমে তর্ত্তানের বিমল জ্যোতিঃ অত্তরে প্রকাশ পায়। সংসারত্যাগী মহাত্মারা শাস্ত্র-বচন প্রবণ, মনন, নিদিধ্যাদন ও ঘোগশাস্ত্র কথিত আসন প্রাণায়মাদির ছাবা চিত্তগুদ্ধি লাভ করেন, এবং গৃহীরা নিক্ষামভাবে যজ্ঞ, দান ও তপ অহ্ঠান ছাবা চিত্তগুদ্ধি লাভ করেন। ইচাকেই নিক্ষাম কর্মবোগ বলে। এই কর্মধাগই গৃহীদের উপায় এবং কণ্যাণকর।

শিষ্য। আপনি গৃহী ও ত্যাগীর চিত্তগুদ্ধির উপান্ন আলাদা আলাদা যা বল্লেন তা বুঝলাম্। এখন এমন একটা উপান্ন বলুন যা সকলেই অবধানন ক'বতে পারে।

গুরু। ভগবদ সেবা। গৃহী ত্যাগী সকলেই এই উপায়টা অবলম্বন কৰ্তে পাবে। মন প্রাণের সহিত ভগবদ সেবা ক'ব্লে নিশ্চয়ই চিন্ত-গুদ্ধি লাভ হবে। ফলত: চিত্তগুদ্ধি লাভ না হ'লে ভন্ধজান লাভের কোন আশাই নাই।

শিষা। চিত্তগুদ্ধি না হ'লে ওবজান লাভের কোন আশা নাই কেন ?
গুরু। চাষের ঘারা জমী খু'ড়ে পবিদার না ক'রে দসল বুন্লে
বেমন ফসল হয় না, তেম্নি চিত্তগুদ্ধির ঘাবা হাদর পরিদার না ক'রে
সাধনাদি ক'র্লেও কোন দল হয় না। খনের মধ্যে রাগ ছেষাদি ময়লাগুলি পু'রে রেথে লোক দেখান ভ্রুন সাধন কব্লে কি হবে ?

শিষা। আজা হাঁ, চিতত দ্বির বে বিশেষ প্রয়োজনীয়তা আমি বেশ বুঝ্লাম্। এখন আমাকে জীবাত্মা ও পরমাত্মা সম্বন্ধে বুঝিয়ে দিন। আগনি ব'লছেন বে, পরমাত্মা অবশু অর্থাৎ অবিচ্ছিন্ন ভাবে সমগ্র বিষে ব্যাপ্ত আছেন। আবাব ব'ল্ছেন বে, জীবাত্মা ও পরমাত্মা ঘটাকাশ ও মহাকাশের মত। ঘটেব নাশ হ'লে বেমন ঘটাকাশ মহাকাশে মিশে এক হ'য়ে যায়, তেম্নি দেহকপ ঘটেব নাশ হ'লেও জীবাত্মা ও পরমাত্মা মিশে এক হ'য়ে য়ান। এখন আমার সংশয় এই যে ঘটেব নাশ হ'লে ঘটাকাশ যেখানকার সেইখানে থাকে। পবস্তু, জীবাত্মা যে চ'লে বেডান। এক দেহকপ ঘটেব নাশ হ'লে অর্থাৎ মৃত্যু হ'লে অন্ত দেহকপ ঘটে অধিষ্ঠিত হন অর্থাৎ জন্ম হয়। ত্বতরাং জীবাত্মা পরমাত্মা থেকে বিচ্ছিন্ন না হ'লে কি ক'বে যাওয়া আসা করেন অর্থাৎ মৃত্যু ও জন্মের অধীন হন।

শুক। জীবাআ ও পরমাত্বা একই জিনিস, উপাধিযুক্ত হওয়াতেই বিভিন্ন ব'লে বোধ হয়। যাকে তুমি জীবাআ বলছ, বাস্তবিক পক্ষে তিনি কোথাও বাছেন্ন না অথবা আদ্ছেন না। সচবাচৰ বিশ্বেৰ সকল স্থানেই তিনি পরিপূর্ণ আছেন। অবশু এই বিশ্বেৰ কোন স্থানে যদি ফাঁক থাক্ত ভাহ'লে না হয় তিনি বেতে আদৃতে পাবতেন স্বীকার করি। বেতে পোলাই থোলাসা স্থান অর্থাৎ থালি আয়গা চাই, নইলে বান কি ক'রে প এবং বেস্থান হ'তে বাবেন সে স্থানটাও থালি ক'রে অর্থাৎ পৃত্ত ক'রে বেতে হবে। পবস্তু, এই ছটাৰ একটাও নম্ন, কেননা তিনি বিশ্বেৰ সর্বস্থানে সর্বাদা পূর্ণবিপে বর্ত্তমান আছেন। এই সচবাচৰ বিশ্বে তিলান্ধি স্থানও পাবেনা যেখানে তিনি অবিশ্বিত না আছেন। এ অবস্থায় আআবাৰ যাওয়া আসা কি ক'বে প্রতিপন্ন হ'তে পাবে প সেইভক্ত ভগবান শঙ্কবাচার্য্য প্রাপ্ত্রা স্থোত্রে ব'লেছেন যে, "পূর্ণপ্রাবাহনং কুর্ন," "সর্ব্বোধাৰস্তচাসনম্"। এই বিশ্বেৰ সর্ব্রেই তুমি পূণক্রপে বর্ত্তমান আছ, তে মাকে আহ্বান কি ক'রে ক্রতে পাবা বায়। নতুন এলেই লোকে আহ্বান ক'বে থাকে,

ষে বরাবর উপস্থিত অচে তাকে কি কেও আহ্বান করে? সকল স্থানই অধিকার ক'রে তুমি ব্যাপ্ত আছ, তোমাকে আসনই বা কোথার দিবে ? অর্থাৎ তুমিই সমগ্র বিশ্বের আধার তোমার আধার কৈ? ভগবানও গীতার ১৩শ অধ্যায়ের ১৩শ শ্লোকে ব'লেছেন যে,

দর্ববতঃ পাণিপাদং তৎ দর্বতোহক্ষিশিরোমুখম্। দর্ববতঃ শুভিমশ্লোকে দর্বামার্ত্য তিষ্ঠতি॥

স্কৃত্তই (এই বিখের স্কৃত্ত) তাঁব (ঈখরের) হাত, পা, চোথ, মাথা ও মুখ বিরাজিত আছে। তিনি স্কৃত্তকে (বিশ্বকে) আবৃত ক'রে অবছান কর্ছেন। এখন বিচার ক'রে দেখ, তিনি ছাডা খালি জারগা থাক্লে তিনি অবশু থেতে আদৃতে পাক্তেন। বিশ্বক্রাণ্ড যে তাঁর পেটের মধ্যে। আর জন্ম মৃত্যুতে আত্মা আসা বাওয়া করেন, এ সংশন্ধ বদি তোমার হর, তাহ'লে তার উত্তর ভগবদাক্যেই পাবে। আত্মার যে জন্ম মৃত্যু নাই ভগবান তা গীতার ২র অধ্যারের ২০শ স্লোকে বলেছেন বে,

ন জায়তে ত্রিযতে বা কদাচিসাবং ভূত্বা ভভিতা বা ন ভূষঃ।
অজো নিত্যঃ শাশতোহয়ং পুবাণো
ন হন্যতে হন্যমানে শবাবে ॥

জাত্মা কখন জন্মন না বা মরেন না, কখন হননি, কখন বর্ত্তমান নাই বা হবেন না, এবং ইনি বৃদ্ধিত হন না। কেন না ইনি (আআা) অজ জন্মরহিত), নিতা (চিরকাল বর্ত্তমান), শাখত (অপক্ষয়শৃত্য) এবং পুরাণ (পরিণাম শৃত্য অর্থাৎ যেমন আছেন তেম্নি থাক্বেন) অর্থাৎ জন্ম, বিভ্যমানতা, অপক্ষয় শৃক্ত, পরিণতি ও বিনাশ এই বডবিধ বিকারশৃক্ত।

শিশ্য। আমি ত মশায় বিষম ধাঁদার পড়ে গেলেম দেখ্ছি। আআ জন্মেন না মরেন না, তার না হয় মানে হ'তে পারে, আআ যে বিভ্যান নাই ব'লছেন, এ কি রকম কথা । তবে কি আআ নাই ?

গুরু। আত্মা থাক্বে না কেন । কেবল অত্মাই আছেন আত্মা ছাড়া আর কিছুই নাই। তিনি সর্বাদা সর্বাদ্র বিভয়ান আছেন, কিন্তু তিনি বিভয়ান আছেন এই কথা ব'লে তার এই মানে হয় যে, তিনি আগে ছিলেন না এখন আছেন। যেমন কেও ব'লছে যে গোপাল বাবু এখন সেথানে বিভয়ান আছেন। তার মানে এই বে তিনি সেথানে আগে ছিলেন না এখন আছেন। আত্মা বিভয়ান আছেন বলেও ঠিক তাই ব্যায়। সেই দোষ পরিহাবেব জন্তই আত্মা বিভয়ান আছেন একথা বলা নিষিদ্ধ।

শিয়। আছা, এটা না হয় স্বীকার কর্লাম, কিন্তু আত্মা আদা বাওয়া করেন অর্থাৎ জন্ম মৃত্যুর অধীন হন, তা আপনি না ব'ল্বেন কিলে? স্পষ্ট দেণ্তে পাছিছ মৃত্যু হ'লে আত্মা চ'লে বান, তথন দেহটা মাটির মত প'তে থাকে, এবং গর্ভস্ক সন্তানের বখন আসেন তথন পেটের মধ্যে ঐ ছেলে নভাচডা করে এবং সময়মত ভূমিষ্ঠ হয়। যে সন্তানের দেহেতে আত্মা না থাকেন অর্থাৎ মৃত সন্তান প্রসব হয় না, ডাক্তারেরা কেটে কেটে বাব করে। আব যে আপনি ঘটাকাশ ও মহাকাশের উদাহরণ দিলেন, জীবাত্মা ও প্রমত্মা সম্বন্ধে সে উদাহরণও থাটে না। কারণ, ঘট ভাঙ্গলে ঘটাকাশ যেখানকার সেইখানেই থাকে, কিন্তু জীবাত্মা যে চ'লে বেড়ান।

আচ্ছা, তুমি যে ভাবে বুঝুবে সেই ভাবে বুঝাচ্ছি। একবার

যা বলেছি আবার ভাই বলতে হচ্ছে। বাস্তবিক আত্মা কোথাও याख्या व्याप्ता कव्रह्म ना, छिन प्रक्रिक विरचेत प्रक्रिके শের মত অবিচিত্নাবস্থায় অবস্থান ক'ব্ছেন। সেই জন্মই শাস্ত্রে তাঁকে অখণ্ড পূর্ণত্রন্ধ বলে। মনে কর এখানে একটা মাটির ঘট আছে, এবং ঘটেব মধ্যে আকাশন্ত আছে, সেই আকাশকে ঘটাকাশ বলে। এখন ঐ ঘটনা এখান থেকে ভলাতে নিয়ে গিয়ে ভেলে দেওয়া হ'ন, স্থভবাং ঘট্যধাস্ত আকাশ অর্থাৎ ঘটাকাশ দেইখানে মহাকাশের সঙ্গে মিশে अक छ'য় (शन । अथन तन सिथि, सिथीन थ्यंक योंकी भवान (१० দেখানকার আকাশ ঘটের অবস্থিতিব হেতু কম ছিল কি ? অথবা এখন সেধানকার আকাশ কমল কি ? অথবা বেখানে ঘটাকাশ মহাকাশে মিশে এক হ'লে গেল দেখানকাৰ মহাকাশ বাড্ল কি ? না কম্ল, না বাড্ল, যেমন আকাশ তেমনিই আছে। কেবল ঘটকপ উপাধিটী ছিল ব'লে. এক আকাশেৰই হুটা নাম ০'য়েছিল। যখন উপাধি বুচে গেল তথন আকাৰ্ণেবত ছটা নাম খুচে গিয়ে এক মহাকানই নাম বৈল। তেম্নি মায়াক্ত্রিত উপাধিরপ দেহঘটের নাশ হ'লেই জীবাআ ও প্রমাত্মা এক হ'রে বান, তথন কেবল পরমাত্রা বলেই ক্থিত হন। আকাশ যেমন স্ক্রাবস্থায় দৰ্বত্র পরিব্যাপ্ত আছে, প্রমাত্মান্ত তেমনি স্ক্রাদপি স্ক্রাবস্থায় অবিচ্ছিন্নভাবে সমগ্র বিশ্বে পবিবাধ্যে আছেন। তিনি স্থাবৰ জন্ম ধাৰতীয় পদার্থেই ব্যাপ্ত আছেন। স্থাবিথি ষেমন বস্তু বিচার না ক'বে সকল পদার্থেই পতিত হয়, প্রমাত্মাও তেম্নি বস্তু বিচার না ক'রে সচরাচর বিষেব দমন্ত পদার্থেই ব্যাপ্ত আছেন। স্থারশি স্বচ্ছ পদার্থ ভিন্ন ভামন অর্থাৎ মলিন কিম্বা স্থল পদার্থের মধ্যে প্রবেশ কব্তে পারে না। পরমাত্মা किंख कि अष्ट, कि मिनन, कि भून, कि एमा এই विस्थेत्र बावजीय शर्मार्थव অস্তব্যে বাহিরে ওতপ্রোতভাবে ব্যাপ্ত আছেন। আবার বিধের বাহিরেও অনস্তরপে অনস্ত আকাশে ব্যাপ্ত আছেন। আকাশেরও অস্ত নাই তাঁরও অস্ত নাই, তার স্বরূপ অবস্থায় অবস্থিতির নামই আকাশ। ভগবান গীতার ১০ম অধ্যায়ের শেষ শ্লোকে তাই ব'লেছেন যে,

অথবা বহু নৈতেন কিং জ্ঞাতেন তবাৰ্জ্জুন। বিষটভ্যামহমিদং কুৎস্মমেকাংশেন স্থিতো জগৎ॥

হে অর্জুন। বছ জ্ঞানে অর্থাৎ আমার বিভৃতির পৃথক্ পৃথক্ ভাবে তোমার জান্বাব দবকাব কি? আমি সমগ্র বিখে আমাব একাংশের দ্বারা ব্যাপ্ত হ'রে আছি। ভগবদ্বাক্যেব তাৎপর্য্যার্থ কি ? ভগবান বল্ছেন যে, হে অর্জুন। ভূমি যে এই বিশ্বর্জাপ্ত দেখ্ছ এদব আমার এক অংশে প'ডে আছে, এর (বিশ্বের) বাইরে আমি অনন্ত আকাশে ব্যেপে অন্তর্গপে অবস্থিত মাছি।

শিয়। তা হ'লে পরমাত্মা কি বিশ্বের অর্থাৎ স্প্রটির বাইবেও আছেন?

গুঞ্। তা নাই ॰ সৃষ্টি ও তাব পাদদেশে প'ডে আছে। তাতেই ত শ্রুতি মুক্তকঠে ব'ল্ছেন যে, "পাদোংস বিধো ভূতা নীতি"। জগবান জনাদি অনস্ত স্তবাং তার সম্পূর্ণ ধবর কারও জানবাব উপায় নাই। সেই জন্মই ভগবান গীতায় ব'লেছেন যে, "ন বিছু মে শুরগণা"। এখন তুমি বুঝ্লে যে প্রমাধা অথপ্রক্রে সমগ্র বিশ্বব্যেপে অবস্থান কর্ছেন ৪ এই বিচার্বে শান্ত্রে অবচ্ছেদ্বাদ বলে।

াশস্য। আজ্ঞা ই। বুন্লাম। পরমাত্মা বিধের চেয়ে যে চের বড ভাও বৃষ্লাম।

গুরু। যেমন বড় বড গাছে ফল ফুল থবে, এবং ফল ফুলের তুলনার গাছ বহু গুণ বড়। আর যখন ফল ফুল থবে, ফল ফুল উৎপন্ন ছওয়া হেতু, তথন গাছ হ্রাস পায় না, কিলা ফল ফুল না থাক্লেও গাছ যেমন বৃদ্ধি পায় না। তেমনি পরমান্তাও স্ত বিশ্ব অপেকা অনম্ভ ওণ বড, এবং স্পৃষ্টি লয়ের জন্ম তিনিও হ্রাস বৃদ্ধি প্রাপ্ত হন্ না।

শিষ্য। আজ্ঞা ই। বৃঝ্লাম্, কিন্তু পরমাত্মা স্থাবৰ জ্বন্ধ অর্থাৎ জড় ও চেতন সকল পদার্থেই যে সমানভাবে ব্যাপ্ত আছেন ব'লছেন্, এ কথায় আমাৰ মনে বিশেষ সংশন্ধ হছে। জড় পদার্থ নিশ্চেষ্ট ই'য়ে এক জারগার প'ড়ে থাকে, কিন্তু চেতন পদার্থেব চেষ্টা দেখতে পাই, তাতেই পরিচয় পাই যে আত্মা তাতে আছেন। আবার বধন তিনি না থাকেন তথন ঐ চেতন পদার্থই চেষ্টাবিহীন জড়ের ভার প'ড়ে থাকে। আত্মা যখন স্থাবর জ্বন্ম সকল পদার্থেই সমানভাবে ব্যাপ্ত আছেন ব'ল্ছেন, তখন এ বৈষ্ম্য দেখা বায় কেন ?

গুরু। পরমাত্মার বিচ্ছিন্ন হ'রে আসা যাওয়া সহলে তোমাকে অবচ্ছেদবাদে বুঝিয়েছি এখন এ প্রশ্নেব উত্তর শোন। তুমি যে স্থাবর ও জঙ্গম পদার্থকৈ জড় ও চেতন বলছ, কিন্তু প্রকৃত তা নয়। জগতের যাবতীয় পদার্থই জড়, কেবল একমাত্র আত্মাই চেতন। সমস্ত পদার্থ জড় বটে, কিন্তু জড় ছই প্রকার। যাকে তুমি চেতন পদার্থ বলছ তা স্থাছ জড়, আর যাকে জড় পদার্থ বলছ তা তামস অর্থাৎ মালন ১৯৬। ফলতঃ এই ছই পদার্থেই পরমাত্মা সমানভাবে ব্যাপ্ত আছেন। এ যে পাহাড়ী লোকটা পাহাডের উপর গাছ কাট্ছে দেখছ, এ পাহাড়ও যা লোকটাও তাই। যে কুড়ুলে গাছ কাট্ছে সেই কুড়ুল্থানা যা গাছটাওই তাই। পরমাত্মা সকল পদার্থেই ব্যাপ্ত আছেন বটে ত্রুটাচ বৈষম্য দেখা যাছে। তাব কাবণ এই বে, যে পদার্থে পরমাত্মার চিদাভাগ প্রতিবিশ্বের তার প্রতিফলিত হছে, তাকে চেতন পদার্থ বলে, এবং যে পদার্থে তা হছে না তাকেই জড় পদার্থ বলে।

শিষ্য। তা হ'লে কি সকল পদার্থে চিদাভাস সমান পড়ে না ?

শুক্ত। সমান পড়বে না কেন ? বেমন জল কাচাদি স্বচ্ছ পদার্থে প্রতিবিশ্ব দেখা যায়, অস্বচ্ছ অর্থাৎ মলিন পদার্থে প্রতিবিশ্ব দেখা যায় না। তেম্নি স্বচ্ছ জড় পদার্থে চিদাভাদ প্রতিবিশ্বেব তার দেখা যায় নডাচড়া, চলাফেবা ইডাাদি হচ্ছে প্রতিবিশ্বেব লক্ষণ। স্পার তামদ অর্থাৎ মলিন জড়ে চিদভোদ প্রতিবিশ্বের স্লায় দেখা যার না।

শিষ্য। তাৰ কাৰণ কি ?

শুরু। তাব কাবণ, সন্ধান্তিকা বুদ্ধি হছে স্বচ্ছ পদার্থ। এ জপতেব
যাবতীয় জন্ম পদার্থেব স্ক্র শবীবকে আশ্রয় ক'বে. সেই বুদ্ধি আছে,
এবং স্বচ্ছ জড়ে বৃদ্ধি আছে ব'লেই টিনাভাগ প্রতিবিধের ভার সেখা যায়
এবং সেই সকল পদার্থকে চেতন পদার্থ বিলে। কেবল সন্ধাত্মিকা বৃদ্ধিসমান্তি হওয়া না হওয়াব নকণ পদার্থ নব চেতন ও জড় সংজ্ঞাপ্রাপ্ত হচ্ছে।
তাতে চিদাভাসেব ন্যাধিকা হচ্ছে না। বেমন বহু কলসীতে জল পূর্ণ
ক'রে দেখ সকল কলসীতেই স্প্রের হতিবিদ্ধ দেখা যাবে না। বাচে পার
লাগান পাক্লেই মুখ দেখা যার, নইসে দেখা যার না। তেম্নি সন্থাজ্মিকা
বৃদ্ধিবিশিষ্ট স্বচ্ছ ভড় পদার্থ অর্থাৎ চেতন পদার্থে চিদাভাস প্রতিবিধের
ভার দেখা যার। সন্থাজ্মিকা বৃদ্ধিবিহীন মলিন অর্থাৎ ক্রড পদার্থে চিদাভাস
প্রেতিবিধের ভার দেখা যার না। শাস্ত্রে এই বিচারকে আভাসবাদ
বলে।

শিষ্য। 'আভাসবাদ বোঝালেন বটে, কিন্তু আমার মনের সংশম কিছুতেই যাচ্ছে না। কাবন, স্পষ্ট দেখ্তে পাচ্ছি বে, প্রাণীবা চ'লে ফিরে বেড়াচ্ছে, ইচ্ছামত কাজকর্ম কর্ছে, এবং আহার বিহারানি স্বাই করছে। আর পাধ্যথানা নিশ্চেষ্টভাবে এক জায়গাতেই প'ড়ে আছে, যা মার্লেও নডে না। এরপ স্থলে বিভিন্ন ধর্মাবলম্বী চুই পদার্থকে এক কি ক'বে বল্তে পারি ?

শুক্ । শান্ধে এই বিশ্ব-সংশারকে স্বপ্নের বিকাবমাত্র ব'লছে, ভগবান শঙ্করাচাধ্যও ব'লেছেন যে, "বিশ্বং ত্যক্ত্বা স্থপ্ন বিকাবম্"। তথম চেঙন পদার্থের বা কিছু চেষ্টাদি দেখতে পাচ্ছ তা স্থপ্নবৎ মিথ্যা। যেমন স্বপ্নে লোকে কত স্থানে যার, কত জিনিস দেখে, কত কাজ কাব, কিছু লোক বেখানকার সেইখানেই নিশ্চেইভাবে ঘূমিরে প'ডে পাকে। গোকে বেমন কোথাও না গিয়ে কিছু না ক'বে, নিশ্চেইভাবে প'ডে থেকেও স্বপ্নেডে সব কাজ কবে, এবং তৎকালে তা সত্য ব'লেই প্রতারমান হয়। তেমান সংসাবেব ভূতগপের বাবুতার ব্যাপার স্বপ্নদৃষ্ট বিষয়ের স্থান্ধ সম্পন্ন হচ্ছে, এবং জাবগবেব নিকট তা সব সত্য ব'লেই প্রতীরমান হচ্ছে।

শিশু। আনরা সংসারে বা ক'র্ছি, তা সব জ্ঞানেব সহিতই ক'রছি, কার্জেই সে সব সভা ব'লে বোধ হছে। যদি সংসার স্বপ্নেবই বিকার হয়, তা হ'লে ঐ সব মিথা। ব'লে বোধ হয় না কেন ৪

গুরু। যে লোক বথন স্বপ্ন দেখে তথন কি আর তাব সেই সব স্থান্ত বিষয় মিথা। ব'লে মনে হয় । তথন তার সে, সব বিষয় সত্য বলেই মনে হয়, কিন্তু বুম ভাঙ্গলে তথন আর সেগুলি সভা ব'লে বোধ হয় না, মিথা। ব'লেই ধারণা হয়।

শিশ্য। স্থা ঘূমিরে দেখা যায়, স্তরাং তা মিথাা ব'লে বোধ হ'তে পারে। এ যে জাগ্রভাবস্থায় সব কর্ছি, কাজেই এসবকে মিথাা বলি কি করে ? আর যদি প্রকৃতই মিথাা হয়, তা হ'লে দেই মিথাাকে সত্য ব'লে খারণা হওয়ার কারণ কি ?

গুরু। প্রান্তি হচ্ছে এর কারণ। বেমন রজ্জুতে সর্পশ্রম।

শিশ্ব। এ যে বড বিষম শ্রম দেখ্ছি। লোকের এ শ্রম ধায় না কেন ?

শুক। দড়ীকে সাপের মত দেখে বার মনে দৃত ধারণা হয় যে এটা সাপই, তার ভ্রম বেতে পারে না। কেন না, সে সাপের সত্যতা সম্বন্ধে ত কোন অমুসন্ধান কর্বে না, এটা সাপ এই বিখাসেই থাক্বে। দড়ীকে সাপ ব'লে মিথ্যা ধাবণা মনে প্রতিষ্ঠিত হওয়াতে, লোবের যেমন বজ্জুতে সর্পভ্রম বার না। তেমনি এই মিথ্যা জগতকে সত্য ব'লে দৃত ধারণা হওয়াতে লোকের মনে পেকে এ ভ্রমণ্ড বায় না। কাবণ, সত্য মিণ্যাব অমুসন্ধান ত লোকে কিছু কব্বে না, এসব সত্য ব'লেই সংসারে ম'জে থাক্বে। ভ্রমই লোককে সংসাবরপ সমুদ্ধে তুবাবাব কুমীব স্বন্ধা। এই ভ্রম যাকে ধরে তার আর সহজে উপরে উঠ্বার সাধ্য নাই। এই যে মিথ্যাকে সত্য ব'লে প্রতীয়মান হচেছ, এই বিচারকে শাস্ত্রে অধাসবাদ বলে।

শিখা। রুজ্জুতে সর্পথ্ম হ'লে চিল মেবে কি পৌচা মেরে তার না হয় অফুদ্ধান করা যায়, কিন্তু জগতের সত্য মিধ্যা সম্বন্ধে কি ক'বে অঞ্-সন্ধান করা যায় ?

শুক। তবে তোমাকে সেদিন বলনাম কি ? চিত্ত দি ক'বে তব্ব-জ্ঞান লাভ কব্লে, তথন এই ভ্ৰম দ্ব হয়, স্থতবাং এই জগতকে মিখ্যা ব'লে বোধ হয়। নচেৎ এ ভ্ৰম দ্ব হবার আৰু অক্ট উপায় নাই।

শিশ্য। আপনি যে বল্ছেন চিত্ত জ্বির দ্বাবা আত্মজ্ঞান লাভ হ'লে তথন ভ্রম দুর হয়। এখন কি উপায়ে কোথেকে সেই জ্ঞান পাওয়া যায় তাই আমাকে বলুন।

গুড়। আত্মজান বাইরে থেকে আসে না নিভের কাছেই ছাছে। তবে ভ্রম অর্থাৎ অজ্ঞানে আরুত আছে। সাধনার ধারা সেই ভ্রম বা অজ্ঞান দূব কবতে পার্নেই, তথন আত্মজান বেরিয়ে পড়ে। আত্মজান লাভ হ'লে তথন আব মুখ্যমান হ'য়ে সংসাবে আবদ্ধ থাক্তে হয় না।
সেইজন্ম শঙ্কবাচার্য্য ব'লেছেন যে, "জ্ঞাতে তত্ত্বে কঃ সংসাবঃ'। এই
আত্ম-জ্ঞানকেই তত্ত্জান ও অকৈতজ্ঞানও বলে। যাব অকৈত্জান লাভ
হয়, তিনি এই বিধকে ব্রেলের সঙ্গে অভেদ দেশেন, এবং নিজেকেও
ব্রেলের সঙ্গে অভেদ জ্ঞান কবেন।

শিশু। মাজা হাঁ এখন আমি ব্ঝালাম। মাচছা, পঞ্জাবের স্ত্রী পুরুষ আবিকাংশ লোকেই, ব্রহ্মেব সাজ তাদেবকে অভেদ ভাবে। 'চাহ'লে সেই সব লোকের কি তত্ত্তান লাভ হয়েছে ?

শুক। তত্ত্বজ্ঞান স্কুল্ভ। এই জ্ঞানটা হচ্ছে জ্ঞানের চর্রয় সীমা, এবং এই অবৈত্তজ্ঞানই জীবনের চরম উৎকর্ষ। এব পর জ্ঞানবাবে আব কিছুই থাকে না, এবং ভবযন্ত্রণা পেকে নিজুতি পেয়ে পরমানন্দের স্বরূপ হ'রে যাওয়া যায়। তঃথের নেশমাত্রও থাকে না। সাধারণ লোকের যদি এ জ্ঞান লাভ হয় তা হ'লে আব ভাবনা কি ? বেদান্ত প'ডে মথবা শুনে মুথে ব্রহ্মা ব'ণ্লে ত আর ব্রহ্ম হয় না, রুপের ভাব অর্থাৎ স্বস্থা হওয়া চাহ। সে অবস্থা লাভ না ক'বে যারা মুথে ব্রহ্ম বলে ভাবা বাক্যন্ত্র বিশেষ। প্রকৃত বাবে মাপনাকে ব্রহ্ম বলে জ্ঞান হয়, অহং ব্রহ্মোশ্মি এ কথা ভিনি আর তথন মুখে ব'ল্ডে পারেন না। কেননা, যিনি নিজেকে ব্রহ্মের সঙ্গে ত্লনা ব র্বেন ভারই বৈত্তাব আছে। মনে অবৈত্তাব প্রতিষ্ঠিত হ'লে, মুখে বৈত্তাবের কথা আর আসে না। বাদের ভর্ম্জান লাভ হয়, তারা জগতকে পরনাআরই বাপ অর্থাৎ সবই বাস্থনের দশন করেন।

শিশ্ব। তত্ত্তানী পুরুষেরা বি ভাবে এই জগড়কে বাপ্লদেব দর্শন করেন ?

গুৰু। সোনাতে বহু বুক্ষ অলম্বাৰ হয়। ব্ৰিও অল্মাৰ সৰ

বিভিন্ন গড়নের হয় বটে, কিন্তু ঐ সব অশক্ষার দেখ্লে মনে গোনা ব'লেই জ্ঞান হয়, মনে হয় এসব সোনারই গড়ন। তেম্নি ভল্জানী মহাত্মারা এ জগতে বা কিছু দেখেন, সমস্ত একেব কপ দেখেন অর্থাং একাহ এসব হয়েছেন। অবৈভজ্ঞান কি সহজে লাভ হয় ৪ সাধারণ লোকের অবৈভজ্ঞান লাভের কোন সন্তাবনা নাই।

শিষ্য। সাধাৰণ লোকেৰ ভৰক্ষান লাভেৰ সন্তাৰনা নাই কেন ? গুৰু। সাধন চতুইয় ভিন্ন অহৈতজ্ঞান লাভে অধিকাৰ হন্ন না।

শিশ্ব। সাধন চতৃষ্টয় কাকে বলে এবং কি বক্ষ ভাবে ক'র্তে হয় অনুগ্রহ ক'বে আমাকে বলুন।

গুরু। নিজ্যা নতা বস্তু বিবেকঃ ইহা মূত্রার্থ ফলভোগ বিবাগঃ শমাণি ষট্ সম্পত্তি ও সমুক্ত্ব চেতি। এ জগতে নিজ্য (অবিনাশা) ও অনিতা (নাশাল) বস্তুর পৃথক্ পূথক্ জ্ঞান, অর্থাৎ এই তুটা সম্পূর্ণকাপে অনুভবে আসা। এইটা প্রথম সাধন। ইহলোক এবং প্রশোকে ভোগের আকাজনা একেবারে ত্যাগ কবা , এইটা থিতীয় সাধন। শম, দম, উপরম, তিতিকা, শ্রন্ধা ও সমাধান এই ছয়টীর নান ষট্ সম্পত্তি, এইটা ভূতীয় সাধন। আমি মুক্ত হব অর্থাৎ জন্ম মূত্যুর যত্ত্রণা থেকে ছুট্ব, এই রক্ষ তীর আকাজনা মনে বাখা, এইটা চতুর্থ সাধন। এই চারিটা সাধনায় সিদ্ধ হ'লে অর্থাৎ মনে ঐ সব ভাবগুলি দৃঢ় ধারণা হ'লে, তখন গা ভত্ত্ব-জান লাভের অধিকার হয়। সেই জন্মই শান্ত্রে বল্ছে যে,

এতৎ সাধন চতুষ্টয়ম্ ততন্তত্ত্ব বিবেকস্থাধিকারিনো ভবন্তি।

এই সাধন চতুইয় সাধনা ক'ব্লে, তথন লোকে তত্ত্তান গাভের অধিকারী ২য়। শিশ্য। আপনি যে ষট্ সম্পাত্তর উল্লেখ ক'রলেন তার খানে ত কিছু বুরা্লাম না।

শুক্র। আছো শোন। শুম, মনকে নিগ্রহ কবা, অর্থাৎ বিষয়গামী মনকে বিষয়ে না লাগতে দিয়ে আপন বসে রাখা। দুম, বহিরিন্তিয়গণকে নিগ্রহ করা, ইন্তিরগণকে বিষয়ের সঙ্গে সংযোগ হ'তে না দিয়ে দুমন ক'রে রাখা। উপবন, উদাসিত অবলম্বন কবা অর্থাৎ সংসারে স্কল বিষয়ে অনাসক্ত হওয়া। তিতিক্ষা, সহগুণ অর্থাৎ নাত উষ্ণ, প্রথ তুংথাদি উপস্থিত হলেও সে সব সহু ক'বে মনকে অবিচলিত বাধা। শ্রদ্ধা, ফুচির সহিত বিশ্বাস, গুকুও পান্ত বাক্যে কচির সহিত বিশ্বাস। সমাধান, চিত্তেব একাগ্রতা অর্থাৎ বিশ্বিক্ত চিত্তকে একাগ্র ক'রে ধ্যানাদি করা।

শিষ্য। এই ছয়টাকে সম্পত্তি বলে কেন ?

গুরু। কেন ব'ল্বে না । সম্পত্তি না হ'লে কেও কথন বডলোক হ'তে পারে । এই ছয়টা সিদ্ধ হ'লে তখন বড়লোক হওয়া বায়, অর্থাৎ আত্মজানরূপ অমূল্য ধনের অধিকারা হওয়া বায় এবং প্রমান্দরূপ স্থুখ ভোগ হয়। সেহজ্জ এই ছয়্টীকে সম্পত্তি বলে।

শিষ্য। তত্ত্তান বে কি ক'রে লাভ গ্র তা আমি এক বকম
বুঝ্লান, কিন্ত আপনি অধ্যাসবাদে বল্লেন যে ভ্রম্থ সংসারেব অস্থি
স্থান্য, ভ্রম দূর হ'লেই সংসাবকে স্বপ্ন ব'লে বোধ হর্ম। আমি এখন এই
ভাব্ছি যে এই মারাত্মক ভ্রমের কাবণ কি এবং এই ভ্রম আসেই বা
কোত্থেকে ?

গুরু। এই ত্রমের কারণ হচ্ছে মায়া, শাস্ত্রে একে বস্তপক্তিও বলে। গুগবান এই বিশ্ব-ব্রদ্ধাণ্ডের যাবতীয় পদার্থের মধ্যেই সেই মায়া বা বস্তুপক্তি অন্তনিহিত ক'রে রেখেছেন। বেমন একখণ্ড সমান হিরা, কিছু উঁচু ও উজ্জ্বল দেখায়। এই উঁচু বা উজ্জ্বল দেখাবার কারণ যে মায়া বা বস্ত্রশক্তি তা হিরার মধ্যেই নিহিত আছে। বেলওয়াবি ঝাডেব কল্সের
মধ্যে দিয়ে দেখ্লে নানা রকম বং দেখায়। দেই নানা রকম দেখাবার
কারণ মায়া বা বস্তুশক্তি ঐ কল্সেব মধ্যেই নিহিত আছে। এখন বুঝ্লে
যে কি রক্মে ভ্রম উৎপন্ন হয় ? এই বিচারকে শাস্ত্রে মায়াবাদ বলে।
এই মায়াবাদ শাস্ত্রের একটা প্রধান আলোচ্য বিষয়। মায়ার প্রভাব
বডই কঠিন ও অপ্রভিহত।

শিশ্ব। অনুগ্ৰহ ক'রে এই মায়াব প্রভাব একটু বিস্তা^{ৰ্}বতভাবে ধলুন শু'নতে আমাব বভ কৌতৃহল ২চ্ছে।

গুরু। এই মায়ার প্রভাবেই সচরাচর বিশ্ববাাপী অবিচ্ছিন্নভাবে অবস্থিত গুলু ক্লাটিকবং নির্মাণ অতি বিশুদ্ধ একমাত্র পর্মাত্মা আমানের অনুশনীয় হ'বে আছেন। মায়াতে আমানের দৃষ্টি আর্ও হ'বে বারছে ব'লে আমরা তাঁকে দেখুতে পাই না। যেমন দিনের বেলায় নক্ষত্র দেখা বার না। বাস্তবিক নক্ষত্র কোথাও চ'লে বার কি ও তাত নয়, নক্ষত্র আকান্দের যথাস্থানেই আছে, কেবল ক্র্যাবিশ্বি আমানের দৃষ্টি আবরণ ক'রে রেখেছে ব'লে আমরা নক্ষত্র দেখুতে পাই না। ক্র্যা অন্ত গেলেই দেখা বার। এমন কি ক্র্যা গ্রহণে সর্ব্গ্রাস হ'লে নিনের বেলাতেই নক্ষত্র দেখুতে পাওয়া যার। তেমনি মায়ারূপ রিশ্বি অন্তর্হিত হ'লে তবে ভগবানকে দর্শন হয়। ভাব মানে যিমি মায়া নির্মান্ত হয়েছেন তিনিই ক্ষর্যর দশনে সম্বর্গ অন্তে নয়।

শিষ্য। তা'হলে এই কইপাশ্বিকা মায়াই আমাদের বোর শক্ত দেখ্ছি। তগবান এমন অনিষ্টকারিণী মায়াকে স্থাষ্ট কব্লেন কেন ?

গুরু। মায়া না হ'লে প্রমায়ার এই বিশ্বলীলা, অর্থাং স্থাষ্টিছিডি প্রলয়রপ লীলা থেলাই হয় না। থেলা কি কখন একলা হয় ? থেল্ডে গেলেই জুড়ীদার চাই। প্রমাদা যখন এই বিশ্বশ্বেলা খেল্ডে ইচ্ছা করেন, তখন তিনি তার প্রকৃতি বা নারাকে আলাদা ক'রে দিয়ে তাঁকে দলে নিম্নে দব খেলা খেলেন। নারা আবার এম্নি করিতকর্মা যে, একলাই গাস্থের পাডেন এবং তলাব কু'ড়োন্।

শিষ্য। মান্না গাছের পাডেন ভলার কুডোন কি বকম ?

গুরু। এই যে পৃথিবী, চন্দ্র, স্থা, গ্রহ, নক্ষজাদি সব দেখুতে পাচছ,
মহাপ্রলয় হ'লে এসব কিছুই থাকে না। এই সমগ্র বিশ্বের যাবতীয় স্থুল
পদার্থ স্থাবছা প্রাপ্ত হ'রে নায়া বা প্রকৃতিতে লান হয়। তথন প্রকৃতি
পরমাত্মাতে লীন হন। সে সময়ে আব কিছুই থাকে না, থাকে কেবল
অনপ্ত আকাশ আর অনস্ত আকাশবাাপী অনাদি অনস্ত পরমাত্মা
এরপভাবে যে কত বুগর্গান্তর কেটে যায় তার ঠিক কি ? তারপর
আবাব যখন পরমাত্মার স্টাদি লীলা কব্বার ইচ্ছা হয়, তথন তিনি তাঁর
প্রকৃতি বা মায়াকে ছেড়ে দেন। সেই প্রকৃতি জগৎপ্রপঞ্চ রচনা করেন,
এবং সচরাচর বিশ্বের যাবতীয় জীবকে মুগ্র ক'রে রাথেন, ঠিক যেন ভেল্ক
লাগান। ভাতেই বলেছি যে মায়া গাছের পাতেন ও তলার কু'ডোন।

শিশ্ব। মারা সচরাচব বিবের যাবতার প্রাণীকে ভেল্কী লাগান পরমাত্মাও ড বিবের মধ্যে আছেন, তা'হলে ভাকেও কি ভেল্কী লাগান স

শুক্র। না পরমাত্মাকে ভেল্কী পাগাতে পাবেন না। বাজীকর বেমন খেলা দেখাবাব সময় সমস্ত দর্শকমগুলীকে ভেল্কী লাগিয়ে মিছামিছি কত জিনিস দেখায়, কিন্তু সে নিজে সে নব কিছু দেখে না, সে কেবল তার হাতেব কাঠিটাই দেখে। বাজীকরেব স্বায়খাধীন ভোজ-বিতা বেমন দর্শককে ভেল্কা লাগিয়ে মুগ্ধ করে, কিন্তু বাজীকরকে মুগ্ধ কর্তে পারে না। তেম্নি পরমান্ত্রার স্বায়খাধীন মায়াও সচরাচর বিশ্বকে মুগ্ধ কবেন কিন্তু প্রমান্ত্রাকে মুগ্ধ কর্তে পারেন না। শিশ্ব। আপনাব এই কথাটা শুনে আমাব সংশয় হচ্ছে। মায়ার ধন্মই হ'ল মুগ্ধ কবা, প্রমাত্মাব বেলায় তিনি সে শ্বধন্ম ত্যাগ কববেন ১

গুক। বিষক্তে লতা যে পাছকে আশ্রম ক'বে জড়িয়ে থাকে সে
পাছেব কিছু হয় না, কিন্তু অন্তেব প্রাণদাতিকা। সন্ত প্রাণনাশক হলাহল
মুখের মধ্যে গাবণ করেও সাপেব কিছু হয় না কিন্তু অন্তেব যমপ্রকাণ।
তেম্নি মায়া ভগবানকে সতত আশ্রম কবে থাক্লেও তাঁব কিছু হয় না।
ভগবান তাব মায়া বা প্রকৃতিব দ্বাবাই এই বিশ্বলালাব সব কাঞ্জ অর্পাৎ
স্টিস্থিতি প্রলম্ম কবাচ্ছেন, এবং স্বয়ং প্রকৃতিব আশ্রম স্বন্ধ প্রক্ষবদেশ
নিলিপ্তভাবে উদাসানের স্থায় অবস্থান কব্ছেন। এই প্রের্ভি পুক্ষ
সংযোগে বিশ্বলীলা সম্পন্ন হচ্ছে। সেই কথা ভগবান গীতাৰ ১৪০ অধ্যামের
ংম্ব ৬ ৪০ শ্লোকে ব'লছেন যে,

মম যোনিম হিদ্ত্রেক্মতিশ্মিন গর্ভং দধাম্যহম্। সম্ভবঃ সর্ব্বভূতানাং ততো ভবতি ভাবত ॥ সর্ব্ব যোনিষু কৌন্ডের মূর্ত্ত্বঃ সম্ভবন্তি যাঃ। তাসাং ব্রহ্ম মহদ্ যোনিবহং বীজপ্রদঃ পিতা॥

হৈ ভাৰত। মহৎ প্রকৃতি এই বিশ্বের গণ্ডাধান স্থান। আমি তাঁতে সমগ্র জগতেব ৰাজ নিক্ষেপ ক'রে থাকি তাতেহ মাবতার ভূতগণ উৎপর হয়। হে কৌগ্রের। স্থাবৰ জ্বসাত্মক মাবতার যোনীতে যে সকণ মৃত্তি সম্ভূত হয়, মহৎ প্রকৃতি সেই সমস্ত ভূতগণেব যোনী অর্থাৎ মাতৃত্বানীরা, এবং আমি বীক্ষপ্রদ পিতা।

শিশ্ব। অমুগ্রহ ক'বে প্রকৃতি এবং তার স্মষ্টি কৌশন সম্বন্ধে মতদূর সম্ভব আমাকে বৃধিয়ে দিন।

গুৰু। সৃষ্টি সম্বন্ধে সাংখা শান্তের মত তোমাকে বলি শোন। সাংখ্য শাস্ত্র এই বিশ্ব সৃষ্টিকে চবিবশ গণ বা ভত্তে বিভক্ত ক'রেছেন, এবং সেই চবিবশ তত্ত্বের উপবে পুরুষ অর্থাৎ আত্মাকে বেথেছেন। বিভাগ প্রণালী এই বকম নথা, ১। প্রকৃতি, ২। মহৎ (বৃদ্ধি) ৩। অহংকার. ৪ ৷ মন, পঞ্চ ক্রানেব্রিয়, পঞ্চ কর্মেব্রিয় পঞ্চ ত্রাতা (রূপ, রুস, গন্ধ, শন্ধ ও স্পর্ণ), এবং পঞ্চ মহাতৃত (ক্ষিতি, অপ্, ভেজ, মরুৎ, ব্যোম) এই চৰ্বিশ্যী ভব্ন স্ক্ৰীৰ উপাদান স্বৰূপ। এই চৰ্বিশ্যী ভব্ন প্ৰস্পৰ হ'তে উৎপন্ন হ'ন্বেছে, তার ভাৎপর্যার্থ এছ যে পুরুষ হ'তে প্রকৃতি, প্রকৃতি হ'তে মহৎ মহৎ হ'তে অহংকাব, অহংকাব হ'তে মন, পঞ্চ জ্ঞানেন্দ্রিয় পঞ্চ কন্মেন্দ্রিয় এবং পঞ্চ তন্মাতা, পঞ্চ তন্মাতা হ'তে ক্ষিত্যাদি পঞ্চ মহাভত। এই সৃষ্টি তত্ত্বে সোজা মানে এই বে, প্রকৃতি স্বয়ংই পর্যায় ক্রমে তত্তপ্রতিতে পবিণত হ'রেছেন। যেমন দট মাধন, মওরা, ছানা, ক্ষীর ইত্যাদি এক চুধ থোকট উৎপন্ন চন্ন, অর্থাৎ গ্রধই নিজে সেই গুলিতে পবিণত হয়। তন্তগুলি প্রকৃতি থেকে সেইভাবে হ'রেছে। व्यक्तिकारी এই मनवर्तव पावा এই जन् क्रमा करिव्हिन, अवर জগতত্ব সমন্ত প্রাণীদেব জীবনের বাবতীয় কাঞ্চ নির্বাহের জন্ম প্রাণী-দের শরারেৰ মধ্যে অরময়াদি পাঁচটা কোষ বা বিভাগ স্থাপন ক'বে-ছেন। প্রাণীদের জীবনেব প্রত্যেক কাজই ঐ পাঁচটা কোষ বা বিভাগ ঘু'রে এসে তবে সম্পন্ন হয়। কোন বিষয় যদি কোন একটী কোষ ৰা বিভাগে বাদ পড়ে, তাহ'লে সেই বিষয়টা কথনই কাৰ্য্যে পবিণত হ'তে পাবে না।

শিষ্য। আমি দেখ্ছি প্রাকৃতিই সব ক'ব্ছেন, তা'হলে প্রন্থ (আআম) যে সকলের উপবে আছেন তিনি কি করেন ?

ঁগুরু। প্রকৃতিব আশ্রম এবং দর্মময় কর্ত্তা যে পুরুষ (আশ্বা)

প্রক্তিকে বিশ্ব কর্ম্বে নিয়োগ ক'বে স্বয়ং নির্নিপ্রভাবে উদাদীনবং অবস্থান কব্ছেন এবং তিনি আছেন ব'লেই প্রাকৃতিক কাজ সব চ'লে গাণ্ক। ভগবান গীতাব ১ম্ অধ্যায়ের ৮ম্ শ্লোকে ব'লেছেন যে,

> প্রকৃত স্বামবন্টভ্য বিস্ফামি পুনঃ পুনঃ। ভূতগ্রাম মিমং কৃৎস্নমবশং প্রকৃতের্বলাৎ ॥

আমি মদধীন প্রকৃতিতে এধিষ্টিত হ'য়ে, অবিজ্ঞাপববশ ভূতগণকে বাবস্থার স্টিক'বে থাকি। এই স্টাদি কার্যা তাবই কর্ত্বাধানে হচ্ছে, কিছে তিনি দোসীনবং থাকার অধীং কর্ত্বাভিমান না থাকাব জ্ঞাতিনি ধে কর্দেশে (কর্মানে) আবদ্ধ হন না তা পবের লোকে অর্থাৎ ৯ম্ লোকে ব'ল্ছেন বে,

নচ মাং তানি কর্মাণি নিবগ্নস্তি ধনঞ্জয়। উদাসীন বদাসীন মসক্তং তেয়ু কর্মস্ত

হে ধনপ্রয়। আমি এই স্টোদি কাথ্যে মনাসক্ত ব'লে উদাসীনবৎ থাকি, সেইজন্ত এই সকল কল্মে (কল্মফন) আবদ্ধ ক'ৰ্ডে পাবে না। আর তিনিই যে সর্বানয় কর্ত্তা, এবং তাঁব অধিষ্ঠান হেতুই প্রকৃতি যে সব ক্রুতে সমর্থা তাও তাব পবেব শ্লোকে অর্থাৎ ১০ম শ্লোকে বলেছেন যে,

> ময়াধ্যক্ষেণ প্রকৃতি সূয়তে সচরাচরম্। হেতুলানেন কৌত্তেয় জগদ্বিপরিবর্ত্ততে॥

কে কোন্তের। প্রকৃতি আমার অধিষ্ঠাস লাভ ক'রেং, এই সচরাচর বিশ্ব স্থাষ্ট করছেন; এবং আমার অধিষ্ঠান হেতৃই ইহা (দগৎ) প্র: পুন: উৎপন্ন হচ্ছে ৷ এখন বুঝ ভে পাৰ্লে যে প্ৰকৃতি কেন এবং কি রুজমে বিশ্ব বচনা এবং বিশ্বেব বাবভীয় কাজ নিৰ্বাহ ক'র্ছেন গ

শিষ্য। সৃষ্টি প্রকৃতিব দ্বাবার কি বক্ষ ভাবে হ'ছে এবং কেন ষে হ'ছে তা আমি এক বক্ষ বুঝ্লাম, কিন্তু প্রকৃতি অল্লমন্নাদি কোষ বা বিভাগ দ্বারা কি রক্ষ ভাবে জীবের জীবনের সমন্ত কাজ নি পাছ ক্র্ছেন সেইটা শু'নতে ইচ্ছা করি।

खक। প্রাণীদেব জীবনেব যাবতীয় কাল সম্পাদন কর্বার জন্ম প্রকৃতি কর্ত্তক ভূতগণের দেহে পাঁচটা কোষ বা বিভাগ স্থাপিত হ'রেছে। তাদের নাম যথা,—অস্তমন্ত্র কোষ, প্রাণমন্ত্র কোষ, মনোমন্ত্র কোষ, বিজ্ঞান ময় কোষ ও আনন্দময় কোষ। এই সব কোষ বা বিভাগগুলি কাৰ্যা-সূত্রে পরস্পর সম্বন্ধবিশিষ্ট। এংন এক একটা কোষ বা বিভাগের কাল শোন। অলমর কোষ অন্নবদে উৎপত্তি, অন্নবদে পরিপৃষ্ট ও পরিবদ্ধিত করা এবং শেষে অন্নরসেতেই লীন করা, অর্থাৎ এই সুলদেহ পুথিবীর রসে উৎপন্ন হয়, পরিপুষ্ট ও পরিবদ্ধিত হয়, এবং শেষে পৃথিবীতেই লীন হয়। এই বুলদেহটা প্রাকৃতিক কার্যানির্বাহের আফিস বর ব্দ্রপ। সুলদেহের উৎপত্তি করা, পরিপুষ্ট করা এবং নাশ হ'লে পৃথিবীতে মিলিয়ে দেওয়া, এই অন্নময় কোষ বিভাগের কাজ। প্রাণময় কোষ, প্রাণানি পঞ্চ প্রাণ ও বাগিক্রিয়ানি পঞ্চ 'কম্মেক্রিয় কার্য্যস্তাত্ত যে একত্ত হয় তার নাম প্রাণময় কোষ। মনে হত কিছু সংকল বিকল উৎপর করা এই প্রাণময় কোষ বিভাগের কাজ। মনোময় কোষ, মন এবং পঞ্চ জ্ঞানেজিয় কাৰ্যাহতে যে একত হয় তার নাম মনোময় কোষ। প্রাণময় কোষ থেকে যে সব সংকল্প উঠে ভদ্মুদারে আকাজ্ঞা উৎপন্ন করা, অর্থাৎ ইচ্ছা ও আস্তিক জনান এই মনোময় কোষ বিভাগের কাজ। বিজ্ঞানময় কোষ, বুদ্ধি ও পঞ্চ জ্ঞানে হিলা কার্যাসতে বে একত হয়, তাব নাম বিজ্ঞানময় কোষ। মনোময় কোষ থেকে যে বিষয়ের আকাজ্ঞা উৎপন্ন হয়, সেই ঈন্সিত বিষয়ের বস্তুজ্ঞান জন্মান, এই বিজ্ঞানময় কোষ বিভাগেব কাজ। আনন্দময় কোষ, বিজ্ঞানময় কোষ থেকে অভীষ্ট বস্তুর যে জ্ঞান জন্মায়, তদমুসারে সেচ ঈন্সিত পদার্থ প্রাপ্ত হ'লে পব তা দেখে কি উপভোগ ক'রে আনন্দ উৎপন্ন কবা, এই আনন্দময় কোষ বিভাগেব কাজ এখন বিচাৰ ক'রে দেখ যে জীবেব জীবনেব ষাবতীর কাজ এই পাঁচটা কোব বা বিভাগ বৃ'বে ভবে সম্পন্ন হচ্ছে। প্রকৃতি দেখাৰ কাব্যপ্রশালা কেমন স্কৃত্যুজ্ঞাবিদ্ধ দেখ। গ্রেণ্ড মান্টের অফিল কোথার লাগে।

শিয়া। আপনি বে ব ল্লেন, জগডের সমস্ত পদার্থই ভড় কেবদ একমাত্র প্রথাত্মাত চেতন। হাচ্ছা, তাহ'লে এই নায়া বা পাকৃতি জড়না চেতন ?

শুফ। সাধারণতঃ প্রকৃতিকে ১ ডই বলে, কিন্তু বিচাব ক'রে দেখালৈ গোল্যাগ উপাস্থত হয়। প্রকৃতি দং নন, বাহ্নিক নাশ লাছে, অর্থাৎ বিশের কার্যা থেকে অওহিতা হন। আবার অসংও ব'লতে পারা যার না, কেননা প্রকৃতপক্ষে প্রকৃতিব নাশ হয় না, তিনি পরমান্মায় লান হ'রে তাতেই অবস্থান করেন। মায়া বা প্রকৃতি প্রমান্মায়ই শক্তি। এখন শক্তিকে শক্তিমান থেকে কি আলাদা কব্তে পারা যায়? যতাদিন শক্তিমান থাকে ততদিন শক্তিরও অক্তিম্ব থাকে। মায়া, প্রকৃতি, শক্তি যাই কেন বলনা ভিনি পরমান্মাতেই মিশে থাকেন। পরমান্মার মন্তদিন অন্তিম্ব আছে। কেননা, প্রকৃতি পরমান্মারই অঙ্গীভূত, স্কৃতবাং পরমান্মা হা প্রকৃতিও ভাই, কাজেই শক্ষ অথবা স্থুল এ ফ্রির একটাও নন। ভগবানও এই প্রকৃতি সম্বন্ধে গীতার গম অধ্যায়ের ১ম স্লোকে ব'লেছেন যে,

অপরেয় মিতস্তুস্থাং প্রকৃতিং বিদ্ধি মে পরাম্। জীবভূতাং মহাবাহো যয়েদং ধার্য্যতে জগৎ।

ছে নহাবাহো। এই যে মন্তবা প্রকৃতি (পূর্ব্ধ স্লোক কথিত) অপবা অর্থাৎ নিকৃষ্টা। এ ছাড়া আমার আবন্ত একটা পরা মর্থাৎ উৎকৃষ্টা চেতনমন্ত্রী প্রকৃতি আছেন, তিনিই এই জগৎ ধারণ ক'বে বেথেছেন, অর্থাৎ এই বিশ্বের সৃষ্টি স্থিতি-প্রশন্ন তার বাবা সম্পন্ন হচ্ছে।

শিশ্ব। আমার মনে একটা সংশর হচ্চে। জগতে সুদ্ধ ও স্থুল এই হুই রকম পদার্থ আছে। আপনি বল্ছেন প্রাকৃতি এ চুটার একটাও দম, ভবে তিনি কি গ

গুল এ গুলৈত প্রমান্তারই একাতৃত, প্রমান্তা বধন স্ক্র অথবা সুল এ গুলির একটীও নন, তখন প্রকৃতি স্ক্র অথবা স্থল কি ক'বে হ'তে পারেন ? প্রমান্তা বে কেমন, ভগবান তা গীতাব ১০শ অধ্যায়ের ১২শ প্রোকে ব'লেছেন যে

জ্ঞোং যৎতৎ প্রক্ষ্যামি যজ্ জ্ঞাত্বাহয়ত মগ্লুতে। অনাদি মৎপরং ব্রহ্ম ন সংতদ্ধা সমূচ্যতে ॥

হে অর্জুন! এখন জের বলি শোন। যা জান্লে লোকে মোক্ষণাত করে। অনাদি ও নির্কিশেষ শ্বরূপ ব্রন্ধই জের, তিনি সংও নন অসংও, দন অর্থাৎ স্ক্রেও নন কিয়া ছুলও নন। এখন তেবে দেখ প্রাকৃতি প্রেষ ছইই এক। প্রন্থই প্রকৃতি ব'লে কাথত হন। স্টোদি লীলার জ্ঞ যখন প্রয়োজন হয়, তথন ভগবান দ্বীর তেজ প্রভাবে স্বর্গই স্ক্রের্রণে প্রকৃতি নামে প্রকৃট হন, এবং বিশ্বণাত্মিকা মারা অর্থাই কার্যকারিণী শক্তিবিশিষ্ট হন। তার মানে পরমাঝাং স্বন্ধং মায়া। শক্তি প্রকাশ অবস্থায় প্রকৃতি ব'লে কথিত হন। পূজাপাদ ঐধ্য স্বাধী ব লেছেন যে,

পুং প্রকৃত্যো স্বতন্তবং বারয়ণ গুণ সঙ্গতঃ।

প্রাকৃতি স্বতন্ত্র বস্তু নয়। পুক্ষ গুণসংযুক্ত প্রকাশ) হলেই তথন তাকে প্রকৃতি বলে। আর নিগুণ অর্থাৎ গুণ অপ্রকাশ গ্রন্থায় তাঁকে পুরুষ বলে।

শিশু। আজা হা, এখন আমি বুঝ্লাম যে প্রকৃতিকে প্রমাজা থেকে পৃথক্ করাব যো নাই। এখন সংসারী জাঁব মায়ামুগ্ধ হ'রে কি রক্ম দশাগ্রস্ত হয়েছে, এবং তাদের উপায় ও কর্ত্তবাই বা কি সে সম্বন্ধে কিছু শুন্তে ইচ্ছা করি।

গুরু। আজা, আৰু পাব আবাৰ কাল হবে।

সপ্তম দিন।

শিয়। কা'ল যে আমার প্রশ্ন আছে সেই বিষয়টা আছ বলুন।

ওরু। আছো শোম, বিষ্ণু কি ক'রে প্রভবিষ্ণু হয়েছেন, এবং অবৈতভাব কি ক'বে বৈতভাবে পবিণত হ'য়েছে। ঈশ্বর বিশ্বরাজ্যের অধিপতি এবং সৃষ্টিকর্তা, পালনকর্ত্তা ও সংগ্রাবকর্তা। এইটা তার দীলা। কেন বে িনি এ লালা কৰ্ছেন, তা সেই লীলাময় ভিন্ন অন্তে কেও জ্বানে না। পৃথিবী একটা নাট্যশালা স্বৰূপ, গামরা জাব সকলে অভিনেতা স্বরূপ, এবং ঈশ্বর বন্ধং দ্রপ্তা অর্থাৎ দর্শক স্বরূপ। এখন থিরেটাবের অভি-নেতাব৷ দৰ্শকমণ্ডলাকে সম্ভষ্ট কথাৰ জন্ত বেমন যত্ন ও সাৰধানতাব সহিত অভিনয় কৰে, কেন না, অভিনয় খাবাপ হ'লে দৰ্শক নৰ অসম্ভুষ্ট হৰে কাজেই তাদের পদার মাবা যাবে, স্থতরাং ভাতে তাদেব সমূহ ক্ষতি। তেমনি আনাদের ঈবরকে সম্ভট কব্বাব জগু আমাদেবও ষত্ন ও সাবধান-তাব সহিত অভিনয় করা উচিত। কেন না, আমাদেব অভিনয় থারাপ হ'লে দর্শক ঈশ্বব অদপ্তই ২বেন, তাতে আমাদেরও সমূহ ক্ষতি। জীবনে আমবা যা কর্ম্ম করি তাই আমাদের সভিনয়। থিয়েটারের অভিনেতা ও সংসাবের শ্বভিনেতা এতত্বভন্নের মধ্যে একটা গুক্তর পার্থকা আছে। থিখেটারের মভিনেতাগণ কেও রাঙ্গা, কেও মন্ত্রী ইত্যাদি সেঙ্গে অভিনয় কবে ধটে, কিন্তু তারা মনে ঠিক ধাবণা রাখে যে, আমবা রাজা অথবা মন্ত্রী ইত্যাদি কিছুই নই, কেবল অভিনন্ধেব জ্ঞা সাঞ্চ সেজেছি মাত্র। সংসার্কপ বঙ্গাঞ্চে অভিনয় কর্বার জন্ত, ভগবান আমাদেরকে মায়া জডিত ক'বে নানা সাজে সাজিয়ে পাঠিয়েছেন। এখন থিয়েটাবের মভি-নেতারা মনে যেমন ঠিক জানে যে, তারা অভিনয়ের জন্ম সাজ সেজেছে

মাত্র তাবা কিন্ত আলাদা। পরস্ত আমরা (সাংসারিক অভিনেতারা) সে ভাৰটী মনে ধাৰণা কৰ্তে পারি না। কেন না, প্রকৃতিস্থ অবিজ্ঞা **ष्ट्रिक व्यहरकारवत्र नगरको २७द्वारक, व्यामवा मारक्षत्र मरक्ष व्यापनारम्बरक** জড়িয়ে এক ক'রে ফেলি। কাজেই সংসার বন্ধনে প্নঃ পুনঃ আবদ্ধ **६** । এই व्यर्थ छान हे मध्यांत्र वक्तन्त्र मधीत चक्त ७ मह९ छु: ध्व কাবণ। থিয়েটাবেব অভিনেতারা শোক, চঃখ, হাসি, কালা এবং ক্রোধাদি अखिनरम्ब क्य या किছ करत, ममछहे सोथिक, वर्थाए व्यस्त जाव दिन्-মাত্রও স্পর্ণ হর না, স্থতরাং তাদের মনে কোন বিকারও উৎপন্ন হর না। কাজেই তারা নিবিবকার চিত্তে আনন্দ ও উৎসাধেব সহিত অভিনয় ক'রে লোককে দেখার এবং নিজেরাও আনন্দ পেরে থাকে। অতএর আমাদের দাংসারিক সব অভিনর অর্থাং কাজ, থিয়েটাবের অভিনেভাদেন মত क्रब्र'रा हरव এवर मरनद्र छाया जाराह्य मा निम्मकाव वाथ्रा ६८व । र्यमन घটनाई चंद्रेक ना रकम, विहारवत हाता भरनव निर्विकाव व्यवहा রাথ্তে হবে , কিন্তু সেই বিচার কব্তে গেলে একট্ জ্ঞানের সাহায্য চাই। পরস্ক মায়াবন্ধ সংসারী জাবের সে জান অনুভবে আসা এক রকম অসম্ভব। কেন না, বিনা সাধনায় সে অপ্তৰ আসে না, কিন্তু সংসারী লোকের भएक (म माधना मछवशद व'त्य मत्म स्थ ना।

শিষা। তা হ'লে সংসাবী লোকের উপায় কি এবং কর্ত্তবাই বা কি ? গুরু। বৈতভাবের আশ্রেম নেওরা কর্তবা এবং ঈশ্ববের শরণ নেও-রাই একমাত্র উপায়। এর ভাংপর্যা এই যে, সকলেরই এইটা ভাবা এবং বিশ্বাস করা উচিত বে, ঈশ্ববই এই লীলা কর্ছেন, স্বতরাং তিনি তাঁর ইচ্ছামত সব কর্ছেন। কাজেই তিনি বেমন করাছেন আমরাও তেম্নি কর্ছি। ভগবানও গীতার ১৮শ অধ্যানের ৬১টি শ্লোকে ডাই শ্লৈছেন যে.

ঈশ্বব সর্বস্থিতানাং হাদ্দেশেহঅর্জন তিষ্ঠতি। ভাময়ন্ সর্বস্থিতানি যক্তর্যানি মায়য়া॥

হে অর্জুন! বেমন লোকে দাক্ষত্ত্তে আর্মচ ভূত নাচিয়ে থাকে, তেমনি ঈশ্বর ভূতগণের স্থদয়ে অবস্থান ক'বে তাদেবকে ভ্রমণ করাচ্ছেন, অর্থাৎ সব করাছেন। বখন সমস্ত কাজই তাঁৰ ইচ্ছান্ন হচ্ছে, তথন আমরা কর্ত্তা কিনে ? আর তিনি যা করছেন তা আমাদেব মঙ্গলেব জন্তই করছেন। কেন না তিনি মলণময় অমলনেব কার্য্য তার দ্বাবা হ'তে পারে না। সেই জন্ম ভাব একটা নাম শিব , এবং তিনি পরম দম্বাল, নির্দ্দমতার শেশমাত্রও তাঁতে নাই. সেই জন্ত একটা নাম তাঁর দল্লামন্ত্র। স্থতরাং ভিনি যে সততই আমাদের মঙ্গণেব চেষ্টা করছেন মনে এই ধাবণা দুঢ়-ভাবে রেখে, সাংসারিক স্থথ তঃখ সকল অবস্থাতেই তাঁর সেই মঙ্গল উদ্দেশ্য স্থাবণ ক'রে মনকে স্থিব রাখ্তে হবে। তিনি মে নিশ্চয়ই আমাদের মঙ্গণ করনেন (বটেও তাই) এই বিখাদের সহিত তাব প্রতি ভক্তি প্রেম করতে হবে। তাহ'লে তখন গাবই রূপার মনের সাম্যাবস্থা ণাভ হবে। যে ভাগাবানের যথন মনের সামাবিস্থা লাভ হর, তথন জানতে হবে যে দে ব্যক্তির ভবষত্রণা থেকে নিম্কৃতি পাওয়াব আব বড় বিশ্ব নাই। ঈশ্বরে যে বিশাস স্থাপন কুর্তে পারে, অর্থাৎ তার উপর সম্পূর্ণ নির্ভর কব্তে পারে, তার আব কোন ভাবনা থাকে মা। ভগবান তার সকল কান্ত নির্মাহ করেন। ভগবান সে কথা গীতার ১ম অধ্যা-মের ২২শ লোকে ব'লেছেন যে.

অনন্যাশ্চিন্তথকো নাং যে জনা পয়ু পোসতে।
তেষাং নিত্যাভিযুক্তানাং যোগকেমংবহান্যহম্॥
যারা খনভাবনে আমাকে চিন্তা ও জারাধনা করেন, আমি দেই সৰ

भरतक निर्ष्ठ छक्रपात्र साथ ७ क्कम वहन कति। अधारा वस्त्र आर्थित চেষ্টার নাম যোগ, এবং প্রাপ্ত বস্তুর রক্ষার চেষ্টার নাম কেম। এর তাৎপর্য্যার্থ এই যে, ভগবান ব'লছেন যে, আমার অনন্ত ভক্তদের উপা-র্জ্জন ও রক্ষার চিন্তা করবার কোন দরকার নাই, যে হেতু সেসব ব্যবস্থা व्यासिटे करत थाकि। छएकत बाता छगरान व'ता थाकन कथात वरन তা শোননি । তোমাকে একটা গল্প বলি শোন। ভাহ'লে বুঝুবে বে ভগবান ভক্তেব জন্ম কি করেন। একটী গরিব লোক থেসেডার কাঞ্চ ক'রে খেত , কিন্তু সে লোকটা ব্রব ভগনৎপবারণ ছিল। লোকটার বয়স বেশি হ'লে দে সংসার ত্যাগ ক'রে গেল, এবং কেবল ভগবত্রপাসনায় জীবনের অবশিষ্ট সময়টা কাটাবে ব'লে, নর্মদা কিনারার একটা বড জঙ্গ-লের মধ্যে ভপ্তা কবতে লাগ্ল। গৃহত্যাগ ক'বে ধারাব সময় কেবল খাস ছেলা খুরপিথানি সঙ্গে নিধেছিল। উদ্দেশ্য এই যে, যদি কোন দিন জিক্ষা না মেলে, তাহ'লে বাস ছিলে বেচে হু চা'র পয়সা হ'লে তাতেই দেদিন গুজরান কববে। এইকপে মাসাবধি সে সেই জন্পলে আছে এবং যেদিন ভিক্ষা না মেলে সেদিন সে থাস বেচে চালার। ইতিমধ্যে একদিন স্কাল বেলায়, তীব্ৰ বৈরাগ্যপ্রাপ্ত সংসাবভ্যাগী একজন রাজা তপস্তার মভিপ্রায়ে দেই জঙ্গলে এদে উপস্থিত হ'লেন; এবং সেই ঘেষেতা থেকে একটু দূরে এক গাছতলার আসন করে ব'সে ধ্যানে নিমগ্র হ'লেন। বেলা ১২টার সময় একজন ব্রাহ্মণ একথানা বত থালায় ক'রে নানাবিধ বাজভোগ ও এক ঘটা জল নিম্নে এলে রাজাব সাম্নে উপস্থিত হ'মে বল লেন যে, মহারাজ। ভোজন কব। রাজা চোথ খু'লে দেখ লেন এবং তার্থেকে কিছু নিয়ে থেশেন। এক্মিণের থালায় চারজন গোকের খাবার উপযুক্ত খান্ত ছিল, স্বতরাং ব্রাহ্মণ প্রায় সবই ফিরে নিয়ে গেল। দেই **থেসেড়া তার আসনে যদেই এই ব্যাপার দেখ্**ল। এইরূপে জ্ঞান্ত্র জিন দিন গেলে পর, দে একদিন বাজাব নিকট পিয়ে বল্লে যে, নহালদ। লাজন যে বাজ জাপনার খানাব নিরে আসে তা চাবজনেব থোবাক্। আপনি ত দামাল্ল খান, ব্রালণ প্রায় সরই ভ কিরে
নিয়ে যার। আমি এপানে ভল্পন সাধন কর্ছি, আপনি দয়া ক'রে
যদি মামালে কিছু দেবাব জল্ল ঐ লাক্ষণকে ব'লে দেন তাহ'লে বদ্র
উপকার হন। বাজা বল্লেন ঘাজা ব'ল্ব। তারপব লাজন খানার
নিয়ে এলে, বাজা লাজনকে সেই কথা বল্লেন। তাতে লাক্ষণ হেমে
রাজাকে এই উত্তব দিলেম যে, মহাবাজ। ঐ লোকটা যথন খ্রুপি
ছাডা চাই। অহংকাবের বশবর্তী হ'বে, লাক্মির্ভব না ক'বে মল্পুর্বরূপে
কথরের উপব নির্ভাগ করা। চাই। মানুবেৰ কর্ত্তরা বে, সকল কর্মের
জল্লই বত্র, চেইটা ও ক্রেম করা, ফাম্বেন কর্ত্তরা বে, সকল কর্মের
জল্লই হরে, আমি কিছুই জানিনা, এই ধাবণাটা মনে বেপে চেইটিদ
কর্তে হয়।

শিক্ষা স্বাক্তা হা, তার উপর সম্পূর্ণ নির্ভব না কব্লে তিনি দেখ্বেন কেন ব এখন মায়াব কথা যে হচ্ছিল তাই বলুন।

ওক। তোমাকে বল্প ম বে, তগবান আদাপেবকৈ মায়াজডিত ক'বে সংসাবে পাঠিয়েছেন, এবং সেই নাম্বাই সংসাব বচনাব মৃণভিছি। বাস্তবিক, মান্তালু হ'বে এক মুহর্ভেই সাংসাবিক সব অভিনয় বন হ'য়ে যায়। সেইজ্ঞ চন্তীতে ব'লেছেন বে, "মহামান্তা প্রভাবেন সংসাব স্থিতি-কাবিণঃ"। ভগবানও গীতাতে মান্তাকে কঠিন ব'লে উল্লেখ কবেছেন। হাছ। মান্তাতে মুগ্ধ হ'য়ে জীব এ সংসাবে কত খোলাই পেল্ছে এবং কভ কন্তই পাছেছ। বহু বছ যোনা ভ্রমণ ক'বে, সর্ব্ধেশ্বে জীব যে উদ্দেশ্যে মহক্ত যোমীতে জন্ম পেরেছে, মান্তা সে উদ্দেশ্যও সিদ্ধ হ'তে সেয় না।

ঈশরকে দেখ্তে কিমা জানতে দেয় না, এমন কি মনে সে খেয়ালও व्यम्हिक एम ना। कि अ यहि वर्णन त्य, हर्यहरक क्षेत्रेवरक हर्मन हम् ना, একথা স্বীকার কর্তে পাবা যায় না। তিনি নিরাকাব হ'য়েও দরকার হ'লে আঁকার ধাবন কবেন। তার অতুলনীয় অভাবনীয় জ্যোতিঃ এবং উপাস্ত মূর্ত্তি ভক্ত চর্ম চক্ষেই দেখতে পার! তাঁব স্বরণ নিরাকার বটে, কিন্তু তিনি সাকার হ'তে পারেন না একথা বললে তাঁব ক্ষমতার সাঘৰ क्त्रो रुम । जिनि नरहे ह'एक भारतन এবং এই विरय या किছ एमथ्एक পাচছ এ শব জাঁরই প্রতিমূর্টি, কেননা, তিনিই বিথে পবিণত হ'য়েছেন। তিনি কেবল ভাবের বশু ভাবেব শ্বভাব হ'লে আর তাঁকে পাওয়া যায় না। এখন বেমন ক'রে হ'ক মনের মধ্যে তার সম্বন্ধে বে কোন একটী ভাবের ব্দ্দাট বাধা উচিত। যে কোন মূর্ত্তিব উপাসনা কর না কেন, ভা তাঁরই উপাসনা কবা হয়। কারণ, তিনি ছাড়া কোন দেবভা নাই। কেননা, **শমস্ত দেবতাই তাঁ**র স্থানসভূত। স্থতরাং নিরাকার এবং সাকাব ছুই উপাদনাই তাঁব গ্রাহ্ন। যে কোন দেবতার উপাদনা কব না কেন. উপা-সনাব ফল যে তিনিই দেন, সেকথা ভগবান গীতাব ৭ম অধাায়ের ২১শ ও ২২শ শ্লোকে ব'লেছেন যে.

যো যো যাং যাং তকুং ভক্তঃ প্রদ্ধবার্চিতু মিচ্ছতি।
তক্ত তক্তাচলাং প্রদ্ধাং তামেব বিদ্ধাম্যহম্॥
সতয়া প্রদ্ধবা যুক্ত স্তক্তারাধন মীহতে।
লভতে চ ততঃ কামান্মযৈব বিহিতান হিতান॥

আমার যে যে ভক্ত মদীয় দেবতা রূপ যে যে মূর্ত্তিকে প্রদার সহিত অর্জনা করে, আমি সেই সেই ভক্তকে আমাব সেই সেই মূর্ত্তিবিষয়ক তাদৃশ শ্রদা দিয়ে থাকি, এবং তাদৃশ শ্রদাযুক্ত সেই সেই ভক্ত দেবতারূপে আমাব বে যে মূর্ত্তির আরাধনা করে, তারা আমাকর্ত্ক বিহিত কামনা সকল নিশ্চর লাভ ক'রে থাকে। এখন দেখ ঈশ্বর নিরাকার হয়েও সাকার।

শিষ্য। ঈশ্বর নিরাকার হয়েও সাকার এ রহস্ত আমি বুরুতে পাছিছ না।

শুক। শাস্ত্রে ঈশ্বরকে নিবাকার বলে। নিবাকাব শব্দের চুটী মানে আছে। নিঃ নান্তি আকারোয়ন্ত, অর্থাৎ যাব আকার নাই। এই একটা মানে। আর একটা মানে এই যে, নিঃ নান্তি আকারোয়ন্তাৎ অর্থাৎ বার পৃথক আকার আব নাই, ভার মানে তিনি সর্ব্বকাব। তাহ'লে এখন দেশ ঈ্থব নিরাকার হয়েও সাকার। এ জগতে যা কিছু দেখ্তে পাচ্ছ সব তাঁরই আকাব। তিনি দরাময়, জীবেব প্রতি দরা ক'রে তিনি সবই হ'তে পাবেন। সমস্ত জীবেব প্রতি তিনি কেবল দয়াই কবেন নির্দিশ্বতার লেশমাত্র নাই।

শিষা। আপনি বল্ছেন ঈশ্বর জীবেব প্রতি কেবল দয়াই করেন নির্দিয়তার লেশমাত্র নাই। ভাহ'লে পাপী কদাচাবী অভক্তকেও কি তিনি দয়া ক'রে থাকেন ?

গুক। তা করেন বৈকি। তার কাছে পাপী পুণাবানের ভেদা-ভেদ নাই। সে কথা ভগবান গীতাব স্ম্যধানের ২৯শ প্লোকে ব'লে-ছেন বে,

সমোহহং সৰ্বভূতেয়ু ন মে ছেখ্যোহস্তি ন প্ৰিযঃ। যে ভজন্তি তু মাং ভক্ত্যা মযি তে তেয় চাপ্যহম্॥

আমি সর্বভূতে সমদশী অর্থাৎ সকল প্রাণীই আমার কাছে সমান। জগতে আমার কেও দ্বেয়া (শক্রু) নাই কেও বন্ধুও নাই। তবে যে আমাকে ভজনা করে দে অনুনাগবশতঃ দে আমাব নিকট থাকে এবং আমিও তার

নিকট থাকি। ভগবানেৰ এই স্বভাব। তিনি সকলকেই দ্যান দেখেন। জীবেৰ আপন আত্মার প্রতি ধেমন মমতা, এ জগতে যাবতীয় প্রাণীর প্রতি ভগবানেৰ দেই রকম মমতা।

শিষ্য। যাবতীর ভূতগণকে ঈশ্বব আত্মাব মত মমতা কবেন কেন !
গুক্ষ। জীবে যেমন নিজেব প্রতি নিজে মির্দিয় হ'তে পারে না,
ভগবানও তেমনি প্রাণীগণের প্রতি নির্দিয় হ'তে পাবেন না। কাবণ,
বিষ্ণুই প্রস্তবিষ্ণু হয়েছেন। অবগ্র তিনি ভিন্ন অপব কেহ গাক্লে তিনিও
নির্দিয় হ'তে পাব্তেন তিনি নিজেই বে সব প্রাণী।

শিশু। বিনি এত বভ দয়াল, সেই পবন করুণাময় প্রমেশ্র মায়ার কঠিন যন্ত্রণার হাত খেকে লোকের উদ্ধাব পাওরাব কোন উপায় রাধেন্ নি ?

শুক । উপায় রেখেছেন বৈকি। ভগবান গীতাব ৭ম্ অধ্যায়েব ১৪শ লোকে ব'লেছেন যে,

দৈবী হ্যেষা গুণমৰ্যা মম মাথা ছুৱত্যধা। মামেৰ যে প্ৰপদ্মন্তে মাধা মেতাং তর্রাওতে॥

হে অর্জুন। অলৌকিক গুণমন্ত্রী নিতান্ত হস্তবা আমার এক মান্না আছে, বারা আমাকে আশ্রম কবে, তানাই ঐ মান্যা অতিক্রম করতে পাবে। মহাত্মা তুলসী দাসজী ব'লেছেন যে,

চল্তি চাকী সব কৈ দেখে কিল্ দেখেনা কৈ। যো কিল্ পাকড় কে রহে ঐ সারুদ রৈ।

বেমন ডাল ভাজনার সময় শতের দানা যারা চাকীব লীচে থাকে ভারা ডেলে ডাল হয়, কিন্তু চাকীর খুটোব নিকট যে স্ব দানা থাকে তারা ভালে না। তেমনি সংসারস্ত্রপ চাকীর ঈশ্বরত্রপ খুঁটোর নিকট থারা থাকেন, তীরাও সংসারে ঘু'বে ঘু'রে পেবাই হন না অর্থাৎ পুনঃ পুনঃ ক্তম্ম মৃত্যুব অধীন হন না। অতএব লোকের ভগবদ্ উপাসনা করা এবং তাঁর আশ্রম নেওয়া একান্ত কর্ত্ব্য। নচেৎ ছুগতি অনিবার্যা।

শিষ্য। লোকেব ষধন এই অবস্থা তখন তারা ভগবানেব শরণ নেম্ব না কেন ?

গুরু। সাধারণ লোকের ভগবদ্ উপাসনা না করা অথবা তাঁর শরণ না নেওয়ার ছটা কারণ আছে। একটা কাবণ ভগবান গীতার ৭ম্ অধ্যায়ের ২৮শ শ্লোকে বলেছেন যে,

যেষাং ত্বন্ত গতং পাপং জনানাং পুণ্য কৰ্মাণাং। তে ছন্দো মোহ নিমুক্তা ভজন্তে মাং দৃঢ ব্ৰতা।

যে সমস্ত পুণ্যকর্মা ব্যক্তিদের পাপ বিনষ্ট হ'রেছে, এবং দল্জনিত মোহ জ্পণত হয়েছে, অর্থাৎ থাদেব শীত উষ্ণ, স্থপ ছঃখাদিব জ্বন্ত মন বিচলিত হয় না, সেই সব কঠোর ব্রভপরায়ণ মহাআবাই আমার উপাসনা ক'রে থাকেন। তাহ'লে যে ব্যক্তি ব্তদিন পাপাক্রান্ত থাক্বে, ততদিন ভার জ্পবানেব দিকে মন যাবে না। আর বিতীয় কাবণ হচ্ছে চিত্তভ্জি লাভ না করা। চিত্তভ্জি লাভ না হ'লে ভগবানেব দিকে মন যার না, কিছা নিজ্পাপ হলেও সকলের চিত্তভ্জি লাভ ঘটে না।

শিশ্ব। কেন ? নিপাপ হলেই ত চিতগুদ্ধি লাভ হবে।

গুরু। লোকে চিত্তগুদ্ধি লাভ না করেও কোন কারণে নিম্পাপ হ'তে পারে। পরস্ক, চিত্তগুদ্ধি লাভ না করার দক্ষণ আবার পাপকর্ম্মে লিপ্তও হ'তে পারে। চিত্তগুদ্ধি লাভ হ'লেই স্থায়ী নিম্পাপ হ'তে পারা যায়। এথন চিত্তগুদ্ধি লাভ কবে জগবানের শরণ নিতে গেলে, তদমুরূপ সাধনা এবং আচরণ কর্তে হয়। সাধারণ লোকে তা কর্তে পারেনা ব'লে ভগবানের দিকে মন ধায় না।

শিষা। কি রকম সাধনা বা আচরণের ঘারা চিত্তশুদ্ধি লাভ ক'রে ভগৰানেব শবণ নিমে তঃখদায়িকা মায়াব হাত থেকে উদ্ধার পাওয়া যায় ?

গুৰু। আৰু থাকু আবাব কা'লু হৰে।

অফ্টম দিন।

শিশ্য। আমাব কাল্কার প্রশানীর উত্তর আব্দ বলুন।

শুরু। চিন্তগুদ্ধি লাভ ক'রে ভগবানেব শর্প নেওয়াব উপার হচ্ছে নিক্ষান, অনাসক্ত ও নিরহংকাব হওয়। এই তিনটীর মধ্যে নিক্ষানই হচ্ছে মূল। অর্থাৎ নিক্ষানভাবে কর্মা কব্লে অনাসক্তি ও নিরহংকারিতা মনে ধাবণা হয়। অবশু এই তিনটী মনেব অবস্থা বা ভাব। এই ভাব তিনটী যথন মনে দৃঢ ধারণা হয়, অর্থাৎ পূর্ণ বিশ্বাসেব সহিত এই তিনটী ভাবেবই বশ হ'রে লোকে ধখন কর্মা কবে, তখন লোককে ক্ষমকলে আবদ্ধ হ'য়ে আর মায়াব হাতে পড়তে হয় না। কাজেই ভব্য়য়ণা থেকে নির্মৃতি পায়। কেননা, চিত্তেব গুদ্ধিলাভ হেতু মনে আকাজ্যা উৎপন্ন না হওয়াতে লোককে আব ফাসা'তে পাবে না।

শিয়া। এখন অনুগ্রহ ক'রে অনাগাক্ত, নিকাম ও নিরহংকার এই তিনটা ভাব বা অবস্থা আমাকে পৃথক্ পৃথক্ ভাবে ভাল ক'রে বুবিষে দিন।

গুরু। পার্থিব সমন্ত পদার্থেব উপর আসজিক্তীন হওয়ার নাম অনা-সজি। আসজি মানে অমুবাগ অর্থাৎ মনেব টান, সেই টানটা যদি না থাকে, তাহ'লে কোন ঘটনাতেই মন বিচলিত হয় না, স্মুডরাং কোন জিনিসের অভাবজনিত কষ্টও মনে হয় না, পাক্লেও যেমন গেলেও তেমন। মনের ঠিক এই অবস্থার নাম অনাসজি বা বৈরাগ্য। মনে এই বৈরাগ্যভাব হ'লে, তথন গা মন ঈশারেতে লাগে, নচেৎ নয়। শিষ্য। বৈবাগাভাৰ হ'লেই মন ঈশ্বরেতে লাগ্বে, নচেৎ লাগ্বে না তার কারণ কি ?

খ্রক। তাব কারণ এই যে, মনে অনাসক্তি বা বৈরাগ্যভাব এলেই, তথন মন সাংসারিক যাবতীয় পদার্থের প্রেম ত্যাপ কবে, অর্থাৎ কিছুবই উপর আব টান থাকে না, স্থতরাং নিরাবলগ হয়। মন কিন্তু সঙ্গী ছাড়া থাক্তে পারে না, এইটা তাব স্বাভাবিক ধশ্ব। এখন মন শাংগারিক যাবতীয় পদার্থে বাতপ্রদ্ধ হয়েছে, কিন্তু স্বাভাবিক ধন্মবশতঃ অপব কারও নঙ্গ কর্তে চায়। পরস্ব সংসারে ভাব বৈবাগ্য জন্মছে, কাঞ্চেই মন তথন সংসার ছাড়া অন্ত কিছু বৌজে, আর অমনি ভগবানকে পায় এবং তৎক্ষণাৎ তাঁতে লেগে যায়। কারণ, এই মান্ত্রাময় জীবসকুল পুথিবীতে তুইটা মাত্র পদার্থ আছে তা ছাডা আর কিছুই নাহ। একটা মায়াপ্রপঞ্চ নাশ্লীল পদাৰ্থসম্বিত সংসার, আব একতা মায়া-নিশুক্ত আৰ্থনানী আনন্দমন্ন ও শান্তিপ্রদ ভগবান। এই চুটার মধ্যে মন মান্নাপ্রপঞ্চ সাংসারিক পদার্থের সঙ্গ ত আগেই ছেডেছে, এবং এখন কারও সঙ্গে সঞ্গ করবার জন্ম ব্যাকুল হয়েছে, কাজেই এখন ভাব ভগবানই একনাত্র অবলম্বনীয়। সেই জন্ত মন তথন খুব আনন্দ ও উৎসাহেব সহিত ঈশবেতে দৰতোভাবে আদক্ত হয়। কাজে কাঞ্ছেই অনাদাক্ত বা বৈরাগ্য না হ'লে ভগবদ্ধকি কিমা ভম্বজান লাভ হয় না। সাংসারিক পদার্থের খেয়াল খাকলে ভগবানকে পাওরা যায় না, তাব একটা গল বলি শোন। একদিন শেব রাত্তে একটা চোর একজন ধনাতা শেঠের ধরে ঢুকে একটা বছমূল্য বড়ের পোট্লা চুত্তি ক'রে বেত্তিয়ে যাবার উপক্রম করছে, এমন সময় সেই গৃহস্বামী শেঠ জেগে উঠে দেখুলেন যে, চোর রত্নের পোঁটুলা চুরি ক'রে নিষে পালাচেছ। হওরাং তিনি আর শ্বির থাকতে পার্লেন না। তথন তিনি বেমন হড়্মুড় ক'রে থাটু

থেকে নেমেছেন, আর অমনি চোর বরেব বা'র ছ'রে ছটতে লাগুল। গৃহস্বামীও চোবকে ধরবার জন্তু চোরের পেছুনে পেছুনে ছুট্তে লাগ্লেন। থানিক দূর গেলে পর চোর বেগতিক দেখে, পৌটুলা থেকে করেকথানা রত্ব নিম্নে ডানে বাঁয়ে ছুঁডে ফেলে দিয়ে প্রাণপণে ছুট্তে লাগ্ল। গৃহস্বামী জাব্লেন যে, ভোর হ'রে এসেছে, কি জানি কেও যদি আসে এবং রত্ন কথানা কুডিয়ে নিমে যায়, ভাহ'লে অনেক টাকার জ্বিনিস যাবে। আছো। যা পাওয়া গিয়েছে সেগুলি ভ হওগত কবি, তাব পব চোবকে ধব্ব। লোভ প্রযুক্ত গৃহস্বামী মনে এইরূপ বিচার ক'রে বেমন বদ্ধ করথানি কুড়োতে গেলেন, তথম সেই অবসরে চোর অদুগু হ'য়ে গেল। কাজেই গৃহস্বামী নিক্ল-পায় হ'য়ে সেই কথানি রত্ন নিয়েই বাড়ী ফিরে এলেন। যদি ডিনি বত্নের দিকে থেয়াল না ক'রে, কেবল চোবেবই পশ্চাধাবন কব্তেন, তাহ'লে চোরকে নিশ্চর ধব্তে পার্তেন। গৃহস্বামী শেঠ বেমন করেকথানি রত্বেব প্রতি আকৃষ্ট হওরায় চোরকে ধবতে পার্লেন না, সংসারী জীবও তেমনি মান্নাময় সাংসারিক পদার্থে আরুষ্ট হওয়াতে ভগবানকে ধরতে পারে না! ভগবদপ্রদত্ত মায়াময় পার্থিব পদার্থে মন আরুষ্ট না হ'য়ে কেবল যদি ভগবানের দিকেই ধাবিত হয়, তাহ'লে তাঁকে ধ্ব্তে পাবা ষায়, নচেৎ তিনিও চোবেব মত অদৃগ্র হ'রে যান। ভগবান সাংসারিক एक कि एक खी. श्रुख, धन, ब्रध्न, मान, स्वामिष किरव ज्लिख त्वरथरहन। এখন যে গুড়ীর মন ভগবদপ্রদন্ত ঐ সকল পদার্থে আরুষ্ট না হ'য়ে কেবল ষদি ভগবানের দিকেই ধাবিত হয়, অর্থাৎ ব্যাকুল হয়, তাহ'লে সেই তাঁকে পায়, নচেৎ তিনিও চোরের মত অদুখ হ'রে যান। ভগবান আবার বোগী সন্মাসী প্রভৃতি ত্যাগী মহাত্মাদেরকেও অষ্ট-সিদ্ধাদি বিভূতি দিয়ে ভুলিয়ে থাকেন। যে মহাত্মা সেই বিভূতিতে আর্ম্ন্ট না হন, তিনিই বেৰণ ভগৰানেৰ নিকট পৌছিতে পাৱেন নচেৎ সৰ সিদ্ধ মহাত্মাদের শদা ঐ শেঠের মত হয়। তবে লোকসমাজে বুজ্ককী দেখিয়ে পূজা পেতে পারেন বটে, কিন্তু নিজেরা অধ্ঃপতিত হন। সে সপ্তরে ভগবান গীতার ৭ম অধ্যায়েব ৩গ্ন শ্লোকে ব'লেছেন যে,

মনুষ্যাণাং সহস্রেষু কশ্চিদ্ যততি সিদ্ধয়ে। যততামপি সিদ্ধানাং কশ্চিন্মাং বেদ্ধি তত্ত্বতঃ॥

সহস্র সহস্র অর্থাৎ বছ বছ নমুয়ের মধ্যে কেও কেও আত্মজান লাভের জ্ঞা প্রবত্ব করেন, এবং সেই সকল প্রয়ত্ত্বকারীগণের মধ্যে কেও কেও সিদ্ধি প্রাপ্ত হন। আবার সেই সব সিদ্ধগণের মধ্যেও কদাচিৎ কোন সিদ্ধ মহাত্মা প্রকৃত প্রভাবে আমাকে জান্তে পাবেন। তাব মানে এই বে, বিভূত্যাদি সিদ্ধি পেরে যাবা তাতেই ম'জে যান, তাবা আর ভগবান পর্যান্ত পৌছিতে পাবেন না। অতএব মনে বিচাবের দ্বারা কনাসক্তি

শিয়া। সাংসারিক সমস্ত পদার্থেব প্রতি আসক্তি ত্যাগ কব্লে গোকেব জীবনযাত্রাও নির্বাহ হয় না। আপনি কি ক'রে ব'লছেন যে, সমস্ত পদার্থেব আসক্তি ত্যাগ কবা কর্ত্তব্য।

গুরু। তুমি আসক্তি তাগের তাৎপর্যার্থ বুঝ্তে পারনি।
সাংসারিক পদার্থের প্রতি অনুবাগ অর্থাৎ মনের ঐকান্তিক টান নিষিদ্ধ,
ভোগ নিষিদ্ধ নয়। জীবনযাত্রা নির্বাহের জন্ম সংসারের ভোগা পদার্থ
অবশু ভোগ কব্তে হবে, কিন্তু অনাসক্ত ভাবে। তারই নাম অনাসক্তি।
আসক্তিতে যে কি অপকার হয়, এবং কি রকম ভাবে যে বিষয় ভোগ
কর্তে হবে, তা ভগবান গীতার হয় অধ্যায়ের ৬২, ৬০ ও ৬৪ লোকে
ব'লেছেন যে,

ধ্যায়তো বিষয়ান্ পুংসঃ সঙ্গস্তেষুপজায়তে।
সঙ্গাৎ সঞ্জায়তে কাম কামাৎ ক্রোধোইভিজায়তে॥
ক্রোধান্তবতি সমোহঃ সমোহাৎ স্মৃতিবিজ্নমঃ।
স্মৃতিজ্ঞংশাদ্ বৃদ্ধিনাশাৎ প্রণশ্যতি॥

ইন্দ্রিয়েব বাঞ্ছিত বিষয় ধ্যান কব্তে কব্তে অর্থাৎ চিস্তা কব্তে কব্তে তাতে আসক্তি জন্ম, আসক্তি হ তে কামনা জন্ম, কামনা হ'তে ক্রোধ জন্ম, আসক্তি হ তে কামনা জন্ম, কামনা হ'তে ক্রোধ জন্ম, ক্রোধ হ'তে সন্মোহ জন্ম, সন্মোহ হ'তে স্থতিত্রংশ উপস্থিত হয়, স্থতিত্রংশ হেতু বুদ্ধিনাশ হয় এবং বুদ্ধিনাশ হ'লেই বিনাশ ঘটে। ভগষদ্বাক্রেয় তাৎপর্যার্থ এই বে, বাকে মনে পুনঃ পুনঃ চিন্তা কর্বে, তারই প্রতি আসক্তি জন্মিবে, মাসক্তি জন্মিলেই কামনা জন্মিবে অর্থাৎ তাকে পেতে ইচ্ছা হবে, তা না পেলেই প্রতিবোধক বিষয়ের প্রতি ক্রোধের উৎপত্তি হবে, জোধ হ'লেই তথন কর্ত্তবাকতব্য বিষয়ে মাহ হবে অর্থাৎ ভাল মন্দ বিবেচনাশৃত্য হবে। একপ মোহ হলেই তথন কায়্য-কাবল সম্বন্ধ বিশ্বত হবে, কার্যাকাবল সম্বন্ধ ভূল্লেই বৃদ্ধিনাশ হবে, এবং বৃদ্ধিনাশ হ'লেই বিনাশ ঘট্বে অর্থাৎ অধ্যোগতি হবে। অভএব সাংসারিক লোককে কি রক্ম ভাবে বিষয় ভোগ কব্তে হবে, ডাই ব'লেছেন বে,

রাগ দ্বেষ বিষুক্তৈস্ত বিষয়ানিন্দ্রিরেশনরণ। আত্ম বৈশ্যেবিধেয়াত্মা প্রসাদমধিগচ্ছতি॥

যিনি বিধেয়াত্মা তিনি অনুরাগ বিদেষ থেকে বিমৃক্ত হ'রে, আপনার বশীভূত ইন্দ্রিয়ের দারা বিষয়ের উপভোগ ক'রে প্রসাদ লাভ কবেন অর্থাৎ শান্তিলাভ করেন। এর তাৎপর্গ্যার্থ এই বে, মিনি বিধেয় আত্মা অর্থাৎ বার আত্মা (বৃদ্ধি) ও অন্তঃকরণ বশবর্ত্তী থাকে, এমন ব্যক্তির ইন্দ্রিয়গণ বলের ঘারা তাঁর আর্ম্বাধীন চিস্তকে হরণ কর্তে পারে না। বিনি রাগ দ্বেষ হ'তে বিমৃক্ত হন চিত্ত তাব আয়্বাধীন হয়, মৃত্যাং ইন্দ্রিয়গণ বশবর্তী হয়, কাজেই তিনি সেই বশীভূত ইন্দ্রিয়েব ঘারা বিষয় ভোগ ক'রে শান্তি-লাভ করেন। অনাসক্তি কি জিনিস এবং কেন প্রয়োজন এখন বুঝ্লে গ

শিষ্য। 'আজ্ঞা হা, এখন নিষ্কাম কাকে বলে বুঝিয়ে দিন ।

শুক। নিকাম যে কাকে বলে ভগবান তা গীভাব ২য় অধ্যায়ের ৪৭-৭ ক্লোকে ব'লেছেন যে,

কর্মণ্যে বাধিকাবস্তে মা ফলেয়ু কদাচন। মা কর্মফলহেভুৰ্ভুমা তে সঙ্গোহস্তু কর্মণি॥

হে অর্জুন। কর্মে তোমার অধিকার হ'ক, কর্মফলে বেন কদাচ
অধিকার না হয়, এবং কর্মফল মেন তোমাব কর্মে প্রবৃত্তির হেজু না
ফয় অর্থাৎ ফলেব লোভে ধেন কর্ম না কর, আর কর্ম না কর্তেও বেন
তোমাব প্রবৃত্তি না হয়, অর্থাৎ কন্ম ত্যাগও না কর। এর তাৎপর্যার্থ
এই যে, কর্ম অবশু কর্বে কিন্তু ফল কামনা কদাচ কর্বে না, অর্থাৎ
নিক্ষমভাবে কর্বে: কেন নিদামভাবে কর্ম কর্তে ব'লছেন ? তাহ'লে
চিত্তগুদ্ধি লাভ হবে। যদি ফলের লোভে কর্ম্ম করা বায়, তাহ'লে সেটা
বন্ধনের হেতু হয়। আব যদি কর্মা ত্যাগই কবা যায় তা হ'লেও অধোগতি
হয়। অত্রবে সক্য কর্মাই নিক্ষামভাবে কর্তে হবে। সক্ষ কর্ম
কর্ম্বারোধ্য ক্রাই উচিৎ।

শিয়া। এ কথাত বড কঠিন দেখ্ছি। ফল না পেলে কথা কর্তে মন বাবে কেন? সার বে ব'লছেন কর্তিব্যবোধে কথা কর্তে হবে, সেই কর্তব্যবোধটা মনে বে কি ক'রে আসে ভাও ত ব্রুড়ে পার্চিছ্না। শুক। কর্ত্তবাৰোধটী মনে চ্ছু ধারণা হ'লে, তথন ফল কামনা আদৌ আমে না। এই কণ্ডবাবোধটা মনে কে জাগিরে দেয় তা জান ? সে দয়া, স্ত্তবাং দয়াই প্রধানতঃ নিকাম কর্দ্ধের নেতা ও উৎসাহদাতা। প্রত্যেক বাজিরই দয়া বৃত্তিটা পরিপৃষ্ট কর্ভে চেষ্টা কবা উচিৎ। ঈশ্ববে কর্মফল সমর্পণ ক'বে অথবা তাব প্রীভ্যর্থে বা কিছু করা যায় তাও নিকাম।

শিষ্য। কি ক'বে দয়া হৃত্তিতে নিফাৰ কবাৰ, আমাকে ভাল ক'বে বৃথিয়ে বলুন।

গুৰু। ননে কব তৃমি বাস্তা দিয়ে চ'লে যাছে, সঙ্গে কিছু টাকাও আছে। এখন জার্থ শীর্থ পীড়িত একটা লোক সেং রাস্তার ধারে প'তে কা করে। কিছার নেক তৃমি দেই লোকটার নিকটন্থ হ'লে ভার পোচনীর অবস্থা দেখনে, আব অম্নি ভাব কপ্তে তোমাব প্রাণটা কেনে উঠ্লো। তথন তৃমি একখা,ন গাড়া ভাডা ক'বে নোকটাকে ইাস্পান্তালে পৌছে দিলে, এবং কিছু টাকা দিয়ে ভার সেবা শুল্লবার ভাল বন্দোবস্তও কবে দিলে। তৃমি যে এই মান্থের কর্ত্রাটা কর্লে, কিন্তু কর্ত্রাটা করালে কে গুলেই দরা। দয়াতে মন গ'ললে তথন আব ফল কামনা কি অন্ত কোন ভাবই মনে আমে না। কেননা, কি ক'বে তৃঃখীব দৃঃখ মোচন হবে সেই চিঞাতেই মন ব্যাক্ল থাকে। এক চিঞায় মন ব্যাক্ল থাক্লে অন্ত চিন্তা আদ্তে পারে কি গু এখন বৃষ্লে গদ্মা হন্তে মান্থের পব্য কল্যাণকব বৃত্তি। এই বৃত্তিটা সকলেরই পরিপ্তি কর্তে চেন্তা করা উচিৎ। মহাত্মা তুলসীদাস ব'লেছেন যে,

দয়া ধরম্ কা মূল হৈ পাপ অভিমান ভুলসী দয়া মৎ ছোড় যব লগ্ ঘটমে প্রাণ॥ শিয়া। আপনি ব'লছেন বে দয়া বৃত্তিটী পবিপুষ্ট কর্তে সকলেবই চেষ্টা করা উচিৎ। এখন কি রকম ক'বে বে চেষ্টা কর্তে হবে তা জানি না; এবং দয়া বৃত্তিটাও আমাব নাই।

শুক । আছো ঐ পীডিত দরিদ্র লোকটীর কথাই ধব। মনে কর তুমি ঐ লোকটীর নিকটস্থ হ'দে, তাব সেই তুরবস্থা দেখেও তোমার মনের কোন ভাবান্তব হ'ল না। তথন তোমার কি করা উচিং ? তথন তুমি বরাবব চ'লে না গিয়ে তার কাছে দাডিয়ে তাব সেই পোচনীয় অবস্থাটা ভোমার মনোযোগ দিয়ে দেখা উচিং। ঐ রক্ম মনোযোগ দিয়ে দেখাকে মন ফেমে গবেব হুঃপে দ্রব হয়। পরের ১৯থ মনোযোগ দিয়ে দেখা কিছা শোনাই হচ্ছে দয়া রৃত্তিটা প্রকটের উপায় এবং সেই অবস্থাটা প্নঃ পুনঃ মনেব মধ্যে আলোচনা কবা হচ্ছে দয়া বৃত্তি পরিপৃষ্টির উপায়।

শিষ্য। সংসাবে এমন লোকও ত খাক্তে পারে, যাদের চেষ্টা কব্লেও পারের ছঃখ দেখে মন দ্রব হয় না; স্থতনাং তাদের দাবা নিজাম কর্মাও হ'তে পাবে না। এখন সেই সব লোকেব অন্ত কোন উপায়ে নিজাম কর্মা কর্বার কি সন্তাবনা নাই ?

শুল। সম্ভাবনা আছে। আব একটা বিষয় বিচার করে দেখ্লেও
পূর্ণ নিকাম হ'তে পার। বায সকানের নাম গন্ধও থাকে না। বিচারটা
এই বে এক ঈশ্বই আঞ্চানপে সর্বভৃতে অবস্থান কর্ছেন। যখন
সকল ভূতে সেই একই ঈশ্বৰ আছেন, তখন সকল ভূতই এক, পার্থক্য
কেবল দেহেব কিন্তু শরীরেব সলে ত কোন সম্বন্ধ স্থাপন হন্ন না।
শ্বীৰ কেবল সোধাবি মাত্র, সম্বন্ধ সোধাবের সঙ্কে।

শিশ্ব। শ্বীৰ আমাৰ তাৰ সঙ্গে কোন সম্বন্ধ নাই; তবে কি গান্ধের লোকের সঙ্গে সম্বন্ধ থাক্বে?

গুরু। তুমি বুঝাতে পার নি। সম্বন্ধ আত্মাব সঙ্গে, শরীরের সঙ্গে

নয়। দেখ, মারের উপযুক্ত ছেলে ম'রে গিরেছে, সেই ছেলের মৃতদেহটাকে উ'ঠানে কাগড় চাঁকা দিরে কেলে রেখে মা কাঁদ্ছে। ছেলে ত
ভার সাম্নেই পডে আছে, তবুও তার মা কাঁদে কেন ? যার সঙ্গে তার
পুরু সম্বর্ধ ছিল, সেই আত্মা চ'লে গিরেছেন, এখন শ্রীরটা সোরারি
মাত্র প'ডে আছে, কাজেই মা কাঁদ্ছে। যথন আত্মাব সঙ্গে সম্বর, এবং
সকল দেহেতে সেই একই আত্মা, তখন কে কাকে দান করে কিয়া কে
কার উপকার করে হত্যাদি। কেন না, যে দান কর্ছে সে যে, যাকে
দান কর্ছে সেও নেই ইত্যাদি। সকলেই যখন একই পুন্দ তখন কল
কামনা কি ক'রে হ'তে পাবে ? কারণ, নিভের কাজ্ম নিজে ক'রে কেও
কল কামনা করে না, অপরের কাজ্ম ক'রে তার কলবর্ধপ মন্থ্রা নেয়,
কিন্তু যে দিন তারা নিজের বাড়াতে কাজ্ম করে, সে দিন কি আর কারও
কাছে কল কামনা করে অর্থাৎ মন্ত্রার আকাজ্জা করে ?

শিষ্য। আজা হা এ গুলি আমি বুঝ্লাম, কিন্তু এ সব বড বিচার ক'রে তবে বুরুতে ১য়। সোজা কথায় সকাম ও নিকাম কর্মের কোন মীমাংসা নাই ?

গুরু। মীমাংদা আছে। নিজের স্থাপের জন্ত যা করা যার তা স্কাম, এবং পরের স্থাপর জন্ত যা করা যায় তাই নিকাম। কর্মের মধ্যে শ্বার্থ না থাকুলেই তা নিকাম এবং স্বার্থ থাকুলেই তা স্কাম।

শিষ্য। আগে মনে কামনা ক'রে ভদম্সারে লোকে কর্ম করে। কামনা নিজের ও পরের উভয়ের জন্তই হ'রে থাকে। কর্মের মূলে বধন কামনা আছে ভথন কম্ম নিকাম হ'ল কৈ ?

গুরু। কাম শব্দের প্রকৃত তাৎপর্যার্থ আগে বোঝ। স্বর্গানি লাভ সাধনকে কাম্যকর্ম বলে, স্তরাং নিজের স্থান্থর জন্তই সকাম শব্দের বাবহার হ'রে থাকে। অতএন সকামের উদিষ্ট যে সংখ তা কর্মকর্তার নিজের জন্ম, কিন্তু নিদ্ধামের উদিষ্ট যে সংখ তা পরের জন্ম।

শিশ্য। কাম শব্দ থেকেই ত কামনা শব্দ হয়েছে, কাম শব্দের মানে আকাজ্ঞা ইচ্ছা। এখন যে কেহ যে কোন কাজ কর্মক না কেম, ফলতঃ গোড়ার ইচ্ছা আছেই। তাহ'লে প্রভাক কাজেই কামনা আছে, তথন রুশ্ম নিদ্ধাম হর কি ক'রে ? আমি দেখুছি তা হ'লে সকল কর্মই সকাম।

গুরু। তবে ভোমাকে বল্লাম কি আর তুমি বুঝ্লেই বা কি ? কামনা বাতীত কর্ম হয় না, তা আমি মানি। সেই কমিনা নিজের জন্ত হ'তে পারে এবং পরের জন্তেও হ'তে পারে। নিজের জন্ত কামনা ক'রে বে কন্ম করে তা সকাম, এবং পরের জন্ত কামনা ক'রে বে কাল্ল করে ভাই নিছাম। মহাভারতে কাম শব্দের প্রকৃত তাংপর্যার্থ বোঝান আছে বে,

ইন্দ্রিয়ানাঞ্চ পঞ্চানাং মনসো হৃদয়স্থ চ। বিষয়ে বর্ত্তমানানাং যা শ্রীতিরুপজায়তে। সকাম ইতি মে বৃদ্ধি কর্মানাং কল মৃত্তময় ॥

পাঁচটী ইন্দ্রিয় (জ্ঞানেন্দ্রিয়), মন ও হাদর স্ব স্থা বিষয়ে বর্ত্তমান থেকে, বে প্রীতি উপভোগ করে, আমার বিবেচনায় তাই সকাম এবং কর্ম্বের উত্তম কল। তা হ'লে দেখ ইন্দ্রিয়গণ বিষয়ের সঙ্গে সংযোগ হ'য়েই প্রীতি উপভোগ করে, স্থতরাং সেটী নিজের স্থাপের জ্ঞাই হচ্ছে।

শিয়া। আজা হাঁ, নিফামের এ অর্থটা শোকা বটে। নিজাম কর্ম সম্বন্ধে আমার মনে আর একটা সংশয় এই হচ্ছে বে, নিজাম কর্মকর্ত্তা আদি ফল কামনা করে না, কাজেই তার ফলও ভোগ হয় না। তা'হলে কি নিফাম কর্মের কোন কল উৎপন্ন হয় না ?

শুরু । কর্ম কর্লেই ডার ফল উৎপন্ন হর, ফলের ইচ্ছা কর আর নাই কর। নাটীতে বীজ পুঁত্লেই বেমন গাছ উৎপন্ন হয়, তেমনি কর্ম কর্লেই ফল উৎপন্ন হয়।

শিষা। ভা'হলে নিকাম কর্মের ফল কি হর ? কারণ, কর্মকর্তা ভ ফল নিচ্ছে না।

গুৰু। নিজাম কৰ্ম্মের ফল কর্মকর্তাই পার।

শিষা। আপনার এই কথার আমার মনে ধাঁদা লাগ্ছে। এই বল্লেন যে, নিফাম কর্মকন্তা আদৌ কল কামনা করে না, কেননা, কর্মন কল ভোগের জনাই জন্ম নিয়ে ছ:খ ভূগ্তে হয়। কর্মফলই একমাত্র জন্মের কারণ। এখন আবার বল্ছেন যে, নিষ্কাম কম্মের ফল কর্মন কর্তিই পায়। তা'হলেই ত সেই কর্মাফল ভোগের জন্ম তাকে জন্ম নিতেই হবে। তবে আর নিফাম কর্মের অর্থ কি ?

গুরু। নিজাম কর্মের ফল বে কর্ম্মকর্জা কি বক্ষমে পার সেটা আংশ শোন, তার পর মতামত প্রকাশ ক'র। কেই ঈশরের প্রীত্যর্থে, কেই ঈশরেতে কর্মফল সমর্পণ ক'রে, কেই কর্জ্বাবোধে, কেই বা দরার বশবর্জী হ'রে নিজাম কর্ম ক'রে থাকে, ফলতঃ বে যে ভাবেই করুক্ না কেন, ফর্মফল হবেই। কর্ম্মকর্জা ত এ ফল চার না, তাহ'লে এখন বেওয়ারিশ কর্মফল যায় কোথা ? যার ঈশরে। বেওয়ারিশ মাল যেমন সরকারে যায়, নিজাম কর্মের বেওয়ারিশ ফলও তেমনি ঈশরে যায়। পরম দয়াল ভগবানও সেই কর্মফল কর্মকর্জাকেই দেন।

শিষ্য। তবেই ত আবার সেই গোলযোগ। কারণ, ফল ভোগের স্কনা কর নিতেই হবে। শুলা। হাঁ, সে কর্মকল ডোগ হয় বটে, কিন্তু ভাতে অধােগতি হয়
না, অর্থাৎ জন্ম হয় না। ভাতে উর্দ্ধান্ত হয়, অর্থাৎ মুক্তি হয় অর্থাৎ
কেবল পরম ধামে পরমানকট ভোগ হয়। আগুনে বল্সান ভূটার
দানা থেয়ে বেমন আনক পাওয়া বায় কিন্তু জমীতে বুন্নে গাছ হয় না,
তেমনি ঈর্থবের ক্লপাগ্নিতে খল্সান নিছাম কর্মের ফলভােগে আনক
পাওয়া বায়, কিন্তু সে কর্মকল হেতু জাবের জন্ম হয় না। সে ক্লেন্স
ভোগই হ'ল মুক্তি।

শিষ্য। নিহ্নাম কশ্ম এক রক্ষ বুর্গাম। এমন নিরহংকারটা আমাকে বুরিয়ে দিন।

গুরু। আজ থাকু, আবার কাস্ হবে।

নব্ম দিন ।

শিষা। অনুগ্রহ ক'রে আঞ্চ নিবহংকাবটা বুঝিয়ে দিন।

গুরু। অহং জ্ঞান না থাকার নাম নিবহংকার, অর্থাৎ কর্ম ক'রে,
আমি কর্ছি বা করেছি কি আমি কর্তা এই রকম ভাব মনে না হওরার
নাম নিরহংকার। কিছু প্রকৃত প্রস্তাবে অহং শব্দ ত্যাগ কর্তে, বাবহার
চলে না। কি সংসারী, কি ত্যাগী অহং শব্দী কেহুই ত্যাগ কর্তে
গারে না অবশ্য মনে ধাবণা না থাক্তে পারে, কিন্তু মুখে অহং শব্দ জ্যাগ
করা বায় না।

শিয়। তাবে ত নিরূপার। তা'ংলে নিবহংকার শব্দ হ'ল কেন ।
তরু। নিরহংকার কাকে বলে তা আগে মন দিরে শোন তবে ত
ব্রুতে পার্বে। কি সংসারী, কি ভাগী অহং শব্দ সকলেই ব্যবহার করে,
কেননা, অহং শব্দ তাগি কর্থলে কাজ চলে না। তবে নিরহংকারের
শীমাংসা কি । এর মীমাংসা এই বে, অহং ভান হই প্রকার বার্টি ও
সমষ্টি। আঅ্জান গাভ ক'রে মারামুক্ত হ'লে, তথন সমষ্টি অহং ভান
আসে, অর্থাৎ আমি মুক্ত, আমার সলে কর্মের কোন সংশ্রব নাই, আমার
কর্ত্তব্য কিছু নাই ইত্যাদি। আর মায়াবদ্দ জীবের বার্টি অহং ভান
মনে আসে। তাতে এই বোধ হর বে, আমি বড় লোক, আমি রবিরুত্ত,
আমি স্থবী, বামি তৃঃবী ইত্যাদি। ভুতগণের শরীরে প্রকৃতি ও প্রথম চইই
আ্রেন। জাব অবস্থা তেনে এঁলের একজনের অ্থীনে থাকে। যতদিন প্রক্তু
ভির অ্থান, ব্যর্থাৎ মারাপ্রাপ্রেক্ত ভড়িত থাকে, ততদিন সংকর বিকরের

সহিত ব্যষ্টি অহংরের বশবর্ত্তী হ'রে চলে। আর বধন জীব প্রেক্তরের অধীনতা ছাড়িরে পুরুষের অধীনে যায়, অর্থাৎ বধন আত্মাকে জেনে আত্মাজ্ঞান লাভ করে, তথন সংকল্প বিকল্প রহিত হ'রে ভারাবস্থায় একমাজ্ঞান লাভ করে, তথন সংকল্প বিকল্প রহিত হ'রে ভারাবস্থায় একমাজ্ঞান লাভ করে, তথন সংকল্প বিকল্প রহিত হ'রে ভারাবস্থায় একমাজ্ঞান কর্মান হৈছে এই ব্যষ্টি অহং ত্যাগকেই নিরহংকার বলে। আমি কর্ত্তা, এই ধারণাটা মনে খেকে যাওগার নাম প্রাকৃত নিবহংকার। বেমন লোকে দিবারাজ্ঞি চিকিলে গণ্টা খাস প্রখাস ফেল্ছে ও নিচ্ছে, কিন্তু সূহুর্ত্তের জন্যেও কি কেও কথন মনে ভাবে বে আমি খাস প্রখাস ফেল্ছি নিজিল। ফেলা এবং নেওরা এ কাল ছটী কর্ছে লোকেই, কিন্তু কর্মান বিলাটী কাল্প নাই। সকল কাজেই এই রকম মনের ভাবে হ'লে, তবে ঠিক নিরহংকার হওরা যায়। পরস্ক, জীবের পক্ষেবের ব্যক্তর একবারে অসম্ভব।

শিব্য। বখন অহং জ্ঞান ত্যাগ করা অসম্ভব, এবং অহং শক ত্যাপ কর্লে ব্যবহারও চলে না, ডখন লোকেব উপায় কি ?

গুরু। উপার আছে। সংসারী লোকের বৈভজ্ঞানের আত্রর
নিরে, অভ্যাসের হারা যনে একটা ধারণা দৃঢ় কব্তে পার্লে; তথন ক্রমে
ক্রমে অহং জ্ঞানের শক্ত বাধন টিলে হ'রে যার এবং সমরক্রমে এক
বারে খুলেও বেতে পারে। ধারণাটী হচ্ছে এই বে, ঈশরকে সর্বমর
কর্ত্তা মনে করা (বটেও তাই), অর্থাৎ যা কিছু কর্ছি বা হচ্ছে সবই
তার ইন্নিভে বা ইচ্ছার্য কর্ছি বা হচ্ছে। আমার স্বাধীন ভাবে কিছু
কর্বার ক্ষমতা আদৌ নাই। মান্তবের শত চেটাতেও মনোরও পূর্ণ হর
না, কিন্ত ভগবান বথন ইচ্ছা করেন তথন তা সহক্রেই হয়। তা'হলে মেথ
ভিনি যা করাছেন তাই হচ্ছে। ভগবান গীতার ১৮শ অধ্যারের ৬১টা
লোকে বলেছেন বে,

ঈশ্বর সর্ববস্থৃতানাং হুদ্দেশেহর্জুন তিন্ঠতি। ভাষয়ন সর্ববস্থৃতানি যজ্ররুঢ়ানি মাযয়া॥

হে অর্জুন! বেমন লোকে দারুষদ্রে আরাচ ক্রন্তিম ভূত সকলকে ভ্রমণ করিরে থাকে, অর্থাৎ নাটিরে থাকে, তেমনি ঈশ্বরও ভূত সকলের করে অধিষ্ঠত থেকে, তালেবকে ভ্রমণ করাছেন অর্থাৎ নাটাছেন; তার মানে সব করাছেন। আসল ব্যাপাব ধরন এই বক্ষ তথন আমি কর্ত্তা নাজি কিনে? প্রত্যেক কাছেই এইকগ চিন্তা কর্ত্তো, অহং জ্ঞান ক্রমে লোপ পেতে থাকে এবং শেষে তেলবিহীন নিপ্রভ প্রদীপের ন্যায় নিজে বায়। দেখ সচরাচর বিশ্বের স্থাই, শ্বিতি, পালন ক'রেও ভূপবান নিরহংকাব। ঈশ্বরেব ভূলনায় কীটামুকীটসদৃশ সামুষ বংকিঞ্জিৎ অন্তঃগারশুন্য কাঞ্চ ক'বে অহংকার করে। লোকে যদি ভগবানের নিরহংকারিছ চিন্তা ক'বে দেখে, তাহ'লে কি আর অহংকার থাকে?

শিষা। অনাসক্ত, নিকাম ও নিবহংকার হ'লে তবে ভগবানকে কানা যার, অর্থাৎ আত্মজান লাভ ২র, নচেৎ জানবার উপার নাই।

শুরু । তুমি নিতান্ত নির্বোধ। আমি বে এও ক'রে তোমাকে বোঝাছি তাহ'লে তুমি বুঝ লে কি । ঐ অনাসক্তাদি ভাব তিনটা আরও হ'লে, অর্থাৎ মনে দৃঢ়রূপে ধারণা হ'লে চিন্তক্তমি লাভ হর এবং তথন ভগৰানকে জান্বার অধিকারী হওয়া যার। তাকে জান্তে গেলে আরও কর্ত্তবা আছে। যেমন জমীতে চাম দিয়ে পরিকার ক'রে শস্যের বীজ ছড়া'লে ফসল উৎপর হয়, তেমনি জনাসক্ত, নিকাম ও নিরহংকার এই ভাব ভিনটা চিত্তক্ষেত্রের চাম শ্বরূপ। এদের হারা চিত্তক্ষেত্রের চাম শ্বরূপ। এদের হারা চিত্তক্ষেত্র পরিষ্ণায় ক'রে, তথন শুরুদ্ধন্ত উপদেশ বীজ বপন কর্লে, ভক্তিরূপ অরুর হয়, এবং ক্রেমান্তরে বৈরাগ্যমিন্তিত একাগ্রভারণ জল সেচন কর্লে ঐ ভক্তিরূপ

গাছ এত বাড়ে বে ভগবানের শ্রীচরণে গিয়ে সংগগ্ধ হয় ও প্রেমরূপ ফুল ফুটে সমস্ত লোককে মোহিত করে, এমন কি ভগবানকেও প্রসর করে। শেবে সেই প্রেমরূপ কুল থেকে ভানরূপ শন্যের দানা উৎপন্ন হ'রে ক্রিডাওারে মজ্ভ হয়। লোকের সংগৃহীত শন্যের দানাতে বেমন জড়দেহেব কুথা নিযুদ্ধি হয়, জনিরূপ শশ্রের দানাতেও লোকের তেম্নি ভবকুধা নিযুদ্ধি হয়।

শিয়া! এখন আমি বিষয়টী বুর্লাম। আগনি যে একাগ্রভার কথা বল্লেন, আমি দেখ্ছি মনকে একাগ্র করা বডই কটিন। একাগ্রভা না হ'লে সাধনার কি অনিষ্ট হয় ?

শুরু। সাধনের এই অনিষ্ট হর ধে, একাগ্রতা ভিন্ন সাধন বুণা হর। শিষ্য। উপবাস ক'রে, কঠোর ক'রে সাধনা ক'রছে, মনে একটু অফ চিস্তা হ'ল বলে সব বুণা হবে । না হয় ফলই কম হবে।

শুল মনকে সমস্ত বিষয় থেকে ফিরিয়ে এনে এক ভাগবানের দিকেই দিতে হবে, একেই একাগ্রতা বলে। মনের একাগ্রতা না হ'লে ভাগবানকে পাওয়া যাবে না। তার কারপ এই বে, জীবের চারিদিকে মালা প্রথাকের বাঁধ আছে, এবং সেই বাঁধেই জীবকে ভাগবান থেকে পৃথক্ ক'রে রেখেছে। এখন মনের খালা সেই বাঁধকে ভেলে, তবে নিমে ভার দকে মিলতে হবে। সেই এক্ত মনের একাগ্রতাব একান্ত প্রয়োজন। কেননা, একাগ্র মনের জোর বেনি, বিক্ষিপ্ত মনের খালা মালার বাঁধ ভালার কাজ হল্প না। যেনন কোন জলা আনক্ষর্ভাল নালী দিলে বেরিয়ে পালা কে বাংল বেরিয়ে গালা, তা হ'লে সে জলোর প্রথাবার ক্যান্ত মনের খালা, তা হ'লে সে জলোর প্রথাবার ক্যান্ত মনের খালা বিলি একটা নালী দিরে থেরিয়ে গাল, তা হ'লে সে জলোর প্রথাবার ক্যান্ত মনের খালা হল্প। একাগ্র মনের অবস্থান্ত তিক ভাই।

শিया। ভাহ'লে ননের একাগ্রভা ভিন্ন কিছু হবার যো নাই দেখছি'।

শুক্ত। তা শান্ত শৈ শালে একাপ্রত। ব'লে॰ এত চীৎকার ক'রেছে । কেন ?

শিয়া। মনকে বে কেন একাতা কবৃতে হবে তা বুঝলাম। এখন দেই একা গ্ৰতা সাধনের উপায় কিছু আমাকে ব'লে-দিন।

শুক। ভগবানই গীভাতে মনের একাগ্রতা সাধনের উপায় ব'লে

দিয়েছেন বে, "অভ্যাদেন ভূ কৌন্তের বৈরাগ্যেণ চ গৃহতে"। অভ্যান ছা
বিষয় বৈরাগ্য দ্বাবা মনকে নিগ্রন্থ কর্তে হবে। অর্থাৎ বিষয়গামী মনকে
বিষয় থেকে কেরাভে হবে। বিষয় থেকে মন নির্ভ হ'লেই তখন বিষয়ের
আসাজিও ব্লাস হ'লে আস্বে। কেননা, মন অনাসক্ত হ'লেই তখন
ভগবানে একাগ্র হবে।

শিয়। অভ্যাদ মানে কি অপ্তান্ন যোগাভ্যাদ ?

শুক্র। না, এখানে অভ্যাস মানে বিশিপ্ত মনকে পুনঃ পুনঃ আহরণ ক'রে ধ্যের বস্তুতে লাগান। ধ্যানাদি উপাসনা কর্বার সময় মনের মধ্যে অন্ত চিন্তা এলে পরে, তৎক্ষণাৎ সে চিন্তা ভ্যাগ ক'বে পুনরার মনকে ধ্যের বস্তুতে লাগান্তে হবে। এই রকম বভবার হবে তভবারই মনকে ফিরিয়ে এনে এভগবানে লাগান্তে হবে। বেশী দিন ধ'রে এই রক্ষ অভ্যাস কব্লে, মনে অন্ত চিন্তা আসা ক্রনে কম হ'রে আসে, এবং ধার্ম-কাল এই রক্ষ অভ্যাসের দারা মনের একাগ্রভাব গাভ ২য়।

শিশ্ব। কেই যদি অভ্যাস করেও ফল না পান্ন, অর্থাৎ নিয়তই যদি মনে বিক্ষেপ হয় তার মানে অঞ্চ চিন্তা আসে। তাহ'লে তার ভন্তন ক'রে কি কল হয় ?

গুরু। তারও ধল আছে। মন ষতই কেন বিক্লিপ্ত হ'ক না, ভল্পন কথম ত্যাগ কর্তে মাই। সংসারে এমন কোন কাজ পাবে না যাতে দোষ না আছে। সেইজন্ত ভগবান গীড়াতে বলেছেন যে, "স্ক্রিমন্তা হি লোবেণ ধুমেনাগ্রি বিবাবত।"। আগগুণে বেম্ন ধোঁয়া থাক্বেই কাজেও তেমনি লোষ থাক্বেই, লোষ ছাড়া জগতে কোন কাল নাই। কাজ কর্তে করতে কালে দোধরহিত হ'তেও পারে। দোষযুক্ত ভল্<mark>জন</mark> হ'লেও তা ত্যাগ কবৃতে নাই। ত্যাগ কর্লে অধ:পতন হয়। মনে কর ধরতর নদীর স্রোতে প'ড়ে একটা লোক ভেসে বাচ্ছে। সেই নদীর স্রোভ এতই প্রবল বে সাঁতার কেটে ডাঙ্গাম উঠ্বার সাধ্য নাই। স্থতরাং তার জীবন সংশব্ন, কেন না, সেই স্রোতে তাকে মহাসমুদ্রে নিমে গিয়ে ফেলবে। এখন ভেসে বেভে বেভে সেই লোকটা নদীর কিনারার শক্ত বেনার ঝাড় পেয়ে, তথন সে নেই ঝাড় ছহাত দিয়ে চেপে ধর্ণ, উদেশু স্থবিধা পেলেই উপরে উঠ্বে। নদীর স্রোতে তাকে খুব হেলাছে ছলাছে বটে, কিছু টেনে নিমে বেতে পাচ্ছেনা। পরস্ক, আশ্রমক্রপ বেনাব ঝাড় যদি সে ছেড়ে দের, ভাহ'লে স্লোভে তাকে টেনে নিম্নে গিম্নে মহাসমূতে ফেল্বে। তেম্নি মানুষ্ও ভবনদার স্রোতে প'ড়ে, অনস্তকালরণ মহাসমূদ্রের দিকে ভেসে ষাজ্যে। ঈশবোপাসনাদি ভঞ্জন হ'ল একমাত্র ধরবার আশ্রম, তা ভাগি ক্রলে কি আর রক্ষা আছে? লোকে বদি ভল্পন সাধন একবারে ভ্যাপ করে, তাহ'লে বে পোকেব কি অবস্থা হয় তা ভগবানই জানেন। মন হেললে তুল্লৈও ভজনৰূপ আশ্রর ত্যাগ করা উচিত নয়। বিক্রিপ্ত মনেও ভজন করা কর্ত্তবা।

শিয়া। ভজনের প্রণালী আমি কিছু গু'নতে ইচ্ছা করি, অর্থাৎ কি রকম ভাবে ভজন কর্লে ফল পাওয়া বার।

গুরু। ভর্মনের প্রণালী এক রকম নয় বহু রকম। যে বেমন অধিকারী সে ভেম্নি ভাবে ভজন ক'রে থাকে, এবং ফলও ভদত্রপ পার। কারও কোন রকম ভল্পনের পদ্ধতি দেখে, ঠাটা ভাষাদা করা কিছা ভাঙে কোন বিশ্ব উৎপাদন করা অভীব অভার। দেখ, কেও ধৃপ, দীপ, নৈবিভাষি দিয়ে ভগবানের কোন প্রতিমার অর্জনা কর্ছে। কেও অটাল বোপ সাধন কর্ছে। কেও শাস্ত্রবচন প্রবণ, মনন, নিদিধ্যাসন কর্ছে। কেও ধ্যান কর্ছে, কেও জপ কর্ছে, কেও ভগবানের নাম সংকীর্ত্রন কর্ছে, কেও ভগবদ্বিধরক গান ক'রে নেতে বেড়াচ্ছে, কেও ভাগবৎ গীতাদি গ্রন্থ পাঠ কর্ছে. কেও নিকামভাবে দান, পরোপকারাদি ভগবানের প্রির কার্য্য কর্ছে, কেও বা ঐ সব কিছুই পারে না, সে কেবল মাটাভে প'ড়ে ভগবানকে পুনঃ পুনঃ সাষ্টাঙ্গে প্রাণিণাত কর্ছে। বে যে ভাবেই কর্ষক, ফলতঃ ভন্সন কর্ছে স্বাই।

শিয়। আছা, এই বে লোকে নানাবিধ ভাবে ভগবদ্ ভজন কর্ছে, ভার মধ্যে ভাগ কোনটা তাই আমাকে বলুন।

গুৰু। ভগবদ্ ভজন সবই ভাল।

শিশ্ব। এ জগতে এক সমান কিছুই দেখা বার না, কেবল ভগবদ্ ভল্পনের বেলার স্ব স্মান তাও কি কখন হয় ?

গুরু। তোমাকে আগেই ত ব'ল্লাম যে, অধিকাবীভেনে লোকে
নানাবিধ ভাবে ভলন ক'রে থাকে। অর্থাৎ যার বেমন সংস্থার সে সেই
রক্ষম ভাবেই ভলন ক'রে থাকে, এবং সেটা তার অমুক্ণও হয়। জগতের সব বাগোবেই ভাল মল উচু নীচু আছে। বে নিম্ন অধিকারী সে সেই
ভাবেই উপাসনা কর্বে, এবং ভাতেই ভার কল্যাণ হবে, কিন্তু কেপ্ত
যদি ভাকে বলে যে, ভোমার ভলন ঠিক হচ্ছেনা, ভূমি বুধা ভল্পন কর্ছ।
ভাতে সেই উপাসকের ফলের পরিবর্তে অনিষ্ট হবে। ভার প্রাণে ক্ষ্ট
হবে, জ্বান্ন ভেলে বাবে, উৎসাহ থাক্বে না। বুধা পরিশ্রম কর্লাম ব'লে
অমুভাপ লবে, এবং এই সব কারণে শেষে হন্ত সে ভলন করাই ছেছে
দিবে। কাজেই ভার মনে ঈশার সম্বন্ধে বে ভাবতীর জ্বাট বেঁণে আস্ছিল, সেটাও নাই হবে। সে যদি দীর্ঘকাল ধ'রে ভার সেই আপন ভাবের

পৰিত ভদন কর্তে পার্ত, তাহ'লে ক্রনে অগ্রসর হ'তেও পার্ত, এবং কোন সময়ে উচ্চ অধিকার পেতেও পার্ত; কেন না, ভগবান ভাবের বশাং নেইজন্ত ভগবান গীতার ওয় কর্যাহের ২৬৭ শ্লোকে বলেছেন যে,

ন বুদ্ধিভেদং জনয়েদ জ্ঞানাং কর্ম সঙ্গিনাম্। যোজয়েৎ সর্ববিকর্মাণি বিদ্ধান যুক্তঃ সমাচরণ ॥

বিশ্বাম শ্বর্থাৎ জ্ঞানী ব্যক্তি কর্ম্মসঙ্গী অক্ত লোকদের বুদ্ধিভেদ জ্ঞমাবেন না,
বরং যাতে তাদের উপকার হয় সেই বক্ষ আচবণ ক'রে তাদেরকে
কেমিয়ে দিবেন। শ্বর্থাৎ ফলাকাজ্জী কাম্যক্ষী লোকদিগকে তাদের কর্ম
যে বন্ধনের হেতু হচ্ছে তা না বলে যাতে তাদের নিদ্ধামে প্রবৃত্তি হয় সেই
স্বক্ষ ক'বে দেখিয়ে দিবেন। তেমনি নিম্ন শ্বিকারীর সাধককে ভল্লম
সাধন ঠিক হচ্ছে না একথা না ব'লে ববং তুমি যা কব্ছ বেশ হচ্ছে তবে
ভার সঙ্গে এই রক্ষ কর্তে পার্লেই আরও ভাল হয়, এই ভাবে উপদেশ
দিশে উপকার হয়।

শিল্প। আমাদের সনাতন ধর্ম্মে দেবদেবীও অনেক আছেন, এখন শগুণ উপাসনা কর্তে গেলে কোন মূর্ত্তিব উপাসনা করা উচিৎ।

গুরু। আগে ভোমাকে বা বল্লাম, এ সম্বন্ধেও সেই নিয়ম; আর্থি লোকের দংঝারাস্থনারেই দেবমূর্তির প্রতি প্রতি উৎপন্ন হয়। তা কাওকে ব'লে দিতে হয় না, লোকের দেই প্রীতি অন্তর থেকে আপ্রিই প্রকট হয় বে 'মূর্ত্তিরই উপাদনা কর না কেন, সে উপাদনা ভগবানেরই করা ' হয়। সে কথা ভগবান গীতার ৪র্ব অণ্যারের ১২শ শ্লোকে ব'লেছেন বে,'

যে যথা মাং প্রপালন্তে তাং স্তথৈব ভঙ্গাম্যহম্। মম.বর্ত্মানুবর্তন্তে মনুষ্যাঃ পার্থ সর্ববশঃ॥ হে পার্থ। যে আমাকে বে ভাবে উপাসনা করে, আমি ভাকে সেই ভাবেই সম্ভট করি। মাসুব উপাসনা সম্বন্ধে বে পথই অবলম্বন করুক না কেন, অর্থাৎ যে দেবভারই উপাসনা করুক না কেন, আমার পথের অস্থ-বর্ত্তা হ'তেই হবে, অগাৎ আমার কাছে আস্তই হবে। ভার নানে এই বে, মানুষ যে দেবভাবই উপাসনা করুক না কেন, সে উপাসনা আমারই করা হয়, কেননা আমিই সর্বদেবভা। সে বিষয়ে ভগবান গীতার ৭ম অধান্তের ২১৭ প্লোকে ব'লেছেন বে.

যো যো যাং যাং তকুং ভক্তঃ প্ৰকল্পাৰ্চিতু মিচ্ছতি। তম্ম তম্মাচলাং প্ৰকাং তামেব বিদধাস্যহম্॥

বে বে জক্ত মনীয় দেৰতারপ যে বে মূর্ত্তির শ্রন্ধার সহিত অর্জনা করে, আদি দেই সেই ভক্তকে আমার সেই সেই মূর্ত্তিবিয়ক অচলা শ্রন্ধা দিরে থাকি। অস্তান্ত উপাদনার ফল বে তিনিই দেন সে কথাও ভগবান পরের স্নোকে ব'লছেন বে,

সত্য়া শ্রদ্ধাযুক্ত স্তস্থারাধন মীহতে। লভতে চ ততঃ কামান ময়ৈব বিহিতান হিতান॥

ভাদৃশ শ্রমাযুক্ত দেই সেই ভক্ত বে বে দেবতার আরাধনা করে, তারা আমাক ইক্ই দেই সেই বিহিত কাননা দকল লাভ ক'রে থাকে। স্তরাং বে কোন দেবতার পূরা ক'র্লে ডেগবানেরই পূজা করা হয়। তবে ভাঁর দেই পূজা অবিনিপূর্মক কবা হয়। সে কথা ভগবান গীতার ১ম অধ্যারের ২৩শ লোকে ব'লেছেন বে, যেহপত্ম দেবতা ভক্তা যজ্জ গ্রেজ শ্রেজায়িতাঃ।
তেহপি মামেব কোন্তেয় যজ্জ্যবিধি পূর্বকম্॥
তে কৌন্তের। ধারা শ্রুদা, ক্ত হ'রে অন্তান্ত দেবতার পূজা করে, তারা
অবিধিপূর্বক আমারই পূজা করে। সে উপাসনার বে কি ফল হয়,
অর্থাৎ তাদের গতি কি হয়, পরের শ্লোকে ভগবান তাই ব'লেছেন বে.

আহং হি সর্বব্যজ্ঞানাং ভোক্তা চ প্রভুরেব চ।
নতু মামভিজানন্তি তত্ত্বেনাতশ্চ্যবন্তিতে ॥
আমি ধে সকল বজের ভোক্তা এবং ফলদাতা স্বামী, তারা আমার
এই প্রকৃত তত্ত্ব অবগত না হওরাতে, সংসারে প্নরাগমন করে অর্থাৎ ক্রম
মৃত্যুর অধীন হয়।

শিষ্য। বিধিপূর্মক এবং অবিধিপূর্মক অর্চনা কাকে বলে আমাকে বুঝিরে দিন।

গুরু। লোকে বখন কামনা বিশেষের বশবর্তী হ'রে, অন্তান্ত দেবতার পূজা করে, তখন তাদের মনে দৃঢ় ধারণা থাকে ধে, আমরা অমুক দেবতার পূজা করছি, তার এই এই ঐবর্গা বিভূতি আছে, এবং সর্বশক্তিমান ও সর্বৈশ্বগাশালী ঈশর সকলের উপরে আছেন। তাদের এই ধারণা থাকান্ডে, তারা পূর্ণ ঐবর্গাশালী ঈশরকে পায় না। সেইজক্ত ভগবান এইরপ আর্চনাক্তে অবিবিপূর্বকে অর্চনা ব'লেছেন। আর বারা পূর্ণ ঐশ্বগাদি আরোপ ক'বে, অর্থাৎ ইনিই সর্বাশক্তিমান ঈশর মনে এইরপ দৃঢ় ধারণার সহিত্ত যে মূর্ত্তির অর্চনা করে, তারা তাকে (ঈশ্বরকে) সেই উপাসা মূর্ত্তির মধ্যেই পায়। একেই ভগবান বিধিপূর্বক অর্চনা ব'লেছেন।

শিল্প। নিজ্ঞ ণ অর্থাং নিরাকার উপাসনা সমস্কে কি রক্ম ? গুরু। তাও ঠিক এই রক্ম, অর্থাৎ বার সেই রক্ম সংস্থার আছে তিনি দেই নির্প্ত ভাবেই ভগবানকে জেনে থাকেন। তার মানে এই ষে, উপাসক অপরোক্ষায়ভূতি লাভ ক'রে পূর্ণকাম হন।

শিশ্ব। ঈশর অনপ্ত হ'রে কি ক'বে বে শান্ত মূর্ত্তিব মধ্যে আসেন আমি তাই ভাবছি।

গুৰু। ভক্ত শাস্তমনের দারা অনস্তকে ধর্তে পারে না ব'লে, তিনি শান্ত মূর্ত্তির মধ্যে আদেন। সেইজন্তই ত ভগবান গীতায় ব'লেছেন বে, "ধে যথা মাং প্রপদ্মন্তে তাং স্কর্মিব জ্ঞামাহম্।"

শিশ্ব। আজ্ঞা হাঁ, এখন আমি বুঝ্নাম বে বে মূর্ত্তিতে তাঁর পূর্ণ ঐশ্বর্যা আরোপ ক'বে, অবাৎ মনে সেই ভাবটী দৃঢ় বিশ্বাসের সহিত, অর্চনা কব্লে সেই মূর্তিভেই তাঁকে পাওয়া বায়।

শুরু। ইা ঠিক তাই। যেমন কেও নগেনকে যদি স্থরেন ব'লে তাকে, তাহ'লে নগেন কি উত্তর দের, না কাছে আমে? নগেন তাক শোনে বটে, কিন্তু মনে করে আমাকে ও ডাক্ছে না। তেম্নি ঈশ্বরও: পূর্ব ডাক ভির উত্তর দেন না অর্থাৎ দর্শন দেন না। এমন কি এই ক্ষান্তের কোন পদার্থে তার পূর্ব ঐশ্বর্য্য আরোপ ক'রে, অর্থাৎ এতেই ইশ্বর আছেন মনে এইটা পূর্ব বিশ্বাদের সহিত অকপট হৃদরে ডাক্লে তিনি তাথেকেই প্রকট হন। কেন না, তিনি সকল পদার্থেই ব্যাপ্ত আছেন। তাতেই ত প্রহলাদের ডাকে ভগবান পানের মধ্যে থেকে প্রকট হয়েছেন। লোকে বে বলে ডাকের মত ডাক্তে পার্লে তাঁকে পাওরা যার। এরই নাম ডাকের মত ডাক্।

শিশ্য। বে দেবতারই অর্চনা করা বাক প্রকারান্তরে ঈশরেরই অর্চনা করা হয়, তা আমি বৃঝ্লাম। যখন একমাত্র ঈশরই সর্ব্যয়, তথন আমাদের সনাতন ধর্মে এত দেবতার অর্চনা পদ্ধতি কেন আছে ? গুরু। আৰু ধাকু সাবার কাল হবে।

मग्य मिन।

শিয়া। আমার কালকার প্রশ্নী আজ বুঝিয়ে দিন।

গুরু। নানা ধেবতার পূথক পৃথক ভাবে অর্জনা কবাব কারণ এই যে, ভগবান অনন্ত, মচিত্রা, এবং অসমে বিভূতিশালা, স্থতরাং মাহ্মে শাস্ত মনেব ধাবার সেই অনন্তকে ধারণা কবৃতে পারে না, কাজেই ভার এক একটা বিভূতির মৃত্তি করনা ক'রে ইক্র বক্লাদি দেবতারপে পূথক পূথক ভাবে অন্তনা ক'রে থাকে। ভগবানও প্রম দ্যাল যে যে ভাবে তাকে একনা করেন ভিনি সেই ভাবেই ভাকে সম্ভূষ্ট করেন।

শিখা। এ বিষয় নী আম বুঝ লাম। এখন পূজা পদ্ধতি সহক্ষে আমার কিছু কিজান্য আছে।

শুকু। কি বল।

শিয়া। দেবতাদেব পূজার মন্ত্র দক সংস্কৃত ভাষার রচিত। এখন যার সংস্কৃত থানা নাই তার মন্ত্র হাকারণ অঞ্জও হ'তে পারে, সে অবস্থার ভাষাবদ্ধার্কনা কি ক্রিয়াব ফল কেমন হবে ?

গুদ। শাস্ত্রে কোন কোন ক্রিয়ার এমন বিধানও আছে বে, মন্ত্র অগুদ্ধ হ'লে ক্রিয়ার কলেরও তারতমা হয়; কিন্তু ভগবল্ অর্চনায় ডক্তের পক্ষে দে নিরম খাতে না। মাচচা ডক্তির মাইও বে পুলা হয়, ডগবান নেই পূজাই গ্রহণ করেন। তাতে মর গুদ্ধ হ'ক আর অগুদ্ধ হ'ক কোন চিন্তা নাই হদয়ে কেবল খাঁট ভক্তি থাকা চাই। ভক্তিহান পূজা পূজাই নয়। ভক্তরার রাম প্রদান বলেছেন যে "পুমি লোক দেখান কর্বে পূজা মা ভ আমার মুধ থাবে না।" ভগবল্ পূজার মন্ত্রের গুলাগুদ্ধি সধক্ষে ক্রকটা বচনও আছে ধে,

ধীরঃ বদতি বিকোবে মূর্য: বদতি বিক্টায়। ঘয়োমেক সমপুণাং ভাবগ্রাহী জনার্দ্দনঃ॥

পঞ্জি জক্ত বিকোবে নমঃ ব'লে পূজা করে, সূর্য ভক্ত বিষ্টায় নমঃ ব'লে পূজা করে, কিন্তু উভয়ের যনে খাঁটা ভক্তি থাকা হেতু, পরস্পরের বাকোর অর্থ বৈষম্য হ'লেও উভরে সমান কল চাঙ্গী। কেননা, ভগবান ক্রদরের ভাব গ্রহণ করেন মুখের কথায় ভোগেন না। তিনি ইংলিশ এডিকেট্ পছন্দ করেন না। তুমি সংস্কৃত, বাঙ্গনা, উর্দ্ধৃ, ইংরাজি যে কোন ভাষায় শুল বা অশুদ্ধভাবে স্তব উপাসনাদি কর না কেন, যদি হালরে খাঁটা ভক্তি থাকে ভাহ'লে সকল উপাসনাই ভাঁর গ্রাহ্ম, নচেৎ ভক্তিহীন অভি বিশ্বদ্ধ সংস্কৃত ভাষার উপাসনাও তাঁর গ্রাহ্ম নর।

শিশ্ব। আছো, দেবমন্দিরে দেবমূর্ত্তি ধর্শনে যাওয়ার ফল কি ট সেধানে ত কেবল কাট পাথর অথবা ধাতৃব মূর্ত্তি বৈত নম। আপনাকে ত প্রায়াই মন্দিবে বেতে দেখি।

শুকা। মন্দিরে ভগবদ্ মৃত্তি দর্শন ক'র্ভে বাওয়ার ফল আছে, এবং বাওয়াও একান্ত কর্ত্তব্য। আমি কেন বে বাই তার কারণ বলি শোন। আমার মনে পূর্ণরূপে বিশান আছে বে ভগবান সর্ব্বজই আছেন, কোনও শ্বান বা কোনওবন্ত বাদ নাই। ভগবান কি কেবল ঐ মন্দিরের মধ্যে পাথরাদির মৃত্তির মধ্যেই আছেন বাইরে নাই ? ভাত নয়, তিনি সক্তেই পরিপূর্ণ আছেন, তত্তাচ আমি মন্দিরে বাই কেন ? কারণ, দেবদান্দরে দর্শনের ক্লয় গিয়ে. কিয়া পূজা আরভি দেখে, আমার মনে বে াবের উদয় কর এবং ডাঙে আমি বে আনন্দ পাই, তা অন্ত স্থানে কয় না অর্থাৎ মনের সে ভাবও হয় না এবং দে আনন্দও পাই না; কাজেই মন্দিরে বাই। বথন মন্দির ছাড়া অন্ত স্থানেও দেই রক্ষম মনের ভাব হবে এবং সেই রক্ষম

শোৰন্দ পাৰ, তথন আমার মন্দিরে যাওয়ার কোন প্রয়োজন নাই।
পরত্ব যতদিন তা না হত্তে ততদিন আমি বেতে বাধ্য এবং যাওয়াও
কর্তবা। অতএব দেবদন্তিবে গিয়ে দেবমূর্তি দর্শন হুবা, যন্দির প্রদক্ষিণ
করা, চরণামৃত নেওয়া, প্রসাদ গ্রহণ করা কর্তব্য। কেননা, এর দারা
মনে ক্রমে ভাবেব জমাট বাঁধে। দেই ভাবের পূর্ণতা হ'লেই ভগবানকে
পাওয়া যায়, কাবণ তিনি ভাবেরই বশ।

শিঁয়ানী আমাদের সনাতন ধন্যে অনেক দেবদেবীর মূর্ত্তি দেখ্তে পাওয়া বায়, কিন্তু কালী প্রতিমা দেখে কেমন বিসদৃশ ভাব পালে। তিন চোথ চার হাত, হাতে মাজ্যবের মাথা ও বাঁডা, এবং এক হাত পেতে ও এক হাত তুলে, গলার মুওমালা ও কোমরে হাতেব মালা প'রে, জিব বা'ব ক'রে তা আবাব দাতে কেটে, মাথাব চুল এলিয়ে দিয়ে, নয়াবস্থায় শিবের বুকে পা দিয়ে দাভিয়ে আছেন। ভ'ন্তে পাই যে শিব কালীর পতি, সেই পতির বুকে পা দিয়ে দাড়ান।। এই সব দেখে কিন্তুত্রকিমা কার ব'লে সনে হয়।

শুক। তোমাথ মত মূর্থেবাই কিন্তুত কিমাকাব ব'ণে মনে কবে। দেবতাসনৃশ ঋষিবংশে জন্মগ্রহণ ক'বে সংসগ দোষে বিক্বত কচিসম্পন্ন হওয়াতে, ত্রিতাপহাবিণী স্থজন পাণন-নিধনকাবিণী স্থামা মাকে ব'লছ কিন্তুতকিমাকাব।।। পুষ্ক দেশপ্রচলিত বর্তুমান সভ্যতার, সেই সভ্যতার চাওয়াতেই গোকের এই ফুচিবিক্বতি ঘটেছে।

শিশ্ব। আমাব বড় অপরাধ হ'য়েছে। আমি না জেনে বড অন্তার কথা ব'লেছি, অন্তাহ ক'বে এখন আমাকে গ্রামা-পূজার ভাৎপর্যার্থ বৃকিয়ে দিন।

গুক। তবে শোন। আত্মারাম ত্রিকাণজ্ঞ ব্রন্ধবিদ্ ঋষিগণ ঈশ্বর ভিন্ন অন্ত কারও পূজা করেননি। কায়ান্মরোধে কারণবশতঃ ঈশ্বরেরই

তত্ত্ব-কুস্থম।

কোন্ নাদের পর শোনা যায় যোগণাত্রে তাও নির্দিষ্ট আছে, এবং ঠিক সেই রক্ষ শোনাও যায়। সম্পূর্ণ দশটা নাদ বখন শুন্তে পাওয়া যায়, মন তখন সেই নাদে অর্থাৎ সেই আওয়াজে মন মগ্ন হ'রে থাকে, অন্ত কোন বিষয় গ্রহণ করে না। রাজ্যোগে ধ্যানাবস্থায় মনের এই রক্ম ভাবটা অতীব প্রয়েজনীয়।

শিষ্য। এখন রাজ্যোগটা আমাকে বৃঝিয়ে দিন। গুক্। আজ্থাক্ আবাৰ কা'ল হবে।

একাদশ দিন।

শিষ্য। আজ বাজবোগটী বলুন।

শুরু । বাজবোগের শকার্থ হচ্ছে বে, বোগের বাজা অর্থাৎ শ্রেষ্ঠ বোগ , কিন্তু বাজবোগের তাৎপর্যার্থ হচ্ছে এই যে, চিত্তের বহিমুখীন বুলিজিলিকৈ ভ ইন্দ্রিয়গুলিকে অন্তর্মুখীন ক'বে, গ্যানের বাব'র সমাধি অবস্থার জীবাআ ও পরমাআব দে মিলন তার নাম বাজযোগ , অর্থাৎ সাইজিনিন নাম বাজবোগ। এই বাজবোগের আটটা অঙ্গ বা বিষয় আছে, সেই জন্ম একে অষ্টাঙ্গ বোগও বলে। এই আটটা অঙ্গ বা বিষয় বিষয়েক নামনা ক'বে সিদ্ধিলাভ ক'বতে পাবলে, তবে বাজবোগ সিদ্ধিল হয়, অর্থাৎ আবজ্ঞান লাভ হয়। আবজ্ঞানীকে বাজবোগী বলে।

শিশ্ব। সেই আটটী জক আমাকে পৃথক্ পৃণক্ ভাবে বুঝিয়ে দিন।

গুরু। যদ, নির্ম, আসন, প্রাণায়ম, প্রত্যাহার, ধারণা, ধ্যান ও
সমাধি এই আটটা অপ। (১) যম,—অহিংসা (হিংলা ত্যাগ), সত্য
(মিধ্যা না বলা), অভেয় (চুবি না কবা , ব্রন্ধচর্যা (বীর্যা ধাবণ) ও
অপবিগ্রহ (দান গ্রহণ মা করা)। নির্ম –(২া তপ, সভোষ, শৌচ,
সাধ্যার, ঈশ্র-প্রণিধান এই কর্মটা অভ্যাস কব্লে তবে নির্ম সাধন
করা হয়। আসন—যে কোন আসনে অনেকক্ষণ নিক্ষেগে ব'স্তে

⁽১) গ্রন্থান্তরে অহিংসা, সভা, অংগেষ, বক্ষচযা, ক্ষমা, বৃতি, দবা, আর্জব, মিতাহার ও শৌচ। এই কয়না পালন কংলে যমসাধন করা হয়।

⁽২) তপ, সপ্তোষ, আন্তিক্য, দান, কখন উপাসনা, সিদ্ধান্ত এবন, লক্ষা, মতি, এপ , এত ও বজু এই কমটা সাধনের নাম নিষম এগ্রান্তরে এমনও আছে।

অভ্যাস হ'লে তবে আসন সিদ্ধ করা হয়। প্রাণায়ম—প্রাণের সংযম অর্থাৎ প্রাণবায়কে অপান বায়র সহিত সংযোগ ক'রে স্থির রাথা অভ্যাস কর্লে তবে প্রাণায়ম সাধন করা হয়। প্রভ্যাহাব—বিষয়োল্থী ইচ্ছিয়গণকে বিষয় থেকে ফিরিয়ে আন। অর্থাৎ বহিমুখীন ইচ্ছিয়গণকে অন্তর্ম্থীন কর্তে পার্লে তবে প্রভ্যাহাব সাধন করা হয়। ধারণা—কোন একটা নির্দিষ্ট বস্ততে মনকে আরুষ্ট ক'রে রাখ্তে পার্লে তবে ধারণা সাধন করা হয়। খ্যান ধ্যেয় পদার্থকে অবিচ্ছেদভাবে চিন্তা কর্তে পার্লে তবে ধারনা সাধন করা হয়। সমাবি—ধ্যানের ছাদশ গুণ স্থিতি হ'লে তবে ধ্যান সাধন করা হয়। সমাবি—ধ্যানের ছাদশ গুণ স্থিতি হ'লে তবে সমাধি সাধন করা হয়। রাজ্যোগের এই আথির ফল সমাধি, অথবা যে কোন পাল্লে যে কোন রক্ম সাধনা আছে, সকলেরই আথিব ফল এই সমাধি। অর্থাৎ সমাধিলাভ হ'লেই আসল তবে পৌছান শায়।

শিষ্য। এই সমাধি বিষয়টী যে কি অনুগ্ৰহ ক'রে তাই আমাকে ব্যাধ্যে দিন।

প্রক। যোগশান্তে ব'লেছে যে,

তৎসমঞ্চ দ্বযোরৈক্যং জাবাত্ম পরমাত্মনোঃ। প্রণষ্ট সর্ব্ব সংকল্প সমাধিঃ সোহভিধীয়তে॥

যথন জীবাত্মা ও পরমাত্মা মিলিত হ'রে এক হন, এবং মনে সংস্থ সংকর বিকল্প রচিত হয়, তথন সেই অবস্থাকে সমাধি বলেন। সে ধ্বতাধ জাবাত্মা ও পরমাত্মায় স্বতন্ত্রতা কিছুমাত্র থাকে না। বেমন প্রশ সম্প্র জল থেকে উৎপন্ন হয়, কিন্তু সেই গ্রন আবাব জলে গ'লে জল হ'ছে যায়, তথন আরু ল্বণ্রের স্বতন্ত্রতা থাকে না। সমাধি অবস্থায় জীবাথার টক

সেই ভাব হয়। এই সমাধি লাভ কর্বাব জন্মই বোগের অন্যান্ত অঙ্গলি সাধন করতে ২য়। সমাধি অবস্থাম বোগীর বাহ্চজান থাকে না। তথন তিনি পর্মানন্দে বিভোর থাকেন। কেননা, তখন তিনি নিত্য, শুদ্ধ, বুদ্ধ, সাচ্চদানন প্রমাত্মাতে মিলে থাকেন ব'লে তার নিকট আর অন্ত কোন ভাব আস্তে পারে না। সংখি প্রধানতঃ চুই প্রকাব স্বিকল্প ও निर्सिक्न। এদেরকে সবীক ও নিব্বীক সমাধিও বলে। পবন্ত, সহিক্ল সমাধি উচ্চ নীচ ভেদে অনেক বক্ষ হয়, তাব মধ্যে ভাব সমাধি ও ভড-সমাধি প্রায় দেখ্তে পাওয়া যায়। সাবিকল সমাধি, বিকল্পেব সহিত বে সমাধি লাভ হয়. তাকে সবিকল্ল সমাধি বলে। বিকল্প কি? মনের মধ্যে দ্বৈভজ্ঞান থাকা হজে বিকল্প। তাব মানে মাধ্যক্ষনিত অহং জ্ঞানটী পাকে। অর্থাৎ খ্যাতা, খ্যের ও খ্যান, এবং জ্ঞাতা, জ্যে ও জ্ঞান এদের পরস্পরের পার্থক্য থাকে। এর সোজা মানে এই যে, মায়ার অদীনে থেকে বে সমাধি লাভ হয় তাই সবিকল্প সমাধি। স্থভরাং এ সমাধিতে সংস্কার সূব ধ্বংস হয় না। নির্কিকল্প সমাধি, বিকল্প বৃহিত অর্থাৎ মাগ্রা জনিত অহংজ্ঞান হেতৃ বৈতভাব বহিত বে সমাধি তাকে নির্কিকল্প সমাধি বলে। এ সমাধিতে ধানি, ধোষ ও ধাতা এবং জান, জের জাতার কোন পুথক অনুভব থাকে না সমস্তই একভাবে পরিণত হয়। এই সমাধিতে সংশ্বারের নাম গরুও থাকে না এবং অহং জ্ঞানের ছিটে ফোটাও প্রাকে না। এর সিধা মানে এই যে, পূর্ণ ছাইছভ্রানেব স্থিত স্থকপ অবস্থার স্থিতির নাম নির্ব্ধিকল্প সমাধি।

শিশ্ব। নির্ব্ধিকর সমাধিতে হৈতভাব থাকে না ব'লছেন, তবে কি বরাবরই অহৈতভাব থাকে, না—মন কখন নেমে আসে।

গুরু। পরমাত্মা থাদের দারায় জগতের কিছু কাজ করান অর্থাৎ লোকশিকা দেওয়ান, তাঁদের মন নেমে আসে নচেৎ নয়। লোক-শিকার্থে মন নেমে এলেও দে সব মহাত্মাদের স্বীয় ভাবের কিছুমাত্র বৈলক্ষণ্য হয় না। উভয় অবস্থাতেই মনের ভাব ঠিক একই থাকে। তাঁরা ধা করেন বা বলেন, তার সঙ্গে তাঁদের নিজেদের কিছুমাত্র সম্পর্ক থাকে না। প্রহলাদ, জনক, শিধিধবজ্ঞ ও কচ্প্রভাত মহাত্মাদের নির্কিকর সমাধি থেকে লোকশিক্ষার্থে, মন নেমে আসাব কথা যেগবাশিষ্ঠে উল্লেখ আছে।

শিষ্য। আপনি যে জড সমাধি ও ভাব সমাধির কথা ব'ল্লেন তা কেমন জান্তে কৌতুহল হচ্ছে।

গুক - জড সমাধি, —কোন কোন ষোগীৰ প্ৰাণবায়ু স্বযুমাতে প্ৰবেশ ক'রেও কোন কারণবশতঃ কোন স্থানে আটুকে যায়, ব্রহ্মরন্ধে, থেতে পারে না। তখন যোগী জডাবস্থায় থাকেন এবং কিছুমাত্র না থেয়েও বহুদিন জাবিত থাকতে পাবেন। আন মাদ্রাস নাগাপেটেমে সেই রকম একটা যোগী দেখেছি। তিনি কিছুমাত্র না থেমে আডাই বছর একটা শিব মন্দিরে জড়াবস্থার প'ড়ে ছিলেন। গুনেছি, পরে প্রাণবায় স্থ্যা থেকে বেরিয়ে এলে তথন তাব বাহ্যজ্ঞান হয়, এবং কিছু কিছু খেতেও আবস্তু কর্লেন ও ধীরে ধাবে কথা বলতে লাগ্লেন। নিজার স্বযুগ্তি অবস্থাকেও ক্বড সমাধি ৰশুতে পাবা যায়। পরস্ত এ ক্বড সমাধি যোগীদের ভড সমাধি থেকে অনেক নীচু। কেন না, এতে কিছুমাত অমুভূতি পাকে না, যোগীদেব জড় সমাধি অবস্থায় অন্তবে একটা অনুভূতি থাকে। সমাধি লাভ করলে মন উন্নত হয় কিন্তু নিদ্রার স্বযুপ্তি অবস্থায় যে জড় সমাধি বল্ছি তাতে মনেব একবারে অবন ত হয় ৷ তবুও এই স্বযু্গ্তি অবস্থাকে এড় সমাধি বলবার কারণ এই খে, মন তথন তমরপ অরকাবে সমাহিত থাকে। সমাধি অবস্থায় মন প্রকৃতির অর্থাৎ ত্রিগুণাত্মিকা মায়ার সীমানার বাইরে যায়, তার মানে মন মায়ানির্দ্ধ হ'মে পরমাআর

মুক্ত জানালোকে বায়, স্থতরাং পশুত কি মুর্থের যেমন মনই হ'ক্ नां (कन, मर्गाधनां कर्तन् खानमप्र इत । अभन कि महामूर्थत् यह সমাধি লাভ হয় সেও মহাজ্ঞানী হবে। কেন না, মন জ্ঞানালোকে আলোকিড হ'বে কানে, কাজেই সে মনে অজ্ঞানরূপ অরকার আর থাক্তে পারে না। একে মনের উর্ধার্গতি বলে। পরন্ত স্থযুপ্তির ভড সমাধির অবস্থা ঠিক এর বিপবীত অর্থাৎ মন তথন তম্বূপ অন্ধকাবে ভূবে থাকে। সেইজন্ম দেথ না, লোকে গাঢ় নিদ্রা থেকে উঠে হঠাৎ কিছু স্মরণ কর্তে পারে না, একটু পরে তবে প্রকৃতিস্থ হয়। তার মানে স্বয়ুপ্তি সময়ে মন খোর অন্ধকারে ডু'বে গাকে, কাঞেই ভাগ্রত হ'য়ে বাহ্ ৰূপতে ফিরে এলেও প্রথমটা খানিক সেই তমোর প্রভাব থাকে। সমাধি ভগবৎ কার্ত্তন কি ভাদৃশ কোন সঙ্গীত অথবা ভগবল্লীলার কথা শু'নে যে সমাধি লাভ হয়, তাকে ভাব সমাধি বলে। ভাব সমাধিতে মন ষ্মৰগু ত্রিগুণাত্মিক। মায়া ষ্মতিক্রম ক'রে পূর্ণ জ্ঞানালোকে খেতে পারে না ৰটে, কিন্তু মাগ্ৰাৰ সঙ্গে জডিত থেকে জ্ঞানালোক দৰ্শন হওয়া হেতু ভগবৎ প্রেমে মন মগ্ন থাকে এবং এক বকম জানন্দ্র উপভোগ হয়। পরস্ক এ সমাধির দারা আত্মজান লাভ হয় না, অথবা অপরোক্ষাহভূতি আদে না। আমি ৺বুলাবন ধামে গিরিরাকে একটী বৈফবের আশ্চয্য ভাব সমাধি **(म**थिছि। मूर्य गाँगक्का ভित्र माना किना (तककिन, এवः शांगाइरमत কুছকের মত ত্বির অবস্থার অনেকক্ষণ তিনি ছিলেন। নাম সংকীর্ত্তন কর্তে কর্তে তবে বাহ্জান হ'ল। এই ভাব সমাধির দারায়ও চিডের यर्थन्ने श्वरिक्त को ५ इत्र ।

শিষ্য। যোগ শম্বন্ধে আমি নোটামূটী এক রকম বৃঝ্লাম। যোগ-মার্গেব দাধনায় ও সাধারণ মার্গের সাধনায় বিশেষ পার্থক্য আছে ব'লে বোগ হচ্ছে। তাতেই হনে হচ্ছে যে, সাধারণ লোকে বোগাভ্যাদের অধিকারী হ'তে পারে না। কারণ, রাজবোপের মধ্যে যে ব্রহ্মচর্য্যের কথা শু'নগাম দেটা অবশ্র ত্যাঙ্গীরা পালন কর্তে পারেন, স্থতরাং তাঁদের দারার যোগাভাাস হয়, কিন্তু গৃহীদের দারার যোগাভাাস হ'তে পারে না। কেন না, গৃহীরা ব্রহ্মচর্য্য পালন কর্তে পার্বে না। আছো, গৃহীরা ব্রহ্মচর্য্য পালন না ক'রে কি যোগাভ্যাস কর্তে পারে না ?

গুরু। ব্রশ্বর্যা ভিন্ন বোগসাধন হয় না। কারণ, ব্রশ্বচর্য্য বাতীত আত্মজ্ঞান লাভের সম্ভাবনা নাই।

শিষ্য। ব্রন্দর্য্য ভিন্ন আত্মজান শাভ না হওয়ার কারণ কি ?

শুরু। তার কাবণ এই যে, যেমন দর্পণে পারা লাগিয়ে তার সাহায়ে মুখ দেখা বায়, তেমনি হৃদয়রপ দর্পণে বীর্যারপ পারা লাগিয়ে তৎসাহায়ে আত্ম দর্শন হয়। সেইজ্ঞ প্রথম হ'তেই ব্রহ্মচর্য্য পালন কর্তে হয়। এমন কি, শরার, মন ও বাক্যের হারায় স্ত্রী সংদর্গের প্রসঙ্গও নিবিদ্ধ। ধোগশাল্রে ব'লছে যে,

কৰ্মণা মনসা বাচা দৰ্ববস্থাস্থ দৰ্বদা। দৰ্বত্ত মৈথুনং ত্যাগ ভ্ৰহ্মচৰ্য্য প্ৰচক্ষতে॥

শিষা। আজাহাঁ, বুঝ্লাম বে এই ভিন রকম মৈথুন তাগেই হ'ল বন্ধচৰ্যা।

গুরু। তিন রকম নৈথ্ন নম। এই তিন রকম উপারের দ্বাবায় আট রকম নৈথ্ন ত্যাগের নাম ব্রহ্মচর্যা।

শিবা। আট বক্ষ মৈপুন কি কি ? প্রক্রণ শাস্তে ব'লছে যে, ব্রেক্ষাচর্য্য সদা রক্ষেদফীধা মৈথুনং পৃথক্।
স্মরণং কার্ত্তনং কেলিঃ প্রোক্ষণং গুন্থ ভাষণম্।
সংকল্প অধ্যাবসাযশ্চ ক্রিযা নিষ্পত্তি রেবচ।
এতন্মৈথুনমফীঙ্গং প্রাপদস্তি মনীষিণঃ॥

শারণ করা, বলা, ক্রীড়া করা, দেখা গুপ্ত মন্ত্রণা করা, সংকর, চেষ্টা কবা, এবং কার্য্যে প্রবৃত্ত হওরা। নৈথুনের এই আট রকম উন্থম থেকে নিবৃত্ত ধাকার নাম ব্রহ্মচর্য্য। ব্রহ্মচর্য্য রক্ষা কব্তে পাব্লে ওল্প সঞ্চয় হর, এবং গুজসম্পার ব্যক্তি বিশেষ ক্ষমতাশালী হয়।

শিশ্ব। ওজ সহত্ত্বে আমি কিছুই বৃষ্টেত পার্ণাম না।

গুরু। বীর্যা ধারণ ক'র্লে অর্থাৎ মজ্ত হ'লে, সেই মজ্ত বীর্ষ্যা থেকে এক রকম বাষ্পা উঠে নন্তিকে গিরে জমা হয়, তাকেই ওল্প বলে। বীর্য্যের যা সার তাই ওল। ওজসম্পন্ন লোকেব চোপে এক রকম জ্যোতি প্রাকাশ পার। যে ব্যক্তি এই ওজ্বত সঞ্চয় কব্তে পার্বে তার মানসিক বল তত বাড়্বে।

শিশ্ব। কি উপায়ের ধারা বেশী পবিষাণ ওজ সঞ্চয় হ'তে পারে ?

গুরু। ব্রহ্মচর্য্য পালন ক'রে অর্থাৎ বীষ্য ধারণ ক'রে খানে ধারণাদি সাধনার দ্বারার পর্যাপ্ত পরিমাণে ওজ উৎপন্ন হ'তে পারে। বেমন জলাদি তরল পদার্থে তাপ দিলে পর্যাপ্ত পরিমাণে বাষ্প উঠে, তেম্নি ধান ধারণাদি সাধনাব সময় শরীরাভান্তরে এক রকম তাপ উৎপন্ন হয়। মস্তিকে বিশেব বেশী তাপ উৎপন্ন হয়। কাজেই সেই তাপের দ্বারা শরীরন্থ সঞ্চিত বীর্ঘ্য থেকে পর্যাপ্ত পরিমাণে ওজ উৎপন্ন হয়।

শিশ্ব। তাহ'লে গৃহীরা ও ব্রদ্ধচর্যা পালন কব্তে পারে না, স্নতরাং ওক্ত সঞ্চর হয় না, কাজেই তালের যোগাভ্যাদের আশাও নাই। গুক। কেন ? গৃহীরাত ব্যাচ্য্য পালন কব্তে পারে। যাজব্জ্য ঋষি ব'লেছেন হে,

> ঋতার্ত্তো স্থদারেয়ু সঙ্গতিষা বিধানতঃ। ব্রহ্মচর্য্য তদেবোক্তং গৃহস্থাশ্রম বাসিনাম্॥

ঝতুকালে ঋতু রক্ষার জন্ত মথা বিধানে নিজ স্তার সাহত যে সঙ্গ, গৃহীদের তাই প্রক্ষার এই পবিমিত বাঁহ্য ক্ষয় কর্লেও ভজ সঞ্চয় হ'মে থাকে, কিন্তু অপারমিত ক্ষয় হ'লে আর কোন আশাই নাই। এমন কি, অপারমিত বাঁহ্য ক্ষয়ের দারা আয়ু পহান্ত হাদ পায়। নারদ পঞ্চরাত্রে একটা বচন আছে যে, "মবণং বিন্দু পাতেন জীবনং বিন্দু ধারণাং।" অতএব সকলেরই পবিনিত বাঁহ্য ক্ষয়ের চেষ্ঠা করা কর্ত্তবা।

শিশ্ব। তাহ'লে আমাব বোধ হচ্ছে যে, উপযুক্ত গুরুর আদেশে চল্লে সকল রকম সাধনাই সকলের থাবা হওয়া সম্ভব। পরস্ক, উপস্কুত গুরু পাওয়াই কঠিন।

গুরু। একদিকে কঠিন বটে, কিন্তু অবস্থাভেদে কঠিনও নয়। কারণ প্রোণে বথন প্রকৃত ব্যাকুলতা আসে, অর্থাৎ লোকে যথন প্রকৃত অধিকারী হয়, ভগবান তথন গুরু মিলিয়ে দেন। জ্ঞানী প্রকৃষ পেলে তার কাছ থেকে তত্ত্বজ্ঞানের উপদেশ নিতে হয়। ভগবানও সে সম্বন্ধে গীতার ৪র্থ অধ্যায়ের ৩৫শ শ্লোকে ব'লেছেন যে,

> তদ্বিদ্ধি প্রণিপাতেন পবিপ্রশ্নেন সেবয়া। উপদেক্ষ্যন্তি তে জ্ঞানং জ্ঞানিনস্তত্ত্বদর্শিনঃ॥

জ্ঞানী পুরুষকে প্রণিণাত সেবা ও প্রশ্নের দারা জ্ঞানোপদেশ গ্রহণ কর, তত্ত্বদর্শী জ্ঞানীরা তোমাকে তার উপদেশ দিবেন। তার মানে এই যে, জ্ঞানী প্রন্থ পেলে, তাঁর সেবা ক'রে প্রণাম ক'রে তাঁকে সম্প্রতি ক'রে, তাঁর কাছে প্রশ্ন কব, তিনি তোমাকে জ্ঞানোপদেশ দেবেন। জ্ঞানী মহাত্মার নিকট উপদেশ পেলে শোকেব জ্ঞানরূপ সন্ধকাব দূব হ'য়ে হৃদয় জ্ঞানালোকে আলোকিত হর। তথন সেই হৃদয়ের বং ব'দ্লে যায়। তাতেই মহাত্মা তুলসী দাসজি ব'লেছেন যে,

সদ্গুরু পাও্তে ভেদ্ বাতাও্তে জ্ঞান্ করে উপদেশ। ক্ষলাকো ম্যলা ছোড়ে যব আগ করে প্রবেশ।

করলাতে অগ্নি সংযোগ হ'লে করলা বেমন লাল রং হয়। তেম্নি তত্ততানোপদেশ পেলে অন্ধকারাবৃত হদরও জ্ঞানালোকে আলোকিত হয়।

শিয়। জ্ঞানী মহাত্মা চেনা বড় কঠিন। কারণ, সব মহাত্মান্নাই সাধুর বেশধারী, এবং সবাই শান্ধবাক্য বলেন। এখন জ্ঞানী এবং ক্ষজ্ঞান কিলে চেনা বার ?

গুরু। জ্ঞানী মহাত্মা চেন্বাব উপায় এই বে, বে মহাত্মা শান্ত্র-বাক্য বেমন উপদেশ দেন, নিজেও ঠিক সেই ব্লক্ষ জাচরণ করেন অর্থাৎ সেই ব্লক্ষ চলেন, তিনিই জ্ঞানী। আর উপদেশ দিতে বিশেষ পটু, কিন্তু সেব্লক্ষ চ'ল্তে অক্ষম, তিনি অজ্ঞান।

শিয়। আপনি বাই বলুন, আজকাল কিন্তু প্রকৃত জ্ঞানী মহাত্মা চেনা এক রকম অসম্ভব হ'রে দাঁডিখেছে। কারণ, ভেলই বেশী।

গুক। না, অদস্তব নয়। জ্ঞানী পুকুষের জাব লক্ষণ দেখ্লে বুঝুতে পারা যায়। তা ছাড়া, জ্ঞানী মহাআদের কথা বড় হৃদয়গ্রাহী হয়। কেননা, তাঁরা অন্তব লক্ষ জ্ঞানের কথা বলেন। আর বে মহাআ দের অনুভবে কিছু আসে নি, কেবল গ্রন্থের কথা আবৃত্তি করেন, তাঁদের কথা হৃদয়গ্রাহী হ্য না, তাঁবা ঠিক বাক্ষয়ের ক্লায়। তাঁহা নিজেরাই যধন

জ্ঞানলাভ ক'বৃতে পারেন নি, তথন সেই জ্ঞান অপরকে দেকেন কি ক'রে গ य महाजात कथा **७८न श्रा**र दिन जानन जनुष्ठत हरत. এवः (महे रूपांच অসংখ্যাতে বিশ্বাস জন্মাবে, তুমি সেই মহাত্মাকে জ্ঞানী ব'লে জেন! ধর্ম ও পূজানি মীমাংসা পুস্তকে ভার একটা উদাহরণ আছে বলি শোন। প্রাচানকালে এক স্বাধীন হিন্দু রাজা ছিলেন। তার বড গুরুভক্তি ছিল, দেইজ্য গুরুদেবকে রাজ্বানীতেই প্রকাণ্ড বাডীও অনেক স্পাত্ত দিয়ে রাজার নত ব্দবস্থার রেথেছিলেন। গুক প্রতাহ প্রাতে রাজসভাতে রাজাকে আশীর্কাদ কর্তে আস্তেন, এবং তিনি একথানি স্বতন্ত্র সিংগ-সনে ব'দতেন। এই রকমে কিছুদিন বাওয়ার পর, রাজার মনে অশান্তি বোধ इওয়াতে, त्राञ्च। এकनिन अञ्चलका व'न्यान (म. अञ्चलका আমার মনে শান্তি পাচ্ছিনা, কি ক'ব্লে শান্তি পাই তাই আমাকে বলুন। গুৰুদেৰ ব'ল্লেন বে, পুরাণ শ্রবণ কর শান্তি পাবে। তদমুসারে বছ ব্রাহ্মণ হারা এক বংসরকাল পুরাণ পাঠ হ'ল, ব্রাহ্মা শুন্নেন এবং অনেক দানানিও হ'ল, কিন্তু রাজার মনে দিন দিন অশান্তিই বাড়তে লাগ্ল। ज्यम दाका अकृत्वत्य क व'न्तान त्य, अकृत्वतः। व्यायाद्र मत्न व्यमान्ति विन বাড়্ছে তার উপান্ন কি ৭ গুরুদেব বল্লেন যে, আচ্ছা আমি স্বরং তোমাকে পুরাণ শোনাব তা হ'ণে তুমি শান্তিপাবে : জ্ঞ্থন গুরুদেব নিজে এক বচ্ছন্ত ধ'রে রাজাকে পুরাণ শোনালেন, কিন্তু বাজা ভাতেও শান্তি পেলেন না, দিন দিন অশান্তি বাড্তেই লাগুল। ইতিমধ্যে একদিন দকাণ বেলায় গুরুদের যেমন রাজসভায় গিয়েছেন, আর অমনি রাজা ছতুম দিলেন বে, শুরুদের। আজ হ'তে সপ্তাহ মধ্যে আপনি আমার মনে যদি শান্তি দিতে না পাবেন, তাহ'লে দবংশে আপনাৰ ফাঁসি হবে ও আপনাৰ সম্পত্তি সরকারে বাজেয়ার হবে। আপনি এখন যান তার ব্যবস্থা করুন। ত্রুম ভনেই শুকুনেৰ মৃত্যপ্ৰায় হ'লেন। ছটা ৰচ্ছন্ন এত কাও ক'য়েও

य गांखि पिट्ड शार्यम नि, त्मरे गांखि मांड भित्मव मर्था कि क'ता प्राप्त म মতরাং প্রাণের আশা ত্যাগ ক'বে বাড়ী ফিরে এদে শোকাচ্ছন হ'য়ে মৃতপ্রায় প'ডে রইলেন। বান্ধণী অকলাৎ বিপদেব কারণ জিজাসা করায়, সংক্ষেপে তাকে বৃত্তাস্তটী ব'লে ব্রাহ্মণ প'ডে রইলেন। ব্রাহ্মণীও ব্যাপার গুনে শোকাত্রা হ'লেন। একটা পুত্রবধূ ছিলেন এইসব দেখে ভলে তিনিও য়ান হ'য়ে বসে বৈলেন, স্নানাদি কেও কব্লেন না অথবা পাঝানিও কিছু হ'লনা ৷ গুকদেৰের পবিবাববর্গের মধ্যে তাঁর স্ত্রী, গোপাল নামক একটা পুত্ৰ ও পুত্ৰবধু; কিন্তু পুত্ৰটা পাগল, সর্বদা জন্ম-লেই থাকে, কোন বেশভূষা বা কোন দখ নাই। বিদে পেলে বাডীতে আদে এবং ছটা খেমে আবার চ'লে বায়। বিষয় ব্যাপাব কি হবকরা কিছু দেখে না কিয়া কোন আলাপ করে না। সেদিন গোপাল ছপুর বেলার বাড়ীতে খেতে এসে দেখে যে, বাড়ীর সকলেই শোকাচ্ছন অবস্থান আছে কারও মানাদি হয় নি কিলা পাকশাকও হয় নি ৷ তখন গোপাল মায়ের कार्छ शिष्ट्र बिख्डामा क'दरम स्व मा। जाब कि इ'स्त्राङ् १ मा व'न्रानन ষে, বাবা। তোমাকে ব'লে আর কি হবে ? তুমি ত পাগল তুমি আর কি কর্বে ? আমাদের সকলেবই ফাঁসি হবে। সম্পত্তি যায় যাক যদি আমাদের প্রাণ বাঁচে ত। হ'লেও হয়। এই ব'লে গুরুপত্নী আসল বৃত্তান্তটা গোপালকে ব'ল্লেন। গোপাল ভ'নে ব'ল্লে যে, মা। তুমি কোন চিন্তা ক'র না, তুমি সামাব পরম গুরু, ভোমার সাক্ষাতে ব'ল্ছি যে আমি আজই রাঙ্গাকে শান্তি দিব। তুমি উঠ, স্নান কর, পাকশাক কর, বাবাকে ওঠাও, সকলে থাওয়া দাওয়া কর। তুমি এটা নিশ্চন্ন জেন যে আমি কথন মিথা। বলি না। গোপালের এই যুক্তিপূর্ণ সতেজ বাকা ভ'নে গুৰুপত্নীর হৃদনে একটু আশার সঞ্চার হ'ল তথন তিনি উঠে অনেক ব'লে ক'য়ে গুরুদেবকেও উঠালেন এবং ভাভাভাভি স্নানাদি ক'রে

পাকশাক কব্লেন, কিন্তু গুকদেব কিছুই থেতে পারলেন না। ফাঁসির আদামীকে ত্রুম গুনানেব পর তার যে অবস্থা হয়, গুরুদেবেরও ঠিক সেই অবস্থা হয়েছিল। আহারাদির পর গোপান সেদিন আর কোধাও ना शिरत्र वाफीरङ व'रम द्रहेश. এवং दिना भ'फ्रा शक्रक व'न्ति रा, বাবা। চলুন রাজবাড়ী ঘাই, রাজাকে শান্তি দিতে হবে। তাই শুনে গুৰু গোপালকে বলুলেন যে, ভাল কাপড চোপড় পৰ ফোঁটা কর। তাতে গোপাল ব'ললে বে. আমি বে বেশে আছি সেই বেশেই ধাব। তথন পিতা-পুত্রে রাজবাড়ী গেলেন। রাজা, গুক ও গুরুপুত্রেব অসময়ে আদার সংবাদ পেয়ে, নিজেই এগিয়ে নিতে বেরিয়ে এলেন, এবং গুরুকে সাম্নে দেখে সাষ্টাঙ্গ প্রণাম ক'র্লেন। খুক ডান পাল্লের বুড়া আঙ্গুলটা রাজার মাথায় ঠেকালেম। গোপাল ভাই দেখে জিভু কেটে রাজাকে মাটী থেকে হাত ধরে টেনে তুল্লেন। তথন রাজা তাঁদেবকে নিয়ে বাডাব মধ্যে একটা নিৰ্জ্জন ঘরে ব'দলেন। তথন গোপাল রাজাকে জিজ্ঞাদা করলে যে মহারাজ। আপনি আজ আমার পিতার প্রতি এমন কঠোর আদেশ দিলেন কেন। বাজা ব'ল্লেন যে, গুরুপুত্র। আমি শান্তি পাবার আশায় এমন কঠোর আদেশ দেয়েছি। গুণুদেব আমাকে ষা ব'লেছেন ভাই কবেছি, কিন্তু শান্তি গাইনি, অশান্তিই দিন দিন বাড্ছে। সেইঞ্ভ এই কঠোর আদেশ দিয়েছি, কেননা, গুরুদেব (कान ना त्कान डेलाझ कत्र्रवरः। श्रीशीन श्रीफाटक वर्गल रग, আচ্ছা, মাপনি আজই শান্তিলাভ কর্বেন। এখানে ব'লে বাাধ যে, গোপাল একঞ্চন যোগাভ্যাদা, উপযুক্ত গুরুর নিকট থেগাভ্যান ক'রে আব্যক্তান লাভ ক'রেছে। সংসাবে বে ছেলের মনে ভগবদ্ প্রেম উদন্ন হয়, এবং বিষয় কৰ্মের প্রতি বৈরাগ্য হয়, তাকে গোকে পাগন বলে, স্থতরাং গোপাল্ও পাগল ব'লে পরিচিত ছিল। বেমন কোন বেশ্রার মেন্ত্রে বেঞাবুত্তি না ক'বে যদি সংপথে খাক্তে চাম, তা হ'লে বাৰতীয় বেঞারা সেই মেশ্বের নিন্দা করে। তেম্নি সংসারে যে ছেলের মন ভগবৎ পথে যায় তাব অবস্থাও ঐ বেগ্রান্ন মেধের মত হয়। তথন গোপাল রাজাকে ব'ললে যে, মহাবাজ। আমি ৭০ হাত লখা আর আঙ্গুলের মত মোটা ছুগাছি দড়ি এখনই চাই বাজা তখনই ছকুম দিতেই দডি ছুগাছি তৈরার হরে এল, তথন প্রায় সন্ধা হ'রেছে। গোপাল দড়ি চুগাছি নিমে উঠে দাডিয়ে রাজ্ঞাকে ব'ললে যে, মহাবাজ। আৰু আপনাকে আমার সঙ্গে কোন স্থানে যেতে হবে, এবং আমার পিতাকেও সেই সঙ্গে যেতে ছবে। রাঞ্চা সন্মত হ'লেন, কিন্তু পিতা সন্মত হ'লেন না, কারণ, শাদ্তিদানে দড়ি দেখেই তিনি ভশ্বানক চ'টে গিয়েছেন। পবে বাঞ্চা গুৰুকে ব'লে ক'ৰে ৰাজি ক'ৰে স্বয়ং হাতিয়াৱৰন হ'য়ে ঠিক স্ব্যাৱ সময় তিনজনে রাজবাড়া হ'তে বওনা হ'বে গলার ধারে বরাবর তিন ফ্রেশ বাড়া সিয়ে গোপাল একটা প্রকাণ্ড জঙ্গলের মধ্যে প্রবেশ করন, স্তরাং রাজা ও গুক চন্দ্রনকেই সেই সঙ্গে থেডে হ'ল ; কেন না, গোপালই সেদিনকাব পথপ্রদর্শক। নিবিড জন্মলের মধ্যে অনেক দুর পিয়ে, একটা স্থানে মোটা মোটা বড় বড গাছ এবং নাচে পরিছার ধৃপুধৃপু ক'র্ছে, তার উপর চাদেব আলো প'ড়ে বডই মনোংর শোভা হ'রেছে দেখে গোপাল রাজাকে ব'ণ্ডল যে, মহারাজ। সকলেই ক্লান্ত হ'রেছেন, অতএব এইখানে একটু বিশ্রাম কেকন। তন্তুসারে मकरन भानिकऋष दिश्राम कड़ोत्र भव, भोभीन वीक्रांक वे'न्टन स्त् महोत्राज । कि कुक्त्वं अध्य अभिनाटक कामि वकते नार्क् नत्य वेश्व । ব্রাজা শ্বীক্লত হ'লেন। তখন গোপাল এক গাছি দড়ি দিয়ে একটী পাছের গুড়ির দঙ্গে জড়িরে জড়িয়ে খুব মজ্বুত ক'রে রাজাকে বাঁধ্ল। ভারপর পিতাকে বাধ্বার কথা বলাতে তিনি অনেক আপত্তি ক'রলেন,

কিন্তু গোপাল এক বৃক্ষ জোৱ ক'ব্লেই তাঁকেও ঠিক সেই মত ক'ব্লে বাঁধ্ল, এবং ছজনকে বেঁধে খু'রে গোপাল তথন সেখান থেকে রওনা হ'ল। এদিকে রাজাও গুকর খুব শব্দ বাঁধনের জন্তে রক্ত চলাচল বন্ধ হ'য়ে সর্বাবে বন্ত্রণা উপস্থিত হওয়াতে বান্ধা চীৎকার ক'রে বলতে লাগ্লেন বে, হে গুরুপুত্র। বাঁধন খুলে দিন, বড যন্ত্রণা পাচ্ছি। গুরুও ঠিক সেই রকম ভাবে চীৎকার ক'বতে লাগুলেন। গোপাল কিন্তু সে সব কথা কিছু না শুনে ক্রমেই চলে যেতে লাগ্ল, স্নতরাং বাজা ও গুরু উভরেই যরণা ভোগ ক'ব্তে লাগ্নেন। অনেক দ্র গিয়ে গোগাল ফিরে দাঁডিরে রাজাকে হেঁকে ব'ল্লে যে, মহারাজ। আপনি কি ব'ল্ছেন ? রাজা ব'ল্নেন বে, বাঁধন খুলে দিন, ভয়ানক বঞ্জা হছে। তখন পোণাণ খুব চীৎকার ক'বে ব'ল্লে যে, মহাব্রান্ধ। আপনার গুরুকে বলুন তিনি বাঁধন খুলে দিবেন, তাহ'লে আপনার বাতনা যাবে এবং শাস্তিও পাবেন। তথন রাজাও চীৎকাব ক'রে ব'ললেন যে, গুরুদের কি ক'ন্নে বাঁধন খুলে দিয়ে আমাকে শান্তি দেবেন তিনিও যে নিজে বাঁধা এবং ষান্তনার ছটুফটু ক'র্ছেন। তথন গোপাল রাজাকে ব'ললে বে, তবে মহারাজ। আপনি কাব কাছে শাস্তি নিতে গিয়েছিলেন ? যিনি নিভেই বদ্ধাবস্থায় অশান্তি ভোগ ক'রছেন, তিনি কি আপনাকে শান্তি দিতে পারেন ? তথন রাজা ব'ললেন যে, হে গুরুপুত্র। আমি এখন বুঝেছি, আমার বাঁধন খুলে দিন। গোপাল তথন এসে রাজা ও পিভার বাধন খুলে দিরে সেইখানে ব'সেই ভত্তানে।পদেশ ছারা রাজাকে শান্তিশান ক'রলেন, এবং রাজাও ক্বতক্বতার্থ হ'রে বাড়ী ফিরে এলেন ইত্যাদি। অনুভব জ্ঞানা ভিন্ন কেবল শাস্ত্ৰজানী অপরকে জ্ঞান অথবা শান্তি দিতে পারেন না। কেননা, অপবোদ্বাগুর্ভি ভিন্ন দে অধিকার হয় না। তার কারণ, যার যা নিজের নাই, পরকে তা দেবে কি ক'রে ? তার আর একটা উদাহরণ শোন। বাজা পবীক্ষিতের সর্প দংশনের ব্রহ্ম শাপ হ লে, তিনি মৃত্যু মাশার মনে বড অশান্তি পোয়ছিলেন। পুরোহিত ধৌম্য ও অন্তান্ত ব্রাহ্মণ পণ্ডি : গণ বাজাকে শান্তি দিবাব জন্ত পুরাণাদি শুনিয়েছিলেন, কিন্তু বাজা কিছুতেই শান্তি পানান। পবে শুকদেব স্বানী একে যথন পুরাণ শুনালেন এবং তল্পজান উপদেশ দিলেন, তখন রাজা পবীক্ষিত আমন্দ ও শান্তি সবই পেলেন, এবং ব্রহ্মণাপ যাতে মিথ্যা না হয়, সেজন্ত ব্যন্ত হ'য়ে মৃত্যুকে আনিক্ষন ক'রলেন

শিশু। আপনি যে ব'ল্লেন শাস্ত্ৰজানী শাস্তি দতে পাবেন না। তাহ'লে শাস্ত্ৰসিদ্ধ জ্ঞান ও সাধনসিদ্ধ জ্ঞানে পাৰ্থক্য কি ?

গুক। আৰু থাক, আবার কাল হবে।

পাঁচটী ষর আছে, এবং এপরার্দ্ধে অর্থাৎ নির্ভি নার্গে স্ব্রপ্তি নামক একটী ঘর আছে। গ্রাণকণ পে গুলেমের সাহায্যে খনকপ কাঁটা দর্বদা সেই প্রবৃতি মার্গস্থিত বিষয়কণ পাঁচটী ঘরে ঘু'বে বেড়াছে। ধর্মন যে খরে मन योत्र उथन छोछ्डरे व्यर्थीए मिर्ट विश्वाहरे बट्ड धना छारूबाल को स करत। भवस, প्रानक्तभ भ्रिष्टाम स्ति इ'लारे मनक्रभ काँही छ०कां। খটাস্ক'রে নিবৃত্তি মার্গের ম্বৃপ্তির ঘরে গিয়ে স্থিব হ'রে থাকে। এই অবস্থাটী সাধকের সাধনার পক্ষে সম্পূর্ণ অনুকৃত্য। প্রাণান্নমের দারা এই অবস্থাটী প্রাপ্ত হওয়া যায় ব'লে প্রাণায়ম এত উপকারী। মুদ্রা প্রাণায়ম সিদ্ধ কর্বাব জন্ত শারীরিক ক্রিয়াবিশেষ। সূদ্রা দশ প্রকার মহামূলা, মহাবন্ধ, মহাবেধ, থেচরী, উড্যান, মূলবন্ধ, জালব্ধর, বিপরীভ করণী, বজোলা ও.শব্দিচালিনী। বন্ধ, ইহাও শারীরিক ক্রিয়াবিশেষ। ষটুকর্ম, এঞ্চিও প্রাণায়নের ক্স নাডী পোধনকবিক শারাবিক ক্রিয়াবিশেষ। ধৌতি. নেতি. বভি, নৌনি ও কপাল ভাতি এই ছয়টা ক্রিয়া ব্টকর্ম। भेरी बन्ध नाष्ट्री भारतीय बन्ध, तमहे मव नाष्ट्रीत महशा क्यांचर्छन। জমা থাকে, ভাহ'লে প্রাণাময় অভ্যাস হয় না। কেননা, প্রাণায়মের জন্ত প্রাণও অপান বাযুকে পাইপ সতুশ নাডীর মধ্যে ধিরে অধঃ ও উর্দ্ধ চালনা ক'রে এক ক'রতে হয়, স্তরাং প্রাণায়ম অভ্যাস করতে গেলে প্রথমেই নাড়ী পরিষ্কার করাব নিতান্ত প্রয়োজন। সমল নাডীতে প্রাণায়ম অন্ত্যাস चारते ह'रछ शास्त्र मा। स्मृहेक्छ बोध्वरका धवि व'रनह्नम स्मृ

নাড়ী সংশোধনং কুর্য্যাছক্ত মার্গেন যত্নতঃ। বুথা ক্লেশোভবেক্তস্ম তচ্ছোদনং মকুর্ববতঃ॥

क्रियोत्र भोरत वर्ग एक त्व.

মলা কুলাস্থ নাড়ীয়ু মারুতে। বৈদ মধ্যগঃ। । কথংস্থান্তমনী ভাবঃ কার্যাসিদ্ধিঃ কথং ভবেৎ ॥

সম্পূৰ্যক্ত নাড়ী হ'লে পজে, তার মধ্যে দিনে প্রাণবাব্র চলাচল হ'তে বৈধানী কা ছতবাং ভগ্মম ভাব ও কাণ্যিনিত্তি (প্রাণের স্বৰ্মা পথে বসার্ছে, স্মিনি) কি ক'রে হ'তে পারে ? ভবে-কোন্ বোগী প্রাণার্থে সক্ষম, পরের প্লোকে ভাই ব'শ্ছে বে,

ভদ্ধি মেডি যদা সর্বাং নাড়ী চক্তম্ মলাকুলম্।
', তদৈব জায়তে যোগী, গ্রাণ সংগ্রহণৈ ক্ষম॥

বার নাষ্ট্র চক্র (রাষ্ট্র) কর্ম করেছে পেই বোগী। প্রাণারনে গক্ষম হন। সরবোগ, মনকে একগ্র হিবল করার নান লরবোগ। পর্বাৎ মনের রাষ্ট্রাকি ধর্ম বে সংকরে রিকার রূপ বিকেপ তথন একবারে রহিত হ'লে বার। নন বথন আপনার মনেই ছির হ'লে থাকে, তথন তাকে সরবোগ স্থান। বোগশারে এই সরবোগ সিন্ধির বে শব প্রতি আছে, তার নারো নাদ প্রবণই একসারে প্রেই। বোগাভ্যাসীরা এই নাদ প্রবণের নারা প্রকাশ বালের ক্রিয়া নাদ প্রবণ করান বিশেষ। নাদ প্রবণের মানে এই বে, গোকের ক্রান্তে আলার চারিনিকে নানাবিধ শব (বাত) অহরতঃ বাজ্ছে, অভ্যানের লারা সেই নক আপ্র কালে ভ'নতে পাওরা যায়। নাদ প্রবণ অভ্যানের নার্য এই বে, এন্স নির্মাণ কালে আন্সন ক'রে, ব'স্তে হবে বে কোন রকম শব্দ হালে না আই বরে। এইরারা ক মানের ক্রিয়া না ক'বে কেবল চুপ কিলে ব'লে বাজ্যত বরে। এইরারা ক মানের ক্রেয়ান্তর বারা স্বীর হালক্ষ নার্য বালের বালের বারা স্বীর হালক্ষ নার্য বালের বালের বালের বিশ্ব বালের বালার বারা স্বীর হালক্ষ নার্য বালের বালের বালার বারা স্বীর হালক্ষ নার্য বালের বালার বালের নার্য বালের নার্য বালার বালের নার্য বালার বালার বালের নার্য বালার বালা

নট্যকার—ঐভিপেন্দ্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যায় প্রগীত

- of SUN- 1928 -অবৈতনিক নাট্য সম্প্রদায়ের জ্ঞান ভাণ্ডাব

স্মিতির গঠন প্রণালী হইতে জারত কবিবা অভিনর বাতেপ্রবেশপ্রহান কবিবাব নিয়ম ইয়ে বাধা দিন্ টাড়াইবাব নিয়ম শিক্ত হতিয়াছে। এনেচাব জাব সংক্রান্ত এমন কোন জিনিব নাই যাগার স্বন্ধে না এই প্রতকে বিশ্বদতাবে, আসোচিত ক্রা বিল্ল-প্রাক্তনা--সতু বেন-'ন্ডাবলা--বেষেধ তার-বাটাাভিন্যে ধর স্কীতেরস্থান-স্থেপজনাথ মত্মদ্বি--বিদ্ধি। প্রভ্যেক্তর কাতে এই প্রক্থানির প্রয়োজন অপরিকার্যা। ভূপেজনাথ ছাডা এইশবে বাঁহারা লিখিয়াছেন-प्रतक मनीज-क्षारक त्म--राजांत विकास--तीर्म ज्य-क्षांत्राकांक-क्षार्थाया र्याजन नारिकी त्रि सांच कार्याक्रमांत लोगूको—वरक्षणी—वरिक्ष ८० थ्री — वन्मया क जारमका । अ जार्याक्रमणी क् ্ৰভিনয় বৰকে বিধিয়াছেন—অপবেশচক নিশিব ভাৰুতী বোগেশ চৌধুহী তিনকড়ি চক্ৰবন্তী মনোয়ঞ্জন ভটাচাধ্য

ইল ছাড়া প্ৰবীন ও নবীন নাটাশিল্পীগণের বিভিন্ন ভূমিকাব ৭-ধানি ছবি দেওয়া হইল। দাম আড়াই টাকা । নিদান্তাৰ অভিনাত - महारा ह्य था बनाज वक होका の日の日本 ध्क है।का এইপ্রকাব ভাস্তাব্যেব দিগ্লাম হাত্রা (माम চর্নত CACABICAN SOMETIVE ज्रात्मार्थे क्रिक्शित ष्राप्ति नांडेक হাজ্যমাত্মক বিখ্যাতনটক ষ্টাৰে অভিনীত আট আনা STAN GALO মিনার্ভাষ কতিনীত অটি ঘানা ক্লোর বরাত (ক্সন) ক চিত্ৰশৈতিত এক টাকা STORY BY SAN মিনা ভায় অভিনীত দেশবিখাত নটক



स्तम्भी छत्राहोत् छन्

ভাক্রাক ওয়াটার এফ ভারতবর্ষের সর্বাধাম

मुक्कारभाषा वृद्धः कांत्रथानाय क्षेत्रकः।

छटन छें दुक्के त्रिक्म र ज्यार मार्स्स मछ। भिन्नोक्त। ब्यार्थनीय সচিত্ৰ ক্যাটলগের জন্ম অজ্যুই পত্ৰ লিখ্ন عرام مرام مر عار عار عار عوام عدار عور

श्वराठीवश्वरक ध्यांकम निः

হেড আফিস ও ফ্যাইবী : ্ বালিগঞ্জ, কলিকাতা (${
m Phone\ Park\ 605}$) मिक्स :-->२नः होत्रमी धवः १७नः कत्मक श्रीहे, कमिकाणा ভবানীপুব বাঞ ঃ—আঞ্ডোষ মুখাজী বোড. জগুবাব্ব বালাবের বিপরীত দিকে (बाषाई जाक :—৩७५, हत्त्वादि (वाष्ट, (त्काँटे) (बाषादि । निक्श- সাহত্য

কুণার কুণার

বাংলার জনসাস では、大きいない

একথাত্র পিনি স্থনের কলঙার নিশাতা वर्षमान (सन्तामिक वर्-मक्के श्रम क्रकारकारित जूरमनाम, —>१००।ऽ वस्तानात क्रीड, कमिकाजा न। क्रियक्टि मन्ज्र्न निति त्मानोष्ठ बाम क्षिया थी रेयोर्ट कि प्योगोरम्ब मुख्यति समाम मुम আ্মাদের প্রত গ্রুমা বাব্হারাজে, আবা निक्छ किक्य किएल, जामन भीनमन्नी गाननीत्र अहिक ७ श्रुवेरनायकवृद्यति -या ज्यामाराज मञ्जूती यथान्छव कर्मान

শতক্রা ১০০ জনই উপ্তত্ত ইইবেন—কৈই বার্থ মনৌরখ হইবেন না—তাপু কথার মহে—কার্য্যে দেখুন—

৮১ বংশরের অভিজ্ঞতার কলে—গতি ইচ্চাধান কার্বা フミアに言る中小作る一BIRTH-CONTROLLER

भार विक्रीय नाहें। निर्काव खेवन-नात्रारित क्लानकृत चोष्टाइन्नी हत गाँ। हर्रा अकृत नगरह धकरिन कांस पर्वेटक

Birth-Control 16 toping of fifther was भक्त क्षतिक वर्शियोत्र धक्योत देशाह धक्य विकित खेवर "Wifes friend"-The safe and sure way to

ক্রিকার নিংসালেরে ইন্ত্র ব্যক্তর ক্রিক পাকেন। ক্রিক ক্রিক ক্রিকে নাই ক্রিকার নির্বাপন ও অব্যক্ত ক্রিকার ষে। নি গুৰুতে কৃষ্টিৰেন্য নে মানে গ্ৰন্ত কিছুকেই হইবে না—ইহা জীমবা জোন,গলান চাক বাজাইয়া- অগ্নিৰ সহিত্য ক্ষেণা ক্ষিতেছি। ইয়া প্ৰতি মানে গ্ৰন্থানীন গাইনে,কোনজনেই-গৰ্ভ হইবে না। গাৰাই উৰ্থনেন ক্ষিতেই क्षितः नवानानि रहेरक मानिया। होराजा रहाकोः वर्षाकोत यो क्षण य दंगान, कांबन वनकः मक्षान छेदशोन्नान क्षमक कैन्त्रांड जुनीय महोयर। भूता--अक वस्त्रात्त्र था॰ ष्मांड्रांट होंका--इत्र मोट्सब् ३५० त्रांख निका।

होश्चर्त श्रीष्म, हिष्टितिश প্রভৃতি নানা বোগেয় স্বष्ট হইয়া থাকে। অতএই সকলে নিক্ষের উষণ ব্যবহাই ককন। देश्तक जात्मत्क हिद्रकात्मत् युक्त महीचे वाकियांचित्र शहेत त्यात जाकांच युक्त वा सक् त्यात त्याका नीष्ट्रा प्राम्मधान्य- अक गोरम्य बङ्काण अवस् बांच्य (८१६८११६) (का क्रिमेन्नेत क्ष्म गुर्क १७०३) क्या कि विरास राज्य के कार कर कामा म जार हैया कि जिल्ला का ने व खाना के निक मारे। এই এয়া ঋতুবাসীন সাত দিন যাত্ৰ বাংহার কমিল গতিত বংকাজ উহত ও

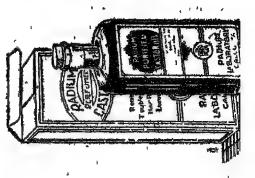
tile.

(जिण्डियम कार्येष वाद्यव

निका व्यवश्री दक्न व्रमाजन

ক্ষা নিশাভ কেশ্বাজি আতি ক্ৰত সন্ধাবিত ক্রিয়া শিল্প-শোভা নহিন্দ ক্রে ক্ষিকাতা বিশ্ববিজ্ঞানরে ন্যাহ্যিক ন্যায়নের অধ্যাপক ডা: এইচ, হে, দেন, এম, এ, শি; আর, এশ, ডি, আহি, শি, ডি, এস্ মি, ্রেডিয়ন গ্যান্তরটারী কত ক্রেডিজ্বামা ক্রান্টির অনুম্রেকা পরীকা করিয়াছি। ইয়া বিভন্ন উদ্ভিক্ত তৈকে প্রস্তুত। ইয়াতে খনিক তৈক কিয়া কেশেব সক্ষে শুনিষ্টকর কোন গ্রাধ গাই নাই।

किष्ट्रीम गौर त्विष्टिवय काष्ट्रिय कार्या



PIOIOCAL OFFICE

ুপৃথিবীর প্রায় সকল দৈশেই বপ্লবীর। সূপ্রতিষ্ঠিত রাজশক্তি বিম্বস্ত করিবার উদ্দেশ্তে গুণ্ড নবহত্যা ঘারা মজোলিয়ান বিপ্লবী পিশাচিক বড়বপ্লের সাহায্যে একটি বিবাট ককেনীয় ৰাজশক্তির গৌবব ও প্রতিষ্ঠা এক্রণ উপ্রভাস কেনাহিতে। সম্পূর্ণ নুজন বলিয়া অসংখ্য পাঠক ইহা পাঠের জন্ম উল্লোখ্য। ভাপা, क्षेत्रात्व विश्वस्त रूउद्योग्न विक्रोविकाशूर्व विश्ववरात्म्य विश्वस्त विज्ञुख रहेशांक्रिन, जाराय घटना-देशिकाशूर्व नहें কৰিবাৰ 558। কৰিলে কি ভাবে ভাহাদের সেই চেষ্টা বিফল হইযাছিল এবং অবশেষে বিপ্লবীরা কি স্মাজে উদ্বেগ ও জাসেব সঞ্চার ক্রিয়া দেশে অশান্তি বিজ্ঞার করে। এক সম্প্রদায়ের পীতাক

কাগল, বাঁধাই অতি উৎকৃত্ব, স্বুহৎ উপত্যাস—মূল্য দেড় টাকা। - রহতালহরী মিরিঞের অভাতা প্রস্তক ---

ক্রমনীর বহুসভাহনী সিক্তিজ্ব সর্কোৎকুই ও স্থনির্কাচিত উপস্থাসভাহির সন্তিম্পুর পরিচয়। পাঠাগবিত্র বেলগুরে ইন্টটিউট

रा अकात चारक मका महिन्द नही े। निर्वामिट्डन निर्दार्यन-क्षेत्र रहेण া জন্তার কবল ক্ষতে লকগতির অপ্রতা কতাকে একাকী উদ্ধান भित्रका कावग्राहिन, बना अन् होका । भ्रातान-अन्य-- रुजिन वर्ग निर्माणन पान निर्णा

রাসবিভিক্তব জীবনবাশী দাধনার কৌত্তাবহ বিবর্গ। বুলা দড়ে চীকা।

সাধ্যকৃতি ডিটেকটিভ চ্ৰির নিখা অভিযোগে সাতবংসরের জন্ত

THE STAN STAN STAN FOR PROPERTY

শীমা অভূতি খাতুর ভার হলভ করিবার চেরার

ঞ্চা সূত্র কলেজের 'ক্ষাইয়ে' রাধিবার বোগ্য। সকল পঠিক পাঠিকাব চিত্তাক্ষিক লোমাঞ্চকর এন্ডফঞ্চার কাহিনী--निर्देश रहितीय शृषिकीय अक्त अकारमानंत क्याजकत अवारकत व्यक्तिकि वारिकार। स्टारा समा। नर्भात्र वार्षिक महाजिदनान । भूगा बाज बाजा । ধবের অধিনাক্ষকর শোচনীয় যুত্যু । মৃত্যুর পর ক্ষমেন ভাতার আক্ষিক अरा महामा मान्याना निकास श्रीकांक करामा

मस्ति धक्रम अमिक्तमा भूषम मात्र नाहरा हुन्छ छन्। छन्। द्राविकाम् के नाउ महिक्स

रेशांट नवित न्त्न - मध्ये मिटिसि म्हम्बर

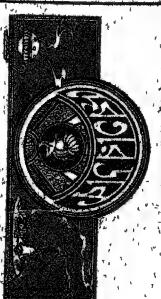
धरीन हिक्सिन जिंद ब्राह्मिस्न बरम् Influe Repertory within ARCHITICS OF PROPERTY AND A

मुन्। मिर्फ़ किम

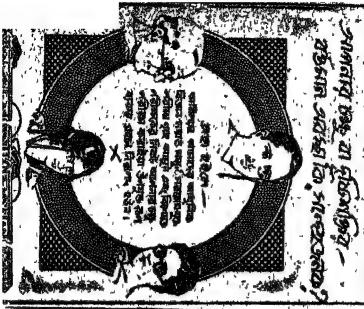
अन्मद्रिक्ति दिवस्ति १ १ mintra, era

THE POST ATT





विक उक्षमाम प्रतस्त्रीह अपि (क्य-क्षेत्रक) विक्रिक त्यक्तम् नाउक



वारमा ভाষায় ছেলেদের "বৃক অব নলেজ"

निक-टान्डी

শ্ৰাপ ভ আমেধিকার অধিবাসীনা তাহাদেব বালক্বালিকাদিগৰে মাগ্ৰুৰ কবিবার জন্ম কভ ল্কাসেমেদিগকে বিপদ্ধগছের বিত্তিধ জ্ঞানভাণোরেব সহিত পরিচিত কবিবার চেষ্টা ক্ৰিবি विकित्र माशिक्रुक, क्षिरकाष ७ कान-विकात्नव महित शृष्टकारमी क्ष्मि कर्ता ।

के अनुवास आंग्रे कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य The Book of Knowledge, The Children's Treasure House প্ৰভাষ্তিৰ মত ছেলেমেনেদেৱ বিষ্ফান-মাথহ একখানাও প্ৰকাশিত रुष् मार्टा मिल-जात्रही ज वित्र व ज्यात्र

निक-जाउँ ए कि जारह ?

ब्याकारमंत्र कथा, खिहम्म्मीयन, क्षीव-कार, यामूरम्य छर्णां ७ क्याविकाम, यानर्दत শিল্প-প্রতিভা, গল্প ও কাহিনী, বিশ্ব-সাহিতা, অর্থনীতি, বিজ্ঞানের কথা ইত্যাদি।

৪,০০০ পুষ্য সহজ সরল ভাষায় মানে মানে প্রকাশিত হহতেছে। চাব হাজাব বিচিত্র-সুন্দর দবি with mean no with!

লিজনিন্দ যুখোপাধ্যায় প্রণীত পুস্তকবিলী

र्शका ভাহাৰেৰ যদ লাভ মতই আদিয়া দাড়াইবে, ভাহাদের कारिश्व देश्रांश बल्कांश्त्रज्ञ मिश्रास्त প্রত্যেকটি চরিত্র ত্বল আপনার ত্ৰ ক্ৰিবাৰ শক্তি অসাধাৰণ! खनी **ब**शंज्ञण ! अंश्वरतंत्रं द्रः स चक्र-हर्रथ कॅम्प्रियन, द्रष राजियन देनवान्यक्र निष्याद शृधिवीटक टार्मिक





3

कविशा भवित्त्व विदान क्रिक्ट नार्ड । বাংলাদেশের পাঠক্পারিকাদের কাছে टेनलक्षोनस्मत्र ट्लक्षोत्र कोन

আরও এবং এক বিশানী

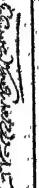
वक्शं धक वर्षण-प्रचेत्रः स्रोवण-प्रकानि

ৰ্যাম কেন্দ্ৰ টাকা

STANSON WILLIAM SIN

रिकार्याक्य

SA PETER



å,

उक्ताक्षिक क्ष्रानं वहीं क्ष्मित - 284 中部中一中村八万里 · 中國行政 arthe pelien क्रीक्र - क्रिक् -

BAY A TO 到多年

र्यम् . त्रक्ति त्रम

COLAR WINE

feats, frantis, less निर्भाषांत्र व्यक्ति, प्रशासक्ता, ज्य नक्षित्रश्रमत थात्र छए क्ष्रकार्य, 4 A.

Property MEDIAL MARKETIA

इरीसनारथर

বিচিত্রিতা

यस क्रिंग स्वित्र वर

ত০ থানি নতন রঙীন চিত্রে শো बर्ल, किरज, कविरच, लोबरव ७ গগনেক, নন্দলাল প্রভৃতি





हिस्त कां है कांगरडव. BIRGO A PARTY मिक्टान गर-महन्नात्रीय কুটীৰ পৰ্যান্ত ইহাৰ बळ-क्योज ह्यात्राष मम्ता न मं श ह है কৰি কুত্তিবাসেৰ L'OU PLO 日本が対の

গাণিগাছে, ভাছা অক্ত কোন এছের সহিত তুলনা হুইতে त जार कानाइय প্ৰাংশ ধৰ্মজাৰ চিবদিনই विशेष म्हक्ट्र

भरिकेस्तीत्र स्विशात कक्ष, जामन्न गुर्मन्द रहात जुन्मा 🍼 क्क बाब्रे ७ वक् कारत जर्रे नृष्न भःकत्त शब्द हरेत्ने छ, क्यि टोन्डाई व्राधित्रक्ति। छारु याञ्च ऽ।॰ षाना। शास्त्र मा। ७५२ मुकी ६० थानि ब्रह्मीन इति व्याष्ट्रि



वश्मित छोत्र-वर्ष चर्यतुत्र प्रजीसन क्ष्मीयां मध्नेत 8७ हर्गति थानि बडीस किंव जारब ->१२६ गुर्वा । बांबारब শনেক মহাভাৱত আছে, কিছ কিনিবায় সম্য জাপনাকে দেখিয়া কিনিডে হুইবে—এমন সম্পূৰ্ণ অথচ এত বড় স্থিক্ষ মহাভাৱত আৰু দেখিয়াছেন কিনা, বদি না দেখিয়া পাকেন্দু 各地面上下江北西 (中國民國政) 上午 上海 মহাভাষত সন্পৃণিরণে ও বিতদ্ধ-ভাবে প্রকাশিত

ग्रीय एके पक्षी अधिक अधिकामित मा कर्नाम भगति या गा।

"是我们有用有一次的"

御事

のお言なるアインのは見いる

क्षिणीक बोरमा करिकाम अस नाम निष्ठ हातरह । अपनि भागा तम কিনাবদাতে প্ৰস্থানত স্থাৰ প্ৰকাশ कामिरीन कार बहुर्भ कार्या त्रक াৰ কৰেছেন এবং কডিগৰ শ্ৰনিপুৰ भनीम नगरवाना निरंत्र अन्तर कवि टक्स अर्थिक द्यांटक विवास्त ज क्तित्र पर्यक्तिक रहि कर्त्र (श्टब्न, की, बार्क कविकात बाकिनाच है क्या के कि कि क्या कि कि निषिण-चित्रही-अन हिंशांच क्टींड

4.2014 · 100.7.11.100.4.10 · 10.2014 विमान् कट्ड (नाक्टनोहालड मध्य हरून,—कवित क्षित अ अवस्य

のある 四、なるの

ছালিশলানি বহুৰণ ডিল শোকিত

ज्दन सरहित।

क्ष महिला पित कर महिल

क्षि, कांना, कांत्रक, कांगांटना

Burafina fpra orfere, aces

おかり おかれていないかく 大きなか をすかか

न्य-क्षाट त्युष्ठ वानमान

र एक्वामात्र माडी (हार्डवासात्र माडी नात्रिकार माडी

ছাপান সাদীব

